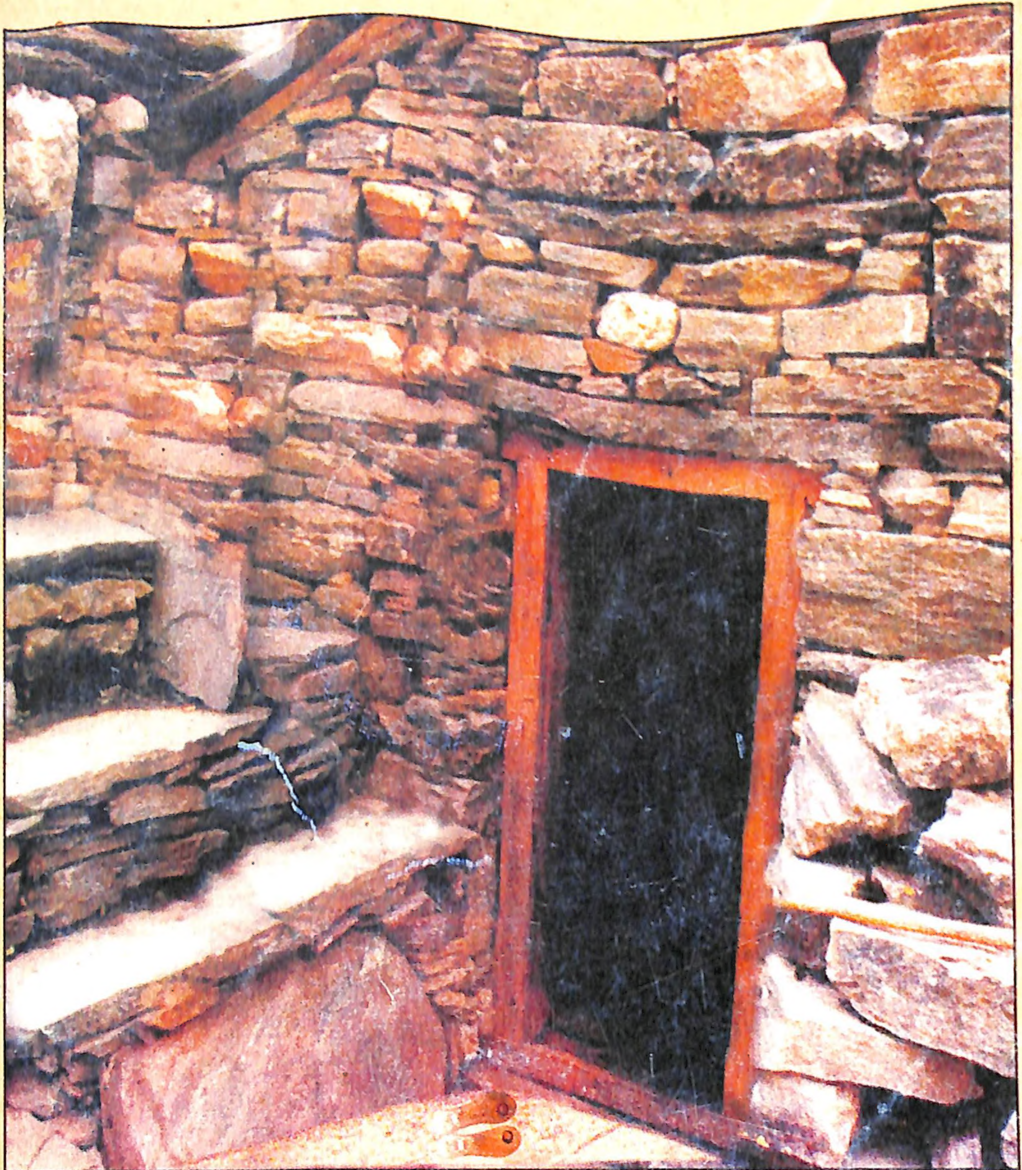
महायोगी

एक दिव्य गाथा



तपो भूमि पिण्डारी गुफा (हिमालय)

''यह प्रयास उन हरि बाबा के श्री चरणों
में समर्पित है जिन्होंने हर कठिन
परिस्थिति मे आवश्यक सहयोग देकर
कपिल सिंह को एक महायोगी बना दिया''

—: दिशा अभिलाषा :—

श्री महावतार बाबा जी

श्री गोरखनाथ जी

—: प्रेरणा :—

परम पूज्य श्री आनन्द बाबा

—: आशीर्वाद :—

महामण्डलेश्वर श्री सोमनाथ गिरी

—: लेखक :—

देवपुरूष भक्तिदेव

अध्याय

प्रथम संस्करण 2008

प्रतियाँ– 2000

भक्तिपथ प्रकाशन
9810792477, 9818640739

मूल्य – 60 रुपये

मुद्रक– दीपक आर्ट प्रेस, दिल्ली–110092
फोन –22542701, 9871234162

प्रेम परिचय आरती

नमो नमः बाबा नमो नमः नमो नमः बाबा नमो नमः
नमो नमः बाबा नमो नमः नमो नमः बाबा नमो नमः

महान योगी पायलट बाबा नमो नमः बाबा नमो नमः
सोमनाथ, कपिल अद्वैत नमो नमः बाबा नमो नमः
महान अवधूत, चेतन ब्रह्मचारी नमो नमः बाबा नमो नमः
विक्रमादित्य, मछेन्द्रनाथ नमो नमः बाबा नमो नमः
नमो नमः बाबा नमो नमः नमो नमः बाबा नमो नमः
हिमालयवासी, कल्याणकारी नमो नमः बाबा नमो नमः
देशप्रेमी, क्रान्तिकारी नमो नमः बाबा नमो नमः
साहसी योद्धा, वीर विजेता नमो नमः बाबा नमो नमः

कठोर तपस्वी, महान त्यागी, नमो नमः बाबा नमो नमः
सत्यनामी, अन्यायनासी नमो नमः बाबा नमो नमः
बह्माण्ड दर्शी, हिरण्यपुरूष नमो नमः बाबा नमो नमः
शिवरूपा समाधिपुरूष नमो नमः बाबा नमो नमः
नमो नमः बाबा नमोः नमो नमः बाबा नमो नमः
तत्वज्ञानी, अंतरिक्षगामी नमो नमः बाबा नमो नमः
आत्मज्ञानी अमरप्राणी नमो नमः बाबा नमो नमः
महान योगी पायलट बाबा नमो नमः बाबा नमो नमः

नमो नमः बाबा नमो नमः नमो नमः बाबा नमो नमः
नमो नमः बाबा नमो नमः नमो नमः बाबा नमो नमः

बाबा जी की कलम से

मैं जब व्यक्तित्व होता हूँ तो मेरा मन संसार के संकल्प विकल्पों के साथ जुड़ जाता है जहाँ जीवन प्रवाह में सब कुछ होना चाहिए। लेकिन जब मैं हूँ ही नहीं तो फिर व्यक्तित्व और अस्तित्व का झंझट कैसा?

जीवन एक प्रवाहित धारा है। जीवन के इस धारा में जीव अपनी यात्रा कर रहा है। जीव की यात्रा में संविद्या है, सिद्धान्त है, वह पाशविक बनकर जीता है, वह मानवीय होकर जीता है, वह देवत्व को प्राप्त कर जीता है। जीवन एक लक्ष्य है विवेचना, क्रिया प्रतिक्रिया है।

जो कुछ होता है होने दें, साक्षी बनकर रहें, दृष्टा बनकर जीएं – संसार भी रहेगा, व्यक्तित्व भी रहेगा और अस्तित्व की यात्रा भी होती रहेगी। इसमें अस्मिता का होना जरूरी है। अस्मिता ही व्यक्तित्व को रिद्धि, सिद्धि से जोडकर परिचय लेती है, संसार के साथ कर्म प्रधान, धर्म प्रधान बनाकर यात्राएं कराती है।

भक्तिपथ को मेरा आशिर्वाद है। सुदुर जीवन के प्रक्रियात्मक क्रियाओं के साथ रहकर मानवीयता को श्रेय देकर, करूणा दया और मानवता को आप जीवन्त कर रहे हैं। आपकी ये कर्म यात्रा पूरे राष्ट्र के लिए हितकर हो। आपकी यह भूमिका देश के निर्माण में, देश के पुर्नउत्थान और विकास में सहयोगी बने। आप अपने ही पथ पर चलकर अपना मार्ग बनाते हुए एक ऐसा राष्ट्रीय दीप जलाएं जिसे हजारों दीये जलकर मानवता और देश को नई दिशा दे और अपने को भी प्रकाशित करें। प्रेम शांति के साथ ढेर सारी शुभकामनाएं –

आपकी यह यात्रा पथ जारी रहे,

प्रभु कृपा

पायलट बाबा
नई दिल्ली

दो शब्द

लेखक की ओर से

यह पुस्तक परम आदरणीय पायलट बाबा के महान जीवन की विशेष घटनाओं का विवरण है। सोमनाथ गिरी, कपिल अद्वैत ये पायलट बाबा के ही नाम है जो इनको हिमालय के महान योगियों में प्राप्त हुए हैं। पायलट बाबा प्रत्येक धर्म के, शास्त्रों के धार्मिक इतिहास के, दिव्य शाक्तियों के स्वभाव और उनकी लीला के हम सबके सामने जीवित प्रमाण है। हमें धर्म के विषय में, स्वयं के विषय में सृष्टि और सृष्टिकर्ता के विषय में किसी भी घटना के निर्माण में ये सब घटनाएं सही दिशा दिखा सकती है।

इसलिए आपसे विनम्र प्रार्थना है और उम्मीद है कि आप वि वास और गम्भीरता से अध्ययन कर इन दिव्य घटनाओं से अपने जीवन को कुछ अच्छी क्रियाओं से सजा देंगे। परमात्मा है और वें ही प्रत्येक वस्तु के सृजक हैं। पृथ्वी के अलावा भी कितने ही ग्रह और लोकों में जीवन हैं। तपस्या का सत्य पर चलने का अच्छा परिणाम मिलता है। सृष्टि व सृष्टिकता की लीला अनन्त है, रामायण और महाभारत जैसे घटनाक्रम पृथ्वी पर हुए थे। कुछ दिव्य ाक्तियां अमर भूमिका में हिमालय में उपस्थित रहती हैं। भारत पृथ्वी का सबसे विशेष देश है। आज पायलट बाबा का जीवन इन तथ्यों की सच्चाई का गवाह है।

मानव जीवन का लक्ष्य क्या है? हम क्या हैं? हम क्यों हैं? कैसे मानव अपनी जीवन यात्रा में अनेक बार जन्म लेकर अपने सफर पर आगे बढता है। यह सब उनके साथ घटी घटनाओं से हमें पता लगता है। हमें और आपको उनके अनुभव का, उनकी प्राप्तियों का, उनकी समाधि का, उनके आत्म ज्ञान का लाभ उठाना चाहिए। जो लोग धर्म के लिए मानवता के लिए, देश के लिए कुछ करना चाहते हैं पायलट बाबा उनका इंतजार कर रहे हैं। अब यह हम सबके हाथ

में है कि हम पृथ्वी पर उनकी उपस्थिति का कितना लाभ उठा पाते हैं। वे तो अर्कता होकर भी अपने कर्तव्य में लगे हो रहते हैं।

जिनके पास ज्यादा समय है, जिनकी रूचि और अधिक अध्ययन करने की है वें पाठक स्वयं पायलट बाबा जी द्वारा रचित "हिमालय कह रहा है" और अर्न्तयात्रा नाम दोनों पुस्तकों का अध्ययन कर सकते हैं। वे दोनों पुस्तकें हिमालय के अमर योगियों ने पायलट बाबा द्वारा लिखवाई है। इनमें आप घटनाओं और अनुभवों को विस्तार से जान सकते हैं। कभी वे हिमालयवासी बनकर गुफाओं में कन्दराओं में, नदियों के मूल स्त्रोतो पर ही भ्रमण और निवास करते थे। हमने अपनी महापुरूषों की खोज की अनेक वर्षों की तपस्या और प्रार्थना के बाद उनके श्री चरणों का सानिध्य पाया है। लेकिन आज आपने इतने कष्ट और समय की आव यकता नहीं क्योंकि अब वे आपके लिए सार्वजनिक जीवन में सहज ही उपलब्ध है। आईये उनके महान जीवन और विराट अनुभवों में भागीदार बन जाएं।

आपका

देव पुरूष भक्तिदेव

भूमिका

धर्म, अध्यात्म, तत्ववेत्ता महापुरूष महामानव, सूक्ष्म जगत, परलोक जैसे विषयों का जिक्र होते ही सन्यासी, सन्त, योगी, महायोगी, देवी–देवता, एवं बृहत ब्रम्हाण्ड में स्थित अन्य ग्रहों की तस्वीर सामने उभर आती है। श्रद्वावान लोग इसे सहज ही स्वीकार लेते है और कुछ इसे महज कल्पना कहकर पूर्णतया खारिज कर देते हैं। कुछ परिश्रमी लोग स्वीकृति या अस्वीकृति के सीमित दायरे से निकलकर वृहत ब्रह्माण्ड से परिचय प्राप्त करने में अपना जीवन लगा देते हैं। अपनी इस यात्रा में प्रारम्भिक अनुभूतियों को उपकरणों के माध्यम से अन्य लोगों तक पहुँचाने की इच्छा मानव को वैज्ञानिक बना देती है। अपनी जीवन यात्रा में अनन्त ब्रह्माण्ड के निरन्तर खोज में लगा व्यक्ति योगी, महायोगी बन जाता है जो सूक्ष्म से विराट की यात्रा करते हुए सृष्टि व सृष्टिकर्ता की व्यापकता से स्वयं को एकीकृत कर लेता है।

सार्वजनिक जीवन में क्या ऐसा कोई योगी है जिसने वृहत ब्रह्माण्ड की यात्रा कर रखी हो? कौन है वह योगी? कैसा है वह? उसमें कौन से लक्षण प्रकट है? क्या महामानव अमर महापुरूष का अस्तित्व है? क्या देवी देवता है? आज के वैज्ञानिक युग में क्या इन सब बातों पर विश्वास किया जा सकता है? ऐसे अनेक प्रश्नों का उठना स्वभाविक है। अब तक प्रकाशित वैज्ञानिक सिद्वान्तों का आसरा लेकर इसे महन कल्पना कहने वाला व्यक्ति स्वयं वैज्ञानिक नहीं है बल्कि वैज्ञानिक उपलब्धियों को भोगने वाला एक साधारण इंसान। विज्ञान तो निरन्तर खोज में लगा हुआ है जहाँ समस्त सम्भावनाएं खुली है अन्यथा शोध व अनुसंधान ही रूक जाए। मौलिक विचार एवं विराट सोच के अभाव में व्यक्ति का चिन्तन विभिन्न लेखकों की कृतियों से प्रभावित होता है। अब तक लेखकों ने एक मापदंड बना रखा है – आसन प्रणायाम करता व्यक्ति योगी, शांत चित्त करने वाला व्यक्ति संत, गोरूआ वस्त्रधारी संयासी, युद्ध लडता व्यक्ति हिंसक इत्यादि लेकिन यह सत्य नहीं है एक ही व्यक्ति योगी भी हो सकता है, वीर योद्धा भी, तत्ववेत्ता महात्मा भी, संत भी, पराक्रमी राजा भी, दुष्टों का संहार करने वाला संहारक भी, ईश्वर प्रेमी भक्त भी, राष्ट्र प्रेमी भी, सूर्य भेदन करने वाला महायोगी भी। लेकिन इस विराट सत्य से अनभिज्ञ अधिकांश

लेखक किसी एक पक्ष को ही समझ पाते हैं और समाज इन अनुभवहीन व्याख्याओं का आसरा ले स्वयं को संकुचित कर लेता है जिससे सृष्टि के रहस्य उसके सामने प्रकट ही नहीं होते–वह मठों और सम्प्रदायों की सीमा में कैद हो कर रह जाता है। सृष्टि सृष्टिकर्ता को समझने के मानवीय प्रयासों की गति काफी धीमी है। सैकडों वर्षों से संघर्षरत विज्ञान अबतक इसके कुछ अंश को ही समझ पाया है।

ऐसे में महायोगी पायलट बाबा (कपिल अद्वैत) का इस धरती पर होना एक दुर्लभ एवं उपयोगी घटना है जिसका लाभ विश्व के अनेक वैज्ञानिक लेते रहे हैं। अपने अमेरिका प्रवास के दौरान मैं वैसे अनेक वैज्ञानिकों एवं वैज्ञानिक फिल्मों के निर्माता के सम्पर्क में आया जो महायोगी पायलट बाबा के सान्निध्य में, उनपर और वृहत् ब्रह्माण्ड पर शोध करते रहे हैं। विचार संघात व आणविक विघटन द्वारा शरीर को विलीन किया जाना, एक ही समय एक से अधिक शरीरों का निर्माण, अपने शरीर को छोड दूसरे शरीर में प्रवेश कर उसके आंतरिक स्वास्थ्य की खोज, स्थूल शरीर को उर्जा में परिवर्तित कर विलीन कर देना एवं पुनः उसी उर्जा से भौतिक शरीर का पुर्ननिर्माण जैसे अनेक प्रयोगों का सफलतापूर्वक प्रदर्शन कर महायोगी पायलट बाबा ने वैज्ञानिकों एवं फिल्मकारों को विस्मित कर वैज्ञानिक शोध एवं अनुसंधान को नई दिशा दी है।

भौतिक एवं परा–भौतिक जगत के गूढ रहस्य, मानवीय कर्म व उसके परिणाम से अवगत कराती ''देवपुरूष भक्तिदेव'' द्वारा लिखित बाबा जी की जीवनी ''महायोगी–एक दिव्य गाथा'' अमूल्य भेंट है हर उस जिज्ञासू के लिए जो वृहत सृष्टि एवं सृष्टिकता की व्यापकता को समझने के लिए व्याकुल है। यह मेरा परम सौभाग्य है जो मुझे इस ग्रंथ की भूमिका लिखने का अवसर मिला।

कृतज्ञतापूर्वक
हरे कृष्णा! ऊँ नमों नारायण!
भक्तिजीव

दिव्य घटनाक्रम

भारत ज्ञान की भूमि है। भारत शब्द का अर्थ ही है ज्ञान से भरा स्थान न कि देश का यह नाम किसी एक व्यक्ति विशेष की वजह से रखा गया है। अब अगली जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि ज्ञान क्या है? ज्ञान जीवन जीने का वह तरीका है जो हमें हमेशा-हमेशा के लिए सुखी व आनन्दमय बना देता है। अब सोचने की बात यह है कि वह तरीका क्या है? वह तरीका है जप, तप योग, ध्यान योग, ईश्वर-प्रेम (समाधि) स्वयं की खोज करना सृष्टि व सृष्टिकर्ता से परिचय करने की इच्छा। इन सब क्रियाओं को सम्पन्न करने के लिए हमें संत-महात्मा, महायोगियों और ईश्वरीय अवतारों की लीला को समझना पड़ेगा।

प्रत्येक मानव अपने जीवन में कभी न कभी इस चिंतन से गुजरता है जिसको आगे बढ़ने के लिए कोई अच्छा रास्ता मिल जाता है वह आस्तिक होकर जीवन को सदाचारपूर्वक बिताने का तरीका खोज लेता है और जिसके अपने सवालों का सही जवाब नहीं मिलता वह नास्तिक होकर भौतिक विकास को ही सब कुछ मानकर स्वयं को पद, पैसा और भोग की राहों पर ढकेल देता है। ईश्वरीय नियम सहजता व गंभीरता में पूरे होते हैं इसलिए परिणाम देर में आता है जब तक परिणाम नहीं आता तब तक आस्तिक दुखी रहते हैं व नास्तिक सुखी, परिणाम आते ही स्थिति बदल जाती है, लेकिन जब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

आपको भी यह सब समझने में कहीं देर न हो जाये और आप बिना समझे ही एक गलत जीवन शैली न अपना लें इसलिए आपका परिचय एक ऐसे महायोगी से करवाया जा रहा है जिनके जीवन की घटनाओं का अध्ययन कर आप सृष्टि व सृष्टिकर्ता या स्वयं को जानने की शुरुआत करके आप भविष्य में आने वाले क्लेशों व बुरे कर्मों में खुद को बचा लेंगे।

भारत पृथ्वी का पवित्र हिस्सा है और इस पवित्र भूमि का सिद्धलोक हिमालय है। भारत को जो विशेषताएं महान बनाती है वो है हिमालय, गंगा, संत, महात्मा,कठोर तपस्वी, महान त्यागी महायोगी, श्रीहरि के अवतार व महान् क्रांतिकारी व वीरता से भरे देश प्रेमी सैनिक। ये सारी विशेषताएं आपको एक ही व्यक्ति में मिल जाये तो क्या उस महापुरुष के

सानिध्य में रहकर आपका कल्याण नहीं हो जायेगा?

वर्तमान आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा नास्तिक होकर अंदर से निराश व बाहर से प्रसन्न दिखकर भोगमय जीवन बिता रहा है। बाकी जो लोग ईश्वर को मानते हैं वे धर्म की खोज में साधु-महात्माओं, दार्शनिकों या कथावाचकों के पास पहुंचते हैं। वहां पहुंचकर उन्हें कुछ अच्छी कथाएं तो सुनने को मिलती है, (कुछ देर के लिए वहां अच्छा भाव बनता है।) लेकिन वे अपनी समस्याओं को वैसी ही पाते हैं जैसी वे पहले थीं।

कथावाचक संत-महात्मा बार-बार जोर देकर अनेक उदाहरणों के द्वारा यह समझाना चाहते हैं कि संसार नश्वर है। इसमें मन मत लगाओ। तुम शरीर नहीं हो आत्मा हो, सारी परेशानी तो शरीर से सम्बन्धित ही है। अधिकांश लोग तो उनकी इन बातों को अपने अंदर जाने ही नहीं देते। बस ऊपर-ऊपर से सत्संग-प्रवचन में हाजिरी लगाते हैं। लेकिन अब उस व्यक्ति का हाल जानिए जो इन सत्संग-प्रवचन पर आधारित होकर अपने जीवन को जीना चाहता है। ये कथावाचक उसे संसार से अनासक्त बना देंगे। इसके लिए बाद उसे ईश्वर-दर्शन की तीव्र महान इच्छा जागेगी। रात को वह सोयेगा नहीं, दिन में वह खायेगा नहीं, अच्छे कपड़ों से मान-सम्मान से या जीवन की आवश्यक प्रत्येक क्रिया से उसको बैराग हो जायेगा। अब उसको आवश्यकता है ईश्वर की समाधि की या श्री भगवान का रूप देखने की।

अब एक बुरी स्थिति यह बनती है कि इन कथावाचकों ने उस व्यक्ति को अपनी वाक-चतुर शैली से संसार से काट दिया । अब उसके अंदर ईश्वर से मिलने की या खुद को जानने की व्याकुलता है। अब इनमें किसी में भी यह सामर्थ्य नहीं है कि ये उस व्यक्ति को ईश्वर दर्शन करा सकें या गहरा ध्यान या समाधि लगवा सकें। इस तरह वह संसार से हटा दिया गया, लेकिन परमात्मा से जोड़ा नहीं गया और वह बीच में लटक गया। यदि आपकी भी ऐसी ही स्थिति है तो जानिए भारत के एक महान वीर महायोगी के जीवन की घटनाओं को और अपने तड़पते व्याकुल चित्त को शांति व संतोष प्रदान कराइये। आइये आपका परिचय एक ऐसे व्यक्तित्व से, करवाया जा रहा है जिनके विषय में भगवान श्रीकृष्ण गीता में बोलते हैं " हे अर्जुन तत्वज्ञानी महापुरुषों के पास जा उन्हें नम्रता से साष्टांग कर उनसे ज्ञान ले, वे मेरा ही रूप होते हैं। वे तुझे ऐसा ज्ञान

देंगे कि तुझे कुछ और जानना शेष नहीं रहेगा। समस्याएं हमेशा नई होती हैं और वे नये समाधान की मांग करती है। आज से पहले भी पृथ्वी के मानवों की अलग-अलग स्थानों पर अनेक समस्याएं व उलझनें थी। कुछ महापुरुषों ने स्वयं के पवित्र जीवन को इन समस्याओं को सुलझाने में लगा दिया। इसी के परिणाम में हिन्दू धर्म, इसाई धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, मुस्लिम धर्म, पारसी धर्म, सिख आदि धर्म ने अपना रूप लिया। ये धर्म आखिरी सत्य नहीं हैं ये उस समय की समस्याओं के हल का चिंतन संकलन है, लेकिन आज की समस्याएं अलग है। आज के मानव की सोच को सही रूप देने के लिए हिमालय के अमर महान योगियों ने एक पुरुष को चुना।

जहां आज अनेक गुरु शिष्यों पर कब्जा जमाए बैठे हैं वे अपनी आत्मिक उन्नत्ति को शिष्यों की संख्या से ही तौल रहे हैं, लेकिन इस परम्परा में आप देखिए महापुरुष गुरुरुप अनेक हैं और शिष्य एक हैं। आइये देखिए हरि बाबा से मंत्रदीक्षा लेते पायलट बाबा को, महान अमर योगी गोरखनाथ की छाया मे संन्यास लेते सोमनाथ जी को, बाबा मथुरादास के दुलारे कपिल अद्धैत को, अवतार बाबा द्वारा समाधिस्थ पायलट बाबा को देखिए और बाबा महावतार जी से क्रिया योग लेते पायलट बाबा को जानिए और अपने चिंतन को विराट व सटीक रूप दीजिए। अपनी धार्मिक मान्यताओं को सत्य दृष्टि व उदारता के गंगा जल में स्नान कराइये। हिमालय ने पृथ्वी के मानवों की समस्याओं का एक हल भेजा है (अनेक अमर महायोगियों के द्वारा) उस हल को जानिए, समझिए, और पहले स्वयं को नये रूप में निर्मित कीजिए फिर अपने नए उन्नत रूप से समाज, राष्ट्र व मानवता को नया रूप देने के अत्यंत आवश्यक कार्य में लगकर अपना मानव जीवन सफल कीजिए।

यह जानिए कि कैसे वे आत्मलीन पुरुष समाधिस्थ होकर ब्रह्माण्ड का अवलोकन कर रहे हैं और उनकी इस क्रिया के द्वारा पृथ्वी के मानवों को सृष्टि के ऐसे पहलुओं की जानकारी मिल रही है जो आज से पहले उपलब्ध नहीं थी। आप दर्शन कीजिए भगवान शिव के प्रकाश को समाहित कर उनके प्रतिनिधि बनते पायलट बाबा का, माँ भगवती और उनके आज्ञाकारी शेरों की संगत में साधना करते पायलट बाबा का, भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी, कबीर, गोरखनाथ जी, बनखंडी जी,

महावतार बाबा जी शांति माँ और अन्य अनेक महान आत्माओं के बीच उन सबका प्यारा, दुलारा बनते पायलट बाबा का आप दर्शन कीजिए, सूर्यमण्डल को भेदते पायलट बाबा का जिसको पहले मार्कण्डेय ऋषि व शुकदेव मुनि ही भेद पाये थे।

दर्शन कीजिए रामभक्त, हनुमान ज़ी का सानिध्य पाते पायलट बाबा का, जानिए कि कैसे वे छः महीने अश्वत्थामा के साथ रहे। सोचिए कैसे वे महान ऋषि अंगिरस की उम्मीद बन गए। जानिए किस तरह भारतीय वायु सेना के एक जांबाज पायलट को बचाने के लिए महान हरि बाबा को जहाज में ही प्रकट होना पड़ा। देखिए क़िस तरह उन्होंने अपना घर-सम्पत्ति, सामाजिक सम्मान का त्याग कर कठोर तपस्या के लिए खुद को हिमालय के अमर योगियों को जानने के सामने समर्पित कर दिया।

यदि आप को इन सब घटनाओं का विश्वास नहीं होता तो आपको निमंत्रण है, किसी भी तरह की जांच-पड़ताल का जैसाकि उन्होंने डॉक्टरों और वैज्ञानिकों को भी कह रखा है। ऐसा नहीं हैं कि उनके साथ सब पहले हो चुका है, अब कुछ नही हो रहा। आज भी वे मानव कल्याण के लिए समाधि ले रहे हैं और यदि आप उपरोक्त घटनाओं के विषय में विश्वास करते हैं तो धर्म के पथ पर आगे बढ़िए। हम आपको एक ऐसी जीवन कथा में प्रवेश करा रहे हैं जो जीवन शुरू तो हुआ है, लेकिन कभी खत्म नहीं होगा। आइये उनके मंगल-मधुर दिव्य जीवन का अध्ययन करें।

वे श्रीहरि जो सृष्टि के कण-कण में व्याप्त रहते हैं जो बिना हाथों के ही सब कार्य करते हैं और बिना कानों के सुनते हैं, वे परम पुरुष वैसे तो बिना प्रकट हुए ही पृथ्वी के मानवों की समस्याओं को सुलझा सकते हैं, लेकिन जीवन में माँ व गुरु की भूमिका की महिमा दिखाने के लिए वे विधिवत एक माँ का गर्भ चुनते हैं और जन्म के बाद गुरु धारण करने के बाद ही अपने लक्ष्य के लिए कार्य करते हैं वे ऐसा क्यों करते हैं? आखिर माँ, व गुरु में ऐसी क्या विशेषता है जो वे ऐसा करते हैं, इसका जवाब भी आपको परम आदरणीय बाबा जी की जीवन की घटनाओं में मिल जायेगा।

अनोखा बचपन

जिस वंश परम्परा में कभी वीर ऋषि विश्वामित्र ने जीवन धारण कर श्री राम जी को अच्छी धार्मिक व्यवस्था बनाने के लिए सहयोग दिया, जिस वंश में शांत, शक्ति भगवान बुद्ध ने जन्म लेकर पृथ्वी के मानवों को संतुलन व संतोषयुक्त बुद्धि का उपदेश देकर कृतार्थ किया। जिस वंश मे वीर कुंवर सिह जैसे योद्धा ने जन्म लेकर अंग्रेजों से अपना लोहा मनवाया था उसी महान वंश परम्परा को बाबा जी ने अपने जन्म के लिए चुना।

भारत की जिस भूमि को हम आज बिहार के नाम से जानते हैं उसी बिहार के सासाराम जिले के बिशनपुरा गांव में पिता चन्द्रमा प्रसाद सिंह व माता-राज तपेश्वरी देवी के यहां छोटे पुत्र के रूप में १५ जुलाई १९३८ को जन्म लिया। माता-पिता ने प्रेम का नाम लल्लन रखा और स्कूली शिक्षा के समय कपिल सिंह नाम रखा गया।

राजघराने में जन्म लेने के कारण इनको धन सम्पत्ति-मान-सम्मान विरासत में मिला। इसलिए इनका बचपन सुविधाओं और जरूरी साजों समान के साथ बीता। साहस, वीरता, देश भक्ति इनको इनके पिता से प्राप्त हुई। जो अपने क्रांतिकारी विचारों को कार्य रूप देने के लिए आजाद हिन्द फौज में शामिल होकर सुभाष चन्द्र बोस के अच्छे सहयोगी बन गये। इनके पिता से अच्छे लगाव की वजह से सुभाष चन्द्र बोस कई बार इनके घर आये। हालांकि बाबा जी जब बहुत ही छोटे थे। लेकिन प्रकृति तो जैसे महान देशभक्त सुभाषचन्द्र बोस का दर्शन लाभ कराकर बाबा जी का भविष्य तय करना चाहती थी।

धर्म-भक्ति-ज्ञान इनको इनकी माता से मिला जो अपने नाम के ही बिलकुल अनुरूप थी। राजतपेश्वरी देवी राज घराने की बहू होते हुए भी वे तपस्या और शिव भक्ति में ही लीन रहती थी।

अब चूंकि भारत आजाद हो चुका था। इसलिए स्वाधीनता सेनानी होने के कारण इनके पिता को सम्मान व राजनीतिक पद प्राप्त होने लगे। प्राचीन इतिहास में इनका परिवार कभी भी मुस्लिम शासकों के दबाब में नही आया। माँ गंगा से आशीर्वाद लेकर इनके पूर्वज मुसलमान शासकों से जूझते रहकर अपनी स्वतंत्रता बरकरार बनाए हुए थे। वैसा ही नया उदाहरण इनके पिता ने अंग्रेजों को भारत से भगाने में भूमिका अदा कर

पेश किया।

महल जायदाद सम्पत्ति तो थी ही अब नई व्यवस्था में उनको राजनीतिक पद भी प्राप्त हो गये तो वे भी अपने अच्छे कर्मों मान-सम्मान के परिणाम से जो स्थिति बनी उसी को भोगने में लग गये। इस वजह से ही इनकी माता जी उपेक्षित होकर 'ईश्वर चिंतन और शिव भक्ति की तरफ ही सारा ध्यान देने लगी।

इस माहौल में बाबा जी का बचपन एक ऐसे बच्चे के रूप में विकसित होने लगा जो स्वाभिमानी है, सबके साथ भी रहता है, लेकिन रूखा है। बाहर अहम जिसमें भरा हुआ है, लेकिन अंदर नम्रता और दया भी है जो राजसी वैभव का सुख भी ले रहा है। लेकिन अनासक्त भी रहता है बचपन से ही।

कोई भी धर्म अपने इतिहास पर टिका होता है। इतिहास साहित्य में दर्ज होता है। हमारा गौरवशाली इतिहास हमारे शास्त्रों में समाया हुआ है। भक्तिपूर्ण यौगिक और वैज्ञानिक तरीके से और हमारे अधिकांश शास्त्र हिमालय में दिव्य शक्तियों के द्वारा रचे गये हैं। इसलिए भारत के सामाजिक, राजनीति व धार्मिक जीवन में हिमालय का बहुत योगदान है। हिमालय की शांत प्राकृतिक रूप से अति सुन्दर व एकान्तिक गुफाओं और कन्दराओं में अनेक योगी, ईश्वर प्रेमी सदियों से समाधिस्थ और तपस्यारत हैं। वे मानवीय विकास की सर्वोच्च पराकाष्ठा के उदारहण हैं उनकी वजह से ही हिमालय पृथ्वी का सिद्धलोक बना हुआ है। आप स्वयं देखिए जो हिमालय गंगा जैसी पवित्र जलवाली नदी को भारत के मैदानी क्षेत्र में भेजता है। वह अंदर से स्वयं कितना पवित्र, महान और अलौकिक क्षमताओं को धारण करने वाला एक पर्वत होगा। ऐसा क्यों हुआ कि हिमालय योगियों और भक्तों का मनपसंद स्थान बन गया, क्योंकि वहां पर परम वैष्णव श्रीहरि के सर्वोच्च महान भक्त-महायोगेश्वर भगवान शिव अपने शिवलोक को छोड़कर हिमालय में कैलाश पर्वत की अति गुप्त गुफा में श्रीहरि प्रेम में समाधिस्थ रहकर साक्षात निवास करते हैं।

इनकी दिव्य लीलाओं में महान प्रेम की झलक देखने को मिलती है। वे परमात्मा जो अजन्मा हैं, अखंड हैं, अजर हैं, अमर हैं, सर्वव्यापी हैं और श्रीहरि नाम से जाने जाते हैं। जब वे राक्षसी शक्तियों का अंत करने के लिए अयोध्या में श्रीराम बनकर प्रकट होते हैं तो कैलाश पर्वत की

अपनी गुफा में समाधि तोड़कर भगवान शिव अपने प्रभु श्रीराम जी के बालक रूप को देखने के लिए अयोध्या में साधु का भेष बनाकर भंडारा खाने पहुंच जाते हैं। श्री राम उन्हें पहचान कर विशेष आनंदित होते हैं। वे ही परमात्मा जब श्रीकृष्ण बनकर लीला करने पृथ्वी पर आते हैं तो भगवान शिव उनके बाल रूप दर्शन की लालसा लिए माँ यशोदा के दरवाजे पर भिक्षां देहि की अलख जगा देते हैं। श्री कृष्ण भी अपने भगवान को देखकर बहुत प्रसन्न और संतुष्ट होते हैं। अब इनमें कौन भक्त और कौन भगवान है, श्रीहरि बड़े या हर छोटे हैं, (हर बड़े या हरि छोटे है) इनमें से कौन क्या है यह पता लगाना तो बड़ा ही कठिन है, क्योंकि दोनों ही एक दूसरे को अपना मालिक बनाए हुए हैं। हम तो हरि और हर के आपसी समन्वय से प्रेम की शिक्षा लेने में ही अपनी भलाई मानते हैं; क्योंकि ये दोनों परम शक्तियां साकार रूप में दृश्य जगत में प्रेम के सर्वोच्च्य उदाहरण हैं। एक परमशांतिमय और एक जटिल लीलामय। ये दोनों ही एक दूसरे की मांग और पूर्ति हैं।

अब चूंकि हिमालय के योगियों व संतों के केन्द्र भगवान शिव ही हैं, इसलिए जैसी लीला भगवान शिव श्रीहरि के साथ करते हैं वैसी सेवा, लीला सुरक्षा, उपयोगिता हिमालय के योगी व संत भी करते हैं। जब कोई उनका शिष्य या गुरुभाई या स्वयं कभी-कभी गुरु ही सार्वजनिक जीवन में साधारण मानव के कर्म फल भोग में सहायता के लिए भारत में कहीं जन्म लेता है तो वैसे ही एक योगी संत हैं परम पूज्य हरि बाबा वे सच्चे संत हैं, सच्चे संत से अर्थ है जो सिर्फ एक अच्छा वक्ता ही न हो सिर्फ भावुक कथावाचक ही न हो, सिर्फ दार्शनिक ही न हो या सिर्फ आचार्य ही न हो बल्कि जो प्रकृति और परमात्मा के साथ एकाकार होकर, आत्मदर्शन करके सदा-सदा के लिए ईश्वर का सहयोगी बन गया हो। जो हवा में हवा हो जाये और जल में जल, जो मिट्टी में मिट्टी बन जाये और अग्नि में अग्नि और जो आकाश में आकाश बनकर गमन कर सके, मानवता के लिए जरूरत पड़ने पर। एक बालक जो पिता के प्रेम से वंचित है और माता की तपस्या से अचंभित है, जो भाईयों और साथियों के साथ रहते हुए भी ज्यादा घुलमिल नहीं पाता है और अपना एक अलग ही भाव बनाए रखता है जो खिड़की से बाहर आकाश से न जाने क्या सवाल पूछकर जवाब के इंतजार में घंटों अकेला बैठा रहता है।



हिमालय से मानवता के लिए संदेश प्राप्त करते बाबा जी



मानव जगत में प्रेम का आदान प्रदान कर
समाधि में प्रवेश करते बाबा जी

इनसे खेलने लगे तो माता राज तपेश्वरी को लगा कि अब सब कुछ ठीक हो जायेगा। काफी देर लाड़-प्यार-दुलार करके हरि बाबा चले गये। इसके बाद कपिल बिलकुल स्वस्थ हो गये और जीवन को आगे बढ़ाने के लिए शिक्षा पूरी करने दार्जिलिंग चले गये।

अब हरि बाबा इनको नदी, पहाड़, पर्वत, प्रकृति से ही अपने प्रेम की पूर्ति की शिक्षा देने लगे इससे कपिल स्वयं के प्रति गंभीर रहने लगे। चिंतन के परिणाम मे इनको ज्ञान जागृत होने लगा। क्या ये सब एक दिन छूट जाएगा। क्या सब कुछ को ऐसे ही छोडकर मैं मर जाउंगा। क्या मृत्यु से बचने का कोई उपाय है।दार्जिलिंग में एक दिन लक्ष्मी और कई साथियों के साथ सुबह-सुबह ये टाईगर टाप नाम की पहाड़ी पर भ्रमण के लिए गये। जैसा कि अक्सर होता था वहां भी हरि बाबा इनके साथ थे। सब सूर्योदय का आनन्द ले रहे थे। अचानक कपिल ने हरि बाबा से पूछा, बाबा क्या मृत्यु से बचने का कोई उपाय है। वातावरण से विपरीत सवाल सुनकर सब हैरान से हो गये। कपिल स्वयं भी सोचने लगे कि मुझसे कुछ गलती हो गई क्या? लेकिन सवाल तो बहुत ही अच्छा था—ऐसे सवालों की स्थिति का तो हरि बाबा इंतजार ही कर रहे थे।

हरि बाबा बोले हां बेटा है—हिमालय की गुफाओं में तपस्या। आदमी नहीं मरता बेटा, उसका कर्म ही उसे मारता है। कर्म का, इच्छा का, संकल्प का, संस्कार का धनी बनो बेटा। ऐसा कहते हुए हरि बाबा ने कपिल को पहाड़ी पर से धक्का दे दिया। वे ढलान पर लुढ़कने लगे। सब घबरा गये—लक्ष्मी रोने लगी। कपिल नीचे गिरते जा रहे हैं, लेकिन वे देखते हैं कोई दो हाथ उनको सुरक्षा दे रहे थे। हरि बाबा उनके साथ-साथ उड़ते हुए चल रहे थे। जहां ढलान खत्म थी वहा पहुंचकर कपिल रूक गये। वे काफी ऊंचाई से गिराये गये थे। कपड़े सब फट गये, लेकिन शरीर में कहीं भी कोई चोट या खरोंच तक नहीं थी। सब साथी घबराते हुए ऊपर से नीचे आ गये—लक्ष्मी भी हरि बाबा से आकर लड़ने लगी। लेकिन हरि बाबा तो अपना कार्य कर चुके थे, उन्होंने मृत्यु का भय कपिल के मन से निकाल दिया और हिमालय की कन्दराओं में तपस्या की इच्छा का बीजारोपण कपिल के ह्रदय में कर दिया।

जीवन की प्रत्येक कठिनाई में उलझनों में हरि बाबा से प्रेम व सुरक्षा लेते, साथियों के साथ जंगल व पहाड़ों में बेफिक्र घूमते-फिरते व लक्ष्मी

के साथ भविष्य का ताना-बाना बुनते दार्जिलिंग में स्कूली शिक्षा पूरी हो गई तो पटना में बी.एस.सी. में दाखिला लिया। पटना में एक बार ये छात्रों का नेतृत्व कर रहे थे कि उस समारोह में तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू जी मुख्य अतिथि थे। नेहरू जी ने इनके कंधे पर हाथ रखकर कहा–आप लोग विज्ञान के छात्र हो, राष्ट्र को आपकी जरूरत है। अंतरिक्ष आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। नेहरू जी ने सबका सहारा लेकर यह बात कपिल के लिए कही जो कि एक रहस्यमयी व सारगर्भित बात थी। जिसे वहां कोई नहीं समझ पाया। नेहरू जी का ऐसे बोलना कपिल को कुछ सूचना देना था या उनसे कुछ प्रार्थना थी या आदेश था या कपिल के भविष्य का निरूपण, यह अभी वहां किसी को पता नही था, लेकिन वक्त के पास से सब घटनायें सुरक्षित थीं। पटना विश्वविद्यालय से बी.एस.सी व बनारस से एम.एस.सी. कर अपनी शिक्षा पूरी की।

इसके बाद लक्ष्मी के साथ सुखमय जीवन की तलाश में यूरोप चले गये। वहां हर चौराहे पर हरि बाबा मिल जाते। कभी पेरिस की सड़कों पर, कभी म्यूनिख के क्लब में सूट पहने हुए। लक्ष्मी उन्हें देखकर निराश हो जाती उसे लगता कि हरि बाबा कपिल को उससे छीन लेंगे। हरि बाबा ने लक्ष्मी को समझाया, बेटा मैं वही करता हूं जो मुझे करना चाहिए। तुम दोनों अपने-अपने रास्ते पर चलते रहो, जिसका जैसा संस्कार होगा उसको वैसा ही रास्ता मिलेगा। कपिल विदेश में नहीं टिक सके, भारत आ गये।

वक्त ने करवट ली और संस्कारों को मूर्त रूप देना शुरू किया। कपिल की रूचि जहां पहले जंगलों में घूमना, घुड़सवारी करना, शिकार करना था, लेकिन हवा में जहाज उड़ाना उनका अब प्रिय शौक बन गया। नए-नए जहाजों को उड़ाने व अपने राष्ट्र-प्रेम की अपनी भूमिका निभाने के लिए एक राजघराने का कुँवर वायु सेना में भर्ती हो गया। जहां एक पायलट के रूप में भविष्य इनकी वीरता को परखने की राह देख रहा था।

साहसिक युवावस्था

वीरता मानव के सर्वोच्च कर्मों में से एक है। वीर पुरूष ही मानव जाति को सही दिशा देते हैं और जीवन को जीने लायक बनाते हैं। वीर होना इस बात का प्रमाण है कि यह व्यक्ति शरीर से, मन से, बुद्धि से विकसित है। हृदय आदि सब सही कार्य कर रहे हैं। नस-नाडियों ६ ामनियों मे बहने वाला रक्त निर्माण व प्रवाह सही हो रहा है, शरीर की आवश्यक धातुएं अपने सही रूप में है। वीर पुरुष स्वास्थ्य, बल, अनासक्ति का एक बेहतरीन उदाहरण होता है यह वीरता जब बाहर कार्य करती है तो व्यक्ति को बहादुर व युद्ध विजेता बनाती है और जब अंदर कार्य करती है तो व्यक्ति को वैराग्य दिलाकर, इन्द्रियों पर संयम करके, ध्यान, शांति ईश्वर दर्शन व समाधि कराती है। अभी कपिल के जीवन में बाहरी वीरता अपनी भूमिका निभा रही थी। कुशलता, एकाग्रता, लगन, आनन्द संकल्प ये सब साहस व वीरता के परिणाम हैं।

अब कपिल का पूरा ध्यान जहाज उड़ाने के अच्छे अभ्यास पर ही था। जैसा कि इनका स्वभाव ही था। एक बार में एक ही काम में स्वयं को पूरी तरह झोंक देना और उसी में लीन हो जाना। अतंतः वे एक कुशल पायलट के रूप में तैयार हो गए। इनका स्वभाव व आचरण देखकर साथियों को और अफसरों को इनके अंदर जरूरत पड़ने पर कुछ भी कर सकने की क्षमताओं का आभास होता था।

घटना सन् १९६१ की है। सरदार पटेल पांच सौ से अधिक रियासतों को राष्ट्र के लिए समर्पित करा कर परलोक गमन कर चुके थे, लेकिन गोवा अभी पराधीन ही था। गोवा को मुक्त कराने के लिए भारतीय सेना, वायु सेना सहित गोवा में डेरा डाले हुई थी। विदेशी सत्ता के सैनिक व प्रशासनिक अधिकारियों ने एक चर्च की शरण ले ली। युद्ध का यह रूप भारतीय सेना के लिए गोवा विजय में समस्या बन गया। स्थिति स्थिर ही बनी रही। कपिल आफिसर मेस में खाना खा रहे थे। कपिल को प्लेट में ही विदेशियों की शक्ल दिखने लगी। राष्ट्र के लिए कुछ भी कर दूंगा ऐसा भाव हो गया। उन्होंने प्लेट को एक तरफ रख दिया। तत्परता के साथ एक वायु सैनिक को जहाज तैयार करने को बोला और जल्दी से वर्दी पहनकर उसे संभाल लिया। जहाज को आकाश में चर्च के ऊपर ले

जाकर दुश्मनों को चेतावनी दी, लेकिन कोई असर नहीं हुआ तो चर्च के एक कोने में बम गिरा दिया। विदेशी डर गए, चर्च से सफेद झंडा दिखाकर समर्पण कर दिया। स्थल सेना भी हरकत में आ चुकी थी उन्होंने कब्जा ले लिया और कपिल को सफलता का सिग्नल दे दिया। जहाज को अपने स्थान पर खड़ा करके बारह मिनट में आकर अपनी खाने की प्लेट को उठाकर भोजन करने लगे। सूचनातंत्रों से गोवा पर भारतीय सेना की विजय का समाचार प्रसारण होने लगा तो उच्च अधिकारी हक्के-बक्के रह गये कि उन्होंने तो अभी कोई आर्डर ही नहीं दिया। तो ये विजय कैसे हो गई। अचानक उनका ध्यान कपिल पर गया तो उनको लगा कि इस व्यक्ति के बारे में जो अनुमान लगाए जाते थे, वे सही थे। यह राष्ट्र के लिए जरूरत पड़ने पर कुछ भी कर सकता है, ऐसा तो यही कर सकता है।

बाद में चीन व पाकिस्तान के साथ युद्ध में भी उन्होंने कुछ साहसिक घटनाओं को अंजाम दिया। पाकिस्तान में तो ये खौफ बनकर छाये हुए थे; क्योंकि ये मकानों के बहुत नजदीक से उड़ान भरकें उनको डरा देते थे। पाकिस्तान में ये एक काफिर पायलट के रूप में चर्चित थे। इनकी वीरता, साहस, कौशल व सफलता का गुणगान होने लगा। शौर्य चक्र व वीर चक्र से विभूषित किए गए। अविश्वसनीय कार्यों में सफलता पाकर ये भारतीय वायु सेना के इतिहास का एक अच्छा हिस्सा बन गए। 'ग्लोरी इन द एअर'' नामक पुस्तक में इनके कारनामों को जगह मिली। ये भारत के भावी वीरों व युवाओं के हीरो बन गए।

वे महात्मा जो कपिल के जीवन में परमात्मा जैसी भूमिका संभाले हुए थे। वे संत जिनका हम बार-बार हरि बाबा के नाम से जिक्र कर रहे हैं, तब तक कपिल को उनका नाम तक पता नहीं था। वे तो सिर्फ यही जानते थे जब कोई कठिनाई या आफत उनके ऊपर आती है तो एक बाबा जैसा दिखने वाला योगी विभिन्न रूप लेकर उनकी सुरक्षा करता हैं। सिर्फ दो रुपये मांगकर। जब भी कपिल के कानों में 'दो रुपया दे दो' की आवाज पहुंचती है तो उन्हें अपने आसपास कुछ होने का आभास होने लगता है। इधर हरि बाबा काफी दिनों से नहीं मिले थे। इसलिए कपिल को उनकी याद आने लगी। कुछ अनमने होकर उन्होंने घर जाने का निश्चय किया, लेकिन छुट्टियां नहीं मिली। कुछ नयापन महसूस करने

के लिए जीप लेकर शहर की ओर चल दिए, लेकिन मौसम खराब था रास्ता साफ दिखाई नहीं दे रहा था। मानसिक रूप से जो मौसम सुहावना होता है। व्यवहारिक रूप से वह खराब होता है। घना कोहरा चारो तरफ छाया था। अचानक विशेष जोन टाइगर ब्रिज के पास इनकी जीप टकरा गई और पीछे की ओर चलने लगी। पीछे हजारों फीट गहरी खाई थी और खाई में एक नाले का पानी बह रहा था।

जीप खाई में गिरकर नाले में बह गई। कपिल भी गिरते जा रहे थे, लेकिन किन्हीं दो हाथों ने उनको जीप में से निकालकर एक फूल की तरह सड़क पर खड़ा कर दिया। काफी भीड़ इकट्ठी हो गई एक ऐसे भाग्यशाली को देखने के लिए जिसे अभी एक साधु ने अविश्वसनीय रूप से मौत के मुंह से निकाला था और जो अपना कार्य करके गायब हो चुका था। वायु सेना के अधिकारी व यार दोस्त सभी आ गए कुछ शाबाशी देने लगे और कुछ बधाई, लेकिन कपिल की आंखें जिसे ढूंढ रही थी वह वहां नहीं था। इस बार हरि बाबा बिना दो रुपये लिए ही चले गये थे। उदास मन और भी उलझ गया। इसी बीच छुट्टियां मिली तो घर आ गए।

घर आकर माता-पिता, भाई-बहन रिश्तेदारों के बीच रहकर जीवन का आनन्द खोजने का प्रयास करने लगे। कुछ दिन तक सब ठीक लगा। फिर मन उचटने लगा। पिता राजभोग में व्यस्त थे। माता भक्ति में लीन थी। भाई, धन-संपत्ति, मान-सम्मान के विस्तर में खुद को उलझाए हुए थे। वैसे बहनें-भाई व माता-पिता सभी कपिल को बहुत ही सम्मान और दुलार देते थे। लेकिन उनकी ऊर्जा एक घर में ही समा कर नहीं ठहर सकती थी। उनकी रूचि व्यापक थी, लेकिन पनपने के लिए समय का इंतजार कर रही थी।

अब वे दोस्तो में ज्यादा समय बिताने लगे। क्षत्रिय परिवारिक पृष्ठभूमि व कुछ जवानी की शक्ति की धधक तो अब यार दोस्तो के साथ जंगल में जानवरों के शिकार में काफी समय बिताने लगे। प्राकृतिक सौंदर्य देखकर जहां उनका मन राहत महसूस करता था। वही जंगली जानवर देखते ही उनका अहम जाग जाता और वे शिकार कर देते। जंगल में उनका प्रवेश हिसंक जानवरों के लिए एक चुनौती होता था। हरिद्वार में चंडी का जंगल, नीलकंठ का जंगल, नेफा, काजीरंगा व हजारीबाग के बीहड़ जंगलों में शिकार के पीछे दौड़ते रहे।

सब कुछ होते हुए भी अकेलापन महसूस करना यही वजह उन्हें जंगल की ओर भगाती थी। हफ्तों महीनों का सामान ले जाते और अपनी सारी छुट्टियां ग्वालियर, रोहतक, पूना,रायगढ़, नेपाल के जंगलों में बिता देते थे, जो भी करते थे, पूरा ही करते थे।

एक दिन अपने कुछ साथियों के साथ कैमूर की घाटी में शिकार के लिए गये। पर्वतों और घाटियों में भटकते हुए कई दिन बीत गए, लेकिन कोई अच्छा शिकार हाथ नहीं आया। तब कपिल बीहड़ जंगल में प्रवेश कर गए। साथी सब पीछे छूट गए। राइफल हाथ में लिए अपनी ही धुन में जंगल में बढ़ते रहे और काफी दूर निकल गए जब अंधेरा कुछ बढ़ने लगा तो रूक गए। वही जंगल जो दिन में हरा-भरा सुंदर दिखता है वही रात होते ही भयानक हो जाता है। कैंप काफी पीछे था समय से पहुंचने के लिए वापिस मुड़ गए। अभी कुछ ही दूर लौटे थे कि झाड़ियों की ओट में एक बाघ चलता दिखाई देया। कपिल उसकी तरफ लपके तो वह भागने लगा। वह रह-रह कर इन्हें देखता था और राइफल लेकर अपने पीछे भागने के लिए आकर्षित कर रहा था। वह चाहता तो भाग जाता, लेकिन वह कपिल और अपने बीच कुछ ही दूरी रखकर तेज चल रहा था कुछ देर तक ऐसा चलता रहा। मौका देखते ही कपिल ने गोली चला दी। गोली बाघ के पिछले पैर चलाई गई थी, ठीक वहीं लगी। कहीं न कहीं जाकर मर जायेगा इस उम्मीद में कपिल पीछे चलने लगे। अगला वार करने के लिए कपिल ने दोबारा राइफल को उठाया तो बाघ एक कन्दरा में घुस गया। जब कपिल वहां पहुंचे तो उन्होंने देखा कि वह एक बड़ी गुफा थी। गुफा के दरवाजे से प्रकाश आ रहा था। ये गुफा में प्रवेश कर गए। सामने से प्रकाश किरणें निकल कर गुफा को प्रकाशित कर रही थीं। गुफा के मध्य एक महात्मा बैठे थे। वे अपना दाहिना पैर सहला रहे थे उनके पैर से खून टपक रहा था। उनकी जटाएं लम्बी-लम्बी थी और आंखें जल रहीं थीं। कपिल राइफल लिए विस्मय और दुखद अफसोस के साथ गुफा में खड़े थे।

कपिल को मौन देखकर बाबा बोले अब मारते क्यों नहीं? क्या फर्क है बाघ में और मुझ में? वह भी जीव है मैं भी जीव हूं। वह जानवर है, मैं आदमी हूं पर हम दोनों प्राणी है। तुम्हें शिकार खेलने की भूख है। तुम आज तक जानवरों का शिकार कर रहे हो, कल आदमी का शिकार कर

सकते हो। उस बाघ की तरह मुझ पर गोली क्यों नहीं चलाते। आदमी से हमदर्दी क्यों? आदमी तो सबसे खतरनाक जानवर है। फर्क तो केवल तुम लोगों ने बनाया है। जंगल के ये जानवर तुम्हें क्या कष्ट दे रहे हैं। वे कुछ मांग नहीं रहे हैं। तुमसे कोई शिकायत नहीं कर रहे हैं, फिर भी तुम उन्हें मार रहे हो। जो कुछ व्यक्त नहीं करते, अपने विचारों को कह नहीं सकते। इन विवश असहाय जीवों को मारकर तुम्हें क्या मिलेगा। जो तुम्हें विनाश की ओर ले जा रहा है। अराजकता और व्यभिचार का शिकार करो। आदमी को जीने को कहो। हिंसा और अत्याचार को मिटाओ। अहिंसा को जीने का मार्ग दो। लूट-पाट का शिकार करो जो समाज को दूषित कर रहा है। जो आदमी कौमी झगड़े फैलाकर आदमी को गुमराह कर रहा है, दंगा-फसाद फैला रहा है, उसका शिकार क्यों नहीं करते। इन जंगलों में स्वतंत्र विचरण करने वाले जानवरों का शिकार कर अपने अहंकार को जिंदा रख रहे हो।

उन आदमियों के मन को गोली मारो जो अपने स्वार्थ के लिए लाखों का कत्ल करा रहे हैं, जमाखोरी कर भूखा मरने के लिए मजबूर कर रहे हैं, महंगाई को आसमान तक चढ़ा रहे हैं। अगर तुम्हें जंगल के इन जानवरों को मारकर आराम मिलता है या मन को शांति मिलती है तो मैं भी जंगल का एक जानवर हूं। तुम मुझे क्यों नहीं मारते।

कपिल अवाक होकर बाबा की बातें सुन रहे थे। एक अनोखा सम्मोहन उनकी वाणी में था। एक महान तेज से उनका चेहरा चमक रहा था। उनके तेज में न जलन थी न शीतलता उसमें आकर्षण था, खिंचाव था, आवश्यकता थी। कपिल राइफल फेंक कर बाबा के पैरों में गिरकर फूट-फूट कर रो पड़े। उनके जीवन का यह पहला अवसर था जब वे स्वयं को रोते देख रहे थे। वे प्रायश्चित के गहरे सागर में खो गये। अहम टूट गया था और प्रेम की धारा बनकर आंखों से बह रहा था। बाबा ने अपने घाव को भुला दिया और कपिल का सिर सहलाने लगे। काफी देर तक बाबा के चरणों में शांतचित्त होकर पड़े रहे। कपिल बैठे तो देखा कि बाबा मुस्कुरा रहे थे। उनकी मुस्कान में अद्भुत तेज व आकर्षण था। दुनिया के सभी तरह के प्रेम को समेट कर बाबा बैठे हुए थे। पैर का घाव मिट गया था। कपिल कभी बाबा को और कभी उनके पैर को देख रहे थे।

बाबा रह-रह कर मुस्कुरा रहे थे। फिर मधुर वचन बोले—बेटा संयोग से ही यह होता है। बिना संस्कार के संयोग का निर्माण नहीं होता। आदमी कर्म करता है पर संस्कारों से सम्बधित संयोग ही घटनाक्रम का निर्माण करता है। सब ईश्वरमय है। हम सब तो मात्र निमित हैं। प्रकृति द्वारा प्रायोजित इस संसार के भोक्ता है। तुम चाहो या न चाहो पर जो होना है वह होकर रहेगा। जीव कितने समय तक अपने आप को उलझा कर रख सकता है। वह प्रकृति द्वारा उपार्जित बंधन से मुक्त होने को सत्त प्रयत्नशील है।

आश्चर्य जनक लीला करके, मंगलमय उपदेश देकर, प्रेम और समर्पण का आदान-प्रदान करके, कपिल के साहस व वीरता को आंतरिक मोड़ देकर वे महान बाबा इनको कैम्प तक छोड़कर चले गये। धन्य हैं वे महान संत, जो मानव के विकास के लिए सदियों तक इंतजार करते हैं और मानव जीवन की एक-एक कमी को ढूढ़ँकर उसको दूर करने के उपाय बताते हैं। उनकी क्षमताएं अपार हैं। उनका प्रेम अनंत है, उनका ज्ञान ठोस है, उनकी नम्रता स्थाई है। उनका अहम् शून्य है, उनकी शक्ति और ईश्वर की शक्ति एकाकार है। ऐसे ही संतों और भक्तों के लिए भगवान श्री कृष्ण कहते हैं ''हे अर्जुन मैं अपने भक्तों के हृदय में निवास करता हूं और मेरा भक्त मेरे हृदय में निवास करता है।

संत तो अपनी भूमिका निभा कर वक्त का इंतजार कर रहे थे, लेकिन भविष्य के महायोगी कपिल को अभी बहुत से संस्कारों से कर्मो से, भोगों से, बंधनों से स्वयं को बचाना बाकी था। लक्ष्मी से प्रेम प्रसंग परिवार में व समाज में चर्चा का विषय था। लक्ष्मी अपनी सम्पूर्ण दौलत के साथ कपिल के चरणों में स्थान मांग रही थी। कपिल भी साथ बिताए गए सुखद क्षणों में किए गए वायदों को पूरा करना चाहते थे। माता को रोता छोड़कर, पित्ता को उदास करके, भाई की भींगी आंखों से विदाई लेकर गोहाटी डयूटी पर हाजिर हो गए। लक्ष्मी भी अपने पिताजी को लेकर वहीं आ गई। वह अपने भविष्य को निश्चित करना चाहती थी। कपिल भी तैयार थे। दोनों ने मिलकर चाबुआ के पास ही एक चाय बागान खरीद लिया। जिसमें एक छोटा सा पाइपर यान भी था। लक्ष्मी को लेखन में रूचि थी उसने बागान में एक प्रेस भी खोल दिया।

लेकिन जिस प्रकार कपिल और दुर्घटनाओं के बीच में हरि बाबा खड़े होते थे, उसी प्रकार लक्ष्मी और कपिल के बीच में भी हरि बाबा थे। कपिल भी अब हरि बाबा के अस्तित्व से परिचित होने लग गये थे। इध ार कपिल को कुछ दिव्य अनुभव होने लगे। कपिल समझ नहीं पाते थे कि यह सब क्या हो रहा है। हरि बाबा ने बताया कि तुम्हें भविष्य की घटनाएं दिखने लग गई हैं। उन्हें दिखा कि एलिफेंट फाल्स के पास के पाम पेड़ों से टकराकर जहाज गिर रहा है। कपिल ने अपने दोस्तों और अधि ाकारियों को सतर्क कर दिया, लेकिन वे उनका मजाक उड़ाने लगे और दिमाग चैक कराने की सलाह देने लगे। आधुनिक विकास का सभ्य अहंकार जीवन को सम्पूर्ण रूप में समझने ही कहां देता है। दूसरे दिन विमान एलिफेंट फाल्स के पेड़ों से टकराकर गिर गया और जल कर राख हो गया। जो उनका मज़ाक उड़ा रहा था, उसे मौत ने अफसोस का भी मौका नहीं दिया।

कभी कपिल को भविष्य की दुर्घटना दिख जाती तो कभी हरि बाबा आकर बता जाते कि इस दिन इस फ्लाइट को कैंसल कर दो। कपिल ने अपने दोस्त मार्टन को बताया कि आप हासीमारा की फ्लाइट छोड़ दो। वह नहीं माना तो उसकी पत्नी को भी बताया। पत्नी ने भी व्यंग्य कसा। मार्टन चला गया। हासीमारा लैंड करने के पूर्व ही केश हो गया। मार्टन का शरीर टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया। मार्टन के शरीर के मांस के हिस्से इकट्ठा कर लाए गए तो उसकी पत्नी कपिल को देखकर रोने लगी; क्योंकि मार्टन के शरीर के टुकड़े, मांस के लोथड़े, पत्नी द्वारा किए गए व्यंग्य का जवाब मांग रहे थे, लेकिन उसके पास अब आंसू और दुख के सिवाय कुछ न था। लक्ष्मी मार्टन की पत्नी को सांत्वना दे रही थी।

लेकिन वो स्वयं अंदर तक डर गई थी। वह सोच रही थी यह क्या जीवन है? एक ओर गगन की छाती चीर उड़ने वाला पौरुष, दूसरी और ऐसी मिट्टी पलीत। कल का हंसता हुआ चेहरा आज कितना डरावना हो गया। लक्ष्मी कपिल के लिए चिंतित रहने लगी। वह फ्लाइंग छोड़ने के लिए दबाव देने लगी। प्रत्येक जीव अपने भविष्य से अंजान अपने सुख व सुरक्षा का हर संभव प्रयास करता ही है। लक्ष्मी बोली रोमांचक जीवन बहुत जी लिए अब इसे छोड़ो। हम अपना निजी प्लेन भी बेच देते हैं।

हमारे लिए कमी क्या है जो तुम नौकरी करो। तुम जितना कमाते हो उससे कई गुणा ज्यादा तो हर महीने बांट देते हो।

लक्ष्मी तर्क पर तर्क कर रही थी। तभी कपिल को किसी स्पेशल उड़ान का बुलावा आया वे तुरंत तैयार होकर जाने लगे तो लक्ष्मी रोने लगी। नारियों के आंसू भी उनकी आंखों के पलकों के नीचे ही रखे रहते हैं जो पलक की थोड़ी गति बदलते ही बाहर आ जाते हैं। कपिल आंसुओं को अनावश्यक जानकर आवश्यक अंदाज में बोले—आदमी केवल एक बार मरता है, बार-बार नहीं। लक्ष्मी बार-बार मरने से ऐसी मौत बेहतर है जो देश के लिए हो। एक तो क्या हजारों प्रेमिकाओं को मैं ठुकरा सकता हूं यदि मुझे देश के लिए मरना पड़े। एक सुहाग को मिटाकर अगर हजारों बहनों के सुहाग की रक्षा हो सकती है तो यह कुर्बानी हमें और तुम्हें देनी ही होगी। सभी अपनी-अपनी मां की प्यारी संतान हैं। सभी को जाना पड़ेगा। ऐसे चाहे वैसे, पर यह मत सोचो कि मैं चला जाऊंगा। पगली अभी तो मेरे जीवन के वे दिन आए ही नही, जहां मुझे कुछ करना है। मैं तो अभी रास्ते में ही हूं। फिर भी अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने को मिटा दूंगा पर झुकुंगा नहीं।

कपिल के जीवन की स्थिति और हालात बार-बार हरि बाबा की जरूरत महसूस कराने लगते थे। वे आये और दो रुपये लेकर जाने से पहले लक्ष्मी से कह गये, अभी वह समय नहीं आया है जो तुम दोनों जीवन को बांध कर जीना चाहते हो। लक्ष्मी अपने आप को वक्त के हाथ छोड़ दो। समय सब कुछ कराएगा। इसे किसी बात के लिए मजबूर मत करना जो जीवन को हार में बदल दे। आदमी केवल वैभव और शादी करके संतान पैदा करने के लिए नहीं आता। उसका कुछ और कर्तव्य भी होता है। जिसे वह भुला देता है। तुम दोनों वक्त के साथ-साथ चलो। वक्त तुम दोनों को रास्ता बताएगा। तुम इसे बहुत अधिक प्यार करती हो, पर यह शरीर तो नश्वर है, यह कब तक साथ देगा। प्यार उस आत्मा से करो जो अमर है। न जाने जीवन का कौन सा मोड़ तुम लोगों के रास्ते बदल दे। आदमी तो यहां कुछ करने आता है, पर आदमी-आदमी से भोग, शादी, प्यार करने लगता है। नश्वर वस्तुओं में गुमराह रहता है। तुम भी वही कर रही हो। पर सत्य यही है कि तुम आत्मा से प्यार करो, जो शाश्वत है।

फ्लाइट लेकर कपिल जोरहाट आ गए। एक दिन नेफा की घाटियों के ऊपर उड़ रहे थे। अचानक विमान में कुछ गड़बड़ी महसूस हुई। विमान धीरे-धीरे ऊंचाई छोड़कर नीचे की ओर बैठ रहा था। ए.टी.सी. से संबंध टूट गया। सब प्रयास बेकार जा रहे थे। कपिल विमान को छोड़ सकते थे। पर छोड़ना नहीं चाहते थे। विमान पूरी तरह नियंत्रण से बाहर हो गया। अब वह किसी भी क्षण पहाड़ियों से टकरा कर चकनाचूर हो सकता था। कपिल प्लेन को नदी की तरफ ले जा रहे थे, लेकिन नदी बहुत दूर थी। ऊँचाई लगातार घट रही थी। पर्वत की घाटियां मौत का गवाह बनने के लिए करीब आती जा रही थीं। कपिल हर तरह का प्रयास कर रहे थे। सब सम्पर्क टूट चुके थे और वे मौत से लड़ रहे थे, लेकिन हिम्मत नहीं हार रहे थे।

वे पैराशूट से कूदकर मौत को चकमा दे सकते थे, लेकिन वे विमान को किसी प्रकार नष्ट होने बचाना चाहते थे। राष्ट्र की सम्पत्ति की सुरक्षा कर रहे थे अपने जीवन को दांव पर लगा कर। जिंदगी और मौत बीच पलक झपकने से भी कम समय रह गया था। तभी विमान को एक झटका लगा और वह तेजी से उपर उठने लगा और सभी सम्पर्क सूत्र कार्य करने लगे। अब विमान को कपिल नहीं हरि बाबा बड़े आराम से चला रहे थे। आज फिर उन्होंने कपिल को मौत के हाथों से छीन लिया। उन्होंने विमान को बिलकुल ठीक-ठाक उतार दिया। विमान जमीन को स्पर्श कर जैसे ही दोड़ा, हरि बाबा गायब हो गए। कपिल ने विमान को धीरे-धीरे ले जाकर हैंगर के समीप खड़ा कर दिया।

घंटों सम्बंध टूट जाने से लोग निराश हो गए थे। घर तक खबर भेज दी गई थी। खोजी विमान उड़ान भरने लगे थे। फिर अचानक रडार विमान को दिखाने लगा, लेकिन इस बीच क्या-क्या हुआ था ये सिर्फ कपिल ही जानते थे। उनके आश्चर्यजनक घटनाओं से भरे जीवन में यह आज एक और नया आश्चर्य जुड़ गया था। विमान सुरक्षित था। पता लगा कि विमान के इंजन ने पूरी तरह से काम करना बंद कर दिया था। फिर यह आया कैसे? हरि बाबा की क्षमताओं की सीमा क्या है? और वे मुझ से क्या पाना चाहते हैं जो ऐसी सुरक्षा देते हैं? कपिल इस प्राचीन सवाल का जवाब सोचने लगे। एक ऐसा व्यक्ति जिसका जीवन अनोखी घटनाओं से गुजरकर सामान्य सामाजिक लोगों के लिए आश्चर्य बनता

जा रहा था। साथियों और दोस्तों के लिए वे एक चमत्कार थे, लेकिन परिवार के लिए सुखद अजूबा। सब मिलने आने लगे। लक्ष्मी और उसके पिताजी भी आ गए। लक्ष्मी अपने इरादे आंखों से कह रही थी। उसकी आंसुओं की बूंदें सब कुछ कहकर चुपचाप टपक रही थी। जिस प्रेम को हम अपने सुख के लिए जीवन में स्थान देते हैं, वह हमें विरह और आंसू देगा ये पहले किसी को भी पता नहीं होता। कपिल के दिल में लक्ष्मी बैठी थी, लेकिन दिमाग में हरि बाबा छा चुके थे।

याद करते ही हरि बाबा अलख निरंजन करते आ गए। कपिल हरि बाबा के पैरों से चिपट गये। उन्होंने उठाकर सीने से लगा लिया और बोले "मुझे दो रुपये दे दो बेटा" मैं उसे ही लेने आया हूं। संसार और संत मे फर्क देखिए। संसार कम करके ज्यादा पाना चाहता है, लेकिन संत ज्यादा करके भी कम की मांग कर रहे थे, सहायता की कितनी सस्ती दर कपिल ने दो रुपये दे दिए। वे लक्ष्मी के पास आकर रूक गए। उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोले "देख बिटिया जब तक मैं हूं तब तक इसको कुछ नहीं होगा। मौत एक बहाना है, जो परिवर्तन करती है। इसे अभी मौत नहीं ले जा सकती और न यह विमान में मरेगा। इसे तो अभी बहुत कुछ करना है। दूर बहुत दूर अंतरिक्ष में अनेक यात्री इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह जितना तुम्हारे लिए उपयोगी है, उससे अधिक मेरे लिए है। तुम भी कई जन्मों से इसकी प्रतीक्षा में थी और मैं भी कितनी बार इसे खोज-खोज कर लाता रहा हूं। तुम्हारा वैभव युक्त संसार इसका कहां तक साथ दे सकता है अथवा मेरा प्रयास उसे पा सकता है, यह तो वक्त ही बताएगा। सब कुछ वक्त के साथ चलने दो नहीं तो यह टूट जाएगा और टूट कर बिखर जाएगा। तुम आदमी से प्यार कर रही हो, कितना आनंद है। इस प्यार से परे बिटिया एक बार आत्मा से प्यार करके देखो। सब आनंद फीका पड़ जायेगा। इसे कुछ मत कहना, जिधर को वह जा रहा है, उसी में तुम्हारा कल्याण है।" ऐसा कहकर वे महान हरि बाबा चले गए। लक्ष्मी को भी उसके पिता ले गए।

वैराग्य की ओर

परिवारिक घरेलू व सामाजिक व्यक्ति जीवन को सामान्य रूप से ही जीना चाहता है। न उसको अधिक वीरता भाती है और न आध्यात्मिक ज्ञान। वह तो जीवन को कुछ साजो-सामान व मान सम्मान तक सीमित करके स्थिति से आसक्त होकर जीना चाहता है। सत्य को कोई और खोजे और वह जान ले, सीमा पर कोई और कुर्बान हो जाये जो उसका अपना न हो और वह सुरक्षित रहे, वह यही चाहता है। कपिल के साहस व वीरता से घबराकर और उनके अनोखे व्यक्तित्व व आश्चर्यजनक घटनाओं को घटित होते देखकर, कपिल के जीवन में हरि बाबा की महत्वपूर्ण भूमिका देखकर लक्ष्मी के पिता अनेक आशंकाओं से ग्रसित होकर उलझ गए । वैसे वे एक मेजर जनरल थे, लेकिन वे सामाजिक थे। उनकी सीमाएं थीं। वे अपनी लड़की के लिए एक ऐसा दामाद चाहते थे जो कुछ-कुछ उनके जैसा हो। कपिल का जीवन उन्हें एक ऐसा तमाशा नजर आने लगा जिसमें कभी भी कुछ भी हो सकता था। कपिल को लेकर उनके विचारों में परिवर्तन होने लगा अब वे किसी और से लक्ष्मी का विवाह चाहते थे। और बागान के अपने शेयर को बेचने की कोशिशों में लग गए। लक्ष्मी ने परेशान होकर फोन पर सब सूचना कपिल को दी। काफी कोशिश करने पर भी लक्ष्मी को कपिल से मिलने नहीं दिया गया। उस पर बंदिशें लगा दी गई थी। कई महीने ऐसे ही गुजर गए।

कपिल को अपने कर्तव्य के लिए विभूषित किया गया। वे ग्रीन पायलट हो गए थे और उनको बिशिष्ट सेवा पदक प्रदान किया गया। इधर हरि बाबा से काफी दिनों से भेट नहीं हुई थी, सम्पर्क टूट सा गया था। लक्ष्मी भी नहीं आई थी। पठानकोट में ट्रांसफर हो गया, लेकिन नौकरी से ध्यान हट रहा था। मन व्यावहारिक जगत से भाग रहा था। प्रत्येक प्रिय वस्तु दूर हो रही थी, रग-रग में ईश्वरीय चिंतन समा रहा था। वैराग्य ने अपना घर बसा लिया था। कश्मीर के पहलुओं में पर्वत शिखरों में कपिल की आंखें हरि बाबा को ढूंढ रही थी। ममतामयी मां का प्यार, पिता का सानिध्य, भाई और बहनों के स्नेह से हटकर अकेले ही जीने की आदत हो चुकी थी।

कार्य जितना कठिन हो, उतनी ही बड़ी तैयारी करके व्यक्ति उसको आसान बना लेता है। लक्ष्मी को कपिल से अलग करना लगभग असंभव सा था। लेकिन जनरल साहब तो अपनी तैयारियों में लगे हुए थे। उन्होंने अपनी हां में हा मिलाने वाले रिश्तेदारों को इकट्ठा किया और लक्ष्मी का विवाह कहीं और करने का प्रस्ताव रखा। सब सहमत थे, लेकिन लक्ष्मी नहीं मानी। वह बहुत समय कपिल से अलग रहकर रो-रो कर बिता चुकी थी और अपने परिवार से पूरी तरह निराश हो चुकी थी। उसने घर छोड़ दिया-और कपिल के पास आ गई। कपिल तब बम्बई में थे। लक्ष्मी ने सब हाल कपिल को सुनाया। वह जीना चाहती थी, लेकिन कपिल के साथ रहकर। कपिल को सामने देखकर वह खिल गई थी, लेकिन कपिल उलझ गए थे। लक्ष्मी मर्यादा का प्रश्न बन गई थी। मन ही मन कुछ निर्णय करके कपिल आने वाली घटनाओं की प्रतीक्षा करने लगे।

कुछ ही दिनों बाद सब परिचित इकट्ठे होने लगे। लक्ष्मी डरने लगी! कपिल का दोस्त विरेन्द्र जिसके साथ लक्ष्मी के विवाह की योजना थी, वह भी आ गया। वह शर्म से सिर नहीं उठा रहा था। कुछ फिल्मी हस्तियों के साथ राजा साहब भी आ गए। मेजर जनरल सिंह अलग से आए। सब परिचित थे पर कोई कुछ भी नहीं कह रहा था। सभी का सिर झुका था; क्योंकि किसी से उसका जीवन छीनने की शर्मिंदगी उभर रही थी, सब मौन थे। लक्ष्मी कपिल के पास आकर बैठ गई, वह विस्फोटक रूप ले रही थी। वह कुछ कहना चाहती थी, पर वातावरण में गहरा सन्नाटा देखकर चुप रही। कपिल उठकर गहरा सन्नाटा देखकर चुप रही। कपिल उठकर भीतर आ गए, लक्ष्मी भी पीछे-पीछे आ गई वह कह रही थी—''इन्हें वापस कर दो। जीवन की खुशियों से बढ़कर दौलत नहीं। प्यार से बढ़कर सिंहासन नहीं है जो कुछ मुझे मिला है, वही मेरे लिए सब कुछ है। जहां से मैं भाग कर आई हूं वहां पुनः लौटकर नहीं जाऊंगी। मेरी लाश जा सकती है, मैं नहीं। न जाने ये क्यों मेरे पीछे पड़े हैं। अगर कपिल तुम मेरे साथ अन्याय करोगे तो मैं अपने चेहरे को जला दूंगी। अपनी सुंदरता पर जलने का धब्बा लगा दूंगी। क्या तुम भी मुझे जीने नही देना चाहते? क्या तुम्हारे मन में भी मेरे प्रति नफरत पैदा हो गई है। कपिल बताते क्यों नहीं? सभी चुप हैं, प्लीज तुम तो चुप मत रहो। कह कर वह रोने लगी।

कपिल पुनः बैठक में आ गये। सभी लोग मर्यादा की दुहाई दे रहे थे। वे सब अपने-अपने प्रिय थे, लेकिन कपिल की खुशियों का गला घोट देना चाहते थे। कपिल से प्रिय उन्हें उनकी प्रतिष्ठा थी। सामाजिक लोग संगठित होकर अपने लक्ष्य की सफलता के लिए प्रयासरत थे। कपिल का दोस्त विरेन्द्र भी एक किनारे बैठा आंसू पोछ रहा था। कल तक जिसे वह भाभी कह कर मजाक करता था, आज उसी को अपना जीवन साथी बनाने की भीख मांग रहा था। कपिल भीतर गये और रिवाल्वर निकाल कर ले आये। लक्ष्मी की बांह पकड़ कर गरज कर वोले—''इच्छा करता है कि सब को गोली मार दूं जो केवल प्रतिष्ठा के लिए कुछ कह रहे हैं, जिंदगी के लिए नहीं। पर मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं अपने आप को मार रहा हूं। लक्ष्मी मेरे शव को दूल्हा बनाकर शादी कर लेना। मैं कहीं कुछ ऐसा न कर बैंठूं जो आप लोगों के राज्य और प्रतिष्ठा के लिए हानिकारक हो। आप लोगों के जीवन के इतिहास में ये कलंक के रूप में लिखा जाए। इसलिए मैं जा रहा हूं, ऐसा कहकर कपिल ने रिवाल्वर कनपटी पर लगाकर घोड़ा दबा दिया।

गोली मस्तक के बजाय छत से जाकर लगी। रिवाल्वर और कपिल का हाथ हरि बाबा के हाथ में था। वे प्रकट हो चुके थे, उन्होंने एक झापड़ लगाया और एक तरफ खींच कर ले गए और बोले—मेरा सारा प्रयत्न ही तुम बेकार करने जा रहे थे मूर्ख! जीवन में नारी बहुमूल्य नहीं है। मैंने तुम दोनों से कहा था कि वक्त के साथ जो कुछ हो रहा है, उसे होने दो। वक्त वह सब कुछ कराएगा जो होना है। तुम दोनों के संस्कारों का जहां विलय होता है, वहीं समापन है। आगे रास्ता खुला है। लक्ष्मी देखो बिटिया, सत्य जो है उसे तुम ठुकरा नहीं सकती। कपिल जिसे तुम प्यार करती हो वह अपने सफर का अकेला राही है। इसे अकेले ही सफर पर जाने दो। यह भविष्य का योगी है। इसमें त्याग की पराकाष्ठा है। अगर तुम इसे जिंदा रखना चाहती हो तो इसे रोको मत। जो भी लोग आये हैं यह उन्हें निराश वापस नहीं जाने देना चाहता है। वक्त ने अपना पासा फेंक दिया है। वर्षों से इसे तुमने भी अकेला छोड़ दिया था और मैंने भी। अब यह एक किनारे लग गया है।

लक्ष्मी न जाने क्या-क्या कहती रही जो किसी को सुनाई नहीं पड़ रहा था। सब कुछ हरि बाबा के आने से निपट गया था। लक्ष्मी और विरेन्द्र

की शादी तय हो गई। प्रेम की देवी लक्ष्मी त्याग की देवी बन गई। लक्ष्मी को अपने हाथों दुल्हन बनाकर विदा किया। लक्ष्मी की आंखों में आंसू थे। कपिल के साथ न गम था न खुशी थी। क्योंकि वह तो हरि बाबा की बातों का ध्यान कर रहे थे। उन्होंने कहा था—जो तुझे प्रिय है, वह तुझसे छीन लिया जाएगा। जो तुझे मान देंगे उनके मन में नफरत घर कर जाएगी। तुम जिनकी सहायता करोगे वे तुम्हारा अपमान करेंगे। समय संसार से तुम्हें इतनी दूर फेंक देगा कि पीछे मुड़ कर देखने का वक्त भी नहीं होगा।

चित्त योगी की वाणियों मे भटक रहा था। वह योगी कौन था? अभी तक कपिल उन्हें अच्छी तरह जानते तक नहीं थे। हर मोड़ पर वह मिले—बहकते कदमों को रोका, जीवन को गुमराह होने से बचाया। कहीं भी आना जाना उसके लिए आसान है। कपिल की जीवन की सभी घटनाओं से वह योगी जुड़े हैं, आखिर वह क्यों मेरे जीवन की हर घटना से जुड़े हैं यही प्रश्न बार-बार उभर रहा था।

साहस व वीरता विलक्षण गुण है। वीर पुरुष जिस दिलेरी के साथ पवित्र प्रेम करता है, वैसी ही दिलेरी के साथ वह कल्याणप्रद त्याग भी कर सकता है। उसका सब कुछ विशेष ही होता है। मन की टहनियों में संसारिकता के पत्ते झड़ चुके थे, लेकिन पारस्परिक संबंध में पड़कर अभी संसारिक बंधनों से मुक्त नहीं हो पा रहे थे। भीड़-भाड़ की दुनिया में किनारे होकर भी उसी में भ्रमण कर रहे थे। एक दिन नासिक में एक पान की दुकान पर पान खा रहे थे। तभी एक युवक ने दो रुपये मांगे उसने बहुत ही कीमती सूट पहना था। बड़ा ही आकर्षक व्यक्तित्व था। उसके होंठों पर मुस्कान थी। आंखों में एक तेज था। उसने हाथ फैला कर कहा "मुझे दो रुपये दे दो" कपिल को कुछ होने का आभास होने लगा। दो रुपये दे दिए वह लेकर जा रहा था। साथी पूछ रहे थे "यार वह कौन था?"

तभी पीछे से आकर हरि बाबा कपिल के कंधों को थपथपाने लगे। कपिल ने चरणों में प्रणाम किया तो उठाकर बोले—"बस अब समय आ गया है। अब तुम आसाम की ओर चलो। कपिल उनके बारे में जानना चाह रहे थे पर वे समय ही नहीं दे रहे थे। कपिल द्वारा दिए गए दो रुपये दिखाते हुए हरि बाबा चले गये। सामने से वह सूट-पैंट वाला युवक गया

था और पीछे से हरि बाबा आ गए थे। कपिल का वैरागी मन कह रहा था कि हरि बाबा अब सब कुछ छोड़ देने के लिए कह रहे है। इसी लिए सिविल कपड़ों में आकर और अब पल भर में योगी बन कर सामने आए। परिधान को बदलकर पुनः आना कपिल के लिए जीवन में बदलाव का एक संकेत था।

वे गोहाटी आ गए। संबंधित व्यक्तियों को बागान आदि की सभी व्यवस्थाओं को समझाया। सारी जिम्मेदारी को तिलांजलि देकर स्वच्छन्द विचरण करते हुए हरि बाबा की खोज में निकल गए। वर्षों हरि बाबा को खोजते रहे पर हरि बाबा कहीं मिल ही नहीं रहे थे। कभी नर्मदा के किनारे खोजते रहे तो कभी हिमालय के गांवों से। हरि बाबा के लिए मन बैचेन था। शरीर की हालत खस्ता थी। शरीर थक कर टूट चुका था। अब अपनी दुर्दशा पर स्वयं रो रहे थे। वे हरि बाबा जो हर संकट में संकटमोचक बनकर स्वयं ही प्रकट हो जाते थे। वे इस तरह गायब हो जाएंगे , ऐसी उम्मीद कपिल को थी ही नहीं। अनेक बार बिना मांगे ही सहयोग देने वाले हरि बाबा की अब एक झलक पाने को ही तरस गए।

निराश होकर एक छोटा सा यान लेकर विदेशों में निकल गए। ब्रिटेन, अमेरिका में घूम-फिरकर जीवन की रफ्तार को देखते रहे। घंटों तक कभी जहाज उड़ाते रहते। कभी प्रकृति के साथ लुका-छिपी खेलने लगते। कभी-कभी क्या कर रहे कुछ भी पता नहीं लगता था। फ्लांइग से भी रूचि हटती जा रही थी। जर्मनी में तीन महीने तक क्लबों और कैसिनो में घूमते रहे। कैसिनो में बराबर जीत कर आते थे। वहां से लौटकर नेपाल आ गये। खूब घूम फिरकर देख लिया। सब कुछ करके देख लिया, लेकिन मन कहीं भी नहीं लगा।

तो काठमाण्डू में पुनः हरि बाबा की खोज में लग गए। शिवरात्रि का मेला था, काफी भीड़-भाड़ थी। कपिल पशुपतिनाथ मंदिर का दर्शन करके आ रहे थे कि एक झटके के साथ हरि बाबा को निकलते देखा। कपिल ने दौड़ कर उन तक पहुंचने का प्रयास किया पर वह भीड़ में खो गए। कपिल प्रायश्चित ही करते रह गए। उनकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। अब हरि बाबा उनसे कट रहे थे। कपिल स्वयं से कहने लगे–कहां से कहां लाकर मुझे पटक दिया। महलों से निकाल कर सड़कों पर धक्के खाने के लिए छोड़ दिया और अब मेरी तरफ ध्यान नहीं

दे रहे हैं। मुझे तड़पा रहे हैं। कपिल को अपनी हालत का चित्रण एक भजन में मिल गया। एक साधु गा रहा था।

जो मैं ऐसा जानता, प्रेम करे दुख होय।
नगर ढिंढोरा पीटता, प्रेम करे न कोय।।

अब कभी थक कर वैभव का जीवन जीने लगते तो कभी वैभव से और समाज से ऊब कर सड़कों, पहाड़ों पर पैदल घूमते रहते। पर हरि बाबा कही भी नहीं मिल रहे थे।

संन्यास और समाधि

कपिल पूरी तरह से साथियों और परिवार से दूर हो चुके थे। पीछे हटने का कोई रास्ता न था और आदत भी न थी। नए सिरे से गंभीर चिंतन किया। कार्य कलापों का विश्लेषण किया तो गलती समझ आई। अधूरा त्याग रुकावट वन रहा था। एक दिन सभी चीजों को छोड़ भाग निकले। प्लेन को बागान में भेज दिया। गाड़ी को रास्ते के पास छोड़ दिया। सभी कपड़े और पैसे बांट दिए। अब लक्ष्य बदल दिया था। सब कुछ त्याग कर तपस्या करने का निश्चय कर लिया था। अब अपना अस्तित्व समझ में आ रहा था। सभी कुछ छोड़कर दोस्तों को टालकर सुबह-सुबह निकल गये। स्लीपिंग सूट और गाऊन पहनकर ब्रश कर रहे थे। कंधे पर तौलिया था। नौकर और पहरेदार सोच रहे थे साहब अब नहायेंगे। किसी भी बुद्धिमान को चकमा देने के लिए इतना काफी था। अनोखी जीवन शैली का एक और अनोखापन देखने को मिला।

सभी से दूर होकर बाहर सड़क पर आ गये। एक ट्रक पर थोड़ी देर तक चलने के बाद नारायणी नदी के किनारे उतर गये। फिर पैदल चलने लगे। नारायणी नदी को पार करके बीहड़ जंगल में प्रवेश कर गये। जंगल काफी घना था। पत्थरों से ठोकर खाते, झाडियों में उलझते, भूखे प्यासे चलते रहे, लेकिन जा कहां रहे थे नहीं पता था पर जा रहे थे। काफी देर तक चलने के बाद एक पत्थर की चट्टान देखकर रुक गये। सभी कपड़े खोलकर एक किनारे रख दिए और मन ही मन सोचने लगे कि अब यही तपस्या करता हूं। कुछ दिनों के बाद बाल और दाढ़ी बढ़ जाएंगे। शरीर भूख से पीड़ित कहीं जब गिर जायेगा तो ईश्वर आकर जरूर साथ देंगे। मन ही मन कहीं न जाने का निर्णय लेकर पत्थर पर बैठ गये। हवा के ठंडे झोंके ने सुख दिया तो पलक लगने लगी। तभी सामने से हरि बाबा आते दिखाई दिए। हाथ में कुल्हाड़ी लिए थे और कंधे पर लकड़ी का एक छोटा सा बोझ था। लकड़ी को जमीन पर पटक कर वे कपिल के सामने आकर मुस्कुराने लगे। उनके शरीर पर ज्यादा कपड़े नहीं थे। पतला छरहरा लंबा बदन था। हड्डियां ही हड्डियां नजर आ रही थी। जिस चेहरे को कपिल ने वर्षों ढूढ़ा था वही सामने था, लेकिन कपिल ध्यान नहीं दे रहे थे। उपेक्षा

करके नाराजगी का प्रदर्शन कर रहे थे। हरि बाबा खड़े हंस रहे थे। उनकी जटाएं बिखरी हुई थी। कपिल ऐसे ही बैठे रहे।

हरि बाबा ने झुक कर कपिल की बांह पकड़ ली और बोले ''उठो! आओ चलें। तुम थक गए हो। चलते-चलते नहीं मन से, मन का थक जाना अच्छा है। पर शरीर का थक कर शिथिल होना अच्छा नहीं। हरि बाबा का स्पर्श होते ही कपिल के शरीर की थकान मिट गयी। जहां से उन्होंने हाथ पकड़ा था वहां से बिजली की तरंग की तरह कोई वस्तु तरंगित करती दौड़ने लगी जो शरीर को रह-रह कर रोमांचित कर रही थी। कपिल हरि बाबा को अपलक निहारते हुए उठकर उनके साथ चल दिए। हरि वावा बांह पकडे तेजी से एक दिशा की ओर जा रहे थे। उनका स्पर्श कपिल के शरीर में स्पंदन महसूस करा रहा था। पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। थोड़ी देर बाद ही दोनों नदी के मूल के पास पहुंच गए। सामने एक बड़ा ही दिव्य योगी खड़ा था। उसके कानों में कुंडल थे। हाथ में खप्पड़ था। बगल में झोली लटकी थी। उसके चेहरों पर सुनहरी चमक थी। जटाएं खुली थी जो स्वर्ण की तरह चमक रही थी। कमर में काले धागे की रस्सी लिपटी और बाघम्बर काले धागे से बंधा हुआ था। वे बोले ''आ गए हरि वाबा। आपका कार्य संपन्न हो गया। आओ पथिक! तुम्हारे लिए हम एक युग से प्रतीक्षा कर रहे थे। संस्कारों के उदय होने पर भी भौतिक युग के परम्परागत बंधनों से मुक्त होना बड़ा कठिन हो जाता है। कई जन्मों से तुम्हारे पीछे हरि दौड़ रहा है। आज वह सफल हो गया। हम तुम तक कभी के पहुंच जाते पर तुम हरि बाबा को ढूंढ रहे थे। जब तक तुम हरि बाबा को खोज रहे थे, तुमसे कोई नहीं मिला। जिस वक्त तुमने बाबा को बिसरा कर अपने आप ये खोजने का निश्चय किया तुम्हें बाबा मिल गए।

चित्त जब विराम लेता है तब भौतिकत्ता का आकर्षण समाप्त हो जाता है। अपना कोई नहीं कपिल पर जब तक मन चाहता है तब तक सब अपने हैं। मानव बड़ा स्वार्थी है कपिल। संसारिक प्यार मतलब का है। जब आत्मा में चेतना होती है तो मन वैराग्य की ओर भागता है। वैराग्य उसे एकांतिक बना देता है। जीव जब अकेला हो जाता है तो वह आत्मा को समर्पित हो जाता है। तब आत्मबोध की स्थिति आती है और ईश्वरत्त्व का बोध होता है। तुम बड़े ही जटिल पथों से चल कर यहां तक पहुंचे

हो। कई जन्मों से संबंधित हरि बाबा ने तुम्हें पुनः खींच ही लिया। मैं भी कई बार तुम्हारे आने की प्रतीक्षा करता रहा अब आकर मिले हो! उन्होंने अपनी झोली से मिष्ठान्न निकाल कर दिया। प्रसाद पाकर गुफा में प्रवेश कर गये।

गुफा में शिवलिंग स्थापित था। उस शिवलिंग के तीन ओर तीन आसन बने हुए थे। हल्की सी धूनी प्रज्वलित थी। बगल में सरोवर था। हिममंडित शिखरों से अनेक झरने बह रहे थे। पानी तालाब से होता हुआ नदी का रूप ले रहा था। सफेद लाल और नीले कमल खिले थे। थोड़ी दूर नीचे एक और गुफा थी। जिसके आस-पास बेल और केले के काफी वृक्ष थे जो फलों से लदे थे। सूरज की अंतिम किरणें शिखरों पर पड़ने से बड़ा ही मनोरम दृश्य बन रहा था। तभी झुण्ड के झुण्ड हंस और अन्य सफेद पक्षी वहां उतर कर जल में तैरने लगे।

वे युवा दिव्य योगी–दृश्य को व्याख्या देने लगे वे बोले, यहां जीवन मुक्त है। बंधन नहीं है। यहां सभी स्वच्छन्द विचरण करते हैं। हिमालय किसी को बंधन में नही रखता। देखो हिमालय कितनी नदियों को जन्म देकर सागर में समर्पित होने की प्रेरणा दे रहा है। परमार्थ के नाम पर या तीर्थों की भीड़-भाड़ व पूजन के आकर्षण में आकर, अनवरत उन्हें प्रवाहित रहने के लिए अपने हृदय को चीर कर पानी का प्रवाह देता रहता है। ईश्वर भी यही कहते हैं। कपिल जन्म लेकर अध्यात्म सागर में डूब कर आत्मामय बनकर ईश्वरीय प्रेम के सागर में बहते रहो। पर जन्म और मृत्यु के मध्य भटकते जीव को अवसर कहां।

अब सब कुछ अनुकूल था। जैसा कपिल चाहते थे उससे भी अच्छा हो रहा था। मधुर वचनों से मंगलमय ज्ञान सुनकर तृप्त हो रहे थे, लेकिन एक जिज्ञासा अभी समाधान चाह रही थी। ये युवा दिव्य योगी कौन हैं? एक तरफ एक योगी और थे स्थिति को भांप कर वे बोल पड़े–ये अमरयोगी गोरखनाथ हैं। महान नाथ मछेन्द्रनाथ के प्रिय शिष्य गोरखनाथ। अमैथुन सृजन के एक अमर प्रमाण। इनका अपना इतिहास है। भारत के कण-कण में यह नाम व्याप्त है। हिमालय की कंदराओं से ही ये विश्व को अध्यात्मिक चेतना और योग का संदेश देते रहते हैं। इनकी इच्छा ही गति है। सभी युगों में इनका अस्तित्व बना रहता है। इनकी वाणी अमृत बरसाती है। इनकी झोली सम्पूर्ण सम्पदा की निधि है। इनके खप्पड़ में

सम्पूर्ण जगत के विनाश और उत्पत्ति की क्षमता है। जैसे नारद जी वीणा की धुन पर ''नारायण-नारायण'' की रट लगाये रहते हैं वैसे गोरखनाथ झोली, खप्पड़ और चिमटे के साथ ''अलख निरंजन'' मे मस्त रहते हैं। आज का आम आदमी भौतिक जगत की चहल-पहल में मस्त हो कर घूम रहा है। अणु युग की रफ्तार से आदमी अहंकार से भर गया है। विज्ञान ओर उससे प्राप्त वस्तुओं को ही सब कुछ समझ रहा है। जिस कारण से आज कोई इन श्रेष्ठ महापुरुषों को पहचान नहीं पाता है। वैसे ये बड़े ही भाग्यशाली श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त व्यक्तियों को ही मिल पाते हैं। जिसे ये मिल गये, उसका मानव जीवन सफल हो जाता है।

पक्षियों के समूह अपने नीड़ की ओर कलरव करते हुए लौट रहे थे। सूर्यदेव ढलता चेहरा लिए रात्रि को मौका दे रहे थे। नारायणी नदी अनवरत अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही थी। चारों ओर एक झंकृत सन्नाटा छा गया। तारों के समूह टिमटिमाने लगे। वहां एक अदभुत मनोहारी सौंदर्य चारो तरफ दिख रहा था अमर योगी बाबा गोरखनाथ जी के मुखारविंद से अमृत स्वर में वाणी की वर्षा हो रही थी–प्रकृति की यह नाट्य-लीला जीव जंगत रूपी रंग मंच पर प्रतिदिन होती है। यह प्रकृति का नियम है, स्वभाव है, विधान है। कुछ समर्पण कर जाते हैं। कुछ उदय और अस्त होते हैं। यह एक प्रारूप है–सृष्टि का, जो चलता रहा है, चलता ही रहेगा। हम कितनी बार आये और गये। आते रहे हैं और जाते रहेंगे। बार-बार दिन और रात का मिलन और बिछुड़न देखोगे–जन्म और मृत्यु की तरह। पर जो आनन्द समर्पण में है, कपिल उससे पूछो जो मर कर जीते हैं। जहां मृत्यु नहीं होती, जन्म नहीं होता। जीवन शरीर को नहीं त्यागता। अपने आपको मार कर वह जीता है। जहां न जड़ है न चेतन। आनन्द ही आनन्द। प्रकृति में लीन ब्रह्म में समर्पित आनन्द। सुषुप्ति से परे, चेतना से हट कर। न तुरीय है न जाग्रत न उद्‌गीत न चिरनिद्रा। केवल आनन्द। परम आनंद। सतचित्त आनन्द।

कपिल अलौकिक ज्ञान ले रहे थे। नयन अपलक गोरखनाथ जी को निहार रहे थे। चित्त उनमें रमण कर रहा था। मन स्थिर था। अहम विलीन हो गया था। अखंड अमिट छाप मस्तिष्क पर लगती जा रही थी। रोम-रोम स्फुरित हो रहा था। चित्त उनमें समर्पित हो उन्हीं में खो जाना चाहता था। सांसारिक, माया, अज्ञान को चीरते उनके ज्ञान युक्त मधुर

स्वर पुनः सुनाई पड़े "पहले मर जाओ। फिर जीओ। किसी नवीनता का सृजन मत करना। संस्कारों को मारना। अपने आप को मारना। मर कर ही जीना है। वही आनन्द है। परमानन्द है। नित्यानन्द है। जहां मन नहीं, बुद्धि नहीं, विवेक नहीं, चिंतन नहीं, तन नहीं-जगत नहीं केवल आनन्द ही आनन्द है! न जन्म है! न मृत्यु! न वह है। न मैं हूं। और न तुम। विचारों के दिव्य प्रवाह उदय हो-हो कर संचार कर रहे थे। कपिल को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड स्वयं में ही आलोकित हो रहा था।" गोरखनाथ हरि बाबा से बोले—ऐ हरि! तुम प्रकृति के सामीप्य में अगम अगोचर के जिस मार्ग पर कपिल को ले जाना चाहते थे, उसका विमोचन मैंने कर दिया। अविराम जीवन के अगम पथ पर अवशेष में जो शेष रह गया है, उन संस्कारों का क्षय और उदय करा कर, मन को निरुद्ध कर, पूर्व के संस्कारों का बोध करा मैं चलता हूं। थोड़ी देर के वाद पुनः आ जाऊंगा।

वे महामानव जा रहे थे। कपिल उन्हें देख रहे थे। सब कुछ अनहोनी की तरह हो रहा था। कपिल सजगता व श्रद्धा के साथ सब कुछ देख रहे थे। गोरखनाथ जी द्वारा प्रसारित ज्ञान कपिल की आत्मा को शीतलता प्रदान कर हिमालय की तरह मुक्त कर गया। पूरी तरह शांत, सम्मोहित, मंत्र मुग्ध हो कपिल गुफा का अवलोकन करने लगे। उसमें कपिल के उपयोग सभी कपड़े पहले से रखे हुए थे। भिन्न-भिन्न तरह के आसन, बाघचर्म, मृगछाला, त्रिशूल, डमरू और खप्पड़ रखे थे। स्फाटिक, मणि, मूंगा, मोती और रूद्राक्ष की मालाएं इधर-उधर पड़ी थीं। साधना व तपस्या की सभी वस्तुए अपने उपयोग का इंतजार कर रही थी। कपिल हरि बाबा द्वारा बताये आसन पर बैठ गये।

कपिल का आसन बीच में था। सामने सुंदर शिवलिंग पर ताम्बे के कलश से बूंद-बूंद पानी टपक रहा था। लिंग आकार पर त्रिकुट त्रिनेत्र शोभायमान था। मस्तक पर कुछ फूल अपने भाग्य को सराह रहे थे। कपिल गुफा की सभी वस्तुओं का अध्ययन कर सहजता प्राप्त कर ही रहे थे कि तभी हरि बाबा ने शिवलिंग पर से एक फूल उठा कर कपिल के सिर पर रख दिया। वे धीरे—धीरे गहन अंधेरे में खोते चले गये। मन रूपी सागर का उथल-पुथल और सम्पूर्ण कौतुहल समाप्त हो गया। शरीर की सारी गति ऊर्ध्व हो गयी। विद्युत तरंगें रह-रह कर उठने लगी। आत्मा का और शरीर का अंतर समझ में आने लगा। शरीर शून्य होता गया। आंखें

तो पहले ही बंद हो गयी थीं, लेकिन दूर-दूर तक जगत की हर वस्तु में चेतना काम करती नजर आने लगी। पेड़-पौधे की संचार गतियां दृष्टिगोचर होने लगीं। पक्षियों की आवाजें समझ में आने लगीं। सर्प, कीट, पतंगे आदि को विचार तरंगे प्रभावित करने लगी। सम्पूर्ण जगत क्रियाशील दिखाई पड़ा। बैठे-बैठे ही सब कुछ दिखाई पड़ने लगा। जलचर-थलचर-नभचर, मानव और पशु-पक्षियों के रहस्य समझ आने लगे। आत्मा शरीर रूप पिंजड़े से अलग थी। शरीर अलग पड़ा था। स्थूल शरीर से अलग कपिल अब सूक्ष्म शरीर में थे। सूक्ष्म शरीर भी स्थूल की तरह ही देखना, सुनना, सफझता सब कर रहा था।

तभी गोरखनाथ जी आते दिखाई दिए। वे गुफा में प्रवेश कर गये और एक किनारे बैठ कर अपने शरीर को छोड़ कर कपिल के शरीर में प्रवेश कर गये। कपिल सूक्ष्म शरीर से सब देख रहे थे। पर विवश थे उनमें कुछ कार्य करने की क्षमता न थी, वे कुछ करना चाह रहे थे, अपने शरीर के लगाव को महसूस कर रहे थे। पर वे अकर्ता शून्य बन गये थे। अब वे मात्र एक दर्शक थे, हरि बाबा और गोरखनाथ जी की चमत्कारपूर्ण कार्यशैली का। कपिल का शरीर अब उठ कर चलने लगा। उसमें दिव्य महापुरुष गोरखनाथ जी की आत्मा काम करने लगी। वे कपिल के शरीर को लेकर तीव्र गति से चल पड़े। बगल में झोली लटका ली, एक हाथ में चिमटा और दूसरे हाथ में खप्पड़ लिए योगी का भेष बनाकर अलख जगाने लगे। कपिल आत्मरूप हो सब देख रहे थे वे भी पीछे-पीछे हो लिए। हजारों मील की दूरी आकाश मार्ग से पल भर में ही तय कर ली। कपिल के शरीर में गोरखनाथ जी थे और कपिल स्वयं आत्मरूप हो सब देख रहे थे। कैसी परीक्षा, कैसी लीला, मंजिल सामने थी।

विशाल बरगद का पेड़, उसके नीचे कुआं, सामने एक बड़ा मैदान और उस मैदान में लगा हुआ एक बड़ा फाटक। ऊंची-ऊंची दीवारों और उस फाटक पर प्राचीन इतिहास की गाथाएं अंकित थी। सभी कुछ जाना-पहचाना लग रहा था। वहां का कण-कण कपिल को अपनी ओर खींच रहा था और विचार तरंगें सम्मोहित कर रही थीं। लेकिन क्या कर सकते थे वे अपनी शरीर में थे ही नहीं। गोरखनाथ कपिल के होठों से मुस्कुरा रहे थे। वे कभी आत्मरूप कपिल को देख रहे थे तो कभी फाटक की ओर। दरवाजा खुला था। अभी चहल-पहल थी। गोरखनाथ कपिल

की विवशता को देख रहे थे। गोरखनाथ जी ने खप्पड़ संभाला और फाटक पर जाकर अलख जगा दिया। छोटे-छोटे बच्चे योगी के पीछे लग गये। भिक्षा लेकर एक औरत बाहर निकली और उस योगी को देखते ही देखते रोती हुई अंदर भाग गई। पूरे घर में कुहराम मच गया। सभी बूढ़े बच्चे योगी को देखने दौड़ पड़े। सभी फूट-फूट कर रोने लगे। औरत बिलखने लगी। कुछ औरतें योगी को खींच कर घर में ले जाना चाहती थीं। पर उसे कोई टस से मस नही कर पाया। एक अजीब सा माहौल पैदा हो गया। चारों तरफ भागदौड़ हो रही थी। गांव से सभी लोग दौड़ पड़े। प्रकाश की व्यवस्था लोगों ने कर ली। सभी उचक-उचक कर योगी को देखने लगे। सभी की आंखों में आंसू थे। अजीबो गरीब स्थिति पैदा हो गई। उस माहौल में भी वह योगी अडिग खप्पर फैलाये भिक्षा मांग रहा था। सभी लोग बिलख रहे थे। श्रद्धा, ममता, स्नेह और आदर्श। कपिल सभी को पहचान रहे थे। संग के साथी, उस मकान का एक-एक कोना और उस मां को जिसकी गोद में बचपन बीता था। जिसके आंगन में पैदा होकर खेले थे। भाई-बहनों का साथ मिला था। उस वृक्ष की हर डाली से परिचित थे, जिस पर चढ़कर लुकाछिपी खेला करते थे। उस गांव की हर गली में कपिल का नाम अंकित था। जहां नटखट बचपन बीता था और वे सभी लोग कपिल को उस योगी भेष में देखकर स्नेह से बिलख रहे थे। पूछ रहे थे। ''तूने ये क्या किया? पर योगी खड़ा था, पत्थर के बुत की तरह नाम मात्र का भी उसमें कंपन नहीं हो रहा था। उसके संतुलन में कोई फर्क नहीं था। कपिल सब कुछ देख रहे थे, वे कर भी क्या सकते थे। शरीर होते हुए भी वे उसमें नहीं थे। कपिल सबके अपने थे। पर योगी के कोई नहीं थे। देह धारण करने वाला अडिग भिक्षा के लिए अलख जगा रहा था। मां ममता को नियंत्रित कर भीतर जाती है और आंचल में भर कर चावल दाल लेकर आती है। योगी के ऊपर थोड़ा अक्षत फेंक कर आशीर्वाद देती है। युग-युग जिओ मेरे लाल ''फिर योगी की परिक्रमा करके उसके खप्पड़ में खिचड़ी डाल देती हैं।

धन्य है वह माता, उनकी जय जय कार है जो संयमित रहकर जीवन बिताती है और योग्य संतान पैदा कर धर्म के लिए उनका समर्पण करने मे महान त्याग करने में हिचकिचाती नही। भारत उनका ऋणी है, हिमालय उनका एहसानमंद है। हम सब उनके चरणों की धूल को अपने

माथे पर लगाना चाहते हैं। इतिहास उनका गुणगान करेगा। इस पवित्र भारत भूमि पर उनकी आवश्यकता हमेशा महसूस की जायेगी। उनके बिना धर्म, ध्यान, भक्ति, समाधि सब कुछ अधूरा रहेगा।

सभी भौंचक्के से देख रहे थे। भिक्षा पाकर योगी चल देता है। तभी ममता फूट-फूट कर रो देती है और दौड़ कर योगी के सामने खड़ी होकर आंचल फैला देती है। ''मुझे एक बार केवल एक बार मेरे लाल से मिला दो, मैं उसे लेना नहीं चाहती केवल देखना चाहती हूं। योगी तुम्हें पहचान गई हूं। तुम वह नहीं हो, जिसे मैंने पैदा किया है। मैं जानती हूं, वह मेरा बेटा है बाद में योगी है। एक बेटा अपनी मां को नहीं भुला सकता, चाहे वह कितना ही विराट चिंतन करने लगा हो। योगी तुम भी मुझे यह भिक्षा दे दो और वादा कर जाओ कि एक बार उसे अवश्य भेजोगे। तुम समर्थ हो। तुम्हारा सामीप्य पाकर वह महान योगी बने, ममता, मोह, स्नेह, माया के बंधन को ठुकरा कर मानवता के लिए जिए। तुम ये सब मेरा आशीर्वाद उसे कह देना। जाओ योगी, अब तुम जाओ। तुम जैसे महान आत्माओं को पाकर, यह मन, यह भूमि, यह समाज सब धन्य है। मां बनकर मैं भी अपने को सौभाग्यशाली समझती हूं। योगी जाओ उसे कह देना—ममता सदैव प्रेरणा देती है। जीव को शरीर देती है, साधक को साध ाना देती है।

योगी उसके आंचल में एक मुट्ठी राख डाल कर चल देता है। ममता उसे माथे से लगा लेती है। वह योगियों की राख का महत्त्व जानती है। आंखों में आंसू लिए होंठों से मुस्करा कर राख को देखकर सोचती है। कैसा गोरखधन्धा है, इन योगियों का। अलख की झोली और पलक का खजाना लिए सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपना घर बना लेते हैं। गांव के लोग देखते रह जाते हैं। योगी सभी को बिलखते छोड़ कर पल भर में ही गुफा में आ जाता है। कपिल के शरीर को त्याग कर गोरखनाथ अपने शरीर को धारण करते हैं। कपिल आत्मारूप हो इन सब क्रिया कलापों को देख रहे थे। कपिल का स्थूल शरीर हरि बाबा का स्पर्श पाते ही आत्मा को ध ारण कर लेता है। गोरखनाथ जी कहते हैं—अब आ जाओ उपलब्धियों के पूर्व ही जगत के अतुल्य बंधन से मुक्त हो चुके हो।

कपिल आश्चर्यचकित होकर दोनों दिव्य विभूतियों को देख रहे थे। बाबा गोरखनाथ जी के हाथ में वही खप्पड़ था। जिसमें खिचड़ी के लिए

दाल चावल भरे थे। बगल में झोली सम्पूर्ण माया जगत के बोझ को समेट लटकी हुई थी। होठों पर कमलवत मुस्कान बिखर रही थी। कपिल बार-बार श्रद्धा से विह्वल होकर उन्हें नमस्कार कर रहे थे। जैसी स्थिति हजारों साल पहले भगवान श्रीकृष्ण का विराटरूप देखकर अर्जुन की हुई थी। अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण का महत्व जानकर उन्हें चारो तरफ से नमस्कार कर रहे थे। वैसी ही श्रद्धा कपिल की गोरखनाथ जी के लिए हो गई। गोरखनाथ जी ने अभी-अभी परिवारिक बंधनों से नये-नये मुक्त हुए अपने प्रिय को गले से लगा लिया। कपिल उनकी आजानु भुजाओं के बीच चिपकते चले गये। घटनाक्रम के प्रति कपिल के विचार जानने के लिए गोरखनाथ जी बोले—क्यों कपिल मैंने ठीक ही तो किया। तुमने सब कुछ देखा, महसूस किया। तुम्हारे परिवार परिसर के समूह में ममतामयी मां को जाकर बिलखाया, हंसाया। बहनों को छाती पीटने पर मजबूर कर दिया। भाइयों को दरवाजे से लग कर अचंभित होकर चिंतन में डाल दिया। परिचित समुदाय मे एक स्पर्धा का बीज बोकर, भिक्षा मैं तुम्हारे शरीर के माध्यम से मांग लाया। मैं था, तू था। मैं तुझ में विलीन हो गया था, तू मुझ में। वहां कौन था। कैसा लगा सब कुछ? क्या रोने का मन तो नहीं कर रहा था? गोरखनाथ जी हंसकर बोले।—कपिल ने जवाब दिया, हां बाबा कर तो रहा था, लेकिन मेरी आंखें तो आपके पास थी कहकर कपिल भी हंसने लगे। धूनी पर खिचड़ी की तैयारी करते हरि बाबा भी हंसने लगे। बाबा गोरखनाथ बोले, रोने का मन कर रहा था—यह द्वैत है। आंखें नहीं थीं, यह द्वैताद्वैत है। हमने तुम्हें रोने नहीं दिया यह अद्वैत है और आज से तुम्हारा एक नाम भी कपिल अद्वैत है।

अद्वैत की परिधियों में प्रवेश करने के लिए द्वैत, द्वैताद्वैत, को छोड़ देना पड़ता है। नश्वर लोक की मोहमाया के जाल से छूट कर ही इसमें जोड़ा जाता है। जो एक बार टूट गया, वह नहीं जोड़ा जा सकता। कितना भी जोड़ो गांठ पड़ ही जाएगी। उधर तुम टूट गये। इधर हम जुट गये। यही है मर जाना और मर कर फिर जी जाना। सांसारिक उद्यान की व्यावहारिक वाटिका रूप फूल से तुम तोड़ लिए गये। अब अपने आप से जुड़ जाओ—जहां केवल जीवन है।

हरि बाबा ने धूनी पर खिचड़ी पकानी शुरू की। हरि बाबा और गोरखनाथ जी ने वर्षों बड़े ही धैर्य के साथ कपिल का हिमालय वापसी

का इंतजार किया था। अब वे दोनों जल्दी से जल्दी कपिल को सब अनुभव कराना चाहते थे। धूनी पर खिचड़ी बनने में काफी समय लगता है। उचित मौका व समय जान गोरखनाथ बोले—आओ कपिल तुम्हें तंत्र के जंजाल, साधकों के भटकाव और साधना की सही दिशा का अनुभव कराता हूं।

कपिल बाबा गोरखनाथ जी के साथ नदी के बहाव की ओर चल दिए। कंकड़-पत्थरों के जमघट को पार करते हुए, चट्टानों के बीच रास्ता बनाते हुए, नदी में किनारे-किनारे चलते रहे। कुछ समय के बाद दोनों बहुत बड़े रेत के मैदान में पहुंच गये। नदी का बहाव टेढ़ा-मेढ़ा हो गया था। रेत के ऊपर एक बहुत बड़ा अजगर पड़ा था। उसके चारो तरफ अनेक दीपक जल रहे थे। अजीब सुगंध बेहोश करने की सीमा तक वहां फैली हुई थी। अजगर के मुंह से सीटी की आवाज आ रही थी। जब वह सांस लेता था तो रेत उड़ने लगती थी। वह दोनों योगियों को देखकर ही सीटी मार रहा था, पर उसका कुछ भी प्रभाव इन दोनों पर नहीं पड़ रहा था। वह क्रोधित हो रहा था पर विवश था। गोरखनाथ जी बोले—"बस बस बहुत हो गया। ज्यादा कर्तव्य परायणता मत दिखाओ, नहीं तो दीपक बुझा दूंगा।" अजगर में और तीखापन आ गया और वह सीटी जोर-जोर से बजाने लगा। तभी हंसते हुए गोरखनाथ जी ने हाथ से आसमान की ओर एक वृत्त बनाया और वृत्त में सीधी लकीर खींच कर एक किनारे पर काट दिया। ऐसा करते ही अजगर के कार्य में कमी आ गई और तीन दीपक बुझ गए। सिर के पास के दीपक बुझते ही अजगर शिथिल पड़ गया।

दोनों योगी वहां से आगे बढ़े और कुछ ही देर में एक झोपड़ी के पास पहुंच गये। नदी किनारे वह छोटी सी झोपड़ी बनी थी। झोपड़ी में मंद-मंद लौ के साथ धूनी जल रही थी। यदा- कदा अग्नि भभक पड़ती थी। लगभग एक तेरह साल की कन्या बेहोश पड़ी थी जिसके शरीर पर कोई वस्त्र नहीं था। उस कन्या के गुप्तांग से मुंह लगाकर एक औघड़ रक्त पी रहा था। वह पशु की तरह रह-रहकर डकार रहा था। मुंह एकदम खून से लाल हो गया था। वह कभी-कभी सिर को उठाकर इधर-उधर देख रहा था। उसकी आंखों से अंगारे बरस रहे थे। दोनों योगी दरवाजे पर जाकर खड़े हुए तो उनकी छाया उस पर जाकर पड़ी। वह हड़बड़ा कर

खड़ा हो गया और लपक कर अपना त्रिशूल उठा लाया। आंखों में भय लिए वह क्रोध से कांप रहा था। वह असमंजस में पड़ा कभी इधर-उधर अपनी जगह पर बैचेनी महसूस कर रहा था। तब तक गोरखनाथ बाबा खिलखिला कर हंस पड़े।

वह औघड़ दौड़ कर गोरखनाथ जी के पैरों पर नाक रगड़कर फूट-फूट कर रो पड़ा। करूणा और दर्द से वह बिलख रहा था। गोरखनाथ जी ने उसे उठाकर कहा –क्यों रे औघडनाथ अब यही करता फिरेगा, बहुमूल्य समय को नष्ट करने से क्या लाभ? यह कोई उपासना है, शिवत्व का बोध प्राप्त करने के लिए मानव जीवन तपस्या के बाद प्राप्त होता है। मां का कितना कठोर तप होता है, आदमी को जन्म देने के लिए और तुम उस मां की तपस्या के बदले उसका रज पी रहे हो। प्रत्येक नारी मां का स्वरूप लिए होती है। मां की तरह तुम भी अपनी तपस्या का फल प्राप्त करने के लिए प्रतीक्षा क्यों नहीं करते। क्या यही मार्ग रह गया है। आत्म बोध के लिए? अपने शरीर से अलग दूसरों से तुझे क्या मिलेगा? अपने में क्यों नहीं खो जाता? रज के बदले अपने वीर्य को क्यों नहीं उर्ध्व करता? जन्म से परे, मृत्यु को टाल देने के लिए, किसी भौतिक माध्यम की आवश्यकता नहीं। उठ! जा अपने संस्कारों से प्रतिपादित कर अपने लक्ष्य के भेदन हेतु भाग जा। और सुन, इस कन्या को पवित्र करके इसके ठिकाने पर पहुंचा दे। अस्पृश्यता या सामाजिक अवहेलना का यह शिकार न बने, इसका ध्यान रखना। जीवन वाटिका में खिलने के पहले ही टूट न जाए। यदि यह भटक गई और टूट कर बिखर गई, नारीत्व खो गया तो समझना, औघड़ तुम भी खो गये। एक बार जब नारी बिखर जाती है तो वह मनुष्य के लिए अभिशाप बन जाती है। स्वयं तो डूबती है, पुरुष को भी डुबा देती है। केवल एक बार कई जन्मों के भटकाव के लिए काफी है। तुम औघड़नाथ डूब जाने से बचना चाहते हो तो इसे इस घटना का बोध न होने देना। तुम्हारी तपस्या फलीभूत होगी और यह बालिका भी अपने रास्ते पर चलती रहेगी।''

औघड़ खड़ा था। अब उसकी आंखों में तेज था। जटायें जमीन को स्पर्श कर रही थी। वह भाव-विभोर होकर पुनः गोरखनाथ जी के पैरों में पड़ गया। वह अब तृप्त था। उसकी इच्छा पूर्णता को प्राप्त कर गयी थी। अपनी साधना में सफलता प्राप्त कर चुकने पर ही वह गोरखनाथ जी का

दर्शन कर रहा था। वह कृतज्ञ होकर बहुत कुछ कहना चाह रहा था पर प्रकट नहीं कर सका। वह श्रद्धापूर्ण शब्दों में बोला ''महाराज आपकी जैसी आज्ञा। मैं तो पूर्ण हो चुका, आपकी कृपा से, जीवन में जन्म-मरण की परिधियों में भटकता आप तक पहुंचने के लिए प्रयत्नशील रहा। शिवत्व आप से अलग कहां है? जा-जा रे और सब ठीक रहेगा। समर्पण से आगे परित्यक्त मार्ग पर चलना, कहते हुए गोरखनाथ जी वहां से लौट पड़े। कपिल भी मुड़ कर पीछे-पीछे चल दिये।

नदी के पास रेत के मैदान में कुछ दीपक वैसे ही जल रहे थे। अजगर की जगह एक कापालिक तपस्वी ने ले रखी थी। नशीली आंखें तृप्त नजर आ रही थी। स्थूल शरीर पर कुछ भी नहीं था। थोड़ी दूरी पर त्रिशूल गड़ा था। वह उदिग्नता से उठकर गोरखनाथ जी को प्रणाम कर बैठ गया। वह मूक बना रहा। तभी एक दिव्य बालिका हाथ में त्रिशूल लेकर, गेरुआ वस्त्र धारण किए, जटा-जूट बांधे सामने आकर खड़ी हो गई। उसके हाथ में वाराह देवता की मूर्ति थी। वह अजीब तरह से कापालिक और गोरखनाथ जी के बीच खड़ी हो गई।

बाबा गोरखनाथ जी उससे कहने लगे ''ओह!'' माया सदियों तक तपस्या के उपरांत भी तुम भटक रही हो। साधना में पूर्णता को प्राप्त कर भी तुम अधूरी हो; क्योंकि मृग तृष्णा के सदृश तुम्हारी इच्छायें भटक रही हैं। मैंने तुझे सम्राट हर्षवर्द्धन के महल में देखा था। कृष्णवर्द्धन की तुम पत्नी थी। राज्य के सारे ऐश्वर्य सुख को तिलांजलि देकर, कृष्णवर्द्धन के अगाध प्रेम को ठुकराकर, तुम पाटलिपुत्र में गंगा के किनारे टहलने लगी। तुम्हारा योगिनी रूप साधकों के लिए वरदान बन गया था। पाटलिपुत्र से विन्ध्याचल की पहाड़ियों तक तुम्हारी दुंदुभि बजने लगी थी। अघोरेश्वर भैरवनाथ की तुम सहयोगिनी बन गयी थी। कापालिक साधना से हटकर उसने तुम्हें साधना का मार्ग बना लिया था। गंगा के कछार के साधकों ने तुझे उठा दिया और तुम बहुत आगे निकल गई। मैंने अनेकों बार तुझे गंगा के किनारे और विंध्य की घाटियों में देखा था। तुम आज तक अतृप्त भटक रही हो। भैरवनाथ भी अधूरा ही रहा। वाराह देवता ने औघड़ की ओर ध्यान ही नहीं दिया। शक्तिस्वरूप नारी के बिना भैरवनाथ की उपासना अधूरी रही। कैसा संयोग था तुम पुरुष के बिना अधूरी हो और भैरवनाथ नारी के बिना। अतृप्त वासनाओं को तृप्त करने

के लिए तुम और भैरवनाथ सन्निकट रहकर भी बहुत दूर हो। तुम एक दूसरे के पूरक बन सकते थे पर बाणभट्ट ने आकर तुम दोनों को दूर कर दिया। तुम कृष्णवर्द्धन को त्याग कर भी उसे भुला नहीं पाई, भैरवनाथ को पाकर भी अपना नहीं पाई। तुम सबको अपने में समेट लेना चाहती थी। तुम हर्षवर्द्धन और कृष्णवर्द्धन के साम्राज्य पर छा जाना चाहती थी। तुम अपनी तँपस्या को भैरवनाथ की सम्पूर्ण साधना को क्रांति में बदल देना चाहती थी।

तुममें अपार क्षमता हो गई थी। फिर भी तुम भीतर से टूटी हुई थी। तुमने माया क्या—क्या नहीं किया। कृष्णवर्द्धन और राज्यश्री के लिए तुम चाहती तो इतिहास तुम्हारा गुणगान करता, पर तुमने अपनी चाह के लिए इतिहास को नहीं बनने दिया। सभी चले गये। हर्षवर्द्धन नहीं रहा। कृष्णवर्द्धन अपनी यादों में खोया हुआ डूब गया। पाटलिपुत्र का साम्राज्य समाप्त हो गया। पर तुम आज तक चलती आ रही हो। ''योगिनी अब तुम गंगा के किनारे से हटकर, विंध्य की घाटियों की छोड़कर हिमालय की कंदराओं की शरण में आकर किस शक्ति को खोज रही हो? वह गंगा का तट था। यह नारायणी का किनारा है। कितनी सदियां और कितने परिवर्तन तुमने देखे। वह सब इतिहास बन गया है। तुम्हारे साथ के सभी कापालिक, नाराह देवता के वे र्स्वण मंदिर सब ध्वस्त हो गए। कृष्णवर्द्धन अनेकों बार जन्मा और मरा। गंगा ने भी अपनी धारा में परिवर्तन किया। वाराह देवता ने तंत्र साधकों को तारा, कामाक्षी, बगलामुखी आदि शक्तियों के हाथों में दे दिया। दिशा और काल के अनुकूल राष्ट्र में परिवर्तन हो गया। पाटलिपुत्र अब पटना बन गया। तब का प्रतीक भवन खंडहर बन कर गंगा की गोद में समा गया और तुम अभी तक अविराम जीवन यात्रा में वैसे ही चल रही हो। गंगा की गोद में समा गया और तुम अभी तक अविराम जीवन यात्रा में वैसे ही चल रही हो। तुम्हारी इच्छा ही गति बन गई है। स्वेच्छाचारी जीवन जी रही हो, जन्म और मृत्यु को अपने अनुकूल करके, शरीर को कल्पतरू की तरह अमर कर चुकी हो पर अतृप्त इतिहास को मिटाकर सहजता में क्यों नही आ जाती?

भैरवनाथ ने तुम्हें रास्ता दिया पर आज तक निरंतर जीवन प्रवाह में तुम दोनों अधूरे ही भटक रहे थे। इन नर मुंडों का त्याग करो। भैरवनाथ, कापालिक साधना का मार्ग रसातल में जा रहा है। पंचमकार अपना घर

बना रहा है। वाराह देवता की उपासना हजारों वर्ष पूर्व बौद्ध अनुयायियों ने मिटा दी। जहां बुद्ध भगवान को नहीं मानते थे वहां बुद्ध को ही भगवान बना दिया गया। बुद्ध "अहिंसा परमो धर्म" को श्रेय देता था अब तंत्र साधकों ने बुद्ध को ही तांत्रिक साधना का केन्द्र बिंदु बना दिया।

माया, अब तुम अपने विचारों में परिवर्तन दो। अब कल का भारत नहीं है। आज का भारत और है। इसने भी अनेकों को दफना कर अपना नवीन इतिहास लिखना शुरू किया है। तुम भी बदलो। ये नर मुंड अब काम नहीं आयेंगे। कल सौंदर्य के उपासक थे आज सौंदर्य बिकता है। कल के सौंदर्य में अभिलाषाओं के अनन्त स्वप्न झिलमिलाते थे आज का सौंदर्य चंचल है। इसकी रक्षा करनी पड़ेगी नहीं तो काम की अग्नि में भस्म हो जाएगा।"

"माया तुम तो सदैव माया हो। तुम्हारा प्रपंच ही माया है। यह जगत भी माया है और सारे स्वरूप भी माया हैं। जहां भी तुमने चाहा अपनी माया को फैलाया। हम तो दूर रहे तुम्हारी योग माया से। तुम ही जानों अपनी माया को, गोरख तो चला।"

माया की अपार क्षमताओं और हजारों वर्ष के जीवन का कुछ ही क्षणों में सटीक विश्लेषण कर गोरखनाथ जी चल दिए। कपिल थोड़ा पीछे रह गए। माया स्तब्ध खड़ी थी। भैरवनाथ नर मुंडों को नदी में फेंक रहे थे। नारायणी का जल उन्हें समेट कर बह रहा था। दीपक उसी तरह जल रहे थे। कपिल ने पीछे मुड़कर देखा तो माया खिलखिला कर हंस पड़ी। लगा चारों ओर बिजली कौंध गयी। उसके गले में हीरों पन्नों से युक्त रूद्राक्ष की माला में चमक आ गयी थी। माया अपने त्रिशूल को उठाकर "जय बाराह देवता" बोल रही थी।

वह माया थी। अपूर्व दैहिक क्षमता थी। एक आकर्षण था। खिंचाव था। वह सौंदर्य की मूर्ति थी। यौवन ने उसके साथ मैत्री कर रखी थी। वह काम और कला दोनों का प्रतिनिधित्व कर रही थी। उसकी दृष्टि में सम्मोहन था। उसके मन का मूल तत्व काम था। कपिल को देखकर उसके हृदय रूपी कमल की पंखुड़ियां खिल गई थीं। आदमी का मन सदैव सौंदर्य का पोषक और उपासक रहा है। सुंदरता के प्रति लगाव, प्रेम आसक्ति मन का सहज गुण है। कपिल पर भी मन कुछ हावी हो रहा था। माया अपनी सफलता की उम्मीद में हंस रही थी। उसके कपोल

अरूणिम हो उठे और वह काम और प्रेम की प्रतिमा बन रही थी।

कपिल माया के सम्मोहन में आ जाते, परन्तु गोरखनाथ जी ने एक झटके से विचार तरंगों को प्रवाहित कर दिया। बाबा गोरखनाथ जी ने पीछे मुड़कर देखा और कपिल की बांह पकड़ कर माया से बोले-माया जीवन के हर बसन्त में कोयल कूकती है। पतझड़ के बाद हरियाली आती है। आम महुआ गदराते हैं। कटहल अपने यौवन पर आता है, नदियां घट जाती है। झरने सूखने लगते हैं। आदमी प्यासा हो जाता है और माया तुम अतृप्त कामनाओं से भरकर अगम की राह में भटकने लगती हो। ''अग्नि की दाहकता और चन्द्र की शीतलता दोनों माया तुझमे घर बना लेते हैं। तब तुम महात्रिपुर सुंदरी की तरह लगने लगती हो और काम तुम्हें बेचैन कर देता है।

''माया तुम्हें अपने आप में से ममत्व और परत्व की भावनाएं समाप्त करनी चाहिए तब कहीं जाकर वासनाएं समाप्त हो सकेंगी। क्रियात्मक, बौद्धिक और भावनात्मक विकास का सृजन कर तुम एक नई देन बन सकती हो। नहीं तो अतृप्त भटकती ही रहोगी, जब तक भैरवनाथ तुझे छोड़ नहीं जाता। पर भैरव तुझे कब छोड़ेगा? कपिल तुम्हें अतीत की ओर खींच कर मात्र यादें ही संजोने के लिए छोड़ जाएगा। तुम्हारे हाथ सिर्फ स्मृतियां ही आएंगी।

गोरखनाथ जी ने माया के प्रति कपिल के मन में श्रद्धा, सत्य, प्रेम, विश्वास, तपस्या के विचार प्रवाहित किया तो कपिल अनासक्त बन गये। मकड़ी की तरह मृत संसार को अपने चारों तरफ लपेटे रहने से मुक्त हो कर गुफा की ओर चल दिए। माया और भैरवनाथ को पीछे छोड़कर अपने पथ पर निर्भय होकर जा रहे थे। रात काफी कट चुकी थी। चारों ओर अंधेरा था। चांदनी दूर हिम-शिखरों पर पड़ रही थी। मन को हरती चांदनी में स्नान कर रही बर्फीली चोटियों को निहारते हुए औघड़नाथ को दर्शन देकर, भैरवनाथ और माया को सही दिशा दिखाकर कपिल को साधक, साधना और तंत्र से बचाव का अनुभव दिलाकर गुफा में ऐसे आकर बैठ गये जैसे कुछ भी किया ही न हो। खिचड़ी पक कर तैयार थी। हरि बाबा पत्थर से टेक लगा कर प्रकृति के साथ मुग्ध नीरवता में बैठे थे। हरि बाबा तो सब जानते ही थे वे दोनों को देखकर मुस्कुरा रहे थे। जितनी खिचड़ी थी हरि बाबा ने उसको तीन बराबर हिस्सों में करके

खप्पड़ों में परोस दिया। कपिल के जीवन का यह प्रथम दिन था, गुफा में बैठकर खप्पड़ में, इन महापुरूषों के साथ आहार ग्रहण करने का।

खिचड़ी खाकर कपिल ने धोने के लिए हरि बाबा और गोरखनाथ जी के खप्पड़ लेने चाहे लेकिन उन्होंने मना कर दिया। कपिल छोटे थे, वे अधिकार समझ रहे, कुछ सेवा व सम्मान का मौका चाहते थे वे असमन्जस में पड़ गये। क्या करूं ये लोग ऐसा क्यों कर रहे है? तभी गोरखनाथ जी बोल पड़े, ''कपिल प्रत्येक चरण समाज से अलग सोच कर रखो। यहां कोई परम्परा नहीं। सम्प्रदाय नहीं। परिवार नहीं छोटा बड़ा नहीं। यहां सब कर्म है संस्कार है। निर्माण नहीं-विलय है। तुम पुनः। सृजन मत करो, परमार्थ नही, कुछ भी नहीं, बस चलते रहो। जो कुछ होता है होने दो, तुम मत रुकना। और तुम रुक जाओगे तो लिप्त हो जाओगे। माया को तुमने देखा-वह सम्राट हर्षवर्द्धन के छोटे भाई, युवराज कृष्णवर्द्धन की पत्नी थी। बाराह देवता की खोज में कापालिक अघोर भैरवनाथ की योगिनी बन गई और आज तक दोनों नदी के किनारे खड़े हैं। दोनों पाट एक नदी के हैं पर कभी एक नहीं हो सकते। कभी तरंगें इधर को होंगी-कभी उधर को। आराध्य के सरगम में एश्वर्य और उपलब्धियों का श्रेय नहीं है। वहां तो मात्र उपासना है। तुम अपना बर्तन साफ करो, मैं अपना खप्पड़ धो लूंगा। हरि बाबा अपना धोएंगे। सभी कुछ अपने में ही खोजना है। गोरखनाथ जी सिखाने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे थे।

तीनों बातें करते हुए गुफा से बाहर निकल आये। थोड़ी दूरी पर एक झरना बह रहा था। उसमें अपने-अपने खप्पड़ धोने लगे। गोरखनाथ जी ने अपना खप्पड़ धोकर जूठन फेंका नहीं बल्कि प्रेम से कपिल को पिला दिया। ये लो, पी लो, सब कुछ है और कुछ भी नहीं। जीवन अमृत का घट है और विष का प्याला दोनों हैं। इसी खप्पड़ से लेना और देना पड़ता है। मानव जीवन धारण करने का उद्देश्य भी यही है। मैं तुझे दे रहा हूं या ले रहा हूं' यह मैं जानता हूं। तू और मैं, मैं और तू। कहीं अलग है तब तो लेना-देना है और अगर दोनों एक ही है तो फिर कौन लेता है? कौन देता है?

पुनः तीनों प्राणी गुफा में आ गए। एक ही दिन में बहुत सारा दुर्लभ, अलौकिक, दिव्य घटनाओं का अनुभव लेकर वह महलों का राजकुमार गुफा मे पत्थर की शिला पर कंबल बिछाकर गहरी नींद सो गया। पक्षियों

के कर्णप्रिय शोरगुल ने रात्रि समाप्ति का संदेश दिया। प्रात: रश्मियां हिममंडित शिखरों पर फैलकर हिमालय की सुंदरता में चार चांद लगा रही थीं। कपिल गुफा से बाहर आ गये। झरने पर कस्तूरी मृग और काकंड के बच्चे झुंड के झुंड किलोल कर रहे थे। बाघ के बच्चे उनकी मस्ती में विघ्न कर रहे थे। रंग-बिरंगे फूल चारों तरफ मन मोह रहे थे। कपिल इधर-उधर घूम कर प्रकृति के सौंदर्य का अवलोकन कर रहे थे। हिमालय बड़ा मोहक दृश्य दिखा रहा था। जैसे बहुत पुराने परिचित के बहुत दिनों बाद आने पर खुश हो रहा हो। दोनों बाबा कहीं दिखाई नहीं पड़ रहे थे। मस्तिष्क के एक कोने में दौड़-धूप चल रही थी। मन रह-रह दोनों महापुरूषों का चिंतन कर रहा था। प्रकृति अपने सौंदर्य की ओर आकर्षित कर रही थी। चिंतन की कड़ियों को एक ही झटके में तोड़ दिया। और मन को स्वतंत्र कर निराधार पथ पर डाल दिया। बाबा हैं या नहीं, पर मैं तो हूं। यदि मैं हूं तो बाबा हैं। यदि मैं ही नहीं तो बाबा कहां, ऐसा विचार कर ने नारायणी नदी के उद्‌गम पर आ गये। पानी के छोटे-छोटे अनेक स्त्रोत बह रहे थे। सब सिमट कर नारायणी नदी का रूप ले रहे थे। आनंद में मग्न हो स्नान करने लगे। वस्त्रों को धोकर फैला दिया। तितलियों को उड़ते देखा तो खिले हुए फूलों पर ध्यान गया। थोड़ी दूरी पर वहां कमल खिले हुए थे। उनकी सुगन्ध लेने लगे। चारों तरफ बर्फ की चोटियां नजर आ रही थी। मन लग रहा था। प्रकृति का रूप देख उससे बात करने लगे। कभी फूलों से, कभी मधुमक्खियों से, वो कभी जिस चट्‌टान पर बैठे थे उससे ही कुछ बोलकर स्वयं को प्रकृति में लीन करने लगे।

गुफा की ओर से हरि बाबा आवाज दे रहे थे। कपिल नंगे थे, वे कपड़ों की तरफ दौड़ पड़े। हरि बाबा हंसने लगे। कुछ हंस भी एक किनारे पर खड़े होकर मानवीय क्रियाकलापों को देखने लगे। कपिल वस्त्रों को लपेटकर गुफा की तरफ चल दिए। हरि बाबा मुस्कुरा रहे थे। कपिल को शर्म आ गयी, तो हरि बाबा ने झटके से कपड़े उतार नीचे फेंक दिए-' वस्त्र तो विचार पहनते है। विचारों का प्रवाह ही बन्धन और लगाव है। बालक, युवा, वृद्ध, लज्जा, क्षमता, दया, प्रेम, स्त्री और पुरूष का बोध भी विचार का ही अंग है। हर कार्य में विचार तरंगों का प्रभुत्व है। कपिल इसे ही अपने प्रभाव में ले लो। तुम पुरूष भी हो तुम ही नारी हो। समाज

भी तुम हो। राष्ट्र भी तुम हो। तुम्हें समाज से, नारी से , लज्जा आती है तो तुम अपने विचार बदल दो। वैसे ही जैसे उस पत्थर की चट्टान से तुम बातें कर रहे थे। दोनों तरफ तुम ही थे। तुम ही विचार कर रहे थे। तुम ही मनन और निर्णय ले रहे थे। पर पत्थर के माध्यम से तुम्हारे ही विचार तुम पर प्रभावित थे। तुम्हें जड़ता में भी आना है तुम्हें चेतना में भी रहना है। तुम में ही नारीत्व है, तुम में ही पुरूषत्व है। अतृप्त पिपासा को नारी बनकर पुरूषत्व से संबंध जोड़कर तृप्त करना पड़ेगा और पुरूष बनकर नारीत्व का चित्राहार कर अपने में ही विहार करके बोधि वृक्ष पर चढ़ना पड़ेगा। तुम्हें जड़ बनकर पत्थर से संदेश लेना पड़ेगा।

''इन हिम शिखरों से पूछना पड़ेगा कि तुम्हारा सत्य क्या है। तुम अडिग क्यों हो? तुम्हें नदी का प्रवाह बनकर ऊंचे-नीचे पत्थरों से ठोकर खानी पड़ेगी। पेड़ों की तरह खड़ा रहकर वज्रपात सहना पड़ेगा। पशुओं की तरह अबोध बनकर मार खानी पड़ेगी। कुत्तों की तरह वफादार और मोहताज होना पड़ेगा। डरकर भागते जानवरों की तरह जीवनदान मांग कर जीवन के महत्व को समझना पड़ेगा। तभी कहीं जाकर तुम टिक सकते हो। साधु सभी घाटों का पानी पीता है और सभी को पीने का प्रोत्साहन देता है। इन सभी कर्मों में सभी जगहों पर तुम्हारे विचार ही काम करेंगे। भावों का बोध, विवेक का मूल सब विचार से ही है। ये लो अपने वस्त्रों को, और पहन कर विश्व की ओर देखो। कौन कितनी दूर कैसे खड़ा है। अपने जीवन पथ पर तुम कहां थे और अब तुम कहां आ गये। तुम्हारे मूल में जो था, वही है, या कुछ और हो गया है। बीच में तुम जो कुछ भी थे, अब वह नहीं हो और कुछ क्षणों के बाद यह भी नहीं रहेगा।

'इसी तरह जगत का चित्रण है। कपिल, भौतिक जगत भौतिकता में बड़ा ही व्यस्त हो गया है। मनुष्य अपने पतन के दरवाजे स्वयं खोल रहा है। प्रकृति सतत् प्रयत्नशील है अपने स्वाभाविक रूप में बनी रहने के लिए। मानव खोज रहा है, एक से एक नवीनता को। स्वयं के अस्तित्व को मिटाकर मशीनों के वशीभूत होकर वह असहाय होता जा रहा है। स्वयं में डूबकर, मन को मारकर मनुष्य अपनी स्थूल काया को योग द्वारा अमर कर ले, तो जीवन को शरीर परिवर्तन करने की बार-बार आवश्यकता

नहीं होगी। जीव ने तो शरीर को धारण किया है। कर्मों के आधार पर निर्मित संस्कार के बंधन में पड़कर जन्म-मरण अर्थात परिवर्तन का कारण ही अच्छे-बुरे संस्कार हैं। यदि इसका निर्माण ही समाप्त कर दो तो जीवात्मा स्वतः सब कुछ बंधन मुक्त कर स्वेच्छाचारी बना देता है। हर मानव का लक्ष्य तो यही है। परन्तु माया जगत के भौतिक प्रारूप के रूपान्तर में पड़कर विचारों का प्रवाह बदलते रहने के कारण आज प्रायः मानव अनिश्चय की स्थिति में पड़ा मिलता है। वह खुद नहीं जानता कि वह क्या कर रहा है और आगे चलकर क्या होगा? विचारों का उथल-पुथल रूप उसे मुक्त नहीं होने दे रहा है।

तुम भी ऐसे ही भटकते रहे और मैं तुम्हें सतत् मार्गदर्शन देता रहा। हर मोड़ पर मैं आया। हर चौराहे पर मैंने तुम्हें रास्ता बताया। स्मृतियों को ताजा किया। पूर्व संस्कारों को मिटा-मिटाकर प्रकाश मार्ग पर डालता रहा। भविष्य में संबंधित घटनाक्रम की जानकारी देता रहा। आज तुम अपने आप में रहकर स्वयं को जान रहे हो। योगी प्रवर गोरखनाथ जी की अमर-वाणियां तुम्हें मार्गदर्शन स्वरूप मिल चुकी हैं। उनका सानिध्य प्राप्त कर तुम स्वयं अपनी स्थिति के बारे में सोच सकते हो। आज तुम कहां खड़े हो और आध्यात्मिक जगत की किन विभूतियों की शरण में हो। ये युगान्तर योगी, युगद्रष्टा यदा-कदा ही ऐसे मनुष्यों के सम्पर्क में आया करते हैं। जिनका संस्कार बहुत ही श्रेष्ठ होता है या जिनसे ये किसी जन्म में किसी न किसी रूप से संबंधित होते हैं। तुम्हारा भी जन्म संस्कार श्रेष्ठ है। तुम पूर्व में इनसे संबंधित थे। इसलिए तुम्हारे यहां तक पहुंचने की प्रतीक्षा बाबा गोरखनाथ करते रहे और मुझे तुम्हें यहां ले आने की प्रेरणा देते रहे।

यह संबंध बना ही रहता है। तपस्या के बाद भी अनेक महर्षि गिर जाते हैं। वे अपने कर्मों का उत्थान करने के लिए दोबारा शरीर धारण करते हैं और उनके मार्गदर्शक गुरू अपनी क्षमता से उन्हें खोज लेते हैं। जब तक शिष्य स्वयं के अस्तित्व का बोध करके विचारों से मुक्त नहीं हो जाता तब तक यह संबंध बना ही रहता है।

कुछ पल में बाबा गोरखनाथ पुनः आ जाएंगे। तब हम दोनों तुम्हारे वृत्ति संस्कार को बदल देंगे। यहीं से तुम्हारी यह यात्रा समाप्त होनी है और अब ऐसी यात्रा शुरू करोगे जो कहीं भी जाकर समाप्त नहीं होती।

तब तक तुम नदी में जाओ। वहां एक युवा बालक तुम्हें मिलेगा। वह नदी के किनारे से आयेगा। वह जैसा कहेगा वैसा ही करना। अपने सम्पूर्ण बालों का मुंडन करा कर, केवल चोटी रख कर, स्नान करके तैयार रहना, तब तक हम आते हैं।

अतीत एक गहरा समुद्र है और भविष्य भी। दोनों एक निरंतर गति से बहते हैं। न आदि है न अंत है। वर्तमान एक नाला है जो अतीत से निकला है और भविष्य में खो जाएगा। पर तुम्हें खोना नहीं है। डूबना नहीं है तुम्हें प्रवाहित ही होते रहना है। इस अनन्त प्रवाह में तुम्हें हिमालय की तरह अडिग और सुमेरू की तरह स्थिर रहना है।

हिमालय की गोद में, हरि बाबा और गोरखनाथ जी को समर्पित होकर, योग, तपस्या और मुक्त जीवन की अभिलाषा लिए कपिल नारायणी नदी के किनारे आ गये। नदी के तेज बहाव में मन को तिनके की तरह डाल दिया। नारायणी बह रही थी। लताएं, वृक्षों की डालियां और उनकी छाया पानी की लहरों के साथ हिचकोले ले लेकर अभिवादन कर रही थी। पानी की धाराओं के साथ खेलते हुए कपिल आगे बढ़ रहे थे। पक्षी इस डाल से उस डाल पर उड़-उड़ कर सूनेपन को तोड़ रहे थे। कभी जानवरों की आवाजें आ-आकर सन्नाटे को तोड़ रही थी और शरीर में सिहरन पैदा कर रही थी। कपिल मन्त्र-मुग्ध होकर प्रकृति के इस दैनिक खेल का अवलोकन कर रहे थे। तभी उनके बगल में एक युवा बालक आकर खड़ा हो गया। बड़ा ही तेज उसके शरीर से निकल रहा था। मस्तक चमक रहा था, सफेद वस्त्र धारण किए, चोटी बांधे वह दिव्य बालक देवताओं के सदृश लग रहा था।

उसने प्रेम से नाम लेकर कपिल को पुकारा। कपिल उसके पास जाकर रूक गये। उस युवा बालक ने कपिल के सिर को पानी से धोकर सिर को सिर के बालों को उतार दिया और चोटी पकड़ कर मन्द-मन्द मुस्कुराने लगा। (बिना परिचय के ही वह अपनेपन से बोलने लगा) "जीवन का लक्ष्य तुम्हारा पूरा हो जायेगा, इस शिखा को काटते ही।" मैं भी तुम्हारी तरह कई जन्मों तक भटकता रहा। तब कहीं जाकर सही स्थिति को प्राप्त हुआ हूँ। बाबा गोरखनाथ और हरि बाबा का सानिध्य बहुत कम लोगों को मिल पाता है। इन्हें पहचान ही कौन पाता है। नेपाल और भारत के हिमाचल के गांवों में प्रायः इन्हें घूमते हुए मैंने देखा है। पर

इन मस्त अलख जगाते योगियों को भौतिक जगत की चार दीवारी में घिर जाने वाले कहाँ पहचान पाते हैं। न जाने क्यों विश्व समुन्द्रतल में खो जाने के साधन इकट्ठा करने में जुटा है। जीना तो हर कोई चाहता है, पर वे सब अपने आप में क्यों नहीं जीते? क्या उन्हें उतना काफी नहीं है, जितना उन्हें मिल चुका है? देखा कपिल, तुम विश्व की हर वैज्ञानिक चुनौतियों को उनके मस्तिष्क का एक विकार समझ कर झुठलाते रहना। तभी आज के वैज्ञानिकों के दिमाग साफ होंगे। मानव जन्म लेकर आत्मीय-विकास ही श्रेयकर हैं अपने जीवन में इस महान परिवर्तन के उपरान्त, देखो तुम पीछे मत मुड़ना, रूकना मत। चलते रहना, समय तुम्हारा साथ देगा। देखो वे महापुरूष चले आ रहे हैं। करीब आकर हरि बाबा और गोरखनाथ जी ने उस ब्राह्मण रूपधारी युवा बालक को कुछ दिया। इसके बाद कपिल के कपड़ों को लेकर वह उस दिशा में चल दिया जिधर से नारायणी नदी आ रही थी। वह मुस्कुरा रहा था और मुड़-मुड़ कर देखता जा रहा था।

धूप और बादल आंख मिचौली खेल रहे थे। नदी की तरंगों में चढाव आ गया था। पेड़ झुक-झुक कर अभिवादन करने लगे थे। हवा के मंद-मंद झोंके कपिल के शरीर में सुखद अनुभूति देने लगे। दोनों महापुरूषों के आते ही सूरज की किरणें बादलों से मिल कर स्निग्ध छाया दे रही थी। प्रकृति का कण-कण सजग हो गया था। पक्षियों की आवाज बंद हो गयी थी। सम्पूर्ण वातावरण में अद्‌भुत शांत, स्थिर परिवर्तन था। लगता था कुछ होने वाला है। दोनों महापुरूष नदी तट पर आकर थोड़ी दूरी रखकर रूक गए। कपिल उनके समीप जाकर दोनों देवतुल्य पुरूषों का बारी-बारी से चरण स्पर्श कर खड़े हो गये। कपिल को साथ लेकर दोनों पानी में प्रवेश करते गये। नदी के बीच जाकर दोनों महापुरूषों ने कपिल को बारी-बारी से स्नान कराया और फिर आचमन। इस तरह कपिल के शरीर को पवित्र करके वे दोनों दिव्य पुरूष नदी में ही कपिल की परिक्रमा करने लगे। नदी का पानी चढ़ने लगा। बाबा गोरखनाथ मुस्कुरा रहे थे। दोनों ने जल को अभिमन्त्रित कर कपिल को दिया।

जैसे ही जल कपिल ने अपने हाथों में लिया वो विचित्र दृश्य उपस्थित हो गया। मंद-मंद मुस्कान के साथ सारे इष्ट-मित्रों परिवार के सदस्यों,प्रेमियों-प्रेमिकाओं को ईद-गिर्द खड़े देखा। दृश्य गोचर थे जो

चित्त ग्रहण कर चुका था और संस्कार में संचित हो चुका था। कई जन्म-जन्मान्तरों के अधिकाधिक संबंधों का अनावरण होता रहा। कपिल हाथ में संकल्प का जल लेकर दृश्य अवलोकन करते रहे। अतीत वर्तमान में चित्रित हो रहा था। कपिल अपनी आत्मा को कभी पशु कभी सर्प, कभी आदमी में भटकता देख रहे थे। कभी हिंसक सिंह बनकर घूम रहे थे वो कभी हिरण बन कर भाग रहे थे। कभी साधु बनकर साधना में लगे थे तो कभी भोगी बनकर कुकर्म कर रहे थे। सबमें एक आत्मा यात्रा कर रही थी। संसार को बनते देख रहे थे, संसार को बिगड़ते देख रहे थे। कभी अपने आप से भाग रहे थे तो कभी संसार से। सब कुछ चलता आ रहा था और आकर वर्तमान से जुड़ गया था।

गोरखनाथ जी और हरि बाबा नदी के तट पर खड़े थे। वे कपिल को उलझते-सुलझते देख रहे थे। तभी हरि बाबा कपिल के हाथ से जल को अपने हाथ में लेकर पी गये। उनके ऐसा करते ही कपिल का शरीर पुलकित हो गया। रोम-रोम खिल गया। बोझ सा उतर गया। सब कुछ गायब हो गया। दोनों महापुरुष खड़े देख रहे थे। कपिल सिर से कम्पायमान हो रहे थे तभी हरि बाबा ने गोरखनाथ जी की छाया में खड़े होकर कपिल को बैठा दिया। बाबा गोरखनाथ जी ने कपड़े से सिर पर छाया की और हरि बाबा ने कपिल की चोटी तेज चाकू से काट ली, मोड़कर गांठ लगाकर अपनी झोली में रख ली और कान में दीक्षा मंत्र देकर फूंक दिया। उसी समय गोरखनाथ जी ने अपनी झोली से भस्म निकालकर कपिल के सिर और शरीर पर मल दी। विभूति के लगते ही कपिल एक अजीब से नशे में खोते जा रहे थे, तभी गोरखनाथ जी ने सिर को झकझोरा और बोले "जा-जा अजगर की तरह पड़े रहना।" और अपनी उस सर्वगुण संपन्न झोली में खाने के लिए मिष्ठान निकाल कर दिया। फिर बोले "हिमालय के दीर्घ बिंदू से लेकर पिण्डर की घाटियो में निवास करना। आवश्यकता पड़ने पर मैं मिलता रहूंगा। जीवन में विराम नहीं होता है। चलते ही रहना। चलते जाना अगम अगोचर की राह पर।

तन के सभी दरवाजों को बंद कर, मन के विकारों के संग्रह को अर्न्तमुख कर, नित्य आनन्द में पड़े रहकर, सूक्ष्म और कारण शरीर का अवलोकन कराकर वे महानों से भी और कारण शरीर का अवलोकन

कराकर वे महानों से भी महान बाबा गोरखनाथ चले गये। नारायणी नदी की तीव्र तरंगों के प्रवाह मे वे खोते चले गये।

समय अपनी गति से बढ़ता रहा। कपिल निरंतर चार दिन अजगर की तरह उस नदी के रेतीले तट पर परमानन्द में लीन समाधिष्ठ हो लेटे रहे। हरि बाबा शरीर की निगरानी करते रहे। न सूर्य की किरणें और न रात्रि का गहन अंधकार और न नदी के बहने का शोरगुल कपिल को पता चला। चार दिनों के बाद आंख खोली स्वयं से बाहर निकले तो देखा सामने लम्बा चोगा पहने, सिर पर पगड़ी बांधे, बड़े ही दिव्य शरीर वाले एक महात्मा खड़े थे। आँखे सब कुछ का बोध करा रही थी। आवश्यकता जान हरि बाबा ने परिचय कराया- ये हमारे सद्गुरू महाराज है अवतार गिरी, इन्हें कोई रामू पीर कहते है तो कोई औघड़ बाबा। अवतार गिरी कपिल से सहज मधुर वार्तालाप करने लगे बहुत ही आत्मीयता के साथ। कपिल देख रहे थे कि कई भाषाओ का इन्हें ज्ञान है। संसार की स्थिति और राजनीतिक ओर-छोर का उन्हें पता था। धर्म, ध्यान, हिमालय, राजनीति सभी को अपने वार्तालाप में शामिल कर वे कपिल से परिचय बढ़ाते रहे। हर बात में हंसने लगते थे। उनकी हंसी में बहुत ही अपनापन था। कपिल देख रहे थे कि एक से बढ़कर एक दिव्य महापुरूष उन पर कार्य कर रहे थे। पहले हरि बाबा फिर गोरखनाथ जी और अब अवतार गिरी। हिमालय की इन महान विभूतियों की संगत लाभ के लिए, हृदय में परमात्मा का धन्यवाद भाव बनाकर, मानवीय जीवन की सर्वोच्च संभावनाओं में अपनी स्थिति देखकर संतुष्ट, शांत, गहरापन लिए हुए स्थिर कपिल हिमालय के महान तपस्वियों के सम्पूर्ण प्रतीक नजर आ रहे थे।

हरि बाबा ने जीवन की अनेक विपत्तियों में रक्षा करके, अनेक जन्मों के संस्कार को अपनी सामर्थ्य से समाप्त करके चोटी काटकर, संन्यास का नया नाम ''सोमनाथ गिरी दिया। गोरखनाथ जी ने अपने अनुग्रह से, समाधि और स्वयं में लीन होना सिखाकर, अद्वैत वृत्तियों में लीन करके कपिल को कपिल अद्वैत बना दिया। अब अवतार गिरी क्या देंगे कपिल यही सोचकर भविष्य का स्वागत करने के लिए आगे होने वाली घटनाओ का इंतजार कर रहे थे।

अवतार बाबा कपिल और हरि बाबा को लेकर नारायणी नदी से

हटकर गण्डकी के किनारे तातो पानी, दाना, मुक्तिनाथ होते हुए दामोदर घाटी पहुंच गये। अवतार बाबा अपने निर्देशन में कपिल को हिमालय दर्शन कराना चाहते थे। हिमालय की गुप्त गुफाओं और महात्माओं और तपस्वियों की संस्कृति का परिचय कपिल को स्वयं ही कराना चाहते थे। कुछ दिन दामोदर घाटी में ध्यान विश्राम कर मुस्तांग घाटी होकर अपि पर्वत की ग्लेसियर गुफा में रूके। जब भी मौका मिलता सहज भाव से कपिल को हिमालय में तपस्या के आवश्यक तत्वों की जानकारी देते। जैसे भूख लगने पर कौन सी जड़ी काम करेगी। ठंड लगने पर कौन भी बूटी काम आयेगी। फिर काली गंगा को पारकर लीपु लेक होते हुए मान-सरोवर तट पर पहुंच गये। वहां कुछ दिन तक अन्य महात्माओं के साथ रहे। कपिल को दुर्लभ तंत्र साहित्य और योग विज्ञान पर प्रकाश डलवाया। फिर राक्षस ताल होते हुए कुछ दिन कैलाश पर्वत की परिक्रमा में लग गये। परिक्रमा कर पुनः तीनों महात्मा मानसरोवर आ गये।

समय को पहचान कर, स्थिति की आवश्यकता को समझकर अवतार बाबा ने कपिल को मानसरोवर में स्नान कराकर-स्वच्छन्द विचरण का आदेश दे दिया। हरि बाबा आंखों में प्रेम लिए अवतार बाबा और कपिल के बीच खड़े मुस्कुरा रहे थे। उनकी आंखों में तैरती बूँदे शायद कपिल को रोकना चाह रही थी। हिम-मण्डित शिखर शीश उठाये खड़े थे। हिम गल-गल कर पानी के रूप में बहता जा रहा था। लगता था हिमालय उस भावनात्मक दृश्य को देखकर आंसू बहा रहा हो। अवतार बाबा अपनी भावनाओं को अपने अंदर ही समेट कर हरि बाबा से बोले- ''इसे अभी जाने दो। अपने पूर्व संचित संस्कारों को जलाने दो, बहुत कुछ बाकी है अभी करने को। पूर्णता से पूर्णता को बाहर लाने दो। सृजन मत करना केवल मिटाना।''

दोनों दिव्य महापुरुषों को श्रद्धा से चरणों में प्रणाम कर, कैलाश पर्वत की ओर एक नजर डालकर, फिर कभी तो मिलेंगे ही का भरोसा दिल मे लेकर, उस मानसरोवर के तट से कपिल अकेले अपने सफर पर चल दिए। हिमालय की ऊंची-नीची चोटियों से होते हुए मुस्तांग आ गए। वहां कुछ दिन बौद्ध विहार में भिक्षुओं के साथ रहे। वहां से चलकर दामोदार कुण्ड आ गये। वहा से मुक्तिनाथ आकर गण्डक नरी के कल-कल करते स्वरो के साथ खेलते रहे। हिमालय की नदियाँ, चोटियाँ सब अपने लगते

थे। इन्हें लगता था वे सदियों से इस रास्ते पर चल रहे है। पुरानी स्मृतियां भी नजर के सामने घूम रही थी।

खासतौर से पिछले दस-बारह दिनों की घटनाओं का अध्ययन कर रहे थे। हिमालय के तीनों महापुरूषों की कार्यशैली और क्षमताओं को सोचकर बार-बार चकित होते थे। हरि बाबा ने सिर पर फूल रखकर अपने संकल्प से आत्म-दर्शन कराया, गोरखनाथ जी ने अलौकिक दिव्य लीला करके पारिवारिक बंधनों से मुक्त करके समाधि में लीन रहना सिखाकर कपिल सिंह को कपिल अद्वैत बना दिया। और अवतार गिरी बाबा ने सोमनाथ ग़िरी सन्यासी को मजबूत करने के लिए पकाने के लिए अपने साथ हिमालय भ्रमण कराया। कुल मिलाकर तीनों अति महान महापुरूषो ने दस-बारह दिनों में ही कपिल को एक ऐसे महात्मा का रूप दे दिया। जो संन्यासी भी है, आत्मदर्शी भी, समाधिष्ठ भी है। बेचैन आत्माओं को भी चैन मिल जाए, भोगियों को भी दर्शन करते ही विकार शांत हो जाये, जिसके उपस्थित होने से समस्याएं सुलझ जाये। ऐसी स्थिति और क्षमताएं लेकर कपिल अकेले निकल पड़े हिमालय की राहों पर।

हिमालय की राहों पर

अनेक प्रयासों के बाद बहुत सी घटनाओं और अनुभव से गुजरने के बाद जब किसी मानव को ज्ञान होता है, कितनी ही निराशाओं से निकलकर अभ्यासों को पूरा करके जब कोई मानव अपनी बुद्धि पूरी तरह जगाकर बुद्धत्व को उपलब्ध होता है। तपस्या और संयम की चरम स्थिति में पहुंच जब कोई आत्मदर्शन या ईश्वर दर्शन करता है, बहुत सी यौगिक क्रियाओं में निपुण होकर जब कोई व्यक्ति समाधि को प्राप्त करता है तो उसे लगता है कि वह सफल हो गया, उसने अपने लिए कुछ पा लिया। यदि वह अपने लिए ही ज्ञानी हुआ, अपने लिए ही बुद्ध हुआ, अपने लिए ही आत्मदर्शन किया, अपने लिए ही समाधिष्ठ हुआ तो मानव जीवन की इस सर्वोत्तम स्थिति को प्राप्त करते ही उसका शरीर छूट जाना चाहिए था क्योंकि लक्ष्य तो मिल गया है। लेकिन शरीर तो छूटा नहीं। तो इस सबको समझने के लिए व्यापक दृष्टिकोण का सहारा लेना होगा। बहुत बड़े स्तर पर दृष्टा बनकर जब इन घटनाओं का अवलोकन और विश्लेषण करते हैं तो पता चलता है कि परमात्मा, प्रकृति गुरू, सद्‌गुरू या महापुरूषों ने उस व्यक्ति को योग्य जानकर ऐसी प्रक्रियाओं से गुजारा कि वह ज्ञानी होकर, बुद्ध बनकर आत्मदर्शन करके या समाधि पुरूष बनकर, सृष्टि के लिए, धर्म के लिए, मानव जीवन के लिए, देश और समाज के लिए, ध्यानियों के लिए, भक्तों के लिए, दुखियों के लिए, विपत्ति में फंसकर रोने वालों के लिए, भविष्य के कल्याण के लिए, उपयोगी हो जाए। दिव्य शक्तियां सही व्यक्ति, सही समय जानकर कृपाएँ करती है जिससे वह व्यक्ति स्वयं को धर्म के द्वारा आत्मीय विकास की सर्वोच्च स्थिति में ले जाए और किए अपनी क्षमताओं को परमात्मा के लिए, इस सुंदर संसार के लिए सत्य के लिए, समस्याओं के हल के लिए समर्पित कर दे। क्योंकि ऐसा वही कर सकता है और कोई नहीं।

वायु सेना के एक जाबांज, साहसी, वीर पायलट को हरि बाबा ने सन्यास देकर सोमनाथ गिरी क्यों बनाया? दिव्य ज्ञान देकर, अलौकिक घटनाएं करके कपिल सिंह को बाबा गोरखनाथ जी ने कपिल अद्वैत क्यों बनाया। हिमालय की घाटियां, गुफाएं, तप स्थान, पवित्र नदियां इन सवालों का जवाब लिए कपिल का इंतजार कर रही थी।

कपिल अब नये रूप में भ्रमण कर हिमालय से और तीर्थों से परिचय बढ़ा रहे थे। कभी मंदिरों में, कभी आश्रमों में, कभी मठों में तो कभी गुफाओं में तो कभी खुले आसमान के नीचे पेड़ों की छांव के नीचे ही समय काट लेते। मुस्तांग की घाटियों से दामोदर कुण्ड, मुक्तिनाथ, गुमसम दाना होकर गण्डकी के संगम पर पहुंच गये। सूरज ढल चुका था दिन उजाला लेकर जा चुका था और रात्रि अंधेरा लेकर आ रही थी। अब रात्रि विश्राम के लिए स्थान खोज रहे थे। नदी के पुल से गुजर रहे थे तो देखा सामने एक विशाल महल जैसे भवन के दरवाजे पर एक सुंदर नेपाली लड़की खड़े होकर उनका स्वागत कर रही थी और आदर-सम्मान दिखाकर महल में चलने का निवेदन कर रही थी। जंगल के रास्ते इतने बड़े विश्रामागार को देखकर कपिल पहले तो हैरान से हुए फिर सोचा शायद कोई राजकीय विश्राम स्थल हो-कभी कभार राजपरिवार या अधिकारी मनोहारी गण्डकी के किनारे विश्राम के लिए आते हो। कपिल मंत्र मुग्ध हो इधर-उधर देखते धीरे-धीरे भवन के प्रांगण में प्रवेश कर गये। भवन के प्रांगण में खड़े होने पर हिमालय के धौलागिरी, अन्नपूर्णा एकमास्सी पोखर की चोटियां अपने अद्भुत रूप में दृष्टिगोचर हो रही थी। लेकिन भवन के और अंदर प्रवेश करते ही एक अजीब सा कोलाहल, क्रंदन, व्यथापूर्ण आवाजों ने एकाएक कपिल को अपनी ओर आकृष्ट किया। इस बीच उस सुंदर नेपाली लड़की का रूप भी बदलने लगा। एक बार को तो कपिल को लगा कि वे इस सुंदर नेपाली लड़की के बिछाये जाल में फंस गये लेकिन उनके पवित्र संस्कारों ने स्वच्छ शांत स्थिति ने, अध्यात्मिक प्रभाव ने उनका सुरक्षा चक्र बना दिया। वह लड़की कांप कर गिर गई और उसके सारे सहयोगी उसे छोड़कर पंक्तिबद्ध खड़े होकर आग्रह करने लगे "कृपया हम सभी को इसके बंधन में मुक्त करावे। यह एक योगिनी है-कापालिक यक्षिणी की तरह। पहले यह एक जर्जर शरीर वाली नारी थी। कापालिक क्रियाओं से इसमे अब अलौकिक शक्ति हो गई है। यह इच्छित स्वरूप को धारण कर लेती है। लेकिन यह आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती न हम सब ही आपका स्पर्श कर सकते हैं। कपिल दर्द, दुख से भरी उन आत्माओं की पुकार से पिघल गये। इसी बीच लड़की को होश आ गया अब वह अपने सामान्य रूप में थी। अनेक साधुओं का तथा वहां से गुजरने वाले व्यक्तियों को वह अपना शिकार

बना चुकी थी लेकिन आज एक पवित्र आत्मा वाले महात्मा आये तो अपने सारे जंजाल से दुखी हो वह अपनी मुक्ति के लिए प्रार्थना करने लगी। वह जान चुकी थी कि जिसके आते ही उसकी सूक्ष्म शक्तियां बेकार हो गई और वह भी कुछ क्रिया करने में असमर्थ हो गई। वह महात्मा उसका उद्धार भी कर सकता है। कपिल को स्थिति नई व रोचक लगी। उस लड़की को अब असहाय जान और उसके पश्चाताप से भरे आंसुओं को देखकर कपिल ने परिच्रय की इच्छा व्यक्त की।

परिवर्तित भविष्य की उम्मीद लिए वह अपने बारे में बताने लगी। उसने अपना नाम सूर्या बताया। कभी वह नेपाल के एक सम्पन्न राजसी परिवार का अंग थी। जनकपुरी से थोड़ी दूर भोगेश्वरी में वह बहू बन कर आयी थी। उसकी सुंदरता ने उसे राज परिवार में प्रवेश दिया। वह खुश थी सब कुछ अच्छा चल रहा था अचानक उसके पति की मौत हो गई। राजा क्रूर थे, उनके लिए कोई रिश्ता-नाता नहीं था। किसी भी बहू-बेटी को वे अपना शिकार बना लेते। वही सुंदरता व जवानी अब अभिशाप बन गयी। विरोध करने पर अमानवीय व्यवहार कर उसे घर से निकाल दिया गया। पेट को भोजन नहीं मिला। वस्त्र फट गये। पारिवारिक गंदगी को भांप वह सामाजिक ठोकर खाती भरतपुर की सड़कों पर कब पहुंच गयी उसे पता ही न चला। दो वक्त की रोटी के लिए वह बिकती रही और समाज के भोगी लोग खरीदते रहे। अपनी वासना-तृप्ति के लिए एक दिन वह एक जपानी पर्वतारोही के साथ चली गई। जो नेपाल में पर्वतारोहन के लिए आया था। लेकिन वहां भी उसे वही सब मिला। भोग के घिनोने रास्ते पर फेंककर वह जापानी भी अपने देश निकल गया। अब वह पुरूष जाति से ही नफरत करने लगी थी। वह निराश होकर मरना चाहती थी लेकिन नफरत की ज्वाला ने उसे जीने के लिए वजह दे रखी थी।

तभी एक दिन कापालिक अघोर निभाई नाथ की नजर उस पर पड़ गई। अघोरी ने उसके काले बालों को, लम्बी-लम्बी भुजाओं और उसकी आंखों में जल रही चिंगारी को देखकर मन ही मन प्रसन्न होकर उसे अपनी उपासना के लिए सहयोगी बना लिया। निभाई नाथ तिब्बती तंत्र और अघोर नाथ पंथ का एक श्रेष्ठ कापालिक साधक था। अघोर क्रियाओं में निपुण वह कहीं भी आया जाया करता था। हिमालय के महात्मा भी उसकी सिद्धि मानते थे। सूर्या भी उसके सम्मोहन में आ गई। निभाई

नाथ सूर्या को लेकर गण्डकी के किनारे तातो पानी में अपने माया भवन में आ गया। निभाई नाथ ने सूर्या को सभी कापालिक क्रियाएं सिखाकर पूर्ण योगिनी बना दिया। अब माया के अनोखे खेल खेलना उसके लिए आसान था। अब वह स्वेच्छा से कही भी सशरीर गमन कर लेती थी। लेकिन वह अघोरी की सीमांकन रेखा के बाहर जाने में असमर्थ थी। अघोरी के कई शिष्य सभी एक से वढ़कर एक साधना में निपुण थे लेकिन सभी सूर्या को अपना माध्यम बनाए हुए थे। अब वह इन अघोरियों के वंधन में बंधकर छटपटा रही थी।

सूर्या की हालत देख एक दिन निभाई नाथ ने कहा- मैं जब तक न चाहू तुम इस माया की चारदिवारी से वाहर नहीं हो सकती। ये आत्मायें तुझे कभी नहीं जाने देगी। वे आत्मायें भौतिक रूप धारण कर सूर्या के शरीर से खेलती थी और सर्प रूप में डस-डस कर वेहोश कर देती थी। निभाई नाथ वोला - ये आत्माएं तेरे इशारे पर सब कुछ करने में समर्थ हैं, पर मेरे बाद ही। वह समय सूर्या वहुत दूर है अभी तो मेरी ही पिपासा शांत नहीं हो पायी। इसी तरह समय गुजरता गया। सूर्या असहाय होकर, विवशता वरा आत्माओं और निभाई नाथ का साधन बनी रही। पहले वह परिवार व समाज का शिकार थी अब अघोरी और इन अतृप्त आत्माओं का। एक दिन निभाई नाथ के दोनों शिष्य सुदर्शन अघोरी और कंठी बाबा कहीं से एक मृत होकर तेरह वर्षीय कन्या के शव को उठा लाये। शव ताजा था कहीं से उखाड़ कर लाये थे। नदी के किनारे शमशान में उसे रखकर लाल कपड़ों से ढक दिया। सभी साधन इकट्ठा करके दोनों पूजा में लग गये। आत्माओं का आह्वान कर कलेजी की आहूति देने लगे। शराब का प्रयोग घी की जगह कर रहे थे। धीरे-धीरे उस शव में कंपन होने लगा। जीवत्त आते ही दोनों खिलखिलाकर हंसने लगे। दोनों की साधना पूर्ण हो चुकी थी। फिर सुदर्शन दौड़ कर उस कन्या के ऊपर झुक गया। पर न जाने अचानक क्या हुआ कि कंठी बाबा ने बहुत बड़ा पत्थर उठाकर सुदर्शन अघोरी के झुके सिर पर दे मारा। वह लहूलुहान होकर उठा और उसने भी पास पड़ा एक पत्थर दे मारा कंठी बाबा को फिर दोनों में मारण मंत्रों का प्रयोग शुरू हो गया। लड़की दोबारा बेहोश हो गयी। आत्माओं ने भी दो हिस्सो मे बटकर उस झगड़े में खुलकर भाग लिया। उस गहन रात्रि में शमशान में हलचल मची हुई थी। निभाई नाथ

सूर्या को साथ लेकर वहां पहुंच उन्होंने आत्माओं को प्रभावहीन कर दिया।लेकिन तब तक दोनों कपालिक सुदर्शन अघोरी और कंठी बाबा मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे। निभाई नाथ अपने शिष्य का अपनी सत्ता का ऐसा पतन देखकर गहरी चिंता में खो गये। दोनों शवों को इकट्ठा करके वे उनमें जीवन फूकने के लिए बेचैन हो उठे। उधर निभाई नाथ व्यस्त थे। अपनी क्रियाओं में, इधर सूर्या अपना उचित समय आया जान स्वयं को कुछ करने के लिए तैयार कर रही थी। उसने तुरंत ही एक पत्थर उठा कर निभाई नाथ के सिर पर दे मारा। निभाई नाथ का भी सिर फट गया। उसका शरीर एक तरफ लुढ़क कर प्राणान्त हो गया। क्षण भर में सब हो गया। सूर्या थोड़ी देर तक खड़ी देखती रही फिर उसने तीनों के पार्थिव शरीर को गण्डकी की तेज धारा में प्रवाहित कर दिया। इस प्रकार उन पत्थर दिल अघोरियों का अंत पत्थरों से ही हो गया। अब सूर्या मुक्त थी। निभाई नाथ के माया महल का अस्तित्व समाप्त हो चुका था। भवन के स्थान पर वहां छोटी सी झोपड़ी थी। धूनी जल रही थी। बहुत से नर मुंड इधर-उधर पड़े थे। सूर्या के जीवन का बहुत सा समय अघोरियों और अतृप्त आत्माओं के साथ बीत गया था। लेकिन अब सब कुछ बदल गया था। सूर्या आत्माओं का भी आह्वान कर सकती थी और उसे सम्पूर्ण कापालिक विद्याओं की जानकारी हो चुकी थी जिसका समय आने पर वह उपयोग कर सकती थी। उस कन्या की बेहोशी दूर करके सुबह होते ही वह वहां से चल दी अपने अतीत को भुलाने के लिए और समाज में पुनः स्थान पाने के लिए। लेकिन समाज ने उसे नहीं पहचाना और न वह समाज के साथ सामंजस्य बना सकी क्योंकि उसे बहिष्कार और तिरस्कार मिल रहा था।

विवश होकर उस बालिका को साथ लिए वह दोबारा गण्डकी के किनारे आ गई। उस कन्या के साथ होने से कुछ बाधा हो रही थी। वह भी अपने अतीत के बारे में कुछ बता नहीं पा रही थी। सूर्या उसके विषय में चिंतित थी। तभी उस समय गण्डकी पर झूले के पुल का निर्माण शुरू हुआ। उस पुल के निर्माण के लिए जो ओवरसियर काठमाण्डू से आया। उसकी रूचि उस लड़की में देख सूर्या ने दोनों की शादी कर दी। वह लड़की बहुत ही खुश थी। सूर्या भी कुछ दिन उनके साथ काठमाण्डू में रही। अब जीवन शांत व सरल हो गया था। लेकिन सूर्या मन ही मन

पीड़ित थी। उसका अतीत उसे कोस रहा था। काठमाण्डू में घूमते हुए उसे अपनी बर्बादी की व्यथा याद आ जाती। राणा शासन अपनी उन्नतिशील स्थिति में था। सूर्या ने एक संकल्प लिया राणाओं के पतन का। अब वह अपने साथ किए गए बुरे बर्ताव का सबसे हिसाब लेना चाहती थी।

सूर्या लौट कर तातो पानी गण्डकी के किनारे आ गई। कुटिया को साधना के योग्य बनाया तत्पश्चात् साधना में लग गई। सभी आत्माओं का आह्वान कर अपना साधन बना लिया। फिर माया महल के भवन का निर्माण किया पहले उस पर निभाई नाथ का अधिकार था पर अब सूर्या का। जो भी व्यक्ति सूर्या की बर्बादी के कारण थे उन लागों को उसने मिटा दिया। और उनकी आत्माओं को अपने वश में कर लिया। उस जापानी का शरीर भी अपने पास बुलाकर रखा और मृत लडकियो के मायावी शरीर के साथ भोग करा के जर्जर किया। सारे रक्त का शोषण कराकर निर्जीव बना दिया। उसकी अतृप्त आत्मा वही भटक रही थी। सूर्या ने सबसे पहले अपना बदला तो ले लिया लेकिन यह सब उसने कपालिक क्रियाओं और आत्माओं से करवाया था। बदले की आग में तपते-तपते उसका अस्तित्व एक योगिनी कापालिक से यक्षिणी में बदल गया। वह इच्छानुकूल शरीर धारण कर लेती, अदृश्य होकर कहीं भी पहुंच जाती, उसमें अपार क्षमता हो गयी थी लेकिन वह सदुपयोग नहीं कर पाई। अब वे अतृप्त आत्माएं सूर्या को परेशान करती थी। अब सूर्या भी दुखी थी और वे अनेक भटकती आत्माएं भी। ऐसे हालात में कपिल का वहां आना हुआ।

सूर्या बोली - जब से तुम आये हो मुझे शांति है। अद्‌भुत संगीत मेरे अंदर तैर रहा है। वह जलन, वह अतृप्ति वह पिपासा सब समाप्त हो गई। वे आत्मायें भी अब तृप्त हैं नहीं तो वे मुझे नोच-नोच कर बेहोश कर देती थी। तुम्हारे जाते ही ये सब कुछ शुरू हो जाएगा। मैं अब कुछ भी होने देना नहीं चाहती। मैं सुख शांति की खोज करते-करते थक गई- फिर खोजते-खोजते भटक गई और १४५ वर्षों से भटक रही हूं। अब हे महात्मन मैं तुम्हें कैसे जाने दूं? सूर्या ने कपिल के रहने खाने का सब सात्विक प्रबंध कर दिया। और कपिल लगभग १८ दिन तक वहा रहे।

इस बीच सूर्या अपनी आप-बीती सुनाने लगती। राज परिवार के श्रेष्ठ

पूर्वजों को उसने असामयिक मृत्यु के गाल में धकेल कर भटकने के लिए छोड़ दिया था। आत्माएँ भी कुछ दूरी रखकर कपिल से निवेदन करने लगती थी। ''कृपया सूर्या के बंधन से हमे मुक्त कराये, आप ऐसा कर सकते है। सूर्या असहाय है, हम भी कुछ करने में समर्थ नहीं। आपका आत्मीय प्रकाश हमें मुक्त करा सकता है। जो कल तक नेपाल के शासक थे, आज उनको इस स्थिति में देख कर कपिल को दया आती थी। अब वे दया के पात्र थे। उनका अहंकार और अत्याचारी, व्याभिचारी रूप ही उनकी बर्बादी का कारण था। वे आज १२० वर्षों से भटक रहे थे, मृत्यु को प्राप्त होने के बाद भी और न जाने कब तक ये ऐसे ही भटकते रहेंगे, जब तक कोई श्रेष्ठ पवित्र आत्मा इन्हें सूर्या के बंधन से मुक्त न कराये ये वो लोग थे जो मानव जीवन को पाकर सत्य को भूल गये थे और अब बुरी तरह भटक रहे थे।

सूर्या कभी मुक्त होना चाहती थी तो कभी कपिल को पराभूत कर अपनी बाहो में लपेट लेना चाहती थी। कपिल भव्य भवन के चबूतरे पर बैठे थे। साथ ही सूर्या भी बैठी थी। वह एक यक्षिणी थी, उसके रूप में जादू था। उसके रूप अनेक थे। कपिल को लगा कि सूर्या अपने माया जाल में डालकर मेरे लक्ष्य को अपनी करूणा भरी व्यथा को सुना कर अपनी तरफ खीचना चाहती है। कपिल वहां से तभी जाना चाहते थे लेकिन सूर्या हाथ जोड़कर, निवेदन करके जाने नहीं दे रही थी। सूर्या और कपिल के बीच जटिल से जटिल समस्याओं का पर्दाफाश हो रहा था। तभी नदी की तरंगो के बीच एक आकृति का उद्‌भव हुआ। कपिल ने देखा- हरि बाबा, मेरे गुरुदेव। उनके मस्तक से प्रकाश स्फुटित हो रहा था। लम्बी-लम्बी बाहों को उठाये नदी से चढ़कर जैसे-जैसे वे करीब होते गये, सूर्या में कंपन होता गया। वह बेहोश होकर गिर पड़ी। माया भवन का अस्तित्व समाप्त हो गया। मुसीबत की घड़ी मे अपने सहायक गुरुदेव को देख कपिल हाथ जोड़े उन्हें देखते ही रह गये। तभी बाबा गोरखनाथ जी अलख की पोटली खोलते हुए उपस्थित हो गये।

बाबा गोरखनाथ जी बोले- ''जा जाता क्यों नहीं, पर जाने का मार्ग तो पूछता जा। पथ में कांटे भी है, फूल भी है। दोनों को एक ही कसौटी बना।

इस बीच सूर्या को कुछ होश आने लगा। बाबा गोरखनाथ जी बोले-

सूर्या उठ योगी मर कर जीते है और भोग के मार्ग को अवरुद कर स्वच्छंद विचरण करते है। योगी के लिए समस्त विषयो का भोग बिल्कुल नीरस है। इस संसार में क्या सुख है? कुछ भी तो नहीं विश्व प्रपंच विनाश के लिए ही बना है।

बाबा गोरखनाथ जी के वचन सूर्या को अज्ञान से जगाकर, ज्ञानमयी शीतलता दे रहे थे। वे बोले- जहां तक तुम पहुंच गयी हो वह बहुत विशाल है। इस विशाल तरुवर की छाया में तुम संसार को बहुत कुछ दे सकती थी पर तूने परिव्यक्ता रूप ग्रहण कर लिया। गुरु का वध ही तुम्हारे बंधन का कारण बना।। तूने जल्दबाजी कर दी। सबकी उपासना अधूरी रही। तुम पुरुष के बिना अधूरी रही और तुम्हारे गुरु निभाई नाथ, सुदर्शन अधोरी, कठी बाबा कापलिक ये सब नारी के बिना अधूरे रहे, तुम सोचा करती थी, सब हीन है अधूरे है, पराश्रित है इसलिए तुम्हे लगा कि कोई साधन अपविज नहीं, कोई योजना अनैतिक नहीं। यह सब तुम्हारी भूल थी। स्वार्थी पुरुषों ने सत्ता और सुविधा के लिए, भोग और राजनीति के लिए, साधना और उपासना के लिए तुझे माध्यम बनाया। जिस यौवन पर मानव गर्व करता है, वह न जाने क्या-क्या निन्दित कर्म-राहो से गुजरता है। लेकिन मृत्यु अत्यंत कठोर होती है, जो किसी को क्षमा नहीं करती। तूने स्वयं के प्रति अत्याचार का बदला तो एक तरह से ठीक लिया लेकिन तू स्वयं सीमा से अधिक बाहर निकल गई। सबने तेरे साथ जो कुछ किया और जो तूने उन सबके साथ किया। वह सब कुछ ही जीवन के सिद्धांतों के साथ अत्याचार था।

सूर्या! समापन की गति के पथ पर जो कुछ तुमने किया वह भी प्रतिपादित था, अन्य विश्व प्रपंचो के जैसा। पर अब तुम विचार करो- मैं कौन हूं? और दृश्यतम हो रहा यह विश्व क्या है? किसी न किसी अच्छे अभ्यास में रम जाना ही जीवन है। इसी में जीवन का रस है। अपने अतीत को छोड़कर अतिरिक्त घटित घटनाओं को भुलाकर अब पुनः तुम सात्विक मार्ग पर आगे बढ़ो। तुम्हें तुम्हारा लक्ष्य मिल जाएगा।

पल भर में ही अपनी मधुर मंगलमयी- कल्याणकारी, वाणियों के द्वारा, सूर्या पर अमिट छाप बनाकर बाबा गोरखनाथ जी कपिल की ओर मुंह करके मुस्कुराने लगे। टकटकी लगाना सुनते कपिल भी निश्चिंत हो बाबा गोरखनाथ जी की अंतहीन महानता के बारे में सोचने लगे कैसे

सहज गुण और कैसी सहजता, सैकड़ो सालो का निचोड़ थोड़े शब्दों में ही निकाल देते है? हरि बाबा और गोरखनाथ जी दोनों महापुरुषों ने मिलकर अपने दिव्य-पुंज की ज्योति से अंधकार में व्यथित, भटकती उन सभी आत्माओ को अपनी पवित्र किरणो से धोकर बंधन-मुक्त कर दिया। दोबारा जन्म लेकर अपनी भूलो को सुधारने की विचार तरंगो के साथ। समय आने पर दोबारा आने का वादा कपिल से करके वे दोनो महापुरुष ओझल हो गये। महापुरुषो का दिव्य प्रकाश लुप्त हो गया। सूर्या कपिल की ओर दिव्य श्रद्धा से देख रही थी। अनुपम-अनुरग से युक्त मोतियो के दानो के रूप में आंसू की बूंदे टपक पड़ी। उसकी आंखों में आंसू थे लेकिन होठो पर पवित्र व सात्विक भविष्य का निश्चय लिए संतोषजनक मुस्कान थी।

प्रातः होते ही कपिल ने सूर्या से विदा मांगी उनको सूर्या के पास उन्नीस दिन हो चुके थे और अब सूर्या की सब समस्याओं का हल हो चुका था। इसलिए वहाँ अपनी भूमिका खत्म जान आगे बढ़ना चाह रहे थे। कपिल चल देते हैं सूर्या फफक-फफक कर रो पड़ती है। कल की सूर्या और आज की सूर्या में जमीन-आसमान से भी ज्यादा अंतर था। अब वह पवित्र प्रेम और सच्चे लगाव की मूर्ति लग रही थी। कपिल रुक जाते हैं थोड़ रूककर पुनः चल देते हैं। सूर्या दौड़कर कपिल के पास आती है और उनसें लिपट जाना चाहती है, लेकिन रूक जाती है। अपने क्षणिक प्रेम आवेग को स्थाई बनाने के लिए अपने भावो को भविष्य के लिए सुरक्षित कर लेती है। ऐसा करना ही तो इन महापुरूषो ने उसे सिखाया था। संबंध तो शाश्वत है इतनी जल्दबाजी किसलिए कपिल तेजी से पुल पार कर जाते है। और दो दिन की पैदल यात्रा करके पोखरा आ जाते है।

हिमालय की राहो पर और उनके लिए क्या-क्या अनुभव होंगे यह जिज्ञासा लिए कभी यहां तो कभी वहां भ्रमण करते रहे। नारायणी नदी के किनारे एक गुफा में समाधिष्थ एक महात्मा को देखा। वहाँ पर कुछ साधना करते हुए समय गुजारा। तब तक उन महात्मा ने समाधि तोड़ी तब तक बिना खाये-पीए ऐसे ही पड़े रहे। कई दिनों के बाद उन्होंने अपनी आंखे खोली। वे पवनपुरी महाराज थे। उनकी एक नजर से ही कपिल को भूख-प्यास और लम्बा इंतजार कुछ भी महसूस नहीं हुआ। कुछ भी

महसूस नहीं हुआ। कुछ दिन उनके साथ रहे। उन्हें कपिल के सब घटनाक्रम की जानकारी थी उन्होंने कपिल को जनकपुर मेले में जाने को कहा।

कुछ दिनों बाद कपिल जनकपुर पहुंच गये। वहां हजारो साधु आये हुए थे। इनसे कुछ सीखा जा सकता है। शायद पवनपुरी जी ने इसलिए ही यहा भेजा हो। ऐसा विचार करते हुए कपिल साधुओ के साथ मेले में रहने लगे। साधुओ से मिल-जुलकर उनके तपस्या के विषय में और परेशानियो के और परिणामों का ज्ञान लेने लगे। जनकपुर इनके अतीत से जुडा था वहाँ काफी परिचित थे। वे इनको सन्यासी भेष में देखकर आश्चर्य करने लगे। अपनी होशियारी से सबसे बचते-बचाते एक दिन तालाब के धाट पर स्नान कर रहे थे। उनसे कुछ दूरी पर तालाब में अचानक ही हरि बाबा प्रकट हुए। कपिल धीरे-धीरे उन तक पहुंच गये। हरिबाबा कपिल को ओर आगे तालाब के मध्य में ले गये। तालाब पर हजारो लोग इकट्ठे हो गये। प्रथम श्रद्धेय हरि बावा ने कपिल को सीने से लगा लिया। और साधुओ से अधिक अनुराग न रखने को कहा।- ''सत्य की खोज में ये सब वंधन है। साधू सत को कहते है। कौन साध ू है उसकी परख होना आवश्यक है। मठ, अखाड़े, आश्रम एक व्यवस्था है समाज में रहने की। यह उद्देश्य नहीं है। प्राचीन काल की आश्रम व्यवस्था विश्व की पोषक थी। शिक्षा का केन्द्र थी। शासक आश्रम के श्रेष्ठ ऋषिमुनियों के कथनानुसार शासन करते थे। आज महात्मा स्वयं राजनीतिज्ञो का पीछा कर रहे है। तुम्हें इन सब से परे रहकर अपने स्वतः शरीर रूपी आश्रम में अर्न्तमुख होकर आगे बढ़ना है। इनमें से बहुत से संत बड़े अच्छे हैं, उन्हें तुम देखो। वे जो राममय हो चुके है। उनके लिए राम ही सब कुछ है। रामरुपी सत पर विजय प्राप्त करने के लिए पवनपुरी ने तुम्हें यहा भेजा है। इसके बाद कुछ दिनों के लिए मेरे साथ भ्रमण में चलना। तुम इन साधुओ के साथ हो लेना। मैं कही भी तुम्हें आ मिलूंगा अब तुम जाओ'' ऐसा कहकर उन्होंने पानी में डुबकी लगाई और फिर ऊपर न आये।

कपिल तैर कर पानी से बाहर आये तो लोगों ने उन्हें घेर लिया। ये कौन थे, कहा गये सब पूछ रहे थे। कपिल हॅसते हुए निकल गए। घंटों लोग खड़े रहे तालाब पर कि बाबा निकलेंगे। सबसे बचते-बचाते कपिल

सैकड़ों नागा महात्माओं के साथ हो लिए। दरभंगा रेलवे-स्टेशन पर हरि बाबा भी उन नागाओ में शामिल हो गये। सब लगभग १६ दिन तक एक मठ से दूसरे मठ चलते रहे। कभी पैदल, कभी गाड़ी से हर जगह मठाध ीश अच्छी आवभगत करते और विदाई भी देते। कही-कही नागा झगड़ भी जाते थे· विदाई कम होने पर। कही पर सब फलाहारी बन जाते, कही पर अन्न खाने लगते। थोड़े-थोड़े घी दूध के लिए लट चलने लगते थे। कपिल और हरि बाबा इन्हीं लोगों के बीच रहकर आधुनिक नागा व्यवस्था का अध्ययन कर रहे थे। सीतामढ़ी से हरि बाबा कपिल को लेकर इन नागाओ से अलग होकर नेपाल में प्रवेश कर गये और फिर कुछ दिनों में नारायणी के किनारे गुफा में आ गये। साधु, संत, महात्मा और नागाओ का अनुभव दिलाकर अब हरि बाबा ने कपिल को कुछ दिन भौतिक जगत की मठ व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, वेद, उपनिषद शास्त्रो और पुराणों का गहन अध्ययन कराया। साधुओ का रहन-सहन, आचार-विचार सिखाया, भूमि की परख करना सीखा कर पैदल चलने की अद्‌भुत शक्ति प्रदान की। इसके अलावा वे जो भी जानकारी आवश्यक समझते थे वह सब हरि बाबा ने कपिल को दी। जिससे वे अपने साधु जीवन में कहीं भी उलझे नहीं।

हरि बाबा कपिल को काफी कुछ सीखा रहे थे। इस बार के लिए इतना ही बहुत है ऐसा जानकर एक दिन हरि बाबा ने कपिल को मृग चर्म का एक झोला देकर उसे रुपयो से भरकर लाने की आज्ञा देकर विदा कर दिया। कपिल गुफा से निकलकर नारायणी के तट को पार कर अपने गुरू की आज्ञा को शिरोधार्य कर चल दिए। हिमालय से उन्हें अब संसार में जाना पड़ेगा- उस आज्ञा की पूर्ति के लिए। लेकिन अब वे सन्यासी बनकर, भस्म लगाकर, कभी थोड़े से कपड़ो में तो कभी मृग चर्म लपेटे- मानसरोवर, सहस्त्र ताल, खपतड़ लेक, देवी कुण्ड, गोसाई कुण्ड, उर्वशी ताल या हिमालय के ही किसी और हिस्से में ही रहने के आदी हो गये थे। पर्वतों, शिखरों, वनों से निकलकर आबादी में जाना उनको अभिशाप सा लगता था। कुछ ही दिनों में मन उद्वेग और उत्पीड़न अनुभव करने लगता था। जंगलों को पार कर नई निर्मित सड़क पर चलते-चलते कपिल को बार-बार गुरूदेव की आज्ञा चिंता में जकड़ रही थी। गुरू की आज्ञा को टाल भी नहीं सकते थे और उसको पूरा करना

भी एक जटिल समस्या नजर आ रही थी। पैसा-पैसा चारो तरफ पैसा ही उनके मस्तिष्क में घूम रहा था- कहा से लाऊँ मैं कहा से पा सकता हूं इतना पैसा? आखिर क्यों गुरुदेव ने इतने रुपयों की मांग की? अगर सन्यास से पहले कहा होता तो मैं उन्हें करोड़ों रूपये दे सकता था। पर आज तो कुछ नहीं कर सकता। धन, वैभव को त्याग कर विभूति धारण कर अवधूत बन गया। आखिर अब क्यों उन्होंने कहा- ''जाओ इस झोले को रूपयो से भर लाओ। तुम एक राज परिवार से संबंधित हो तुम्हारे लिए यह कठिन नहीं है। कपिल असमंजस में पड़े सोच रहे थे। परिवार में जा नहीं सकता, दोस्तों से मिल नहीं सकता, सर्विस को त्याग दिया था। अपने सभी रूपये और धन-संपत्ति को विश्वविद्यालय और विध ावाओ को दान कर चुके थे। अब कौन-सा मुंह लेकर अपनी मजबूरियों का प्रदर्शन कर अपना मजाक उड़वाऊ। ऐसे चिंतन करते हुए वीरगांज पहुंचकर अलखिया मठ से आकर रूक गये। तीसरे दिन एक महात्मा ने कपिल को अरेराज मठ जाने का प्रोत्साहन दिया। अरेराज मठ बिहार में मोतीहारी के पास था। रास्ता पूछते-पूछते अपनी पैदल यात्रा को अरेराज मठ की तरफ मोड़ दिया।

कपिल घूमते-घूमते मृग-चर्म लपेटे और कंधे पर मृग-चर्म का ही झोला लिए अरेराज मठ पहुंच गये। उनके आश्चर्य भरे जीवन में एक और आश्चर्य जुड़ गया जब महन्त जी ने उनकी आगवानी की- जैसे वे पहले से ही कपिल के आगमन के बारे में जानते हो। साथ ही भोजन कराना, साथ ही बिठाना, लोगों में परिचय कराना, जैसे पूर्व परिचित हो यह सब सुखद आश्चर्य उनको अपनी समस्या का समाधान नजर आ रहा था। महन्त शिव शंकर गिरी जी सामाजिकता और अध्यात्म के पोषक थे। उन्होंने वहाँ पर स्कूल, कॉलेज और अस्पताल बनवाकर गरीबो की सेवा में अर्पित कर रखे थे। संध्या को वे स्वयं पूजन करते थे और शिव-शयन अपने हाथो से कराते थे। जब वे स्वयं शिवत्व में लीन जो जाते थे। उन दृश्यो को कपिल ने अपनी भावो में यादगार के रूप में रख लिया। कुछ दिन वहा पर रहकर भक्ति और सेवा का संगम देखा। फिर एक दिन महंत जी ने कपिल को अपने पास बुलाकर मृग-चर्म का झोला मांग लिया और उसमें भोरू और भारू- नेपाली और भारतीय रुपये भरकर झोला कपिल को सौंप दिया। महन्त जी ने ड्राइवर को आवाज देकर मर्सडीज

गाड़ी निकलवाई और कपिल को लेकर गाड़ी में बैठ गये। कपिल चकित होकर गाड़ी में बैठे थे। गाड़ी अनजान मार्ग पर दौड़ रही थी। कुछ ही घंटों के बाद नेपाल में प्रवेश कर गये। गाड़ी वीरगंज में अलखिया मठ के दरवाजे पर आकर रूक गई। महंत जी कपिल से बोले- कपिल जाओ तुम्हारे गुरू हरि बाबा मठ में बैठे हैं- उन्हें यह झोला सौंप कर आ जाओ मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं। कपिल कभी महंत को देखते तो कभी मठ के दरवाजे को। अंदर गये तो एक कोने में साधारण भेष में हरि बाबा बैठे हुए नजर आ गये। पशुपति नाथ यात्रा शुरू हो गई थी- तो इसलिए मठ में साधुओं की भीड़ थी। कोई चिलम पी रहा था। कोई कीर्तन गा रहा था। कोई अपनी दिनचर्या में व्यस्त था। उन्हीं में हरि बाबा भी मस्त बैठे थे। उन्होंने नजर उठा कर कपिल को देखा और मुस्कुराने लगे। मृग चर्म का झोला उनके सामने रखकर कपिल ने चरण धूलि माथे लगाई उसमें से पच्चीस रुपये निकालकर हरि बाबा ने झोला लौटाते हुए कहा-''ये सब मेरे काम के नहीं। तुम जाओ। महंत जी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे है। कपिल ने झोले के रूपयो को जमीन पर गिरा कर कहा- मुझे झोला चाहिए- पैसे नहीं- आप का आर्शीवाद ही काफी है मेरे लिए। हरि बाबा ने पैसे लेने में इंकार कर दिया। कपिल उनके समक्ष खड़े रहे। तब हरि बाबा ने वहाँ उपस्थित महात्माओं को खाद्य-पदार्थ मंगवाने के लिए, खीर आदि बनाने के लिए, यात्रा में खर्च के लिए सब पैसे बटवा दिए। हरि बाबा ने कपिल को चले जाने को कहा कपिल चलते-चलते गुफा पर भेंट करने को कहकर बाहर आ गये। महंत जी प्रतीक्षा कर रहे थे। देरी के लिए क्षमा मांग कपिल गाड़ी में बैठ गए। महंत जी बड़े शांत स्थिर स्वभाव में बैठे थे। मंद्-मंद मुस्कान उनके होठो पर खिल रही थी। गाड़ी चल दी।

यह सब क्या लीला हो रही है क्यों हो रही है कपिल इसी चिंतन में लीन थे। रास्ते में महंत जी से आज्ञा लेकर कपिल हिटौड़ा की तरफ पैदल चल पड़े। वर्षा शुरू हो गई। आंधी चल रही थी। रात होते-होते कपिल नारायणी नदी के किनारे-किनारे गुफा के पास पहुंचे। गुफा में पहुंचने के लिए नदी को पार करना पड़ता था। नदी में बाढ़ आई हुई थी पानी काफी ऊंचाई पर बह रहा था। कपिल नदी को पार करने के प्रयास में ऊपर नीचे आ जा रहे थे। पर कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। वे

चिंतित हो रहे थे गुफा तक कैसे पहुंचा जाए। तभी उन्हें लगा कि किसी ने उठाकर नदी में फेंक दिया हो और वे हवा में तैरते हुए नीचे आ गिरे। नीचे गिरकर कपिल ने स्वयं को नदी पार के जंगल में खड़ा पाया। एक पगडंडी ऊपर जा रही थी। चारों ओर अंधेरा था। दूर से प्रकाश की झलक दिख रही थी। वे उसकी ओर बढ़ चले। थोड़ी ही दूरी पर एक मानव पत्थर की शिला के नीचे ध्यानरथ बैठे थे। प्रकाश वहीं से फूट रहा था। करीब पहुंच कर देखा वे अवतार बाबा थे। उस चट्टान पर गोल प्रकाश का वृत बना हुआ था। कपिल उनको मौन प्रणाम कर भूमि को श्रदा से स्पर्श करके, गुफा में जाकर बैठ गये और अपनी विचार तरंगे उन तक भेजकर, शांत वातावरण की शांति में लीन हो गये।

धीरे-धीरे वातावरण की शीतलता के साथ अवतार बाबा में गति का संचार होने लगा और उन्होंने आंखें खोली। लगा आंखें नहीं कोई गहरा समुन्द्र हो। स्नेह भरी वाणी में चेतावनी का लहजा लेकर वे महान पुरूष बोले-बेटा नदी की बाढ़ में अनजान संकट में, अचानक अगर कोई विघ्न आ जाये तो प्रतीक्षा करते हैं। साधना का दुरूपयोग नहीं। क्या देर हो रही थी तुम्हें यहाँ आने में। कहीं कुछ हो जाता तो। वो तो अचानक दृष्टि पड़ गई तुम पर तुम बेचैनी से ऊपर नीचे आ जा रहे थे। सड़क के किनारे वाली गुफा में विश्राम कर लेता। कपिल चुपचाप सुनते रहे और समझने की कोशिश करते रहे यह हो क्या रहा था। (ये यहाँ पर ध्यानस्थ बैठे थे या मुझे नदी पार करा रहे थे) अवतार बाबा कपिल को लेकर गुफा में आ गये। उन्हें कपड़े बदलने को दिए और कुछ फल और खिचड़ी खाने को दी। कपिल थक गये थें लेटते ही नींद आ गई। सुबह जब उठे तो सूरज आकाश में काफी ऊपर पहुंच गया था। अब बरसात नहीं हो रही थी। इधर-उधर देखा तो अवतार बाबा वहां नहीं थे। झरने पर जाकर स्नान आदि करके पत्थर की चट्टान पर बैठकर प्रकृति का आनंद लेने लगे। कुछ देर बाद नदी की तरफ ध्यान गया तो देखा अवतार बाबा और बाबा गोरखनाथ जी बाते करते हुए नारायणी नदी के किनारे-किनारे चले आ रहे हैं। गोरखनाथ जी का दर्शन काफी दिनों के बाद मिला था। कपिल उन्हें निहारने लगे। सुनहरे बाल, कानों में कुंडल खप्पड हाथ में लिए सावला पर बड़ा ही सुंदर शरीर। कपिल ने दोनों महापुरूषों का अभिवादन किया। दोनों ने प्रेम में कपिल के सिर को सहलाया और तीनों

हिमालय के प्राणी पत्थर की चट्टान पर बैठ गये। कपिल हिमालय के बारे में सोचने लगा-यह जंगल, ये लताएँ, ये पुष्प, ये गुफाएँ, ये नदियाँ, ये रास्ते यह संपूर्ण हिमालय कितना भाग्यशाली है जो इसने ऐसे महापुरूषों को अपनी गोद में बिठा रखा है। थोड़ी ही दूरी में कितना अंतर है-वहां मानव व्यस्त है तेरा-मेरा में। बार-बार वह जन्म ले रहा है और मर रहा है, भटक रहा है, फिर भी वह हिमालय के संदेश को समझ नहीं पाता है। कपिल के विचारों की दौड़ चल ही रही थी कि

दोनों महापुरूष खिलखिलाकर हंस पड़े, कपिल को संबोधित कर वे बोले! ''कहाँ तक दौड़ लगाओगे, सामंजस्य स्थापित करने में। हिमालय का मूक संदेश और मनुष्यों का व्यस्त जीवन। दोनों उसी का रूप है क्योंकि सबसे वह व्याप्त है। चेतन में भी जड़ में भी, पर वह किसी का नहीं वह अपने में लीन है तुम्हें भी यही करना है। संसार व्यस्त है उसे वही छोड़ दो। हिमालय मूक है। उसे वैसा ही रहने दो। तुम्हें अपने मार्ग पर चलते रहना है। देखो कपिल! जन्म तो हर जीव लेता है, भूल को सुधारने के लिए, पर जीव बार-बार आकर भूल जाता है। वह वैसा कर्म करने लगता है, जिसके लिए वह नहीं आया है। जो करना चाहिए वह तो कर्ता के आवरण में छिप जाता है। कर्म संस्कार का निर्माण करता है, कर्म ही जीवन और मृत्यु का कारण बनता है, कर्म ही मुक्ति का मार्ग खोलता है। और कर्म करने के लिए मानव शरीर चाहिए। ग्रहण और त्याग की क्षमता लिए हुए यह एक ऐसा उपयोगी शरीर है जो सृष्टि के सभी गूढ़ रहस्यों को खोल सकता है। तुम परिष्कृत विचारों का प्रयोग करना सीखो। सूक्ष्म से भौतिक का अवलोकन करो। भौतिक को सूक्ष्म की तुलना में मत डालो। तुम डूब जाओ, आत्मीय सागर की लहरों में जहाँ न मृत्यु है, न जन्म है। तुम्हें तोड़ने का प्रयास किया जायेगा, पर तुम मत टूटना।

तीनों दिव्य महात्मा वहाँ से उठकर चल दिए। नदी को ऐसे पार कर गए जैसे किसी पुल से पार कर रहे हो। पानी स्थिर और ठोस बन गया था-जैसे उसमें कोई बहाव ही नहीं हो। अध्यात्मिक चर्चाए करते, कई घंटे जंगल में चलने के बाद हिटौड़ा बाजार में जा पहुंचे। अवतार बाबा ने एक धोती कपड़े के दुकानदार से लेकर रंगकर पहनने को कहकर कपिल को दे दी। दुकानदार अवतार बाबा से परिचित था उसने बहुत सेवा की।

अवतार बाबा अपने हंसमुख स्वभाव का आनंद ले रहे थे और दे भी रहे थे। आम लोगों के बीच वे चिलम पीने लगते और लोगों को बातों-बातों में हंसा दिया करते। बाबा गोरखनाथ पूरी तरह मौन थे। उन्हें न किसी से कुछ लेना था ना कुछ देना था। बस आपस में बात कर लेते थे। दिन भर बाजार में घूमते रहकर शाम को लौटकर गुफा में आ गये।

किसी ने खिचड़ी बना कर रख दी थी तीनों ने खिचड़ी खाई। फिर कपिल ने धोती गेरूवे में रंग कर सूखने डाल दी और गुफा में जाकर लेट गये। थोड़ी देर तक दोनों बावाओं में कुछ विचार-विमर्श होता रहा। कपिल तुम आराम करो हम आते हैं कहकर दोनों उठकर चल दिए। कपिल को नींद नहीं आई। कपिल मृगछाल को आसन बनाकर चट्टान पर बैठकर ध्यान में लीन हो गये। धीरे-धीरे खोते चले गये शून्यता में। आंखें बंद करने के थोड़ी देर बाद अलौकिक तरंगों में खेलने लगे। बहुत से महान पुरूषों को वायु से गमन करते देखा। बहुतों को समूह में बैठे देखा। और खुद अपने शरीर को भी शांत और स्थिर बैठे देखा। इससे पहले भी ऐसा हुआ था पर इतना नहीं। अपने स्थूल शरीर से निकलकर अब कपिल आत्मरूप हो कहीं भी आने-जाने में समर्थ थे। अनेक आध्यात्मिक रहस्यों में परिचित हो गये। थोड़ी ही दूर पर दोनों महापुरूषों को जाते देखा। कपिल उन्हें देखते रहे। अब दोनों दो दिशाओं की ओर मुड़ गये। अवतार बाबा एक गुफा में प्रवेश कर आसन लगाकर बैठ गये। धीरे-धीरे उन्होंने भी अपना शरीर छोड़ दिया। पर्वतों आदि को पार कर दोनों हरिद्वार के घाट पर गंगा किनारे पहुंच गये। चारों तरफ सन्नाटा था। अवतार बाबा सूक्ष्म शरीर में स्थूल शरीर का निर्माण करने लगे और कपिल को भी दूसरे शरीर के निर्माण को बोल दिया। अब दोनों महात्मा स्वयं द्वारा निर्मित स्थूल शरीरों में हरिद्वार के आश्रमों में, संतों के पास घूमने लगे।

माया देवी के मंदिर गए वहां कपिल का विल्केश्वर पुरी में परिचय कराया। इसके बाद सुभाष घाट आ गये। वहाँ कपिल को त्रिवेणीपुरी और लघुमनपुरी से मिलवाया। फिर हर की पैड़ी आ गये। दत्त महाराज का दर्शन करके फिर चण्डी के जंगल में पागल बाबा के पास जाते हैं। वहाँ से पुनः हरिद्वार आकर भैरव अखाड़े में प्रवेश करते हैं। आत्मानन्द महाराज के साथ अवतार बाबा ने काफी विचार-विमर्श किया। आत्मानन्द

जी ने कपिल को प्रेम से गले लगा लिया। फिर मिलने का वादा करके वहाँ से चल दिए। थोड़ी देर गंगा के किनारे बैठे रहे। तभी गार्ड बाबा आ गये जो बाँध के किनारे एक झोपड़ी में रहते थे। उन्हें कपिल और अवतार बाबा के बारे में जानकारी हो गयी थी। वे आकर दोनों के पांवों में लोट गये। बहुत देर अवतार बाबा ने समझाया तब वे अपनी कुटिया में गये। अवतार बाबा ने इधर-उधर देखा फिर अपने शरीर को विलीन कर दिया इसके बाद कपिल का शरीर भी अदृश्य हो गया। अब दोनों तेजी से गुफाओं की तरफ लौटने लगे। अवतार बाबा ने कहा मैं लखनऊ जा रहा हूँ। तुम जाओ। कपिल आकर शरीर में प्रवेश कर गये।

कपिल को करीब बाईस घंटे हो गये थे अपने शरीर से अलग हुए। पिछली रात की शुरूआत में ही शरीर छोड़ा था और अगले दिन शाम को शरीर में दोबारा प्रवेश किया। चेतना में आते ही वह सब दिव्य-स्वप्न प्रतीत हुआ। चारों ओर शाँति थी पक्षियों की चहल-पहल समाप्त हो चुकी थी। बहुत देर तक अवतार बाबा की प्रतीक्षा की पर वे नहीं आये। कपिल को कब नींद आ गयी उन्हें पता ही न चला। जब नींद खुली तो उजाला हो चुका था और दो बड़ी-बड़ी आँखें कपिल को घूर रही थी। कपिल उन आंखों को देखकर सिंहर गये। क्योंकि वे आँखें चार-पांच हाथ की दूरी पर बैठे एक सफेद शेर की थी। जो अपना ताकतवर शरीर और मजबूत जबड़ा लिए उन्हें एकटक देख रहा था। कपिल अपने स्थान पर बैठे रहे, कुछ डर लगने लगा। कपिल सहज हो अपनी विचार तरंगों को उसके पास भेजने लगे। वह उठ खड़ा हुआ, मुडा और चल दिया। तभी शेर का स्पर्श करते हुए बाबा गोरखनाथ जी ने हंसते हुए प्रवेश किया वे बोले ''क्यों इस बेचारे पर अपनी विचार शक्ति का प्रयोग कर रहे हो? कहीं यह पालतू बन गया तो जंगल के जानवर इसे जीने नहीं देंगे। हिसंक पशुओं से ज्यादा आदमी खतरनाक है। इन विचार तरंगों का प्रयोग मानव-जाति पर करना। अब यहाँ प्रतीक्षा करने से कोई फायदा नहीं अवतार बाबा नहीं आयेंगे। वे लखनऊ से लौट कर कश्मीर चले गये। आओ मैं तुम्हें सड़क पर छोड़ आऊं।

कपिल बाबा गोरखनाथ जी के पीछे-पीछे चल दिए। उन्हें गर्व हो रहा था धर्म पर, हिमालय पर भारत पर और इन महापुरूषों पर जो जन्म और मृत्यु को अपनी दोनों मुट्ठियों में बंद करके मौत के लिए हजारों साल

से एक चुनौती बने हुए थे। बाबा गोरखनाथ जी कपिल के भाव को देखकर बोले-यदा-कदा कर्मों की पवित्रता का श्रेय देकर महान शक्तियाँ किसी मनुष्य को सत के अवलोकन के लिए प्रोत्साहित करती है। कपिल तुम भी उन्हीं में से एक हो। दान दे देने से वस्तु का अस्तित्व समाप्त नहीं होता और न ग्रहण कर लेने से वह उसकी हो जाती है। तुम त्याग और ग्रहण दोनों स्वरूप के दृष्टा बनकर अपनी राहों में चलते रहना। तुम्हारा रास्ता साफ होता रहेगा। बाबा गोरखनाथ जी की वातें कपिल के मस्तिष्क पर अपनी गहरी छाप छोड़ती जा रही थी। नारायणी नदी को पार कर दोनों संत वीरगंज, कांठमाण्डू अंतर्राष्ट्रीय राजमार्ग पर आ गये। काफी रात हो चुकी थी इसलिए नदी के किनारे विश्राम के लिए रूक गये। गोरखनाथ जी ने अपनी झोली से फल और मिष्ठान निकाले, कपिल दौड़ कर खप्पड़ में पानी ले आये। खा-पीकर दोनों सो गए।

सुबह कुछ शोर-गुल सुनकर कपिल की आँख खुली। घबराकर उठ कर बैठ गये। स्त्री-पुरूष इधर-उधर आ जा रहे थे। कुछ लोग स्नान कर रहे थे, कुछ वस्त्र बदल रहे थे। कपिल देखने लगे। सामने बिडला टावर था वे हर की पैड़ी पर थे। रात को बातें याद आने लगीं। रात तो नारायणी के किनारे सोए थे। (और सुबह उठे गंगा किनारे हर की पैड़ी पर) मन ही मन हँसने लगे। बाबा गोरखनाथ ने सोते-सोते सशरीर मुझे यहाँ भेज दिया। अभी दो दिन पूर्व तो यहाँ पर थे। अवतार बाबा के साथ लेकिन जब निर्मित शरीर था और अब स्वयं थे। कभी सुना करते थे कि हेडा खान बाबा सशरीर अपने भक्तों को हर की पैडी पर मिनटों में गंगा स्नान कराकर लौट जाते थे। आज कपिल स्वयं भेजे गये थें लेकिन अब कपिल के लिए यह सब नया व ज्यादा आश्चर्यजनक नहीं था क्योंकि उन्होंने भी तीनों बाबाओं से इन क्रियाओं को प्राप्त कर लिया था बस अभी तक कपिल ने इसका प्रयोग नहीं किया था। भविष्य जैसा करावे कर देंगे ऐसा सोचकर बह्मकुंड पर जाकर स्नान कर हरिद्वार के कण-कण से परिचित थे। कई आश्रमों और मठों में गये लेकिन वहाँ साधु-संतों के झगड़े-विवाद थे उन से स्वयं को बचाकर। परिचित दुकानदारों और जानकार लोगों से स्वयं को छिपाकर आत्मानंद जी के आग्रह पर दिल्ली आ गये।

शांति वन और विजय घाट के मध्य यमुना बाँध की तरफ नागा

तपस्वी बीरगिरि बाबा जो आत्मानंद जी के शिष्य थे। वहां कपिल ने कुछ दिन आसन जमाया। बीरगिरि बड़े ही जटिल संन्यासी थे। वैसे महात्माओं की सेवा अपना धर्म और गुरू की उपासना को अपना लक्ष्य मानते थे। कपिल दिन मे इधर-उधर घूम फिर आते थे। इसी प्रक्रिया में कई राजनीतिज्ञ, कोई रियासत के राजा जिनको कपिल ने संन्यास जीवन से पूर्व कभी अच्छा सहयोग दिया था, मित्र आदि मिलने लगे। कपिल को इस रूप में देखकर वे कपिल के पहले रूप से तो प्रभावित थे ही अब इस रूप में कपिल क्या करते, कैसे है, यह सब जानने के लिए वे सब बाबा बीरगिरि के स्थान पर मिलने आने लगे। इधर बाबा बीरगिरि भी कपिल के योग, समाधि, ज्ञान से प्रसन्न थे। कई साधुओं ने योग जानकर रात्रि में कपिल से अमेरिका जाकर योग्य प्रचार के लिए कहा। बात चल पड़ी। अगले दिन से पासपोर्ट बनाने के प्रयास होने लगे। पुराने यार-दोस्त, परिचित आदि सब प्रसन्न हो गये। सब सहयोग देने को तैयार थे। बाबा बीरगिरि व उनके साथ अन्य साधु महात्मा सब खुश हो रहे थे कि हमारे अखाड़े का साधु अमेरिका जायेगा। खूब नाम होगा। धर्म प्रचार भी होगा। कपिल अमेरिका जाना नहीं चाहते थे पर साधुओं द्वारा मजबूर किए जा रहे थे। वे कपिल के उदार व मौन स्वभाव का दुरूपयोग कर रहे थे। अमेरिका जाने के सभी साधन इकट्ठा हो गये।

उस दिन आश्रम में तीस नागा महात्माओं का एक दल आया हुआ था। तभी एक बैरागी बाबा का कुटिया में आगमन हुआ। उन्होंने एक हाथ में बांस का डंडा ले रखा था। कमर में दो हाथ का कपड़ा लपेटे थे। सारा शरीर गंदा और जगह-जगह से कटा था। उसने आते ही सब महात्माओं को साष्टाँग किया और सेवा में लग गया। सभी महात्माओं को चाय बनाना, खाना परोसना, बर्तन मांजना सब काम खुशी-खुशी कर रहा था। उसकी सेवा से सब प्रभावित थे। कपिल के आते ही उस बैरागी बाबा ने दण्डवत किया और क्रोध की दृष्टि से कपिल को देखने लगा। कपिल ने ध्यान नहीं दिया। रात हो गई सब सोने की तैयारी करने लगे। कपिल भी हनुमान मंदिर के चबुतरे पर अपना मृगचर्म बिछाकर चिंतित अवस्था में लेट गये। अमेरिका जाने की सब तैयारी हो चुकी थी टिकट को छोड़कर। लेकिन कपिल सोच रहे कहां आकर उलझ गया। आत्मानंद महाराज ने क्यों मुझे यहां भेजा। कैसे इन महात्माओं से छुटकारा पाया जाए वे

सोचने लगे।

बैरागी बाबा भी साथ में आकर लेट गये। वे गाली दे रहे थे। कपिल ने नहीं देखा। सोचा पागल है या कोई ओघड है। वे उल्टी-सीधी गालियां बकते जा रहे थे अब कपिल को महसूस हुआ कि वे उन्हें ही गाली दे रहे थे। कपिल चुपचाप सुनने लगे -'क्यों तूने अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी नही देखा है? कार मोटर तो शायद तूने देखा ही नहीं और न ही वायुयान से सफर किया है? मूर्ख ऐसा ही करना था तो लक्ष्मी का दान क्यों किया? बैरागी बाबा और भी उल्टी-सीधी बातें कहते रहे। कपिल ने सोचा यह सब इस को कैसे पता। अभी इसको सब-कुछ कहने दो, कपिल ने मन ही मन यह निर्णय लिया। तभी हवा चली तो बैरागी बाबा चिढ़कर हवा को गाली देने लगे। फिर मुट्ठी में बालू उठाकर बुदबुदाते रहे, फिर घुमाकर वह बालू फेंक दी। न जाने कहा से उस बालू में चमक आ गई। हवा एकदम थम गई और जो महात्मा सोए हुए थे, वे मुर्दे के जैसे नज़र आने लगे। एकदम सन्नाटा छा गया।

तभी कपिल को कुछ सरसराहट सी महसूस हुई। बालू के कणों के मध्य एक सर्प फन फैलाए बैठा था। बैरागी बाबा उसे गाली देकर पूछ रहा था क्यों आई? वह नागिन थी। कपिल को देखते ही वह सिकुड़ गई। कपिल उठकर बैठ गये और अपनी विचार तरंगों को उस नागिन तक भेजा-तुम कौन हो? अपने स्वरूप का निर्माण करो। और यदि केवल एक सर्प हो तो सो जाओ। नागिन सूक्ष्मता को धारण कर नारी स्वरूप का निर्माण कर रही थी। बैरागी बाबा बौखलाहट में खड़े हो गये, कपिल से बोले नहीं-नहीं ऐसा नहीं होगा-तुम अपनी विचार तरंगों को रोको।" कपिल ने अपने संकल्प को वापिस ले लिया और लेट गये। बैरागी बाबा ने अपने सीने के पास से नाखून द्वारा खून निकालकर छिड़का। नागिन उसे पीकर लुप्त हो गयी। प्रकाश भी विलीन हो गया। ठंडी-ठंडी हवा चलने लगी। कपिल और बैरागी बाबा सो गए।

दूसरे दिन प्रातः ही चाय के बाद नागाओं ने बैरागी बागा को छेड दिया। क्यों बैरागी अब बारह वर्ष वैराग्य पूरे हो गये होंगे? अतः आप हमारे शिष्य बन जाए। आप की सेवा से हम खुश हैं। नागा तर्क करने लगे कौन शिष्य बनाएगा? बैरागी बाबा बोले-पहले तुम लोग साधु बनो फिर मुझे शिष्य बनाना। सभी महात्मा चुप लगा गए। बैरागी ने स्वयं भाव्य

किया-''उष्ण और शीतल वायु के बीच आकार एक बंधन है, दोनों का सम्मिश्रण करके प्रवाह करने से बंधन मुक्त हुआ जाता है। एक जीवन देता है, एक मृत्यु की ओर खींचता है। दोनों का मिलन मोक्षदायिनी है। वह राम है और कह कर अपने काम में लग गये। कोई साधु कुछ भी नहीं कह सका। कपिल भी सुनकर दंग रह गये। बैरागी निस्वार्थ सेवारत थे। न उनमें राग था न अहंकार। शाम तक कपिल बैरागी बाबा के बारे में सोचते रहे। कपिल ने खाना नहीं खाया और चबूतरे पर जाकर लेट गये।

तभी बैरागी बाबा फिर आ गये। कल वाली गालियां देने लगे। फिर कहने लगे ''पहले किए गए सभी प्रयासों पर पानी क्यों फेर रहे हो? देखो कपिल-पश्चिम की आत्रोहवा में परिपक्व होकर जाओ, नहीं तो वे लोग तुम्हे कच्ची रोटी की तरह फेंक देंगे। तुम पको या न पको पर ये महात्मा तुम्हें पकाकर जरूर बेच देंगे। भाग जा इतनी दूर भाग जा जहां तुझमें योगी ही जिंदा रह जाए। कपिल ने आज भी उनकी बातों का कोई जवाब नहीं दिया।

सुबह-सुबह परिचित सब मिलने आ जाते थे। कुछ वायुसेना के और कुछ भारतीय उच्च अधिकारी और पुराने मित्र। लेकिन कपिल का मन किसी के साथ भी नहीं लगता था। यमुना की तरफ निकल गए। यमुना की धारा को देखते रहे जो बहती जा रही थी। सभी रिश्ते नातों से कितना दूर मैं इन महात्माओं के बंधन में क्यों आ गया? बैरागी बाबा क्या कहना चाहता है? ये सब सोचते विचारते स्थान पर आ गये। आज बीरगिरि बाबा बड़े प्रसन्नत थे। उन्होंने कपिल को दूध और फल दिये। बैरागी बाबा गिलास को राख से साफ करते हुए कपिल से कहने लगे ''मैं इसी तरह मल-मल कर चमकाता हूं। मैल कितनी देर तक रह सकता है। मैं भी यह देखना चाहता हूं।'' कपिल समझते रहे। अब वे बैरागी बाबा की बातों पर ध्यान दे रहे थे।

आज भी शाम को कपिल ने भोजन नहीं किया और पूर्व निश्चित जगह पर जाकर लेट गये। बैरागी बाबा कपिल के पास आकर बैठ गए और बोले ''अब क्या विचार है? आज वे गाली नहीं दे रहे थे। कपिल उठकर बैठ गये। बैरागी बाबा कुछ कहना चाह रहे थे पर कपिल बीच में ही बोल पड़े -'' बाबा मुझे अभी तक समझ नहीं आया कि आप कौन है? और आप चाहते क्या हैं? आपकी बातों से लग रहा है कि आप मेरे निर्णय

से परिचित है। पर मैं क्या करूं मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है। सब कुछ तैयार है बस वापसी का टिकट लेना रह गया है। मैं इस मुसीबत से कैसे छुटकारा पाऊ? मैं तो श्रेष्ठ महापुरूषों के साथ हिमालय में तपस्यारत रहना चाहता हूं। क्यों अवतार बाबा ने इन महात्माओं से मेरा परिचय करवाया? मैं हिमालय की गुफाओं में कन्दराओं में अपने भौतिक शरीर को रखकर वर्षों तक सृष्टि और सूक्ष्म जगत के रहस्यों को जानना चाहता हूं। क्या इसमें आप मेरी सहायता कर सकते हैं?

बैरागी बोले देखो कपिल क्या करना है या क्या मैं तुम्हें दे सकता हूं। अथवा क्या मुझे तुमसे लेना है? यह तो वक्त पर छोड़ दो हमारा लक्ष्य निर्धारित है मार्ग नहीं। कल सुबह शांति वन के चौराहे पर तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा। इन सभी सामानों को छोड़ देना। कुछ आवश्यकता भर पैसे पास में रख लेना और आ जाना। सुबह बैरागी बाबा सभी को चाय पिलाकर चल दिए। थोड़ी देर बाद कपिल ने अमेरिका जाने के सभी कागजात और रूपये एक साघू को सौंप दिए। थोड़े से रूपये लेकर टहलते हुए चल दिए। लोगों ने सोचा कपिल टहल रहे हैं। चलते वक्त बीरगिरि बाबा ने देखा वे मुस्कुरा रहे थे जैसे सब पता हो। उन्होंने धीरे से हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया। कपिल शांतिवन के चौराहे पर पहुंचे, बैरागी बाबा नाले की पुलिया पर इंतजार कर रहे थे। उन्होंने लपक कर कपिल का हाथ थाम लिया और दोनों चल दिए स्टेशन को तरफ।

रेल द्वारा सहारनपुर पहुंचे वहां से बस पकड़कर हरपटपुर पहुंचे। यमुना में बाढ़ आयी हुई थी दूर-दूर तक पानी ही पानी नजर आ रहा था। किसी तरह रात बिताकर अगले दिन सुबह यमुना नदी को पार कर पौटंटा साहिब पहुंच गये। हिमालय में प्रवेश करते ही कपिल को लगा जैसे अब सही जगह आ गये हो। पौटंटा साहिब गुरूद्वारा दर्शन कर नाहने की तरफ चल दिए। अब बंधन मुक्त साधु जीवन का आंनद ले रहे थे। कई महीनों तक गांवों में बस्तियों में मंदिरों में आश्रमों में तरह-तरह के साधुओं और महात्माओं से मिलते-मिलाते भ्रमण करते रहे। बैरागी बाबा से रहन-सहन और व्यवहारिक जगत के लोगों की पहचान करने के तरीके सीखें। यात्रा करते-करते काफी समय बीत चुका था लेकिन बैरागी बाबा कपिल को छोड़ ही नहीं रहे थे। बैरागी बाबा बोले 'कपिल तुम्हारी संकल्प शक्ति और विचार तरंगों की शक्ति, इन्हीं में मेरी समस्या का हल

है। तुम्हें देखकर मुझे अपने एक दुख से, एक बंधन से मुक्त होने की आशा जगी है। इसीलिए मैं तुम्हें नहीं छोड़ पा रहा हूं। कपिल ने बात खोलकर विस्तार जानना चाहा तो। बैरागी बाबा बोले इसके लिए तुम्हे मेरे जीवन की कहानी सुननी पड़ेगी जो कि संसार में उन लोगों के लिए एक सबक हो सकती है जो लड़के-लड़कियों के युवावस्था के आकर्षण को प्रेम मानने लगते हैं लेकिन उन्हें इसके पूरे परिणाम पता नहीं होते। कपिल को सूर्या की याद आ गयी क्योंकि उसने भी ऐसे ही अपनी दुखभरी कहानी सुनाई थी। बैरागी बाबा अतीत को पढ़ने लगे।

''मैं पीलीभीत के एक ठाकुर जमींदार का बालक था। खेत, धन, सम्पत्ति, इज्जत सब कुछ था। जिस स्कूल में मैं पढ़ता था उसी में एक इंजीनियर तिवारी की लड़की माया भी पढ़ी थी। हम दोनों इतना करीब आ गये कि कोई हमें अलग नहीं कर सकता था। एक दिन माया तिवारी स्कूल नहीं आई तो मैं उसके घर पहुंचा, मकान खाली पड़ा था। तिवारी जी वहां के इज्जत वाले इंजीनियर थे, वे अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति को बेचकर, नौकरी छोड़कर कहीं चले गये। मैं वहां के जमींदार का बेटा था, मेरा कोई क्या बिगाड़ लेता इस भय से वे स्वयं अपनी बेटी को लेकर न जाने कहा चले गये। स्कूल के लड़के-लड़कियां मेरा मजाक उड़ाने लगे मैं भी एक दिन संकल्प लेकर चल दिया। जब तक माया को नहीं खोज लूंगा वापिस नहीं आऊंगा। मैं माया को ढूंढता रहा और मैंने भारत-भूमि का एक-एक कोना छान मारा। मेरे कपड़े फट गये, चेहरे पर दाढी-मूंछ निकल आई। मेरा लडकपन मुझसे ही खो गया। बारह वर्ष के बाद वह मुझे मिली देहरादून में। अब वह पूर्ण नारी थी। पर अभी उसकी शादी नहीं हुई थी। उसने मुझे वस्त्र मंगवा कर दिए,जूते खरीदे और पैसे देकर मुझे ठहरा दिया। महीनों हम एक दूसरे के समीप रहे। तिवारी जी ने मुझे और माया को साथ देख लिया था। माया जब घर पहुंची तो तिवारी जी उसे लेकर उसी वक्त चल दिए। वह मुझसे कुछ कह भी न सकी। मैं कई दिन तक प्रतीक्षा करता रहा फिर उसके घर पर जाकर पता लगाया। वहां किसी को कुछ पता नहीं था। मैं फिर चल पड़ा और चलता ही रहा इस उम्मीद से कि माया मुझे मिलेगी।

देहरादून से तिवारी जी सपरिवार नेपाल आ गये और चीनी मिल में पार्टनर हो गये उन्होंने अपनी कन्या को मार डाला। अब माया के चलते

वह और भटकना नहीं चाहते थे। मुझे बीस वर्षों के बाद यह सब पता चला। मैं माया को खोज रहा था और माया कब की मर चुकी थी। मैं उसे खोजते-खोजते वैराग्य की स्थिति में आ गया। अयोध्या के प्रमोद वन की बड़ी कुटिया में मुझसे गुरू का साक्षात्कार हो गया। वही पर मैंनें दीक्षा ली। वहीं पर मुझे माया के देहावसान की खबर मिली और मैं फिर चल पड़ा पर अब मैं माया को नहीं, माया के मायावी स्वरूप के निर्माणकर्ता राम में लीन था। मैं गोमुख से ऊपर तपोवन में जाकर तपस्या करने लगा। लगातार बारह वर्ष मैंने वहीं गुजार दिए। फिर तपोवन महाराज के साथ भ्रमण में निकल गया। कुछ दिनों के बाद तपोवन महाराज हिमालय लौट गये और मैं नेपाल की तराईयों में आ गया। एक दिन जब मैं गोरखनाथ मंदिर के चबुतरे पर लेटा था तभी माया ने आकर मुझे जकड़ लिया। माया भी मुझे खोज रही थी। माया सर्प के रूप में गोरखनाथ मंदिर में रह रही थी। मैं राम राम करता ही रहा पर राम कुछ नहीं दे पाये। वह इच्छाधारी नागिन बन कर आयी थी। सुबह होते ही माया सर्प बनकर छिप गई। मैं वहां से चल दिया।

परेशान होकर मैं मान सरोवर कैलाश जा रहा था। रास्ते में हेडाखान बाबा, सोमवारी बाबा, लुटरिया बाबा मिल गये। वे भी कैलाश जा रहे थे। उन महान संतों की संगत पाकर मैं खुश था। हम चारों एक साथ जा रहे थे। जब रात को मैंने सोना चाहा तो माया आ गई और फिर सर्प बनकर मेरे साथ सो गई। सोमवारी बाबा ने सर्प को देखा तो वे एक पत्थर उठाकर मारने दौड़े तभी माया स्त्री का भेष बना कर चिल्लाने लगी। सभी हतप्रभ हो गए। उन लोगों ने मेरा बहिष्कार कर दिया। अब मैं कैलाश नहीं जा सकता था। सोमवारी बाबा ने रोक दिया। तब मैं अपने शरीर को नोचने लगा। मेरे शरीर से खून निकल गया और नागिन उस खून को पीकर मस्त होने लगी। ऐसे ही चलता रहा। मैं मुजफ्फरनगर नाग देवता के पास बचने के लिए आया। वहां पर एक दूसरी नागिन ने भी मेरे खून का स्वाद लिया और मजबूरी में वहां मुझे दोनों का सहयोगी बनना पड़ा।

अब कपिल को बैरागी बाबा के शरीर में जगह-जगह कटने के निशान की वजह समझ आ गई। बैरागी बाबा आगे बोलने लगे-जब तुम मुझे मिले तब मुझे तेरहवां साल लग रहा था इस जंजाल में फंसे। तुम्हें देखकर मुझे लगा तुम कुछ का सकते हो तुम्हारे आध्यात्मिक प्रभाव ने मुझे उम्मीद

जगायी इनके बंधनों से मुक्त होने की और पूरी तरह राममय होने की।

अब तुम मुझे भी और इन्हें भी बंधन मुक्त करो। इन दोनों इच्छाधारी नागिनों को अपनी विचार तरंगों से प्रभावित करो और अपने पवित्र संकल्प द्वारा इनके दोबारा जन्म लेने का मार्ग प्रशस्त करो। कपिल से दोगुनी से भी ज्यादा उम्र के महात्मा कपिल से प्रार्थना कर रहे थे। कपिल ने वादा कर दिया। उचित समय आने पर दोनों नागिनों से बैरागी बाबा को मुक्त कर दिया और नागिनों को भी जन्म का मार्ग दर्शन देकर उनका भी कल्याण कर दिया। बैरागी बाबा को बहुत ही राहत मिली सबकी समस्या सुलझ गयी। अवतार बाबा ने कपिल को उन महात्माओं से क्यों मिलवाया। इसकी वजह भी समझ आ गई। बैरागी बाबा कपिल को उत्तरखंड में कूर्मांचल की यात्रा पर जाने को कहकर गोमुख से ऊपर तपोवन मे तपस्या करने लगे। अब वे परम तपस्वी बाबा रामदास जी के नाम से जाने जाते हैं और आज भी तपोवन की एक गुफा में समाधिस्थ है। कपिल अपनी संकल्प शक्ति और योग शक्ति और विचार तरंगों को स्वयं में समेट कर चल रहे थे (अपनी नयी भूमिकाओ की तलाश में) हिमालय की राहो पर।

कुछ देर बार उठकर बाहर आये तो देखा शेर चले गये थे। एक दो घंटियों को कपिल ने बजाया और मंदिर की परिक्रमा करने लगे। परिकमा मे पहले ही सर्प धूम रहा था। कपिल उसे देखकर रुक गये। र्सप मंदिर की तीन बार परिकमा करके घूनी की तरफ चला गया। तब कपिल ने परिक्रमा की और बाहर के चबुतरे पर आकर बैठ गये, बैठे-बैठे सो गये। सुबह जब नींद खुली तो रात की सारी घटनाएं बारी-बारी से दिमाग में उभरने लगी। दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर कुण्ड में स्नान करके विभूति शरीर में लगाकर मां की मूर्ति के समक्ष जाकर खड़े हो गये। मां से पूछना चाहते थे आखिर तुम चाहती क्या हो? फिर कहने लगे पत्थर की मूर्ति से क्या पूछूं? पर तभी देखा मूर्ति बातें सुनकर मुस्कुरा रही थी। कपिल गौर से देखते हैं उस षोडषी कन्या का चेहरा पारदर्शी रूप से उस मूर्ति में नजर आने लगा। कपिल ने मूर्ति का चरण स्पर्श कर विदा मांगी।

तभी मंदिर का सेवक रामकुमार एक पुजारी को लेकर आ गया। साथ में पन्द्रह-बीस आदमी भी थे। हल्द्वानी और खेडा गांव के। सभी लोग कपिल से वहां रह जाने का आग्रह करते हैं। वे हाथ जोड़ कर कहते हैं अगर आप रहते हैं तो पूजारी भी रूक जाएगा और एक नौकर भी। कपिल मंदिर में जाकर मां से पूछते हैं और लौटकर रहने की स्वीकृति दे देते हैं। मां की भी यही इच्छा है नहीं तो रात में वह मुझे लेकर क्यों आती? नौकर काठगोदाम से कपिल का कमण्डल और आसन लाने चला गया। सभी लोग पूजा-पाठ में लग गये। सही स्थान देखकर कुटिया का निर्माण करवाया। तीन दिन मेहनत करके सबने एक कुटिया बनायी फिर विधिवत उसमें प्रवेश किया। मां से हाथ जोड़कर प्रार्थना करी। तुम मां हो इसलिए मैं तुम्हें साक्षी बनाकर उपासना प्रारंभ कर रहा हूं जिसके लिए तुम स्वयं भी प्रयत्नशील हो। सहयोग का आकांक्षी हूं और गलतियों के लिए करबद्ध प्रार्थना करता हूं। क्षमा करते रहना। तुम मुझे लाई हो। पर मैं तुम्हारी उपासना नहीं करूंगा।

हफ्तों गुजर गये। कपिल ने सभी आहार छोड़ दिए। केवल बेल का पत्ता पीकर रहने लगे। लोग आते और पूजा पाठ करके लौट जाते। कपिल ने अपनी निद्रा समाप्त कर दी। दिन और रात एक समान हो गए। न सूर्योदय की प्रतीक्षा करते न शाम होने का इंतजार। एक दिन

दिव्य देवदर्शन

जब कपिल किसी गांव या बस्ती से गुजरते थे तो लोग उनकी शांत स्थिति और दिव्य योगी रूप से प्रभावित होकर रोक लेते थे वे सत्कार करना चाहते थे, छोड़ते ही नहीं थे ऐसा बहुत बार होता था। लेकिन वे तो पक्के बैरागी बन चुके थे। सबको सोता छोड़ रात को ही निकल भागते। एक रात्रि को ऐसे ही नया गांव में सबको सोता छोड़कर जा रहे थे। थोड़ा चलने के बाद रास्ते में एक हाथी से भेंट हो गई। कपिल रास्ता छोड़कर चल देना चाहते थे पर हाथी रास्ता रोक रहा था। कपिल ने खड़े होकर विचार तरंगों को छोडा़ तो हाथी को मुनष्य की तरह खड़ा पाया। उन्होंने कपिल को पांच लड्डू दिए और खा जाने को कहा कपिल खा गये। करीब एक मील तक वे कपिल के साथ चलते रहे। फिर वे लुप्त हो गये। वे श्री गणेश जी थे।

कपिल रामपुर से बस द्वारा काठगोदाम पहुंचे। गोला नदी पार करके हनुमान जी का एक छोटा सा मंदिर दिखा। उसके बाहर अपना आसन कमण्डल रखकर विश्राम के लिए लेटे फिर सो गए। रात को एक सौलह साल की कन्या ने आकर जगा दिया और अपने साथ लेकर चल दी। जंगल घनघोर था, वह हवा की तरह कपिल को लिए चली जा रही थी। कपिल मंत्र-मुग्ध उसके पीछे चलते रहे। नाला पार करके पहाड़ी पर चढ़ने लगे। तो मोड़ पर दो शेर खड़े मिले। जैसे वे उस कन्या की प्रतीक्षा में खड़े हो। कपिल उस षोडसी कन्या के पीछे-पीछे जा रहे थे। अब दोनों शेर भी पीछे हो लिए। कुछ दूर चलने के बाद एक टीनशेड आ गया। उसके अंदर मां काली की विशाल प्रतिमा थी। नर मुण्डों की माला धारण किये थी। शिव की शैया पर अपने पैरों को रख अधोग्नि में खड़ी थी। उसी की बगल में बाराही देवी की काली प्रतिमा थी। उसी प्रतिमा के समीप जाकर वह कन्या लुप्त हो गई। कपिल ने इधर-उधर देखा वह कहीं नजर नहीं आई। कपिल अकेले थे चारों तरफ घनघोर अंधेरा था। मंदिर का घंटा रह-रहकर बज रहा था अपने आप। दोनों शेर दरवाजे पर खड़े थे। कपिल उन्हें देखकर डर गए। इस कल्पना से ही सिहरन आ गई कि वे इनके साथ मीलों पैदल चलकर आये हैं। कपिल मूर्ति के सामने बैठ गये। पीछे घूनी जल रही थी। दीप बुझ गया था, कपिल ने दीपक जला दिया फिर घूनी के किनारे बैठ गये।

कुछ देर बार उठकर बाहर आये तो देखा शेर चले गये थे। एक दो घंटियों को कपिल ने बजाया और मंदिर की परिक्रमा करने लगे। परिकमा मे पहले ही सर्प धूम रहा था। कपिल उसे देखकर रुक गये। र्सप मंदिर की तीन बार परिकमा करके घूनी की तरफ चला गया। तब कपिल ने परिक्रमा की और बाहर के चबुतरे पर आकर बैठ गये, बैठे-बैठे सो गये। सुबह जब नींद खुली तो रात की सारी घटनाएं बारी-बारी से दिमाग में उभरने लगी। दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर कुण्ड में स्नान करके विभूति शरीर में लगाकर मां की मूर्ति के समक्ष जाकर खड़े हो गये। मां से पूछना चाहते थे आखिर तुम चाहती क्या हो? फिर कहने लगे पत्थर की मूर्ति से क्या पूछूं? पर तभी देखा मूर्ति बातें सुनकर मुस्कुरा रही थी। कपिल गौर से देखते हैं उस षोडषी कन्या का चेहरा पारदर्शी रूप से उस मूर्ति में नजर आने लगा। कपिल ने मूर्ति का चरण स्पर्श कर विदा मांगी।

तभी मंदिर का सेवक रामकुमार एक पुजारी को लेकर आ गया। साथ में पन्द्रह-बीस आदमी भी थे। हल्द्वानी और खेडा गांव के। सभी लोग कपिल से वहां रह जाने का आग्रह करते हैं। वे हाथ जोड़ कर कहते हैं अगर आप रहते हैं तो पूजारी भी रूक जाएगा और एक नौकर भी। कपिल मंदिर में जाकर मां से पूछते हैं और लौटकर रहने की स्वीकृति दे देते हैं। मां की भी यही इच्छा है नहीं तो रात में वह मुझे लेकर क्यों आती? नौकर काठगोदाम से कपिल का कमण्डल और आसन लाने चला गया। सभी लोग पूजा-पाठ में लग गये। सही स्थान देखकर कुटिया का निर्माण करवाया। तीन दिन मेहनत करके सबने एक कुटिया बनायी फिर विधिवत उसमें प्रवेश किया। मां से हाथ जोड़कर प्रार्थना करी। तुम मां हो इसलिए मैं तुम्हें साक्षी बनाकर उपासना प्रारंभ कर रहा हूं जिसके लिए तुम स्वयं भी प्रयत्नशील हो। सहयोग का आकांक्षी हूं और गलतियों के लिए करबद्ध प्रार्थना करता हूं। क्षमा करते रहना। तुम मुझे लाई हो। पर मैं तुम्हारी उपासना नहीं करूंगा।

हफ्तों गुजर गये। कपिल ने सभी आहार छोड़ दिए। केवल बेल का पत्ता पीकर रहने लगे। लोग आते और पूजा पाठ करके लौट जाते। कपिल ने अपनी निद्रा समाप्त कर दी। दिन और रात एक समान हो गए। न सूर्योदय की प्रतीक्षा करते न शाम होने का इंतजार। एक दिन

अर्द्धरात्रि को मंदिर की घंटी बजने लगी। कपिल कुटिया से बाहर निक ल आये। मंदिर का बड़ा घंटा अभी तक हिल रहा था, पुजारी सो रहा था फिर किसने घंटा बजाया। बाहर गहन अंधेरा था वहाँ भी कोई नहीं था। कपिल कुटिया की ओर चल दिए तो देखा वही कन्या कुटिया से बाहर आ रही है। कपिल के सामने आकर वह मुस्कुराने लगी कपिल उसे देखते ही रहे। वह मंद-मंद मुस्कान बिखेरती चली गई। कपिल सम्मोहित हो देखते रहे।

कपिल कुटिया में आये। आसन पर बैठे तो देखा कोई वस्तु दब गई। उठकर देखा तो वह लाल रंग की जिल्द लगी पुस्तक थी। उस पुस्तक के ऊपर स्फटिक और मूंगे के दानों की माला रखी थी। लाल वर्ण की उस पुस्तक के ऊपर एक मंत्र अंकित था। जिसे जाप करने का निर्देश दिया गया था। रात कपिल ने जाप में ही गुजार दी पुस्तक के निर्देशानुसार कपिल की साधना होती रही। अब बेल का पत्ता छोड़ दिया। इसी तरह कई रातें गुजर गई। प्रतिदिन वह दिव्य बालिका पहली कितबा को उठा ले जाती और दूसरी किताब रख देती। उसमें अपूर्व तेज था। वह अलौकिक थी। मायावी थी और अद्‌भुत सौन्दर्य की मूर्ति थी। जगतधारिणी, शक्ति स्वरूपिणी, महिमामयी, भगवती, स्नेह, आंदश, ममता और प्रणय की प्रतीक उस बालिका से कपिल पूर्ण परिचित हो गये। कपिल प्रतीक बन गये वह प्रतिष्ठात्री। पूर्णिमा की रात वह आई। चन्द्रमा सम्पूर्ण कलाओं से आसमान से अपनी चांदनी पृथ्वी पर भेज रहा था। वह भी आज सफेद वस्त्रों में चन्द्रमा जैसी ही लग रही थी। कपिल कभी चन्द्रमण्डल को देख रहे थे तो कभी उसे। कपिल ने उन्हें दरवाजे पर ही पकड़ लिया और विभोर होकर बाहुपाश में जकड़ लिया। वह खिलाखिला कर हंसती रही। कपिल के शरीर में बिजली की तरह तेज झटका लगा। कपिल विक्षिप्त से होकर गिरने ही वाले थे कि उसने कपिल को अपनी बांहों में थाम लिया। मां बोली-योगी, मैं लक्ष्मी नहीं हूं। न गौरी हूं। मुझमें प्रणय नहीं वेदना नहीं। मैं पूर्ण काल हूं पूर्ण विराम हूं। आदि कला हूं, परा कला हूं, मैं ही रेखा हूं, पूर्ण विराम हूं। तुम हर जगह उलझ जाते थे और मुझे तुझे बंधन मुक्त करना पड़ता था। लक्ष्मी से मैंने तुझे मुक्त किया। सरस्वती का ज्ञान मैंने कराया। कला का विमोचन भी मैंने ही कराया। रेखा मैं स्वतः हूं, आओ तुम मुझ रूपी सागर में डूब जाओ। विराम तुझमें

नहीं होगा। खो जाना, प्रतीक्षा मत करना। पथिक बनो, पर पथ को मत निहारो। वहां जाओ जहां सब कुछ है और कुछ भी नहीं। भौतिक संसार की सामरिक सरंचना को छोड़ दो। सूक्ष्म में सदैव रमण करना। तुम्हें तुम्हारा लक्ष्य मिल जायेगा।

कपिल देख रहे थे। सुन रहे थे पर कह नहीं सकते थे। उनकी बांहों में पड़े थे। वे कपिल को ऐसे लेकर खड़ी थी जैसे मां अपने पुत्र को लेकर खड़ी हो (खिला रही हो)। उन्होंने कपिल को आसन पर लिटा दिया और माथे को सहला कर चल दी। कपिल देखे जा रहे थे पर उठ नहीं पा रहे थे। आज कोई किताब नहीं थी। उनके द्वारा दी गई माला कपिल के गले में पड़ी थी। आंखों से अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी। कपिल मूक बने उसे अपूर्व बालिका को निहार रहे थे। बार-बार चेहरा बदलता रहा। वह लक्ष्मी थी, गौरी थी, सरस्वती थी, कला थी रेखा थी और वही काल रूप बाराही काली है।

कपिल बहुत भटकते रहे थे आज जब वह मिली तो उसी में खो गये। स्थिर आनंद में लीन टहलते-टहलते जंगल में निकल गये। चांदनी में हिरन के बच्चे खेल रहे थे उनके बीच जाकर बैठकर सोच रहे थे जिस मां की एक झलक पाने के लिए साधक और भक्त बरसों तरसते रहते उसी मां ने मुझे तपस्या कराई। अपने जीवन की धन्यता पर मुग्ध हो आनंदित हो रहे थें सुबह हो गई थी कपिल जंगल से कुटिया में आ गये।

सेवक रामकुमार आ गया पूजा के बाद उसने भागवत करने की सलाह मांगी। सभी आये लोगों की यही इच्छा थी कपिल ने हां कर दी। बहुत दूर-दूर से लोग आने लगे। ब्राह्मणवाद का नारा गूंजने लगा, भेदभाव की अग्नि मंदिर में जलने लगी। अनाज और धन बटोरने की दौड़ शुरू हो गई। काफी महात्मा इकट्ठे हो गये। लोभी प्रवृत्ति ने ब्राह्मणों में भेद कर दिया। कपिल ने रामकुमार को बहुत समझाया पर वह नहीं माना। कपिल कुटिया में चिंतित बैठे थे। दोपहर का समय था। भागवत का पाठ मंदिर में चल रहा था। तभी अचानक वह परम सुखदायिनी मां, काली स्वरुपिणी बालिका कुटिया में आ गई। उसने आकर कपिल का मस्तक चूम लिया और धूने से विभूति निकाल कर कपिल को टीका लगा दिया। उसका आना कपिल को नया जीवन दान लग रहा था। पिछले हफ्ते वह नहीं आई तो सामाजिक परिस्थितियों ने नई घटनाक्रम में वृद्धि

कर दी। मंदिर का वातावरण दूषित हो गया था। मां ने कपिल को वहां से हट जाने को कहा। मां घंटों तक कपिल के पास बैठी रही फिर चली गई। न किसी ने आते देखा न जाते देखा। बाहर मंदिर मे भागवत चल रहा था लेकिन भगवती तो कुटिया में थी कपिल के पास। दो दिन बाद भागवत समाप्त हो गया। ब्राह्मण, बाबा, सेवक, भक्त सभी चले गये अपने-अपनें रास्तो पर।

कालीचौर से कपिल चल दिए अपने हृदय में मां का दिव्य प्रेम और धन्यवाद लेकर। एक अद्वैत योगी की तपस्या मां ने साकार होकर कराई संसार क्या समझेगा? ज्ञानी क्या निचोड़ निकालेंगे? दार्शनिकों की बुद्धि भी चकरा जायेगी। और वे अपनी सीमित बुद्धि से इसे मिथ कहकर, गलत व्याख्या करके स्वयं भ्रम में जीयेंगे और मानव को भी भटका देंगे न जाने कब तक के लिए?

कालीचौर से लौटकर कपिल कुछ दिन तक हनुमान मंदिर पर ठहर गये। अपने पिछले जीवन, सन्यास, हिमालय के अमर योगियों का सहयोग और देवी-देवताओं के दर्शन का गंभीरता से विश्लेषण करते रहे। कितनी ही चमत्कारिक घटनाओं के पात्र बन चुके थे, कितने ही अध्यात्मिक रहस्यों को जान चुके थे। लेकिन अब कुछ दिनों से अपने पिछले जन्मों का विवरण जानने की इच्छा बार-बार जोर मारती थी। वे किसी ऐसे स्थान पर जाना चाहते थे जहां वे तपस्या कर, समाधि कर, स्वयं में लीन हो यह सब जान सके। कालीचौर में टाटम्बरी बाबा ने मार्कण्डेय कुंड की चर्चा की थी। वहां पर मार्कण्डेथ ऋषि ने मार्कण्डेय पुराण की रचना की थी। सोचा अब वही चला जाये।

इधर कुछ दिनों से एक लंगूर भी साथ में रहता था। कपिल जो अब साधना करने थे, विभूति लगाते थे, ध्यान, माला जाप करते, वह भी सब कुछ वैसे ही करता था। आजकल कपिल का आहार नीम के पत्ते थे तो वह नीम के पत्ते तोड़ लाता और स्वयं भी वही खाता था। कपिल पांच-छः घंटे सूर्य पर ध्यान लगाते थे वह भी वैसा ही करता था। उसी सम्पूर्ण क्रियाएं योगी की थी। कमण्डल में पानी लाता और माथे पर रामनामी चन्दन लगाता। कपिल ने उसका नाम भगवानदास रख दिया। एक दिन कपिल एक साधु वीरू बाबा को और भगवान दास लंगूर को साथ लेकर, थोड़ा सा सामान ले चल दिए मार्कण्डेय कुण्ड की तरफ। काठगोदाम से

रानी बाग चुंगी के बायी तरफ की पहाड़ी पर यह कुण्ड है। काफी ऊंचाई पर है लगभग पांच हजार फिट। भगवानदास लंगूर उछलता-कूदता आगे रास्ता बनाता और कपिल और वीरू बाबा पीछे-पीछे चलते रहे। कई घंटे चलने के बाद लंगूर एक चीड़ के पेड़ पर चढ़ गया और किलकारी मार का एक तरफ इशारा करने लगा। सूखी नदी का रास्ता था। पत्थर की चट्टानों पर चढ़कर कुछ देर बाद ऊपर पहुंचे तो सामने एक छोटा सा मैदान नजर आया। सामने कुण्ड था। वह कुंड इतना सुंदर और वृत्ताकार था कि प्रकृति अपनी कार्यकुशलता से आश्चर्यचकित कर रही थी। आसपास कुण्ड से थोड़ा हटकर चीड़ और देवदार के वृक्ष थे एक जामुन का पेड़ भी था। कुण्ड का पानी एक दम साफ-स्वच्छ नीला था।

जाड़े का मौसम था। वहां काफी ठंड थी। सभी सामान एक किनारे रखकर। तीनों कुटिया और धूनी बनाने में जुट गये। एक चीड़ का पेड़ गिर गया था उसको बांस के पेड़ों के साथ करके पत्ते लकड़ी आदि से एक ओट सी बनाकर रात होने से पहले कुटिया का निर्माण करके तीनों मजे से घूनी तापने लगे। कई दिनों तक साधना चलती रही। खाने-पीने का सामान तो ज्यादा लाए नहीं थे वह सब समाप्त हो गया। एक रात को कपिल मांला लेकर जाप कर रहे थे भगवान दास लंगूर आग ताप रहे थे। तभी सामने से तीन प्रकाश के गोले अलग-अलग दिशाओं से आते नजर आये। तीनों प्रकाश के वृत्त करीब होते गये। कपिल ने बीरू बाबा को भी उठा दिया तीनों वृत्ताकार रूप कुंड पर आकर रूक गये। अब वे तीन महात्मा नजर आ रहे थे। कुछ देर तक वे कुंड पर बैठे रहे फिर उठ कर घूनी के सामने आकर रूक गये। कपिल ने सादर चरणस्पर्श कर बैठने को चादर बिछा दी। वे बैठे नहीं खड़े-खड़े ही उन्होंने अपना परिचय दिया। सफेद ढीला कुर्ता पहनने वाले हेडा खान बाबा थे, व शरीर पर गेरूआ वस्त्र धारण करने वाले सोमवारी बाबा । और तीसरे केवल कौपीन धारण किए बाल ब्रह्मचारी जी थे।

हेडा खान बाबा झुककर भगवानदास लंगूर के सिर को पकड़ कर सहलाने लगे और बोले -"मौनी महाराज आपने यह जन्म ले लिया। बद्रीनाथ की गुफा को छोड़ने के बाद आपका पता ही नहीं चला।" एक साधु ने बताया कि आपने अमरनाथ में शरीर त्याग दिया। और आज आप यहां बैठे हैं।

वे तीनों महात्मा खडे-खड़े ही लौट गये। जाते-जाते कपिल को जगह छोड़ देने के लिए कहा। उनके पीछे लंगूर भी चला गया। दूसरे दिन सुबह लोटा तो उदास नजर आया। तीन दिनों तक तीनों प्राणियों ने कुछ भी नहीं खाया, और न उस स्थान को छोड़ा। सारे जंगल को खोज डाला पर खाने को कुछ भी नहीं मिला। लंगूर भी इधर-उधर जाकर लौट गया। प्रतिदिन वे तीनों महात्मा वहां आते थे लेकिन वे कुछ भी नहीं ला रहे थे। वे कपिल को कुण्ड से हटने को कह रहे थे। इस तरह दो दिन और गुजर गये। बीरू बाबा भूख से तिलमिला रहा था। भगवानदास लंगूर की हालत भी खराब थी। कपिल की आंतें भी कुछ मांग रही थी। तभी दृष्टि जामुन के पेड़ पर गयी। जामुन के फल तोड़कर पानी में खौलाया। बीरू बाबा और भगवानदास लंगूर ने एक-एक गिलास पानी पीया। कपिल ने अपना हिस्सा घूनी पर रख दिया। गिलास गिर कर जामुन का पानी बह गया। कपिल ध्यान में बैठने का प्रयास कर रहे थे लेकिन भूख ध्यान कहा लगने देती थी। तभी तीनों महापुरूष आ गए। कपिल ने आज उनसे कोई बात नहीं की। कुछ देर बैठकर वे चले गये। उनके जाने के थोड़ी देर बाद कपिल कुंड में स्नान कर, भस्म लगाकर, घूनी पर आकर बैठ गए। कभी इन रोज आने वाले महापुरूषों के बारे में, कभी प्रकृति के सहयोग न देने के कारण चिंतन करते-करते क्रोध आने लगा। ईश्वरीय व्यवस्था के प्रति। श्री गुरू की ओर ध्यान गया। तभी अचानक कपिल के कण्ठकूप में गति होने लगी और धीरे-धीरे स्वतः ''जालन्धर बन्ध'' लग गया। बंध लगते ही एक किलकारी मुंह से निकली जो बहुत ही भयावनी थी।

आवाज के निकलते ही जंगल गूंज उठा। जानवर इधर-उधर भागने लगे। कोलाहल मच गया। पक्षियों में बेचैनी छा गयी। बीरू बाबा और लंगूर दोनों घबरा गये। कई मिनटों तक ऐसा होता रहा। पूरे जंगल के जानवर दौड़ने लगे। पेड़ संतुलन खो बैठे। तभी सफेद धोती पहनकर एक लड़का कपिल के सामने आकर खड़ा हो गया। उसके हाथ में बहुत बड़ा लोटा था। जो दूध में भरा था। वह कपिल से निवेदन करने लगा ''महाराज आवाज बंद करो। जंगल में रहने वाले जीवों में बेचैनी छा गई है। सभी पशु-पक्षी भाग रहे हैं। अंधेरे में एक-दूसरे से उलझे जा रहे हैं। आप उन्हें राहत दीजिए मैं दूध लाया हूं। इसे आप ग्रहण कीजिए और कुछ कंद हैं।'' कपिल की आवाज रूक गई, धीरे-धीरे साधारण स्थिति में

आ गये तो उसे देखा। फिर उसने हाथ जोड़कर कहा ''महात्मा लोग क्रोध नहीं करते, नहीं तो अनर्थ हो जाता है। आप लोग कल्याणकारी होते हैं। आप लोगों का क्रोध कल्याणकारी भावनाओं को परे कर देगा'' बीरू बाबा ने दूध गर्म किया। सबसे पहले आगन्तुक कपिल को दूध पिलाया। इसके बाद बीरू बाबा और लंगूर ने पिया। कपिल ने अपना दूध गिलास में रख लिया। उन्होंने खड़े होकर कोई दस-बारह कंद फल रख दिए और बोले-मेरी कुछ गाये कल से इधर चारे के लिए आयेगी। आप बड़ी चित्ती गाय को दूध प्रतिदिन निकाल लेना'' ऐसा कहकर वे चले गये। कपिल ने उनसे कुछ नहीं पूछा और न साथियों को पूछने दिया। कपिल ने सुबह दूध पिया और जंगल में घूमने के लिए जाने लगे तो देखा गायों का एक समूह उधर चरने के लिए आ रहा था। चित्तकबरी गाय बहुत बड़ी थी। वह खुद घूनी पर आकर रूक गयी। कपिल ने बीरू बाबा से दूध निकालने को बोल कर, गाय माता को नमस्कार कर उसके सिर को सहला कर क्षमा मांगी, कष्ट देने के लिए और जंगल में निकल गये घूमने के लिए।

घटनाएं घट जाती हैं कुछ अंतराल मिलने पर ही क्या हुआ था यह सब समझ में आता है। कपिल रात की घटनाओं का जोड़-तोड़ लगा रहे थे। जो आए थे वे कौन थे। कोई साधारण दयालु व्यक्ति थे। यहां तो आसपास कुछ भी नहीं। क्रोध तो ईश्वर और ईश्वरीय व्यवस्था के प्रति था। यदि वे साधारण दयालु ग्वाले होते तो गाय ऐसे धूने पर नहीं आती। चित्तकबरी गाय का घ्यान आते ही एक ग्वाले पर कपिल का ध्यान गया जो विशेष है, परम पुरूष है। तो क्या वे स्वयं (परमेश्वर) चलो जो भी हो, सब ठीक है, मुझे तो अपने पिछले जन्मों की खोज करनी है। ऐसा सोचकर आगे बढ़ गये। भगवान दास आगे चल पड़े। ढलान के ऊपर से पत्थरों में गुफायें नजर आ रही थी। वही जाकर बैठ गये। फिर कुछ लकड़ियां उठाई, उन्हें गुफा के दरवाजे पर लगाकर अंदर जाकर लेट गये। काफी देर बाद हेडा खान बाबा ने लकड़ियों को हटाकर अंदर प्रवेश किया और कपिल को उठाकर बैठा लिया कहने लगे-देखो बेटा ज्यादा जिद नहीं करते तुमने रात को जंगल के कितने जीवो को परेशान किया और यहां भी हट कर बैठ गये हो। जाओ तुम अपनी कुटिया पर समय तुम्हें सब कुछ बता देगा। समय का पीछा तुम मत करो। मैं पिण्डारी की

गुफा में जा रहा हूं, तुम भी कुछ दिनों बाद यहां से चल देना जिस दिन तुम्हारी कुटिया जल जाये उसी दिन चल देना। भीमतालनल दमयंती में जाकर साधना करना। भगवानदास अब ज्यादा तुम्हारा साथ नहीं देगा। इसे काठगोदाम भेज देना। इसके इस योनि के दिन पूरे हो गये हैं। कपिल वहां से कुटिया पर आ गये, बीरूबाबा और भगवानदाम प्रतीक्षा कर रहे थे।

अब साधना ठीक चल रही थी। चित्तकबरी गाय का दूध प्रतिदिन मिल जाता था। वह स्वयं ही घूने पर आ जाती थी। कंद समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा था। तीनों एक दिन कुटिया में बैठे थे ऊपर आग लग गयी। तीनों बाहर निकल आये। कपिल ने अपनी कमर से लंगोटी खोलकर फेंक दी, आग बुझ गयी। तभी अपना सामान उठाया और उसी वक्त नीचे उतर गये। भगवान दाम और बीरूबाबा ने उसी दिन से खाना-पीना छोड़ा दिया। कपिल वहां से चल दिये भीमताल, नल दमयंती की तरफ। क्योंकि जगतधारिणी मां ने कपिल से वहां दर्शन दूंगी ऐसा बोला था। और हेडा खान महाराज ने भी कहा था।

पूर्वजन्म और परीक्षा

भीम ताल होते नल दमयंती ताल आ गए। जहां भी जाते थे वहाँ कुछ न कुछ विशेष हो ही जाता था। जिससे लोग आकर्षित होकर भीड़ बढ़ा देते थे। फिर सबसे बचकर आगे बढ़ना पड़ता था। नल दमयंती ताल में तालाब के पास एक मंदिर है। उसी मंदिर में एक कुटिया है अब उसी में डेरा जमाया तथा रात भर कुटिया में रहते और दिन में जंगलों में पहाड़ों पर घूमते रहते। यही हरि पर्वत के पास, कर्कोटक पहाड़ी में एक गुफा मिल गई। उसी में दिन में ध्यान करते रात में कुटिया पर चले जाते। यहा भी सामाजिक लोगों से घिर गए। लेकिन ज्यादा समय का र्कोटक पहाड़ वाली गुफा में रहते, आदी रात होने पर ही कुटिया में आते थे।

स्वयं में लीन हो चित की परतों को खोलकर पिछले जन्मों का अतीत जानने के लिए सामाधिस्थ होते। एक दिन चित्त ने अतीत के सब रहस्य खोल दिये। इससे पिछला जन्म भी साधु का ही था नाम था अवधूत बाबा। नर्मदा किनारे रहते थे ७५ साल तक वहां तपस्या करने के बाद समाधि लगाकर शरीर पूरा किया और इस जन्म को प्राप्त किया। फिर उससें पिछले जन्म में गये तब भी साधु थे क्षत्रिय परिवार में जन्म लेकर अचानक सब त्याग दिया और चैतन्य ब्रह्चारी के नाम से कश्मीर में सैकडों सालों तक तपस्या कर निवास करते रहे। फिर उससे पिछले जन्म में गये जब एक राजा थे। महान सम्राट विक्रमादित्य सत्य और वीरता के महज संगम। अब और भी पीछे गये तो स्वयं को नाथों के नाथ महान मछेन्द्रनाथ के रूप में पाया (पिछली अपनी जन्म परंपरा जानकर स्वयं ही स्वयं के प्रति नतमस्तक हो गये। पिछले जन्मों का विवरण मिलने से इस जन्म की चमत्कारिक और अलौकिक घटनाओं का रहस्य भी खुल गया। हरि बाबा का गोरखनाथ बाबा और अवतार बाबा का मिलना गुरू, सद्‌गुरू परमगुरू रूप में, देवी देवताओं का दर्शन, विशेष संकल्प से समाधिष्थ होना सब पिछले जन्मो की तपस्या और अच्छे कार्यों का पारितोषिक था। यह सब सिर्फ आज के अभ्यास का परिणाम नहीं था। इन सब शक्तियों से कपिल पिछले जन्मों से ही संबंधित थे। अब अंदर से बहुत संतोष हो गया। आत्मविश्वास जिसे कुछ दिन से खो रहे

थे उसे दोबारा पा लिया और सहज होकर जैसा कि प्रत्येक जन्म में धर्म और देश के लिए कुछ करते ही आए थे। इस जन्म में भी हिमालय में समाधि लगाकर पूरे ब्रह्माण्ड का अवलोकन कर मानव जाति को सृष्टि के अंतरिक्ष के रहस्यों से अवगत कराने की आवश्यकता समझ भविष्य में ऐसा करूंगा ऐसा निर्णय लिया और कर्कोटक की गुफा से रात को कुटिया में आ गए।

सुखी, संतुष्ट और सफल व्यक्ति ही समाज को कुछ दे सकता है। पिछले जनमों का अपना विवरण जानकर वे हिमालय, तपस्या, गुरूओं और भारत व उसके समाज के प्रति स्वयं को और भी अधिक जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में देख रहे थे। इसलिए अब दिन में कुटिया पर ही ठहर। समाज के लोगों को ज्यादा समय देने लगे। एक दिन स्नान करके कुटिया में बैठे ही थे कि कुछ लोग एक बच्चे को लेकर आ गए जो जन्म से ही गूंगा था। कपिल ने उसे अपने हाथ से विभूति खिलाकर ओम बोलने का कहा। विभूति खाते ही वह ओम-ओम बोलने लगा। कपिल स्वयं अवाक रह गये क्योंकि यह ऐसा करने का प्रथम अनुभव था। उसी दिन नैनीताल से पोस्टमास्टर वर्मा जी अपने लड़के को ले आए जो अपंग था। (वे लड़के को उठाकर लाए थे)। वर्मा जी सब दवा कराकर, महात्माओं को भी दिखा कर थक चुके थे। कपिल ने उन्हें भी विभूति दे दी और घर जाकर मलने को कहा। वह लड़का ठीक होकर तीन दिन बाद स्वयं चलकर कपिल के पास आया। अब तो चारों तरफ हल्ला हो गया। प्रतिदिन सैंकड़ों लोग आने लगे। अब सामाजिक उद्देश्यों में ही जकड़ते जा रहे थे। ऐसे में रह-रहकर कर मां की याद आती थी। मां ने बोला था पर अभी तक दर्शन नहीं दिए थे। इधर पुजारी के आग्रह पर भागवत का आयोजन और यज्ञ करने का निश्चय किया। भागवत यज्ञ की तैयारियां हो रही थी। दिन करीब आता जा रहा था। आसपास रहने वाले सभी महात्माओं और विद्वानों को यज्ञ में पधारने का निमंत्रण भिजवा दिया गया।

भागवत यज्ञ प्रारंभ करने के दो दिन पूर्व कपिल स्नान करके लौट रहे थे तब छम-छम की आवाज ने उन्हें आकर्षित किया। कपिल ने मुड़कर देखा तो मुंह से अपने आप निकल पड़ा-मां और दौड़ कर पैरों में गिर पड़े। मां ने उठा कर खड़ा कर दिया। वह आभूषणों से विभूषित थी।

अंग-अंग में अद्वितीय रत्न पहने हुए थी। पैरों में घुंघरू थे, नृत्य मुद्रा में खड़ी थी। यह कालीचौर की वही षोडषी बालिका थी।

कपिल के माथे पर हाथ रख कर वे बोली ''बहुत प्रतीक्षा करनी पड़ी न? पर यह अच्छी बात नहीं, तुम्हें मुझसे लगाव क्यों होता हा रहा है? लगाव किसी भी वस्तु से,देवी-देवता, मोक्ष या मुक्ति से अच्छा नहीं। तुम्हें स्वच्छन्द बढ़ते रहना है। मैं इसीलिए देर से आई। मैं कोई तुम्हारी सीमा नहीं हूं। मंजिल मुझसे आगे हैं। मैं तो केवल मार्गदर्शन करने आती हूं। कल के संबंधित संस्कारों को मैं मिटा रही हूं और तुम मुझसे चिपकते जा रहे हो। अब तुम्हारे सामने बहुत सी समस्याएं आएगी जिसमें मैं भी हूं। कपिल तुम अद्वैत हो। द्वैताद्वेत के समावेश में तुम मत उलझ जाना। मैंने तुम्हें बहुत कुछ दे दिया है। अब तुम्हारी तपस्या की परीक्षा का समय आ गया है। कपिल तुम मुझे तोड़ देना। नारी यदि ममता है, तो वह श्रद्धा भी है। उर्वशी भी है और विश्वामित्र की मेनका भी है। यदि उसमें स्नेह है तो प्रणय की प्रेम पिपासा भी है।

''तुम मुझे गौर से देखो, मेरे मुखमंडल को मेरे शरीर को, मेरे केश, वस्त्र और भाव को। मैं कैसी लग रही हूं? अब कपिल देखते है तो वह एक सांसारिक बालिका की तरह खड़ी थी। सलवार-पाजामा-बाव कट, मोहिनी रूप आंखों में प्रेम पिपासा। वह मुस्कुरा रही थी। सुबह के सूर्य का प्रकाश उस पर पड़ रहा था। और कपिल उसे देखे जा रहे थे। अचानक कपिल मुड़ कर चल दिए। तो वह सामने खड़ी मिली। कपिल जिधर जाते वह उधर ही नजर आती। कपिल थक कर आंखें बंद करके ताल के किनारे बैठ गये। तो पायलों की आवाज के साथ मधुर संगीत प्रभाव डालने लगा। कपिल खड़े हो गये। वह नृत्य में मग्न थी। कपिल ने आगे बढ़कर उसे एक थप्पड़ लगा दिया। मूर्ख नारी तुझे हर जगह तृष्णा और प्यास ही लग रही है। मैं तुझे अंग-अंग से असहाय, अपंग कर समुन्द्र के किनारे फेंक दूंगा जहां तेरा अहंकार, तुझे ही तोड़ देगा।'' कपिल उसे थप्पड़ लगाये जा रहे थे पर आंखें बंद किए हुए थे। वह खिल-खिलाकर हंसते हुए बोली ''आंखें तो खोलो देखो तुम्हारी अंगुलियों के निशान मेरे गाल पर पड़ गये हैं। अब आवाज़ मां की थी। कपिल ने आंखें खोली। सामने मां दाहिने गाल को सहलाते हुए अपनी दैविक स्थिति में हंस रही थी। कपिल के सिर पर मां ने आशीर्वाद का हाथ रख

दिया। और कहने लगी- यही मेनका है विश्वामित्र की मेनका जो तुम्हें मीनाक्षी बनकर अपनी चंचल क्रियाओं द्वारा तुम पर छा जाना चाहेगी। यज्ञ के दिनों में प्रायः उपस्थित रहेगी। इसकी हर क्रिया में एक मौन आमंत्रण होगा प्रेम का प्रणय का, पतन का। कपिल तुम्हें बहुत दूर जाना है। जहां न जन्म है न मृत्यु है। इसके लिए यह सब परीक्षा देनी ही पड़ती है यह एक कसौटी है हर तपस्वी को इससे गुजरना ही पड़ेगा। तुम रूकना मत। तूने थप्पड़ मार कर अपनी विजय का संकेत दे दिया है। फिर भी नारी-नारी है। नारी माया का स्वरूप है। नारी हर जगह है। नारी के बिना सारा ब्रह्माण्ड वीराना है। लेकिन तुझे माया के इस मायावी जाल से बाहर निकल जाना है। ऐसा कहकर मां लुप्त हो गई।

कपिल लौट कर कुटिया में आ गये। कल से यज्ञ प्रारंभ था उस पर विचार विमर्श करना था कई लोगों से। भागवत और रूप के प्रबंध आदि की आवश्यक बातचीत से निपट कर कपिल ने सोचा गुफा में चला जाए। वहां से भीमताल का दृश्य बड़ा ही मनोरम दिखाई पड़ता था। गुफा में जाकर बैठ गये। आज बहुत प्रयास करने पर भी ध्यान नही लग रहा था। मन और मस्तिष्क पर वह चेहरा प्रभाव डालता जा रहा था। कपिल तृतियों से संघर्ष कर रहे थे। बेचैनी बढ गई, तब गुफा से बाहर आकर बैठे गये। वहां भी वही चेहरा घूमता नजर आया। कपिल सोच रहे थे यह क्या हो रहा है मेरे साथ। ध्यान बटाने के लिए भीमताल की तरफ नजर डाली तो देखते ही रह गए। मीलों दूर अपनी कुटिया से वही आती हुई दिखाई पड़ी। वह कपिल के पास ही आ रही थी। कपिल खड़े होकर इधर-उधर टहलने लगे। फिर रूक कर गुलाब के फूलों को देखने लगे तो तोड़कर सुगंध लेने की भावना जगी। लेकिन तुरंत वहां से हट गये। पुनः गुलाब के प्रति आकर्षण हुआ। एक डाली को पकड़कर अधखिले फूल को देखते रहे।

तभी मधुर आवाज ने अचंभित कर दिया। क्या अधखिले फूल अच्छे लग रहे। इन्हें तोड़ लेते। तोड़ कर अपनी जटाओं में रख लो। कुछ सुगन्ध ले लो इनका भी जन्म सफल हो जायेगा। कह कर वह हंसने लगी। कपिल ने एकदम फूल की डाली छोड़ दी। कांटे चुंभ गए। अंगुलि को सहलाते हुए उसे देखने लगे। अद्भुत सौंदर्य लिए वह अप्सरा कपिल के सामने खड़ी थी। वह मुस्कुरा रही थी। उसकी आँखो में निमंत्रण था।

कपिल धीरे-धीरे विहहल होते जा रहे थे। मन की बेचैनी बढ़ रही थी। तब उसने फूल को तोड़कर कपिल के पैरों पर चढ़ा दिया। कपिल पीछे हट गये। अपने चित्त को काबू कर थोड़ा कठोर अंदाज में बोले-तुम यहां क्यों आई? जाओ तुम यहां से जल्दी जाओ। नारी के लिए लज्जा और मर्यादा में ही रहना शोभा देता है।

कपिल की बातों को टाल कर वह बैठ गई और कहने लगी-'आप तो योगी हैं। वस्त्र धारण नहीं करते। भस्म लगाकर कौंपीन में घूमते रहते हैं। स्त्री और पुरूष सभी आप के पास आते हैं। योगियों के लिए तो आत्मा में भेद नहीं। आत्मा न पुंलिग है और न स्त्रीलिंग। आत्मा तो आत्मा है। आप आत्मदर्शी हैं। फिर आप मुझसे क्यों डर रहे हो? मैं कन्या हूं? युवती हूं इसलिए। योगी जी आप मुझे नारी रूप में क्यों देखते हैं। आप मुझसे निहित आत्मा को देखिए। क्या कोई अंतर है आप में और मुझमे। आप इतने श्रेष्ठ योगी होकर मुझसे डर रहे हैं। आइए बैठिए। समाज से आपको भय है। मैं समाज को नहीं जानती। वह सफल होने के लिए आत्मीय तत्वों का सहारा ले रही थी। कपिल को याद आया मां ने कहा था, विजय का संकेत दिया था। लेकिन यहां तो यह प्रभावित करती ही जा रही है।

''क्या सोच रहे हैं? उसने कपिल को टोका ''सुना है आप कष्टों का निवारण करते हैं। मैं भी आपके पास आई हूं। आप मेरा भी हाथ देख लीजिए।'' उसने अपना हाथ कपिल के सामने फैला दिया। कपिल ने उसके चेहरे को देखकर स्वयं को उसके आकर्षण से मुक्त किया और चेतावनी के लहजे में बोले-देखों मीनाक्षी, तुम मुझे परेशान मत करो। वह झटके से नाम सुनकर खड़ी हो गई। ओ तो आप मुझे जानते हैं? तो योगीराज जी यह भी बता दीजिए कि मैं कहां जाऊं? वह जाने को तैयार नहीं थी। उसकी रूप लीला से मुंह फेर कर कपिल ही उठकर चल दिए। पहाड़ के खेतों में घूमते-फिरते कुछ भक्तों से मिलते-मिलाते आ गये अपनी कुटिया।

कपिल कुटिया पर आये तो मीनाक्षी पहले से ही आकर बैठी हुई थी। वहां वह कुछ नहीं बोली। वह औरतों की भीड़ में घुलमिल गई। वहीं से बराबर देखती रहती थी। उस दिन बहुत से साधु महात्मा आ गये, इलाके के सभी गणमान्य व्यक्ति आकर यज्ञ में सहायता देने लगे। बाहर भागवत

का पाठ हो रहा था। कपिल कुटिया में कुछ लोगों के साथ बैठे थे। मनीक्षा उठ कर बाहर चली गई। सैकड़ों औरतें, बच्चे धार्मिक क्रियाओं में आ रहे थे। दूर-दूर से लोग आते रहे सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। तभी भागवत के मंडप में खलबली मच गई। कुछ औरतें रोने लगी। भागवत बंद हो गया। कोई छोटा सा बच्चा मर गया। वह भारतीय जीवन बीमा निगम के एजेंट श्री भगत जी का लड़का था। भीमताल गांव के ही रहने वाले थे।

मीनाक्षी ने उस बच्चे को गोद में उठाकर कपिल के पास धूनी पर लाकर लिटा दिया और बोली "अगर यह मर गया तो तुम्हारे ऊपर इसका काफी प्रभाव पड़ेगा। पूरे जीवन भर इस कलंक के टीके को तुम ढोते फिरोगे। जो कुछ करना है जल्दी करो।" कपिल ने सभी को शांत रहने के लिए कहा और कुटिया बंद करके धूनी पर बैठ कर घंटों समाधिस्थ रहे। कुटिया के बाहर भीड़ इंतजार करती रही क्या होगा। मीनाक्षी उस बच्चे को सहलाती रही। कई घंटे बाद धीरे-धीरे उसके शरीर में श्वास का तीव्र संचार हुआ और वह रोने लगा। मीनाक्षी उसे चुप कराती रही, पर वह चुप नहीं हुआ। उसकी मां ने लपक कर उसे गोद में ले लिया। कपिल कुटिया को खोलकर बाहर निकले। तो लोग जय-जयकार करने लगे। पर वे तो अपनी निराशा में खोये थे उन्होंने प्रकृति के नियमों का उल्लंघन किया था। यह मीनाक्षी की जीत थी और कपिल की हार। मीनाक्षी पीपल के पेड़ के नीचे बैठी हंस रही थी। कपिल को उसे देखकर लग रहा था कि आज वह मेरी उन्नत वाटिका में घर बनाकर बस जाएगी। तभी तो वह हंस रही थी। भागवत पुनः शुरू हो गया। कपिल कुटिया में आकर बैठ गये। पूरे दिन लोगों की चर्चा का यही विषय रहा। शाम को प्रसाद वितरण के बाद सभी चले गये। सभी महात्मा भी अपने-अपने आसनों पर लेटने चले गये। कपिल कुटिया से निकल गुफा की ओर जाने के लिए बगीचे से निकल रहे थे कि अचानक ठिठक कर रूक गये। सामने मीनाक्षी खड़ी थी। वह दौड़ कर कपिल से लिपट गई। अपनी चुन्नी बिछाककर उस पर कपिल को बैठा लिया उसके पैर खुशी से झूम उठे। सारा बगीचा संगीतमय हो गया। वातावरण में प्रणय ही प्रणय का दृश्य नजर आने जगा। कपिल सोचने लगे यह क्या हो रहा है? मैं कहां खोता जा रहा हूं? ऐसा तो कभी नहीं हुआ मेरे साथ। कपिल

मुग्ध हो रहे थे, भटकाव बढ़ता जा रहा था। मीनाक्षी सफल हो रही थी वह कपिल को हाथ पकड़कर एकांत में ले जा रही थी।

तभी वातावरण का सन्नाटा समाप्त करके ममतामयी मां प्रकट हो गयी और रास्ता रोक लिया। कपिल का हाथ मीनाक्षी के हाथ से खींचकर अलग ले गई। मां ने झकझोर कर कपिल को चैतन्य किया, कपिल को लगा गहरी नींद से जगा हूं। मां को देखकर अवाक् रह गये। आज वह सफेद वस्त्र पहन कर साध्वी के रूप में सामने खड़ी थी और नाराज हो रही थी कपिल तुम भटकते जा रहे हो। प्रकृति के नियमों का उल्लंघन कर अपने ही हाथों अपना पतन करना चाह रहे हो। यदि मैं न आती तो मीनाक्षी आज तुम्हें गहन अंधेरे में ढकेल देती। और तुम भटकते रहते। अब तुम इस जगह को कुछ दिन के लिए छोड़ दो। अभी वह प्रतिशोध की अग्नि में जल रही है। नारी एक तरफ पैदा करती है दूसरी तरफ मारती है। नारी तुम्हारी कमजोरी नहीं है और न नारी तुम्हारे लिए भय का कारण है। नारी के लिए तुम प्रतीक बन सकते हो। प्रेरणा के स्त्रोत बन सकते हो। बस मीनाक्षी से संभल कर बच जाओ, तुम्हारा मार्ग हमेशा के लिए साफ हो जायेगा। मां कपिल को कुटिया तक पहुंचा कर लुप्त हो गई। कपिल ने कमण्डल से पानी लेकर अपने आपको अभिमंन्त्रित किया, तत्पश्चात कुटिया को अपनी सुरक्षित विचार तरंगों से प्रभावित किया और निश्चित होकर जाप में लग गये।

अगले दिन सब कुछ ठीक चल रहा था। मीनाक्षी प्रभावहीन लग रही थी। मां की कृपा से भागवत यज्ञ पूरा हो गया। यज्ञ की पूर्णाहूति कर दी गई। सभी महात्मा और अतिथि ब्राह्मणों की विदाई हो गई। कपिल ने मां की आज्ञानुसार स्थान छोड़ दिया। इस बार राजस्थान में भीषण अकाल पड़ गया थां। नेता मुख्यमंत्री सब परेशान थे। सबने कपिल से प्रार्थना की यज्ञ के माध्यम से अकाल पीड़ितों की सहायता करने की। कपिल तैयार हो गए लेकिन स्वार्थी तत्वों के कारण यज्ञ सफल नहीं हो पाया। कपिल जयपुर रेलवे स्टेशन से गायब हो गए। ग्वालियर, चंडीगढ़, हरिद्वार घूमते-फिरते हिमालय आ गये।

यहां मीनाक्षी पुनः प्रभावित करने लगी। वह कपिल की तपस्या की उपलब्धियों को पी जाना चाहती थी। मीनाक्षी एक आग के गोले की तरह कपिल को राख करने के लिए पीछे लगी रही। एक दिन कपिल

अल्मोड़ा से आगे पैद चल रहे थे। वर्षा हो रही थी। रात हो गई थी कपिल कहीं रात में रूकने का स्थान चाह रहे थे। मीनाक्षी मिल गई। अपने भरपूर रूप व प्रयासों के साथ उसने अपना जाल फैला दिया। वह तपस्वी के लिए अभिशाप बन रही थी। कपिल उसकी हरकतों से अवाक् थे। मीनाक्षी काफी दिनों से समस्या बनी हुई थी। योगी का योग उभरा और कपिल ने एक जबरदस्त थप्पड़ मीनाक्षी के गाल पर लगा दिया। थप्पड़ की आवाज ने उसकी कामुकता को झाड़ दिया। अपने गाल पर हाथ रख कर सहलाने लगी। कुछ देर तक कपिल को देखती रही फिर बोली - ''योगीराज तुम जीते मैं हारी। मैं मीनाक्षी ही नहीं अब मेनका हूं। मैं प्रतिशोध की अग्नि में धधक रही थी। हर हाल में मैं तुम्हें गिरा देना चाहती थी। यह मेरा नहीं, मुझे प्रेरणा देने वालों का विचार था। पर इस थप्पड़ ने तुम्हारी जीत करा दी और मुझे रास्ता बता दिया। यह उनकी हार है जो प्रत्येक महान तपस्वी की परीक्षा के लिए हमें भेजते हैं। यह मेरी हार नहीं है। अब तो मैं तुम्हें और तुम्हारी तपस्या को नमन करती हूं। मेरा इतिहास अव यहां समाप्त हो रहा है। तुम मीनाक्षी के चक्कर से बच गए। शुभकामनाएं, योगी! तुम्हारा मार्ग प्रशस्त हो। निर्विरोध हो निर्विघ्न हो। ऐसा कह वह चली गई उसका इतिहास उस बरसात भरी रात्रि में समाप्त हो गया। और कपिल मां की कृपा से, अपने संकल्प बल से इस परीक्षा से सफल हो गए। अब वे बहुत ही खुश थे क्योंकि अब उन्होंने तपस्वी जीवन की सबसे बड़ी बाधा पार कर ली थी।

मजनू मलंग और गंडा बाबा

पृथ्वी पर भारत भूमि तपस्या, साधना योग और भक्ति का स्थान अति प्राचीन काल से है। अनेक सिद्धों की तपस्या से पवित्र होकर यह भूमि अनेक तीर्थ स्थानों को अपने आंचल में स्थान देकर भविष्य के योगियों, ज्ञानियों और भक्तों की प्रतीक्षा करती रहती है कि वे आएंगे और इस आनंद लीला को आगे बढाकर नई घटनाओं को जन्म देंगे। इसी कारण भारत में भक्त, साधु, संत महात्मा पवित्र विचरण कर अपनी उपस्थित से अच्छा वातावरण बनाए रहते हैं।

गिरनार सिद्धों की भूमि है। कपिल को कुछ दिन से हृदय में बार-बार प्रेरणा होती थी कि वहां का भी भ्रमण किया जाये दत्तात्रेय जी का स्थान है उसका दर्शन किया जाये तो इस बार चल दिए गुजरात की तरफ। शाम को गाड़ी जूनागढ़ स्टेशन पहुंची। जूनागढ़ एक प्राचीन तीर्थस्थल है। रेल से उतरकर पैदल चल दिये। थोड़ी देर चलने के बाद ही रात हो गयी तो सोचा किसी मंदिर या मठ में रूका जाये। सर्दियों के दिन थे खुले आसमान में भी रहना बिना घूनी के मुश्किल था। कई धर्मशालाओं, मंदिरों, मठों का दरवाजा खटखटाया लेकिन किसी ने भी रात्रि विश्राम के लिए नही ठहराया। कपिल एक तीर्थ स्थल में साधुओं और मठाधीशों का ऐसा व्यवहार देख हैरान थें उन सबके लिए परमात्मा से सद्बुद्धि की प्रार्थना कर कपिल चल दिए रात में ही चरण पादुका की तरफ।

कुछ दूर जाने पर एक महात्मा ने रास्ता रोक लिया। वे वैष्णव संत थे, वे कपिल को अपनी कुटिया में ले गए। घूनी जल रही थी और तीन महात्मा भोजन बना रहे थे। सभी ने भोजन किया। कपिल ने थोड़ा सा प्रसाद की तरह पाकर अन्जुलि से पानी पी घूनी पर आकर बैठ गये। सभी महात्मा भी अपने कार्यों से निवट घूनी पर आकर बैठ गये।

थोड़ी देर के बाद एक बाबा सफेद जटाजूट सफेद दाढ़ी, आते ही कपिल के पैरों में गिर कर रोने लगे। कपिल कभी सब महात्माओं को और कभी उन्हें देखते रहे। फिर कपिल ने प्रेम से उन्हें उठाया। साथ के महात्माओं ने उन्हें पहचान लिया। वे जूनागढ़ के प्रसिद्ध त्यागी जी थे। वे मौनी थे। थोड़ी देर कपिल को देखते रहे। फिर इशारे से कपिल के बारे में उन महात्माओं को बताने लगे। कपिल मन ही मन मुस्कुरा रहे

थे। मौनी बाबा भी बहुत खुश नजर आ रहे थे। उन्होंने कागज पेंसिल मंगवाया और उस पर मौनी बाबा ने कपिल का परिचय लिखा-''संतों यह एक योगी है। कुण्डलिनी में ही रमण करता है। अद्वैत इसकी वृतिया है। गुरूजनों की इस पर असीम कृपा है। कपिल अद्वैत इसका नाम है। परमसिद्ध हरि बाबा और गोरखनाथ जी का इसे सान्निध्य प्राप्त है। गिरनार में इन्हें दो महात्माओं ने खींचा है। भ्रमण में दिव्य अनुभूतियां ही इनका मार्ग है। मैं इन्हें बार-बार नमन करता हूं।'' सभी साधु महात्मा परिचय पाकर प्रसन्न हो गये। काफी रात तक सत्संग चलता रहा। कई घंटे बिताने के बाद मौनी बाबा चले गए। साथ वे महात्मा सब भी चले गए।

कपिल धूनी पर बैठे गिरनार की सिद्ध-भूमि के विषय में चिंतन कर रहे थे। तभी वह कुटिया प्रकाश में जगमगा उठी। कपिल उस रोशनी में नहा गये। वह प्रकाश अद्भुत था जो एक वृत बना रहा था। उस वृत के मध्य एक बालक खड़ा था। प्रकाश उसी से निकल कर कुटिया में फैल रहा था। कपिल श्रद्धा से उसके पैरों में गिर गये। उस बालक ने कपिल को उठा लिया और कहा ''चल। चलता ही रहना। समय हो गया है।''

प्रकाश लुप्त हो गया। वह अलौकिक बालक अर्न्तध्यान हो गया। वह दत्तात्रेय जी के बाल स्वरूप का दर्शन था। यह अकस्मात हुआ था। कपिल दत्तात्रेय जी की अलौकिक छवि को हृदय में धारण कर भाव विहल खड़े थे। वे वैष्णव संत जिन्होंने रात को रोका था उन्हें भी अपने अतिथि सत्कार का फल मिल गया था क्योंकि उन्होंने भी दर्शन कर लिया था। तभी बाहर से किसी ने आवाज दी। ''आओ कपिल चले, सुबह हो गई। कपिल और वे वैष्णव संत दौड़ कर बाहर आये तो वहां कोई नहीं था। कपिल ने उन वैष्णव संत को नमस्कार किया घूनी से अपनी चादर उठाई और चल दिये।

कपिल गोरख घूनी पर पहुंचे तब तक दिन निकल आया था। पहाड़ियों के बीच सुंदर सूर्योदय हो रहा था। कपिल घूनी पर बैठे गये। सामने अम्बा जी का मंदिर था। वहां दर्शन कर लोग दत्तात्रेय चरण पादुका की तरफ जा रहे थे, कुछ आ रहे थे। सब अच्छा लग रहा था। धूनी का टीका लगा कर कपिल आगे बढ़े। थोड़ी ही दूर पर एक बालक को पहाड़ों में इधर-उधर कुछ खोजते देखा। वह कुछ अलग सा लग रहा

ा। कपिल करीब पहुंचे तो उसने हाथ बढ़ाकर रोक लिया। फिर रास्ते में तीन रेखा खींच कर कपिल से कहा ''इसे पार मत करना''। बहुत से तीर्थयात्री इकट्ठे हो गये कुछ ने उसे पागल कहा। तभी दो नागा सन्यासी बकवास है कहते हुए लाइन पार करने की कोशिश करने लगे। यह बालक चिल्लाया 'बाबा मत जाओ'। पर वे नहीं माने। दोनों एक रेखा को पार कर दूसरी की ओर बढ़, तभी दोनों चिल्लाकर भागे बाप रे आग।' उनके पैरों के तलवे झुलस गये। सभी तीर्थ यात्री जिसे अभी पागल कह रहे थे उसके हाथ जोड़ने लगे। लोग रूपया पैसा चढ़ाने लगे। उसने सब फेर दिया और कपिल के पास आकर बोला-सुना है यह गिरनार सिद्धो की भूमि है। मुझे तो कोई सिद्ध नही मिल रहा है। कपिल लाइन के पास चले गये। फिर कुछ मिट्टी उठाकर उसे अभिमंत्रित किया। बारी-बारी से तीनों रेखाओं के मध्य फेंका और तीनों रेखाओं को पार कर गये। अब वह बालक कपिल को पकड़कर बोला ''अब मैं तुम्हारे साथ चलूंगा फिर तुम मेरे साथ चलना।'

भीड़ ने दोनों को घेर लिया। कपिल भीड़ के आदी नहीं थे। भीड़ से बचने के लिए वे सामने पहाड की खड़ी चढाई पर बिना रास्ते के चढ़ने लगे। भीड़ ऊपर नहीं आ पा रही थी। बहुत देर के बाद कपिल ने देखा वह बालक पीछे-पीछे आ रहा था। कपिल एक पत्थर पर थोड़ा सुस्ताने के लिए बैठ गये। वह लड़का भी करीब आकर बैठ गया। कपिल मन में सवाल लिए उसके चेहरे की तरफ देख रहे थे। लड़का हसंकर बोला 'आप समय पर क्यों नहीं छोड़ देते। सब कुछ आपके समक्ष समय रख देगा। अभी तो आप चिंता न करें।

कपिल पुनः ऊपर चढ़ने लगे। एक निर्दिष्ट दिशा की ओर खिचें चले जा रहे थे कहा? खुद भी पता नहीं था। एक गुफा आ गयी लडका दौड़ कर गुफा के पास गया और नाच-नाच कर कहने लगा ''मिल गया बापू मिल गया''। वह अंदर जाने लगा तो कपिल ने उसे रोक दिया। गुफा के एक किनारे बैठ गये तो लड़के ने कहा ''महाराज मुझे तो जोरों की भूख लगने लगी हैं।'' कपिल को भी लगा भूख लग रही है। तभी गुफा में से दो नारियल लुढ़कते हुए कपिल के पास आकर रूक गये। कपिल ने अदृश्य शक्ति को धन्यवाद देकर दोनों नारियल उठा लिए जैसे ही आगे बढे तो कपिल को लगा कि नारियल कोई खींच रहा है। कपिल ने एकं

नारियल से दबाव को थोड़ा ढीला कर दिया। झटके से किसी ने एक नारियल को उठा लिया "एक तुम दोनों के लिए काफी है। एक मेरे लिए रहने दो। तुम्हारे साथ में मजनू बाबा है इसका ख्याल रखना ।

"मैं तीसरे दिन तुमसे स्वयं मिल लूंगा। अभी तुम दोनों यहां से जाओ।" कपिल एक नारियल हाथ में लिए बाहर आ गये। लड़के ने अपनी कमर से बड़ा दो धारी चाकू निकाला और नारियल के दो भाग कर दिए। दोनों खाने लगे। खाते-खाते वह बोला-जानते हो बापू। मैंने यह कटार क्यों रखा है। अगर मां भगवती आज मुझे सिद्धों का दर्शन नहीं करवाती तो मैं अपना सिर कलम कर लेता। यह मेरा संकल्प था। वही महापुरूष मेरी सहायता कर सकता था जो उन खीची लकीरों के प्रभाव को मिटा सके। लड़का आगे बोला-मुझे कल रात गोरख घूनी पर किसी ने कहा था 'एक योगी कल सुबह-सुबह इधर आ रहा है वह तेरा संकल्प पूरा करायेगा। आज सुबह जब मैंने आपको देखा तो मैंने आपकी परीक्षा लेनी चाही। वही हुआ जो मैं चाह रहा था। कपिल देख रहे थे-उसके चेहरे से मासूमियत टपक रही थी। उसके चलने का ढंग, बोलने का तरीका सब कुछ रहस्मय था। वह कहां ले जाना चाहता है? क्या कराना चाहता है? इस प्रश्नों को अपने अंदर ही रख कपिल नारियल खा रहे थे।

चरण पादुका और कमण्डल कुण्ड की यात्रा कर दोनों जैन मंदिर में आकर सो गये। सुबह मजंनू बाबा बाजार से दो दर्जन केले, टार्च, एक चादर और एक कमण्डल लेकर आया। दस बजे नाश्ता आदि करके कमण्डल में पानी भर कर चल दिए। अब बीहड़ जंगलों में जा रहे थे। न मजनू बाबा कुछ बोल रहे थे न कपिल दिन भर कपिल मजन के पीछे-चलते रहे। मंजनू रास्तों से परिचित था। धीरे-धीरे शाम होने लगी। मंजनू अब कपिल से पीछे हो गया। कपिल अब आगे चल रहे थे। सामने एक बूढ़ी औरत टहल रही थी। काला वस्त्र पहने थी। कपिल रूक गए मुड़कर मंजनू से पूछा वह कुछ नहीं बोला। कपिल आगे बढ़कर वृद्ध नारी को नमस्कार कर चरण स्पर्श के लिए झुके पर वह भागकर दूर खड़ी हो गई 'ऐ! छूने की कोशिश न करना। तुझे प्यास लगी है आओ मेरे साथ"।

कपिल को बुढ़िया अजीब लगी। इतनी दूर वीरान जंगल में रह रही थी। देखने से पता लग गया था कि वह योगिनी है। दोनों उसके पीछे-पीछे उसकी कुटिया के पास पंहुचे। उसका निवास था अजूबा।

उसके इष्ट मित्रों में भागदौड़ लगी थी। जिनमें पक्षियों का एक समूह, भिन्न-भिन्न तरह के सर्पों का डेरा था। बहुत से घड़े पेड़ों की छाया में रखे थे। किसी घड़े में दूध भरा था। तो किसी में गुड़ का पानी। और किसी घड़े में सादा पानी। तरह-तरह के सर्प इस घड़े से उस घड़े पर आ जा रहे थे। बुढिया ने एक साफ घड़े में पानी निकाल कर बाहर रख दिया। कपिल ने पानी पिया तो मंजनू हंसने लगा। बुढ़िया उसे घबरा कर देखती रही। मंजनू हंसता रहा। कपिल कुछ समझ नहीं पा रहे थे। बुढ़िया ने उसे चुप हो जाने को कहा तो ताली बजाने लगा। शायद सभी कुछ उसके अनुकूल हो रहा था। कपिल के इशारा करने पर वह चुप हो गया। कपिल ने बुढ़िया से रहने के लिए उपयुक्त स्थान पूछा। उसने कहा यहीं पर रह लो। कपिल ने मना कर दिया तो वह दोनों को लेकर एक पेड़ के पास पहुंची। वट का वह बहुत बड़ा वृक्ष था। थोड़ा हट कर नदी का बहाव था। पेड़ के पास खड़े होने पर कपिल में कुछ परिवर्तन सा हुआ। कपिल ने पेड़ के ऊपर की ओर देखा तो शरीर में कम्पन होने लगा। एक बहुत बड़ा अजगर एक मोटी डाली पर पड़ा था। वह इधर ही देख रहा था। जब अजगर की आंख कपिल से टकराई तो उसने मुंह मोड़कर दूसरी तरफ रख लिया। बुढ़िया कांप गई लड़का हंसने लगा। दोनों ने एक-दूसरे को देखा, फिर बुढ़िया हंसने लगी और लड़का घबरा गया। कपिल सोच रहे थे ये कैसी रहस्मयमय घटनाएं मेरे सामने हो रही है।

बुढ़िया ने हंसते हुए कहा "देखो ! यह वृक्ष सदियों से रहस्यमय है। इसके नीचे एक बाबा ने लम्बे समय तक तपस्या की। पर बाबा को इस अजकर ने निगल लिया। फिर उसी का शिष्य यहां आकर रहने लगा। मैंने उसे मना किया पर वह नहीं माना। उसको भी एक अमावस्या की रात अजगर ने अपना शिकार बना लिया। अजीब-अजीब घटनाएं इस पेड़ के नीचे होती है। कभी प्रकाश ही प्रकाश नजर आता है तो कभी आहें, चित्कार, दुख-दर्द से भरी आवाजें। यहां का इतिहास बहुत पुराना है। कई वर्षों से एक मलंग यहां आकर रूका था। वह काफी दिनों तक बजकर से उलझता रहा। एक दिन अमावस्या की रात उसकी जान जाते-जाते बची और सुबह होते ही वह भाग गया।

आज तुम आए हो। आज यहां तुम रूको क्योंकि आज अमावस्या की

रात है। क्योंकि हर अमावस्या की रात यहां के लिए प्रलय सिद्ध हुई है। कपिल ने उस बुढ़िया को मागदर्शन के लिए धन्यवाद कहकर जाने को बोल दिया। बुढ़िया चली गई। कपिल ने वृक्ष की परिक्रमा की। फिर कमण्डल में पानी भरकर पुनः तीन बार परिक्रमा करके बांध दिया। मंजनू बाबा को लकड़ियां लाने को कहा नदी के किनारे बांस का एक झाड़ नजर आया। उसी जगह पर साफ करके रहने के लिए जगह बनाई। मुहं-हाथ धोकर आग जलाई और घूनी को चेतन कर दिया। कपिल ने बालक से अपनी लकीर का वृत्त खींचने को कहा। वह धूनी से थोड़ा हटकर लकीर का गोला खींचने लगा और बोला ''बुढ़िया इसे काट देती है। आज अमावस्या की रात्रि है। आज की रात तो यह बुढ़िया और यह अजगर मौत का संदेश लेकर जंगल में घूमते है। मैं ही वह मलंग हूँ जो बुढ़िया बता रही थी। बड़ी मुश्किल से जान बचाकर भाग पाया था। बुढ़िया ने शायद मुझे पहचान लिया है, तभी वह रह-रह कर मुझे देख रही थी। कपिल ने उस वृत्त के अंदर पानी से अपना एक वृत्त बनाया और लड़के को उसमें बाहर जाने से मना किया।रात घनी होती गई। दोनों प्रतीक्षा में बैठे रहे। लड़का अपने वर्षों पहले के यहां के अनुभवों का वर्णन करता रहा।

कपिल ने कालीचौर की मां से रक्षा करने के लिए प्रार्थना की। और अपनी विचार-तरंगों को इधर-उधर फैलाकर गुरू को कृपा के लिए आह्वान करके निश्चिंत होकर बैठ गये। आकाश में एक चमक हुई, बिजली की तरह और षांस के झुंड पर आकर लुप्त हो गई। कपिल ऊपर देखने लगे। मां की कृपा दृष्टि हो गई थी ऊपर के रास्ते को बंद नहीं किया था। अनर्थ ही हो जाता। मां ने आकर संभाल लिया। कपिल ने अपने साथ-साथ लड़के के शरीर को भी कवच कर दिया। तभी दक्षिण दिशा से आंधी तूफान आने लगा। पेड़ हिलने लगे। लड़के ने टार्च की रोशनी वहां तक फेंकी पर कुछ दिखाई नहीं पड़ा। ये सब बुढ़िया के कारनामे थे। लड़का बताने लगा- वह प्रायः तपस्या से मग्न साधकों को ही शिकार बनाती है, अजगर उसका गुरू है। वह दिन मे अजगर बन कर पेड़ पर पड़ा रहता है और रात को अपने शरीर को धारण कर हवन करता है और बलि चढ़ाता है। लड़के ने कहा-मेरे साथ भी यह ऐसा ही करना चाहता था पर मुझे बचा लिया गण्डा बाबा ने न जाने कहा से उस

दिन वे इधर से गुजर रहे थे। मैंने संकल्प लिया कि इन कापालिकों का अहंकार तोडूंगा। मैं दिल्ली की अपनी मजार पर चला गया और हर अमावस्या की रात यहां इसके बंधन में फंसे साधकों को बचाकर ले भागता हूं। आपको आश्चर्य होगा, दुनिया के लिए मैं मर चुका है, आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व मेरी मजार ने दिल्ली में बहुत प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लिया है। पर तब से ये यहां प्रतीक्षारत् है। मैं इसे मार तो नहीं सका, पर सफल भी नहीं होने दिया। कल मौनी बाबा ने रात में आकर बताया कि वह आ गया है जिसका तुम इंतजार कर रहे थे। इतनी लम्बी प्रतीक्षा के बाद तुम मिले तो लगा अब इन वामचारियों का अंत आ गया है।

लड़का सब जरूरी बातें बता ही रहा था इतने में ही सामने से दीप जलते नजर आए। वे संख्या में बारह थे और छोटे-छोटे करीब आ गए। वे सभी के सभी सर्प के धागे में बंधे हुए थे। उनके फनों पर दीपक जैसा प्रकाश जल रहा था। बुढ़िया उन्हें रथ की तरह हाक रही थी। काले कपड़े पहने हुए थी एक त्रिशूल हाथ में ले रखा था। त्रिशूल में भी एक सर्प लिपटा हुआ था। बुढ़िया आकर बैठ गई सभी सर्प ठहर गए। बुढ़िया ने अपने बालों को खोल दिया फिर बरगद के पेड़ की तरफ देखने लगी। कपिल ने घूनी की अग्नि को तेज कर दिया। तभी चारों तरफ में जंगली भैसें रंभाते हुए आने लगे और बुढ़िया के पास खड़े हो गए। बुढ़िया ने त्रिशूल को घुमाकर फंका। त्रिशूल लड़के द्वारा खींची रेखा में जाकर गिर गया। उसमें आग लग गई। त्रिशूल तपने लगा। सर्प जलकर रस्सी को तरह रह गया। सभी सर्प आगे बढ़े पर रेखा के पास आकर रूक गये। बुढ़िया ने अपने वस्त्र खोल दिए वह पूरी तरह नंगी हो गई और आगे बढ़कर रेखा को मिटाने लगी। लड़का घबरा गया। कपिल बोले- डरो मत, मेरी रेखा के अंदर कोई नही आ सकता। देवता भी नहीं आ सकते, जब तक मैं इसे वापिस न ले लू।

तभी पूरब की तरफ से गर्जना करता हुआ शेर आ गया और आकर भैसों पर टूट पड़ा। सभी भैसो में भगदड़ मच गई। वे सब भाग गए। बुढ़िया ने त्रिशूल को उठाना चाहा परंतु तभी एक अज्ञात अदृश्य शक्ति ने झटके से त्रिशूल को खीच लिया और त्रिशूल से ही बुढ़िया के बाल पकड़कर पिटाई होने लगी। बुढ़िया कपिल पर चिल्लाने लगी। वह अपने गुरु को पुकारने लगी। पर वह विवश था कपिल उसे पहले ही बांध चुके

था। वह चाह कर भी अपने भेष का निर्माण नहीं कर सकता था। लड़के ने जब देखा बुढ़िया असहाय हो गई है तो उसने धूनी में थोड़ी सी राख उठाकर, अभिमंत्रित कर सर्पों की तरफ फेक दी। सभी सर्प जलने लगे। अज्ञात अदृश्य शक्ति ने बुढ़िया को पीट-पीट कर पेड़ के नीचे ले जाकर पटक दिया। उसके गिरते ही पेड़ पर बिजली सी गिरी और पेड़ जलने लगा। अजगर बुढ़िया के पास गिरकर मर गया। और उसमें आग लग गई। बुढ़िया रोने लगी। काफी हलचल हो रही थी। युद्ध हो रहा था सात्विक विचारों का और तामसिक शक्तियों का। शेर एक टक देखे जा रहा था। वह खड़ा था। पहरेदार की तरह। सब कुछ शांत हो गया।

जब तक सुबह हुई तब तक तांत्रिक और उसका जंजाल सभी कुछ समाप्त हो चुका था। कपिल की रेखा के पास शेर खड़ा था। वह कपिल को देख रहा था। कपिल समझ गये उन्होंने उठकर अपनी रेखा के प्रभाव को मिटाया और अगरबत्ती जलाकर शेर की आरती उतारी और कष्ट के लिए क्षमा मांग कर जाने के लिए कहा, शेर दहाड़ता हुआ, छलांग मार कर दूर निकल गया, फिर मुड़ कर देखा और चल दिया। दोनों उसे जाते हुए देखते रहे। धूनी को शांत कर अब चलने को तैयार हुए। पेड़ की तरफ नजर गई। वट वृक्ष की हालत दयनीय थी। सारा वृक्ष पतझड़ की तरह वीरान हो चुका था। अजगर पूरी तर जलकर राख हो गया था। बदबू चारो तरफ फैल रही थी। दोनों ने अपनी सहायक उस अज्ञात, अदृश्य शक्ति को नमस्कार किया और चल दिए। थोड़ी दूरी पर बुढ़िया अधमरी सी पड़ी थी। कपिल ने उसे उठाया तो वह रोने लगी और कपिल को गाली देने लगी। लड़के को देख कहने लगी "इसी की सब बदमाशी है यह मलंग है। इसी ने अपना बदला लिया है। अमावस्या की यह रात और यहां का सैकड़ो साल पुराना इतिहास लुप्त कर दिया। मैं अब क्या करूंगी। मैं इस पेड़ को सजीव करूंगी। इतिहास को जिंदा रखूंगी लेकिन अब कोई आने वाला तपस्वी शिकार नहीं बनेगा।

बुढ़िया उठकर कुटिया में गई और झोली लेकर बाहर आई और आग लगाकर जला दिया। सभी घड़ो को फोड़ दिया जब झोली पूरी तरह जल गई तब उसने कहा- "अब तुम लोग जा सकते हो। मैं तो यही रहूंगी। मैं वादा करती हूं कि पशु-पक्षियों को गुलाम बनाकर नहीं रखूंगी। आत्माओं को बंधन में नहीं रखूंगी। इसलिए गुरु द्वारा दी गई झोली को

मैंने जला दिया। मेरा जीवन इन्हीं घाटियों में बीतेगा।

कपिल ने बुढ़िया से क्षमा याचना की बुढ़िया ने कहा बेटा तुमने तो सही रास्ता दिखाया है। मैं और मेरे गुरु तो भटके हुए कापालिक बन गए थे। जाओ मेरा आर्शीवाद है तुमको। दोनों जूनागढ़ लौट गए। गिरनार से तबीयत भर गई थी कपिल ने जूनागढ़ को छोड़ देने का निश्चय किया। सीधे रेलवे स्टेशन पर आए ट्रेन में अभी देर थी। तीन दिन में शारीरिक और मानसिक दोनों को बोझ के कारण थकावट महसूस हो रही थी। कपिल स्टेशन पर एक तरफ जमीन पर लेट गए। वह लड़का बाजार की तरफ घूमने निकल गया।

कपिल आंखे बंद करके थोड़ी देर लेटे लेकिन नींद नहीं आ रही थी। उनके सामने एक भिखारी बैठा था। कोढ़ियों की तरह वह थूक रहा था और उस थूक को अपने शरीर में मल रहा था। कपिल उठकर बैठ गये। वह गोबर को उठाकर खाने लगता फिर अपने आप से कहता ''साले! ले! जलेबी खाएगा। यह गरम-गरम जलेबी है। मुसाफिर मुंह बनाकर इधर-उध ार से निकल रहे थे।

कपिल देख रहे थे इसमें कोई असाधारण व्यक्तित्व छिपा है। यह जानबूझकर समाज से दूर रहने के लिए ऐसा कर रहा है। कपिल ने थोड़ा पानी हाथ में लिया और उसे संकल्पित करके उसके ऊपर छिड़क दिया। उसने पागलो जैसा व्यवहार बंद कर दिया और कपिल के पास आकर बैठ गया और बोला-

'' काल ही गाते है। काल ही परिर्वतन है। आदमी तो चलती हुई गाड़ी है सड़क के किनारे न जाने कब खड़ी हो जाये। उन्होंने इधर-उध ार देखकर पूछा वह लड़का कहा है। कपिल ने कहा बाजार गया है। तो वे हसने लगे। अब वह नहीं आएगा। कब से वह प्रतीक्षारत् था तुम्हें पाने के लिए। उस अजगर को मारना बहुत जरूरी था। वे सब सैकड़ो वर्षों से वही पड़े थे। गिरनार की पर्वत घाटियों पर कलंक का टीका लगा रहे थे। बुढ़िया अब वही पड़ी रहेगी।

''जब से दक्षिण भारत में तूने प्रवेश किया है तब से हम दोनों प्रतीक्षा कर रहे थे। एक लम्बे इंतजार के बाद तुम आए हो और जल्द ही भाग जाना चाहते हो। पर हमें तो तुम्हारी आवश्यकता है। हमें भी अनेक राहो से गुजरना है तुम्हारे साथ। तू अवधूत था नर्मदा के किनारे और मैं गण्डा

बाबा। मै तो ऐसा ही रहा पर तुम छोड़ कर चले गए। कभी नर्मदा तट चलना। तेरी कुटिया आज भी खाली पड़ी है। बार-बार जीवन को उलझन में डालकर पैदा होने से क्या फायदा? आज तुम अद्वैत की झोली को लटकाए भाग रहे हो। यदा कदा पीछे की तरफ देख लिया करो। संस्कार नजर आ जाया करेगा। मैंने जीवन के अनेक मोड़ पर तुम्हारे आने की प्रतीक्षा की। अब मैं भी तुम्हारे साथ चल रहा हूं।

''मजनू अभी तक नहीं आया और न आएगा। भाग गया होगा मक्का की मजार पर। बड़ा छलिया है, हाथ नहीं चढ़ता! कभी-कभी तो बड़े ठाट से अरब की गलियो में पठान बनकर सैर करने लगता है। कभी दिल्ली में चहलकदमी करता है। मैं उसे जानता हूं नानक जी का शिष्य है। मजनू का टीला, दिल्ली में वह उसी की मजार है। मेरे लिए भी टिकट ले लेना वह तुम्हारे पास कुछ पैसे छोड़ गया है।

अब कपिल निकल गए गण्डा बाबा के साथ बंबई की तरफ। वहां काफी दिन रहे। गण्डा बाबा हर जगह कुछ ना कुछ मजा करते ही रहते थे। माहौल को हल्का-फुल्का रखते थे। हंसते-हंसाते ही रहते थे। अंदर से तो जगत की प्रत्येक वस्तु से अनासक्त थे लेकिन ऊपर-ऊपर से बच्चों को तरह रूचि दिखाते थे। कुछ दिन बंबई रहकर फिर दिल्ली आ गए। गण्डा बाबा कपिल के पिछले जन्म के नर्मदा किनारे के मित्र संत थे। कपिल ने वह शरीर छोड़ कर दोबारा जन्म लिया था लेकिन गण्डा बाबा सैकड़ो साल से उसी शरीर को चला रहे थे। मित्रता जितनी पुरानी हो उतनी ही गहरी हो जाती है। गण्डा बाबा कपिल की सेवा करना चाहते थे और कपिल गण्डा बाबा की। ऐसे ही दोनों योगी मित्रों का अच्छा जोड़ बैठ रहा था। दिल्ली से कुछ तीर्थ यात्री हरिद्वार जा रहे थे वहां कुंभ मेला लग रहा था। गण्डा बाबा बोले- चलो हम लोग भी कुंभ मेले में हरिद्वार चलते है। हमारी आवश्यकता है वहां।

दोनों पहुंच गए हरिद्वार और श्री पचंजूना अखाड़ा भैरव मंदिर में ठहर गए। कपिल को वहां सब जानते ही थे अवतार बाबा ने कई संतो और महात्माओं से परिचय करवा रखा था। इन दिनों गण्डा बाबा ने अघोरपन की हद कर दी। वे कपिल के आसन के पास ही बैठे रहते और दिन भर गांजा-भांग और चरस पीते रहते नागाओं के साथ। गंगा पास से बह रही थी। पर उन्होंने गंगा की तरफ देखा भी नहीं। और न किसी भी दिन

टट्टी या पेशाब गये। दिन-रात एक ही आसन पर बैठे रहते। कभी टेप बजाते तो कभी बैठे-बैठे कैमरे को क्लिक कर देते थे। बच्चों की तरह मस्ती काट रहे थे। सभी अखाड़े के महात्मा उन्हें बुरा-भला कह रहे थे। कुछ महात्मा उन्हें वहां से हटाना चाहते थे लेकिन कपिल की वजह से कोई कुछ नहीं बोला। शाही स्नान का दिन आ गया।

सज-धज कर रथ और पालकियो पर सवारी करने की तैयारी होने लगी। नागाओ का जूलूस था। धूप विकट थी। मई का महीना था सभी लोग चिंतित थे। जूलूस का भाग बहुत लम्बा था।

तभी गण्डा बाबा आकर खड़े हो गये। वे कपिल से बोले "क्यो रे पायलट! तू भी जा रहा है? धूप ने परीक्षा की घड़ी खड़ी कर दी। पर यह अच्छा नहीं, साधुओ को कष्ट होगा। क्या कुछ किया जाए। कपिल ने हा में सिर हिला दिया। तो गण्डा बाबा बोले- " लो तुम भी क्या याद रखोगे" और उन्होंने हाथ को आसमान की तरफ उठाकर जोरो की आवाज दी। आ, आ, आ तीन बार बोला। बादल के तीन टुकड़े आसमान में मंडराने लगे और धीरे-धीरे कुंभ मेले को अपनी छाया में ले लिया। चारो तरफ धूप थी सिर्फ वही पर छाया थी। उन्होंने दौड़कर अपना बाद्यम्बर उठा लिया। अच्छा पायलट मैं चलता हूं। चण्डिका बुला रही है। फिर नर्मदा किनारे चला जाऊंगा फिर मिलूंगा। मेरी आवश्यकता अब यहां नहीं। वह चल पड़े। चारो तरफ से उन्हें रोको-उन्हें रोको। वह कोई श्रेष्ठ महापुरुष है' की आवाज होने लगी। लोगों ने बहुत ढूंढ़ा पर वे किसी को नहीं मिले। शाही सवारी चल दी और शाही सवारी के साथ-साथ बादल भी छाया देते रहे। अगल-बगल में धूप थी पर नागाओ के ऊपर छाया। बम-बम महादेव, हर-हर महादेव के नारे से आसमान गूंज रहा था।

परम तपस्वी नर्मदा घाटी के प्रसिद्ध योगी गण्डा बाबा चले गए। पर अपने पीछे अपना एक अनूठा व्यवहार छोड़ गए थे। वहां पर सिर्फ कपिल ही उन्हें जानते थे इसलिए लोग बार-बार पूछने आ रहे थे। अब लोग पश्चाताप कर रहे थे कि वह हमारे साथ रहे हम उन्हें पहचाने नहीं। गण्डा बाबा के बिना मेले में उदासी छा गई थी। कपिल ने भी चल देना ही मुनासिब समझा। दिल्ली लौट गए वहां बालयोगी से भेट हो गई। वे विहार मे डाल्टिन गज में मानस सम्मेलन था वहा ले गए। वहां से

मुजफ्फरपुर, गया, पटना आदि होते हुए फिर दिल्ली आ गए। बाबा बीरगिरी की कुटिया पर यमुना किनारे वहा खूब मन लगता था। एक दिन कपिल जामा मस्जिद से होकर दरियागंज जा रहे थे। सुभाष पार्क के किनारे-किनारे। बस-स्टैंड पर बहुत से लोगबस के लिए प्रतीक्षा कर रहे। दोपहर का समय था। बस-स्टैंड से निकलकर कपिल जैसे ही थोड़ा आगे बढ़े तो किसी ने नाम लेकर पुकारा कपिल ने मुड़कर देखा, कोई परिचित नहीं था। फिर चलने को हुए तो दोबारा आवाज आई ''अरे बाबा! मैं इध र हूं''। लोगों ने कपिल को बताया कि वह बूढ़ा बुला रहा है। कपिल ने लौटकर देखा तो एक बहुत ही बूढ़ा भिखारी नजर आया। कपिल अचम्भित थे कि इस मरते हुए भिखारी को मेरा नाम कैसे पता चला। वह एक गूदड़ी अपने शरीर पर लपेटे हुए था। दूसरी गूदड़ी जो उसके मल में भरी हुई थी उसके बगल में पड़ी थी। शरीर में भी गंदगी लगी हुई थी। हजारों मक्खियाँ भिन्न-भिना रही थी। उसकी आंखे भीतर को धस रही थी। वह बस स्टैंड के सीट के पीछे दीवार से टेक लगा कर बैठा था। सारा दृश्य देखकर कपिल को लगा यह बूढ़ा बस मरने ही वाला है। मौत कही पास में ही बैठी होगी। बदबू चारो तरफ आ रही थी। लोग वहा से हटकर खड़े थे।

वह बूढ़ा बोला '' पायलट बाबा इधर आओ उसकी आवाज में बुलन्दी थी, आकर्षण था, अपनापन भरा सम्मोहन था। अब कपिल को वह प्रभावित कर रहा था। उसके करीब पहुंचकर कपिल ने उन्हें नमस्कार किया और पूछा- ''हा बाबा आप मुझे क्यो बुला रहे है?'' बूढ़े ने एक रहस्मयी मुस्कुराहट बिखेर दी और बोला '' मुझे धो डालो'' कहकर हंसने लगा। उसके चमकते दांत देख कपिल सोचने लगे दांत तो ऐसे है जैसे बचपन के दांत हो। आवाज भी कुछ सुनी हुई सी लग रही थी। कपिल ने तुरंत ही निर्णय ले लिया और उसे धोने की तैयारी शुरू कर दी। वह एक आह भरे दुआए देने लगा'' अल्ला तेरा लाख-लाख शुक्र है, तुने कही से पीर तो भेजा। पास में ही पानी पिलाने वाली ट्राली खड़ी थी कपिल ने उसे बुलाया तो उसने मना कर दिया। तो कपिल ने उसका सारा पानी और गिलास के पैसे देकर खरीद लिया और अकेले ही पानी लेकर बाबा के पास पहुंचे। तभी जामा मस्जिद की तरफ से दौड़ता हुआ एक लड़का आया वह बोला ''क्या मैं आपको सहयोग दे सकता हूं? अगर

आप कहे तो मैं भी आपका साथ दूं? कपिल ने हां कर दी। दोनों उस बूढ़े को साफ करने लगे। बूढ़े के शरीर का मल कपिल के कपड़ो में लग गया था। भीड़ तमाशा देख रही थी, लोग कपिल का मजाक उड़ा रहे थे। सफाई करके उसे उठाकर साफ जगह में बिठा दिया और कपिल ने अपनी चादर उसके शरीर पर लपेट दी। कपिल अपने कपड़ो को पोछकर चलने लगे। वह लड़का भी जामा मस्जिद की तरफ चला गया।

बूढ़े ने कपिल को टोककर कहा- दो बंडल-बीड़ी और एक माचिस अपने हाथ से लाकर दे दो। कपिल दौड़ कर ले आए। बाबा को दिया तो उसने शुक्रिया अदा किया और अपने दोनो हाथो को कपिल के सामने कर दिया। हाथ की रेखाओ में कोई अंतर नहीं था। बूढ़े ने मुस्कुरा कर दोनों हाथो को कपिल के सिर पर रखकर दुआ दी और कल जामा-मस्जिद के पास मिलने को कहकर जाने को कह दिया। काफी देर हो चुकी थी कपिल दरियागंज जाने का प्रोग्राम कैंसिल कर वापिस चल दिए। अभी कोने पर पेट्रोल पंप के पास तक ही पहुंचे थे कि कई लोग जो सब देख रहे थे वे दौड़ कर कपिल के पास आये और बोले- बाबा वह बूढ़ा गायब हो गया! कपिल भी आये तो देखा वहा कुछ भी नहीं था ना गंदगी ना मल में भरी गूदड़ी और न वह बूढ़ा वहा लग ही नहीं रहा था कि यहां पर किसी की सफाई की गई थी। वह कौन था। लोगों की भीड़ अफसोस कर रही थी कि उन्होंने किसी अलौकिक शक्ति की सेवा का मौका छोड़ दिया था। कपिल लौट कर शांति वन आ गये। थोड़ी देर वहां बैठ कर फिर कुटिया पर आ गये। कुछ लोग पीछा करते-करते कुटिया आ गए। उन्होंने सबको टाल दिया।

रात में बीरगिरी बाबा से चर्चा की तो उन्होंने बताया ''अरे मजनू है, मजनू बाबा। वह कल तुम्हें मिलेगा पर किसी और रूप में जब वह तुम्हारे साथ रहा था उस वक्त उसने तुम्हारे ऊपर खर्चा किया था। तुम्हारी सेवा की थी। उसके बदले में उसने बीड़ी और माचिस ली। और सफाई करवा के सेवा वापस ली वह ऐसा ही करता रहता है। कभी-कभी तो मुझे भी चकमा दे जाता है। कपिल अगले दिन सुबह जल्दी ही जामा मस्जिद जा पहुंचे। कुछ ही देर बाद एक बालक कपिल के कंधे पर हाथ रख कर खड़ा हो गया। उसने एक दिन सुंदर अपटुडेट कपड़े पहन रखे थे। कपिल ने उसका कान पकड़ कर खीचा ''क्यों रे, तू रसिया बना फिरता

मुजफ्फरपुर, गया, पटना आदि होते हुए फिर दिल्ली आ गए। बाबा बीरगिरी की कुटिया पर यमुना किनारे वहा खूब मन लगता था। एक दिन कपिल जामा मस्जिद से होकर दरियागंज जा रहे थे। सुभाष पार्क के किनारे-किनारे। बस-स्टैंड पर बहुत से लोगबस के लिए प्रतीक्षा कर रहे। दोपहर का समय था। बस-स्टैंड से निकलकर कपिल जैसे ही थोड़ा आगे बढ़े तो किसी ने नाम लेकर पुकारा कपिल ने मुड़कर देखा, कोई परिचित नहीं था। फिर चलने को हुए तो दोबारा आवाज आई "अरे बाबा! मैं इध र हूं"। लोगों ने कपिल को बताया कि वह बूढ़ा बुला रहा है। कपिल ने लौटकर देखा तो एक बहुत ही बूढ़ा भिखारी नजर आया। कपिल अचम्भित थे कि इस मरते हुए भिखारी को मेरा नाम कैसे पता चला। वह एक गूदड़ी अपने शरीर पर लपेटे हुए था। दूसरी गूदड़ी जो उसके मल में भरी हुई थी उसके बगल में पड़ी थी। शरीर में भी गंदगी लगी हुई थी। हजारों मक्खियाँ भिन्न-भिना रही थी। उसकी आंखे भीतर को धस रही थी। वह बस स्टैंड के सीट के पीछे दीवार से टेक लगा कर बैठा था। सारा दृश्य देखकर कपिल को लगा यह बूढ़ा बस मरने ही वाला है। मौत कही पास में ही बैठी होगी। बदबू चारो तरफ आ रही थी। लोग वहा से हटकर खड़े थे।

वह बूढ़ा बोला " पायलट बाबा इधर आओ उसकी आवाज में बुलन्दी थी, आकर्षण था, अपनापन भरा सम्मोहन था। अब कपिल को वह प्रभावित कर रहा था। उसके करीब पहुंचकर कपिल ने उन्हें नमस्कार किया और पूछा- "हा बाबा आप मुझे क्यो बुला रहे है?" बूढ़े ने एक रहस्मयी मुस्कुराहट बिखेर दी और बोला " मुझे धो डालो" कहकर हंसने लगा। उसके चमकते दांत देख कपिल सोचने लगे दांत तो ऐसे है जैसे बचपन के दांत हो। आवाज भी कुछ सुनी हुई सी लग रही थी। कपिल ने तुरंत ही निर्णय ले लिया और उसे धोने की तैयारी शुरू कर दी। वह एक आह भरे दुआए देने लगा" अल्ला तेरा लाख-लाख शुक्र है, तुने कही से पीर तो भेजा। पास में ही पानी पिलाने वाली ट्राली खड़ी थी कपिल ने उसे बुलाया तो उसने मना कर दिया। तो कपिल ने उसका सारा पानी और गिलास के पैसे देकर खरीद लिया और अकेले ही पानी लेकर बाबा के पास पहुंचे। तभी जामा मस्जिद की तरफ से दौड़ता हुआ एक लड़का आया वह बोला "क्या मैं आपको सहयोग दे सकता हूं? अगर

आप कहे तो मैं भी आपका साथ दूं? कपिल ने हां कर दी। दोनों उस बूढ़े को साफ करने लगे। बूढ़े के शरीर का मल कपिल के कपड़ो में लग गया था। भीड़ तमाशा देख रही थी, लोग कपिल का मजाक उड़ा रहे थे। सफाई करके उसे उठाकर साफ जगह में बिठा दिया और कपिल ने अपनी चादर उसके शरीर पर लपेट दी। कपिल अपने कपड़ो को पोछकर चलने लगे। वह लड़का भी जामा मस्जिद की तरफ चला गया।

बूढ़े ने कपिल को टोककर कहा- दो बंडल-बीड़ी और एक माचिस अपने हाथ से लाकर दे दो। कपिल दौड़ कर ले आए। बाबा को दिया तो उसने शुक्रिया अदा किया और अपने दोनो हाथो को कपिल के सामने कर दिया। हाथ की रेखाओ में कोई अंतर नहीं था। बूढ़े ने मुस्कुरा कर दोनों हाथो को कपिल के सिर पर रखकर दुआ दी और कल जामा-मस्जिद के पास मिलने को कहकर जाने को कह दिया। काफी देर हो चुकी थी कपिल दरियागंज जाने का प्रोग्राम कैंसिल कर वापिस चल दिए। अभी कोने पर पेट्रोल पंप के पास तक ही पहुंचे थे कि कई लोग जो सब देख रहे थे वे दौड़ कर कपिल के पास आये और बोले- बाबा वह बूढ़ा गायब हो गया! कपिल भी आये तो देखा वहा कुछ भी नहीं था ना गंदगी ना मल में भरी गूदड़ी और न वह बूढ़ा वहा लग ही नहीं रहा था कि यहां पर किसी की सफाई की गई थी। वह कौन था। लोगों की भीड़ अफसोस कर रही थी कि उन्होंने किसी अलौकिक शक्ति की सेवा का मौका छोड़ दिया था। कपिल लौट कर शांति वन आ गये। थोड़ी देर वहां बैठ कर फिर कुटिया पर आ गये। कुछ लोग पीछा करते-करते कुटिया आ गए। उन्होंने सबको टाल दिया।

रात में बीरगिरी बाबा से चर्चा की तो उन्होंने बताया "अरे मजनू है, मजनू बाबा। वह कल तुम्हें मिलेगा पर किसी और रूप में जब वह तुम्हारे साथ रहा था उस वक्त उसने तुम्हारे ऊपर खर्चा किया था। तुम्हारी सेवा की थी। उसके बदले में उसने बीड़ी और माचिस ली। और सफाई करवा के सेवा वापस ली वह ऐसा ही करता रहता है। कभी-कभी तो मुझे भी चकमा दे जाता है। कपिल अगले दिन सुबह जल्दी ही जामा मस्जिद जा पहुंचे। कुछ ही देर बाद एक बालक कपिल के कंधे पर हाथ रख कर खड़ा हो गया। उसने एक दिन सुंदर अपटुडेट कपड़े पहन रखे थे। कपिल ने उसका कान पकड़ कर खीचा "क्यों रे, तू रसिया बना फिरता

है। तेरा वह पगालपन कहा गया? वह हंसने लगा ''अरे बापू! छोड़ो नहीं तो बुढ़िया आ जायेगी। अब दोनों हंसने लगे।

कपिल ने कल की घटना की चर्चा की। तो मजनू बाबा बोले-''मैंने जानकर किया था ताकि दिल्ली वाले भी जाने। पर आपने तो सब कुछ हजम करने की ठान रखी है। जूनागढ़ में तो मैं गंडा बाबा के कारण हट गया था। वह बड़ा ही कठोर है-मैं तो उससे दूर ही रहता हूं। लौटकर मैंने बुढ़िया की काफी सेवा की। वह अब उसी पेड़ के नीचे कुटिया बना कर शांति से रहती है। आओ अपनी मजार पर चलते हैं। वहां से दोनों यमुना पार चले गये मगर मजार सामने ही नजर आ रही थी।

मजनू बाबा कपिल को बताने लगे-कभी मैं यहां रहता था। जामा मस्जिद के दक्षिण भाग में भी रहता था। मैंने सूक्ष्म जगत में रहना पसंद नहीं किया। अब अपनी इच्छानुसार घूमता रहता हूं। मेरे और तुम्हारे में क्या फर्क है? तुम भी पहले जैसे ही हो। पर शरीर धारण कर लेने के बाद तुम उलझ गए थे तुम्हे हरि बाबा ने बचा लिया। मैं कभी नहीं उलझता, गण्डा बाबा भी नहीं उलझता। तुम क्यों हमें छोड़कर बार-बार नया जन्म ले लेते हो? देखो इन हाथों को और अपने हाथों को क्या फर्क है? कल भी देखा था। तुममें इतनी श्रेष्ठता है कि तुम्हारे लिए उस बदबू में भी सुगन्ध थी और मैं तो उसमें लिपटा ही था। दिन भर दोनों एक साथ ही घूमते रहे कई जन्मों की सैकड़ों सालों की मित्रता को आगे बढ़ा रहे थे। शाम को दोनों यमुना बांध के किनारे बाबा बीरगिरी को कुटिया पर आ गए। उन्होंने मजनू बाबा को पहचान लिया और खूब स्वागत किया। उन्हे जो भी देखता वह उनकी लीला से रोमांचित हो ही जाता था। सब अपनी समस्याओं को छोड़कर उन्हीं में खो जाते थे) नानक जी का खिलाया एक फूल सबको अपनी खुशबू से आनन्दित कर रहा था और करता रहेगा हमेशा।

बद्रीनाथ और पिण्डारी

घरेलू, पारिवारिक, सामाजिक व्यक्ति घर से बाहर नौकरी, व्यापार या किसी अन्य कार्य के लिए जाते हैं। तो कार्य होते ही उन्हें घर की याद आने लगती है। वैसे ही हिमालय के योगी कपिल कही भ्रमण के लिए या किसी अन्य कार्य के लिए जाते तो कुछ दिन बाद उन्हें गंगा और हिमालय की बर्फीली चोटियों की याद आने लगती। और वे हिमालय में ऐसे प्रवेश कर जाते जैसे अपने घर में आ गये हों। हिमालय का प्रवेश द्वार है हरिद्वार। हरिद्वार में गंगा की सुदंरता व पवित्रता देखकर किसी को भी उत्सुकता इस बात से बढ़ जाती है कि हिमालय अंदर से कैसा होगा। गंगोत्री कैसी होगी, गोमुख कैसा होगा। कपिल का यहां आना तो बार-बार होता ही रहता था। हर की पैडी में आदर्श निकेतन के राजेन्द्र भारती से अच्छा लगाव था। कभी-कभी वहां रूक जाते थे। शाम को गंगा किनारे भ्रमण के लिए निकल और जाते गंगा किनारे बैठे थे। गंगा जी से हिमालय का संदेश पूछ रहे थे। गंगा जी हृदय में ही जवाब दे रही थी। हरिद्वार में तुम खड़े हो इसे मेरा वर्तमान समझो, हिमालय का वह हिस्सा जहां से मैं आई उसे मेरा अतीत समझो, सागर को मेरा भविष्य जानो। मैंने परमात्मा की कृपा से हिमालय के झरनों और पहाड़ों में जन्म लिया पवित्र तपस्वियों से उसकी साधना का आशीर्वाद लेकर हिमालय का त्याग करके हरिद्वार आई पीछे भी और आगे भी अनेक तीर्थों को जीवन दूंगी। भक्तों को भक्ति दूंगी, प्यासों को जल दूंगी। खेती कर रहे किसानों को अन्न दूंगी। जो भी मेरे आसपास होगा उनको कुछ न कुछ देकर सागर की गोद में विश्राम भी करूंगी और इधर सतत् बहती भी रहूंगी यही मेरा जीवन है और यही उपयोगिता।

मैंने हिमालय को छोड़ा तो मुझे हरिद्वार, प्रयाग, काशी जैसे तीर्थ मिल गये। हिमालय के ऋषियों और तपस्वियों से विछुड़ी तो आगे, श्रद्धालु, भक्त मिल गये। इन सबको छोड़ आगे गयी तो विशाल सागर की शरण मिल गयी। वैसे तो एक ही साथ हिमालय हरिद्वार और सागर में स्थित हूं। अब तुम बताओ-तुम्हारा क्या हाल है क्या स्थिति है। अब कपिल स्वयं का हाल बताने लगे गंगा जी को साक्षी बनाकर। मैंने जन्म देने वाली मां को छोड़ा-मुझे जगतमाता का सानिध्य मिल गया। मैंने

महल, सम्पत्ति, घर छोड़ा-मुझे पहाड़, नदियां, गुफाएं सहित हिमालय जैसा घर मिल गया। मैंने परिवार और मित्रों को छोड़ा तो मुझे हरि बाबा, गोरखनाथ, महाअवतार बाबा, गण्डा बाबा, मजनू बाबा जैसे अनेक महापुरूषों का संग मिला। अपनी नौकरी, काम छोड़ा, मुझे आत्म ज्ञान समाधि, संकल्प शक्ति का योग मिल गया। मैंने स्त्री-सुख छोड़ा मुझे सत चित आनंद मिल गए। मैंने व्यक्तिगत योजनाएं छोड़ी-तो मुझे धर्म और मानव कल्याण करने की शक्ति मिल गयी। अब मैं अपनी तपस्या से पवित्रता से स्वयं भी आनंदित रहूंगा और परमात्मा और मानवता को भी कुछ दूंगा (पिछले जन्मों में भी यही किया है, आज भी यही कर रह हूं और आगे भी यही करूंगा) वैसे मैं अकर्ता-अद्वैत हूं। यही मेरा हाल है और यही मेरी स्थिति है। गंगा और उसके बहाव में अपने साधनामय विशेष जीवन को एकरूपता, समानता देख कपिल को अपना जीवन धन्य लग रहा था।

मानव अतीत का त्याग कर सकता है लेकिन अतीत मानव का त्याग नहीं कर सकता वह तो रहेगा ही और कभी न कभी वर्तमान को देखने या जानने भविष्य का सहारा लिए आ ही जायेगा। गंगा किनारे से कपिल वापिस आदर्श निकेतन आए तो उनका मित्र बिरेन्द्र और लक्ष्मी बैठे मिल गए। घर छोड़े, संन्यास लिए अनेक वर्ष बीत गये थे। कपिल को वर्षों तक पिछले जीवन के लोगों का हाल पता नहीं था। और उन सब लोगों को कपिल का हाल पता नहीं था। अब अचानक बीरेन्द्र और लक्ष्मी को आया देख कपिल को लगा वर्तमान अतीत में बिल्कुल अलग नहीं हो सकता। बीरेन्द्र और लक्ष्मी कुछ दिन हिमालय भ्रमण करना चाह रहे थे कपिल के साथ। कपिल को भी कुछ दिनों में बद्रीनाथ जाने की इच्छा हो रही थी। उन्होंने निश्चय किया चलो बीरेन्द्र और लक्ष्मी को बद्रीनाथ जी का ही दर्शन कराया जाये। राजेन्द्र भारती से पूछा तो उन्होंने स्वास्थ्य ठीक न होने से जाने में असमर्थता बतायी।

कपिल अद्वैत उन दोनों पति और पत्नी के साथ जा पहुंचे बद्रीनाथ। मंदिर दर्शन के लिए गए, बाजार देखा, आश्रम और धर्मशालाओं में तीन दिन घूमते रहे, लेकिन आत्मा संतुष्ट नहीं हुई। ऐसा लग रहा था जैसे किसी पहाड़ पर सैर करने आए हो। पवित्र तीर्थस्थल को सैर-सपाटे का स्थान बना दिया गया था। महापुरूष जैसे प्रभावशाली बद्रीनाथ की चर्चा

किया करते थे। वैसा कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। पुजारी सब भावहीन, व्यक्ति सब व्यापारी उन सब के बीच मंदिर में बद्री बेचारे चुपचाप खड़े हैं। क्या यही बद्रीनाथ है? चौथा दिन निराशा और उदासी से बीता। वैसे वसु धारा की तरफ घूम फिर आए। पांचवे दिन कपिल ने अपनी विचार तरंगों को वायुमंडल में प्रेषित कर दिया कि कोई महापुरूष यहां पर है तो मुझे दर्शन दे। मजबूरी वश बद्रीनाथ तपोस्थली में रहने वाले श्रेष्ठ महापुरूषों को आशाजनक चुनौती दे डाली। क्योंकि शास्त्रों-पुराणों और धार्मिक पुस्तकों में वर्णित बद्रीनाथ की महिमा को झूठा नहीं मानना चाहते थे।

कपिल ने बीरेन्द्र का एक सूट निकाला और उसे पहन कर चल दिये। ''आओ बीरेन्द्र आज देखते हैं क्या बद्रीनाथ सचमुच ऋषि-मुनियों की गुप्त तपोस्थली है या मात्र एक हिन्दु-धर्म का तीर्थ परम्परा का एक प्रतीक भर है। जहां स्वार्थी तत्वों ने धर्म और ईश्वर को व्यापार बना लिया है। बाजार को पार कर चल दिए नीलकंठ घाटी की तरफ। चरण-पादुका को पार कर ऋषि गंगा के किनारे-किनारे आगे बढ़ने लगे। बर्फ काफी जमी हुई थी। बीरेन्द्र और उसकी पत्नी लक्ष्मी को काफी परेशानी हो रही थी। ग्लेशियर के बहाव को पार करके एक मैदान में पहुंचे पति-पत्नी दोनों थक गए थे। वे रूक गये। कपिल आगे बढ़ते रहे।

तभी सम्पूर्ण घाटी में एक आवाज गूंजने लगी ''महात्मन कपिल ! महात्मन कपिल। महात्मा कपिल आप इधर आये। उत्तर दिशा की ओर। जिधर हिमालय झुक रहा है, सागर को संदेश देने के लिए। नीलकंठ सिर उठाए आकाश को देख रहा है, सागर का संदेश पाने के लिए।'' कपिल रूक कर उत्तर दिशा की ओर देखने लगे। ऋषिगंगा का स्वच्छ-पवित्र जल सुंदर रूप लेकर बह रहा था। बहाव के किनारे एक पत्थर की चट्टान पर एक भव्य मूर्ति पुरूष खड़े होकर हाथ उठाए आवाज दे रहे थे। उनकी आवाज से सारी घाटी गूंज रही थी। बड़ा ही भव्य शरीर था। कानों में कुंडल, बड़ी-बड़ी जटाए, आंखों में दिव्य ज्योति लिए वे योगी शांतचित्त लिए पत्थर पर बैठ गए। जटाए एक तरफ से लटक कर पत्थर को स्पर्श कर रही थी। मंद-मंद मुस्कान के साथ उन्होंने स्वागत किया -''आओ देव, तुम्हें कौन रोक सकता है हिमालय के प्रांगण में भ्रमण करके, तपस्यारत् महात्माओं का प्रत्यक्ष दर्शन करने से? सदियों से गंगा

प्रवाहित होकर हिमालय के संदेशों को देते आ रही है। आपने इस गंगा से कहा होता। आप की तरंगे यह हमारे तक छोड़ जाती। पवित्र पावन गंगा की लहरें और आपकी विचार तरंगे एक दूसरे का सहयोग करतें बद्रीनाथ हिमालय में है, न कि हिमालय बद्रीनाथ में। बद्रीनाथ प्रतीक है आस्था का, विश्वास का-हिमालय सत्य है जीवन का।''

''योगीराज आप अपनी संकल्प शक्ति का प्रयोग केवल कल्याणमयी भावनाओं के लिए करे। विचार तरंगों को हर जगह प्रवाहित न करे। संस्कार युक्त महापुरूषों को उनके संस्कार ही काफी है। आप यहां पर तो बद्रीनाथ के महात्माओं की परीक्षा ले रहे है, पर भविष्य में ऐसा न करें। मैं सुंदर नाथ हूं। मेरा अतीत वर्तमान सब कुछ इस बद्रीनाथ में सजीव है। मैं हिमालय के इस बद्रीनाथ खंड में रहता हूं। जिस तरह से आप भी हिमालय में रहते हैं पर पिण्डारी खंड से जाने जाते हैं। किसी वस्तु को होने से नकारा नहीं जा सकता, वह है, पर उसे किसी से जोड़ कर उसका अस्तित्व नहीं मिटाया जा सकता। जिस तरह आत्मा शरीर के साथ जुड़ी है। आत्मा ने शरीर को धारण कर रखा है, पर शरीर को भी नकारा नहीं जा सकता। क्योंकि शरीर के बिना आत्मा का कोई मूल्य नहीं है, उपयोग नहीं है। इसी तरह हमारी व्यवस्था है। मैंने नाम को धारण कर रखा है जो एक व्यवस्था को कर रहा है। मनुष्य जन्म लेता है तब वह न किसी धर्म और मजहब का होता है न किसी जाति का। पर जब उसका नामकरण हो जाता है तब वह किसी न किसी मजहब या जाति से जुड़ जाता है। यही बद्रीनाथ का और मेरा संबंध है। और यही हिमालय और बद्रीनाथ का है।

आइए हम लोग गुफा में चले। थोड़ा हटकर बर्फीली चोटी की तलहटी में गुफा थी। सुंदरनाथ जी के पीछे-पीछे चलकर तीनों गुफा में जाकर बैठ गए। सुंदरनाथ जी ने कुछ फल और शहद रख दिये। और विश्व की आधुनिक उपलब्धियों की चर्चा करने लगे प्राकृतिक छेड़छाड़ ही विश्व के विनाश का कारण बनेगा। ये अंतरिक्ष को छेड़ रहे हैं। मंगल,चन्द्रमा, बृहस्पति को अपनी जासूसी का केन्द्र बनाना चाहते हैं। प्रकृति जन्त देती है और वही भोग के साधनों को इकट्ठा कर नष्ट भी करा देती है।

तभी सुंदर नाथ जी का ध्यान लक्ष्मी की तरफ गया जो साड़ी से आंखें पोंछ रही थी। ''अरे बेटी तू क्यों रो रही है। तू तो महान बालिका

है, राजलक्ष्मी है। तूने तो दान की चरम सीमा को पार कर लिया है और वह दान दूसरों के लिए वरदान बन गया है। तुम कपिल के लिए अमर पथ बनी और बीरेन्द्र के लिए भोग सामग्री। ये दोनों रूप तुम्हारें ही तो है। कहते-कहते सुन्दरनाथ जी रूक गए और सामने देखने लगे। फिर बोले-''सर्वेश्वरानंद जी आ रहे हैं तुमसे मिलने। तुम्हारी विचार तरंगों ने उन्हें भी प्रभावित किया होगा। ''खट-खट खडाऊ की आवाज आने लगी। सभी खड़े हो गए। सुंदरनाथ जी ने अपनी जगह पर झुक कर सर्वेश्वरानन्द जी का स्वागत किया। कपिल ने चरण स्पर्श किया। बीरेन्द्र और लक्ष्मी ने झुक कर चरणों को छूकर अपने माथे लगाया। सर्वेश्वरानन्द जी ने सबको आशीर्वाद दिया और बोले-''क्यों महर्षि कपिल अब तो बद्रीनाथ के प्रति आस्था जुड़ गई। अब आओ तुम्हें अपने सीने से लगा लू कि भविष्य में कोई ऐसी विचारधारा उत्पन्न न हो'' कपिल लपक कर उनकी बांहों के घेरे में आकर सीने से लग गये। सीने से लगते ही कपिल को लगा-मनुष्य जीवन की यही उपलब्धियां श्रेष्ठ कही जायेगी। आत्मीय पराकाष्ठा और ईश्वरीय सानिध्य को पाने के लिए ही इस जीवन का निर्माण होता है।

सर्वेश्वरानन्द जी मधुर परिचय देने लगे- मैं सर्वेश्वरानन्द हूं। मनुष्य था, मनुष्य ही हूं। ६७३ वर्षो से हिमालय में भ्रमण कर रहा हूं पर अभी हिमालय स्थित महात्माओं के परम तत्व को नहीं समझ पाया हूं। ये सुंदरनाथ जी है। मेरे समकालिन पर कुछ देर बाद हिमालय के आंगन में आए। बद्रीनाथ खण्ड ही इनका सब कुछ है। अब तो आपको अनुभव हो गया कि हिमालय क्या कह रहा है और बद्रीनाथ कैसी तपोस्थली है। आओ कुछ खाए। सबने मिलकर कन्द और शहद खाया और गुफा से बाहर आकर टहलने लगे। सर्वेश्वरानन्द जी ने लक्ष्मी के सिर पर हाथ रख कर तीन थपकी दी और वहीं से मुड़कर जाने लगे। कपिल ने रूकने को कहा तो वे बोले चलो तुम्हें थोड़ा दूर तक छोड़ देता हूं। सब सुंदरनाथ जी को नमस्कार कर चल दिए। सर्वेश्वरानन्द जी चलते-चलते कहने लगे। फिर कभी कपिल महर्षि आइयेगा सतोपथ की तरफ। मैं पिण्डारी मे मिलने का प्रयास करूंगा। ऐसा कहकर शहर के करीब तक छोड़कर वे महापुरूष बद्रीनाथ जी की महानता का प्रमाण देकर चले गए। तीनों ने मंदिर में आकर दर्शन किए अब हर क्रिया में भाव और श्रद्धा आ

गई थी। रात हो गई तीनों अपने निवास स्थान पर आकर सो गए।

सुबह तीनों स्नानादि से निवृत होकर अलकनन्दा के किनारे टहलने चले गए। वहां एक बाबा कपिल को बुलाने लगे। बाबा दो पत्थरों के बीच में बैठे थे-गीता का गुटका हाथ में था। शरीर और मस्तक से दिव्य भावनाएं प्रवाहित हो रही थी। शांत भाव से उन्होंने पूछा-- कल का दिन अच्छा रहा होगा। तुम्हारे मन में जिज्ञासा और अविश्वास की रेखाएं खिंच गई थी। वह अब समाप्त हो गई होंगी। जलन को शीतलता प्रदान करना ही श्रेष्ठ महापुरुषो का काम है। बाबा सुंदरदास के लिए कल्पना है, सपने के जैसे, और सर्वेश्वरानन्द जी का दर्शन भी अति दुर्लभ है। मैं आपको तीन चार दिन से बेचैन स्थिति में आते जाते देख रहा था। मुझे परमानन्द उदासीन कहते हैं। कश्मीर से गंगोत्री, केदारखंड, ब्रदीनाथ और सतोपथ ग्लेशियर में घूमता रहता हूं। तपोवन, नन्दनवन, लक्ष्मीवन को गुफओं में तपस्या करता हूं महापुरूषों के सानिध्य में। अब सन् ७८ के सितम्बर से जब आप गंगोत्री सें ब्रदीनाथ आएंगे तब मैं तपोवन, नन्दन वन के बाद आपसे मिलूंगा। तब हिमालय के हिम मंडित शिखरों पर कुछ राते साथ ही ज्ञान-ध्यान की बातों में बितायेंगे और सूक्ष्म जगत का अदृश्य करेंगे। ऐसा कहकर वे चल दिए।

बीरेन्द्र और उसकी पत्नी लक्ष्मी बार-बार कपिल को देख-देखकर आश्चर्य कर रहे थे। बीरेन्द्र कहने लगा "यार तू क्या है। पीछे देखता हूं तो तू मेरा दोस्त नजर आता है। वर्तमान को देखता हूं तो सोचता हूं तुझे दोस्त कहूं या चरण स्पर्श कर माथे पर लगाऊ। दोस्त इच्छा करती है कि इस राजसी भोगों से हटकर तुम्हारी ही दुनिया में खो जाऊं, पर शायद मेरा संस्कार ऐसा नहीं। कपिल मेरे दोस्त मेरे अजीज वर्षों तक मैं लज्जित था, मेरी पत्नी चिंतित रहती थी। हम दोनों स्वयं को दोषी ठहरा रहे थे, सोचते थे, एकमात्र हम ही कारण है तुम्हारे संन्यास लेने के, तुम्हे इस स्वरूप को ग्रहण करने के, कहा -एक बेहतरीन गाड़ियों का शौकीन-हवा में गोताखोरी करने वाला हवाबाज पायलट महलों का राजकुंवर कैसे इस तरह रह रहा होगा। गुफाओं में, पत्थरों पर कैसे सोता होगा। हमने तुम्हारी पसन्द की चीजें वैसे ही सजाकर रखी हैं कि शायद तुम लौट आओगे। मुझे मेरा दोस्त मिल जाएगा, मां बाप को अपना बेटा, भाई-बहनों को भाई और मित्रों को खोया हुआ साथी मिल जायेगा। लेकिन आज देख

रहा हूं संसार से, समाज से ऐश्वर्य से हटकर, कांटों पर चलकर तुमने अपनी मंजिल पा ली है। हम तो रह गए इस व्यवहारिक जगत की मायावी वाटिका में भटकने के लिए। अब मैं कपिल सिंह से कपिल अद्वैत बने, महर्षि को बार-बार नमन करने का अधिकार मांगता हूं। और हाथ जोड़कर आग्रह करता हूं कि तुम हमें मागदर्शन दो। ऐसा कहकर बीरेन्द्र और लक्ष्मी दोनों एक साथ कपिल के चरणों में झुक गये और चरण स्पर्श कर खड़े हो गए। दोनों की आंखों में आंसू थे।

वे आंसू की बूंद कपिल को कुछ पल के लिए अतीत ले जाने लगी। कपिल बोले-मेरे जीवन का धर्म और हिमालय की दिशा में मुड़ने के लिए आप दोनों स्वयं को दोषी मत मानो। जो कुछ काम मैंने त्याग किया है वह बहुत छोटा है और जो कुछ मैंने पा लिया है वह बहुत विशाल है। इसलिए भूल जाओ कल था भी। जो कुछ है अब है। बद्रीनाथ यात्रा को पूरी तरह सफल और पूरी हुई जान तीनों दिल्ली लौट गए। बीरेन्द्र और लक्ष्मी बहुत कुछ देख चुके थे सीख चुके थे। कपिल अब तैयारी करने लगे पिण्डारी जाने की। बीरेन्द्र और लक्ष्मी भी चल दिए अपने स्टेट। वे जाने लगे तो कपिल बोले-वक्त को स्वतंत्र छोड़ दो। समय सब कुछ कराएगा। समय के साथ-साथ सबको चलने दो। तुम अपने समय के साथ चलो। मैं अपने समय के साथ चल रहा है। बीरेन्द्र और लक्ष्मी चले गए।

पिण्डारी ग्लेशियर पिण्डर नदी का उद्‌गम स्थल है। पिण्डर नदी कर्णप्रयाग में अलकनन्दा से मिल जाती है। पिण्डर के उद्‌गम स्थल पर ही है कपिल की गुफा। बाबा गोरखनाथ जी ने भी बोला था पिण्डारी में रहना। कपिल को लगा कि मेरी गुफा मेरा इंतजार कर रही है। जिसका जैसा संस्कार होता है उसकी रूचिया वैसी ही बन जाती है। जैसे भोगी व्यक्ति की रूचि अपने भोगों से होती है। वैसी ही रूचि सच्चे तपस्वियों को अपने गुफा से और तपस्या के साधनों से होती है। कपिल अब चल दिए पिण्डारी के लिए।

कुछ दिन बागेश्वर से पहले सरयू के तट पर तपस्या की। कही रूकते थे तो लगता था जैसे पिण्डर की घाटियां आवाज दे रही हों और मैं पहुंचने में देर कर रहा हूं। पैदल ही चल रहे थे इसलिए देर लग रही थी। जहां भी रूकते थे वहां कुछ न कुछ तो कर ही देते थे। जो लोगों

के लिए बहुत बड़ा चमत्कार होता था। कुछ दिन बागेश्वर में रूके तो चर्चा का विषय बन गये। बागेश्वर में एक नागा बाबा और एक वैष्णव संत भी साथ हो लिये। तीनों चलते रहे सरयू के किनारे-किनारे। इस दिशा का भारत का अंतिम गांव है खाती। खाती हिमगिरी शिखरों के मध्य में बसा है। वहां पहुंच गये। हिमालय के गांवों के लोग बहुत ही सीधे होते हैं। सत्य बोलने के आदी, छल-कपट, झूठ चोरी, इन सबको उनकी जानकारी ही नहीं है। रतनसिंह सभापति खाती से बाहर था। उसके न होने से व्यवस्था में कुछ कठिनाई महसूस हो रही थी। तब बाकी गांव वालों ने व्यवस्था की। गांव वाले बोले बाबा यहां तो रोज बरसात हो रही है। आप कल कैसे जाओगे?

कपिल बोले-जब हम प्रकृति के विपरीत कार्य नहीं करते तो प्रकृति भी हमें नहीं रोकेगी। दूसरे दिन बरसात नहीं हुई। कपिल नागा बाबा और वैष्णव संत को लेकर तत्परता से निकल लिए। चार दिन का सफर दो दिन में पूरा कर लिया। अगले दिन पिण्डारी गुफा में पहुंच गये। गुफा की सफाई की। नागा बाबा और वैष्णव संत को लकड़ी लाने भेज दिया। कपिल ने गुफा में पत्थर इकट्ठा करके आसन बनाया और बीच में धूनी। इतने में लकड़ियां लेकर दोनों बाबा आ गये। तब बरसात शुरू हुई। आग जलाकर गुफा के दरवाजें को पत्थर से बंद कर लिया। वैष्णव संत को ठंड लग रही थी कपिल ने अपनी चादर उन्हें दे दी और आग को और ज्यादा तेज कर दिया। तब वैष्णव संत को थोड़ा आराम मिला वे सो गये। नागा बाबा अपनी साधना में लीन थे। कपिल गुफा से निकल कर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गए। चांदनी रात थी। सारी घाटी चांदी की तरह चमक रही थी। पिण्डर नदी का बहाव मधुर संगीत सुना रहा था। लग रहा था जैसे पिण्डर घाटी और नदी कपिल के आने की खुशी दिखा रहे हों बहुत दिनों से अपने निहारने वालें का इंतजार करने के बाद। कपिल आनंद में मग्न हो उठकर चल दिये नंदा घाट की तरफ।

थोड़ी दूर चलने के बाद नगाड़े, शंख और घंटी बजने की आवाजें आने लगी। कपिल उधर ही खिंचे जा रहे थे। सामने एक विशाल गुफा थी। कुछ कन्याओं ने आकर कपिल को रोक लिया। पांच कन्याएं कपिल को चलने के लिए कहने लगी। कन्याएं गुफा के अंदर ले गई। गुफा बहुत ऊंची और बड़ी थी। सामने मां बैठी थी। कन्याएं कपिल को मां के समक्ष

छोड़ पीछे हट गई कपिल भाव विभोर हो मां को निहारते रहे। फिर दौड़ कर पैरों में लिपट गये। आज अनेक भुजाएं थी, पर चेहरा वही था। मांग में सिंदूर था, नाक में नथ और सम्पूर्ण अंग आभूषणों से सजे थे। मां कुछ नहीं बोल रही थी। मां के साथ चार ओर देवियां बैठी थी। मां शांत बैठी थी। गुफा अंदर से तीन मंजिल थी। दूसरी मंजिल पर कुछ औरतें बैठी थी। कन्याएं, गणिकाए धार्मिक नृत्य में मग्न थी। कपिल सिर घुमा-घुमा कर चारों तरफ देख रहे थे। उसमें काफी भीड़ थी, आदमी, औरतें, बच्चे, लड़के, लड़कियां सब नजर आ रहे थे। उस भीड़ में कपिल स्वयं को भी देख रहे थे। सारी भीड़ कपिल के इर्द-गिर्द घूम रही थी। कपिल सोच रहे थे आखिर मां क्या कहना चाहती है। तभी वेद की त्रचाओ की आवाज आने लगी स्वाहा-स्वाहा से वायुमंडल गूंजने लगा। कपिल देख रहे थे अपार जनसमूह उनके आगे-पीछे फैला है और व एक विशाल मंडप का निर्माण करवा रहे है। धीरे-धीरे सब कुछ धुंघला होकर मिट गया। तब मां ने अपनी तरफ इशारा कर कहा-ऐसी ही मूर्ति, जैसी अभी देख रहे हो, प्रतिष्ठा यहां पिण्डारी में करनी है तुम्हें अपने हाथों से। और जैसा अभी देखा था विशाल मंडप, ऐसे यज्ञ करने हैं। जरूरी बातें कपिल को दिखा कर बता कर मां ने कहा अब जाओ, फिर दर्शन दूंगी।

कपिल गुफा से निकल कर चल दिए अपनी गुफा की तरफ। रास्ते में सोच रहे थे क्यों पिण्डारी आने के लिए इतनी व्यग्रता हो रही थी अब समझ आया। मां अपने आनंद उत्सव में खींच रही थी और मुझको मेरा भविष्य कर्म दिखा रही थी। गुफा में आये तो नागा बाबा और वैष्णव संत सोए हुए थे। कपिल भी लेट गये। सुबह सब देर से उठे। नागा बाबा गुफा से निकल जलधारा पर गये, पानी बहुत ही ठंडा था फिर भी स्नान कर विभूति लगा कर लौट रहे थे। तभी उनकी सामने दृष्टि पड़ गयी और वे कमण्डल को फेंक कर पागलों की तरह नाच-नाच कर चिल्लाने लगे-मां,मां,मां। कपिल दौड़ कर बाहर आये। लाल वस्त्रों में सुशोभित मां एक पत्थर की चट्टान पर बैठी थी। सूरज की प्रातःकालीन किरणें उस पर आकर पड़ रही थी और उसके मस्तक से दिव्य प्रकाश निकल क़र चारों तरफ फैल रहा था। वातावरण में मीठी-मीठी सुगन्ध फैल रही थी। वैष्णव संत भी आ गये और लेट-लेट कर साष्टांग प्रणाम करने लगे। काफी देर तक मां बैठी रही। कपिल और वैष्णव संत भी बैठे रहे। नागा

बाबा ने नाचना बंद नहीं किया था। सूरज की किरणें तेज होने लगी और नीचे से कुछ सैलानियों का आगमन हुआ तो मां उसी चट्टान पर लुप्त हो गई।

मां ने पिण्डारी में मंदिर के लिए बोला था और यज्ञ करने की आज्ञा दी थी। ये कार्य कैसे करने हैं इसकी योजना दिमाग में तैयार करते रहे और दिन भर हिमालय की घाटियों में घूमते रहे। शाम को कपिल ने भोजन नहीं किया इच्छा नहीं हो रही थी। नागा वावा और वैष्णव संत भोजन करके सो गए। रात होते ही कपिल गुफा से निकल कर चल दिए। पिण्डर नदी को पार कर, नन्दाधार के ग्लेशियर से निकल कर प्वालीदार बल्जूरिया और नन्दाधाट के मध्य बहुत बड़ा मैदान था उसमें पहुंच गये। बर्फ से लदी चोटियों के बीच मंदाकिनी ताल चांदनी रात में बहुत अच्छी लग रही थी। ऊपर बर्फ से लदी एक चोटी के नीचे चटटानी हिस्से में एक बहुत बड़ी गुफा नजर आई उसी की तरफ बढ़ने लगे। जैसे ही वहां पहुंचे एक साध्वी ने गुफा के बाहर स्वागत किया और अंदर ले गई। पूरी गुफा पीले रंग के प्रकाश से सराबोर थी। तेईस तपस्वी जो देखने से ही लग रहे थे कि वे महापुरूष हैं,पंगत में बैठे हुए थे। एक तरफ एक आसन और थाली खाली थे। साध्वी ने कपिल को एक गर्म शाल और लोटा दिया और तेईस महापुरूष जो कपिल का काफी देर से इंतजार कर रहे थे उनके साथ चौबीसवें नबर में बिठा दिया। सबने संकल्प शक्ति से प्राप्त अभिमंत्रित स्वादिष्ट भोजन पाया।

एक बहुत ही प्राचीन शरीर धारी लग रहे महात्मा अलग एक तख्त पर बैठे थे। साध्वी ने कपिल को ले जाकर उनके सामने खड़ा कर दिया। वे महात्मा बहुत देर तक कपिल को देखते रहे फिर स्थिति का परिचय देने लगे। महात्माओं की तरफ इशारा कर बोले-ये दिव्य महापुरूषों का दिव्य आसन है। ये अपने-अपने शरीर का निर्माण यहां करते हैं। इनका अपना भौतिक शरीर अलग-अलग गुफाओं में पड़ा है। तुम भी भौतिक शरीर से इधर आने का प्रयास न करना। आज मैंने प्रीतिभोज दिया था इसलिए ये सब हिमालय के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से आये हैं। अब सभी महात्मा जाने की तैयारी करने लगे। कपिल कईयों को पहचान रहे थे पर उन सबको जाने की लग रही थी। इसलिए वे मिल नहीं रहे थे। कपिल हिमालय के अनुशासन को समझने को कोशिश कर रहे थे। सभी महात्मा अपने-अपने

स्थानों के लिए चले गये। जो महात्मा तख्त पर बैठे थे उन्होंने कपिल को अपने पास बैठा लिया और बातचीत करने लगे। कपिल को सूक्ष्म जगत के महत्व की जानकारी देने लगे। विश्व के भौतिक घटनाक्रम के विषय में रूचि लेने लगे। राजनीति की चर्चा और देश के वर्तमान और भविष्य के आंकलन बताने लगे।

रामायण काल की घटनाएं राम-रावण युद्ध की चर्चा तो ऐसे बता रहे थे जैसे कि ये विभीषण ही हो। कपिल उन महात्मा के परिचय के रहस्य में उलझने लगे। कुछ परिचय मिलने लगा। वे मथुरादास बाबा थे। जब वृन्दावन में निवास कर रहे थे तो मदन मोहन मालवीय और मोतीलाल नेहरू की भक्ति से प्रसन्न होकर जवाहर लाल नेहरू के रूप में जन्म लिया था। कर्मयोगी के रूप में लम्बे समय तक रहकर पुनः अपनी पूर्व स्थिति में आकर हिमालय में रह रहे है। अब कपिल को समझ आया कि क्यों वे भारत और विश्व राजनीति में इतनी रूचि ले रहे थे। पहले समाज में सम्मिलित होकर देश के लिए काफी कुछ कर चुके थे और जो रह गया था उसे हिमालय से ही अपनी शुभकामनाओं और पवित्र उपस्थिति से कर रहे थे। कपिल को जांच-परख कर मथुरादास बाबा ने अपने दल में सम्मिलित कर दिया। पहले से तेईस महात्मा थे कपिल को चौबीसवॉं स्थान दिया गया। सभी आवश्यक बातचीत कर मथुरादास बाबा ने उस साध्वी से कपिल को छोड़ आने को कहा और स्वयं गुफा में और अंदर प्रवेश कर गये। उस साधवी ने अल्प समय में ही कपिल को गुफा तक पहुंचा दिया। कपिल अपनी गुफा में आकर लेट गये। नींद नहीं आ रही थी तो सब घटनाओं पर विचार करने लगे।

तभी वैष्णव संत उठकर रोने लगे- उन्हें हिमालय में रहने का अभ्यास नहीं था। ठंड के कारण उनके सारे शरीर में जलन हो रही थी। कपिल गुफा के बाहर आये और एक जड़ी उखाड़ कर उन वैष्णव संत को खिला दी। वे गहरी निद्रा में सो गये। तब कपिल बराबर की दूसरी गुफा में गये और द्वार को पत्थरों से बंद करके, समाधिस्थ होकर अपने भौतिक शरीर को गुफा में छोड़ सूक्ष्म शरीर से हिमालय भ्रमण करने लगे। भण्डार गुफा में गये वहां मथुरादास जी दो ओर महात्माओ के साथ बैठे थे। काशीनाथ बाबा जो योगानन्द जी के शिष्य थे वे भी अपनी गुफा में थे सबके स्थानों और समाधि रूपों का दर्शन कर अपनी गुफा में आकर अपने शरीर में

प्रवेश कर गये। सुबह हो चुकी थी। गुफा खोलकर वाहर आये तो नागा बाबा अपना पैर पकड़ कर बैठे हुए थे। वर्फ की ठण्डी हवा उनके पैर में असर कर गयी थी। नागा बाबा और वैष्णव संत दोनों को काफी दिक्कतें आ रही थी और सामान भी समाप्त हो रहा था। सव हालात देखकर कपिल को पिण्डारी में इस बार जल्दी लौटने का निर्णय लेना पड़ा। इस निश्चय के साथ कि भविष्य में पिण्डारी अकेले ही आया करेंगे।

पिण्डारी से लौटते हुए दिमाग में हिमालय के महापुरूषों का चिंतन ही छा रहा था उनकी महानता, जीवन शैली, क्षमताओं के विषय में ही सोचते रहते। इन महात्माओं ने ही हिमालय को विशेष बना रखा है। इनका सम्पूर्ण जीवन ही मानवों के कल्याण के लिए है। हिमालय इनका गांव है। इनका चिंतन देश और राष्ट्र के लिए ही नहीं सम्पूर्ण मानव जगत के लिए है। कैसी इनकी क्षमताए हैं कि देवता भी इनसे सहयोग लेते हैं। कभी ये महात्मा अन्य लोकों में, नक्षत्रों, ग्रहों में भ्रमण करते हैं। कभी सार्वजनिक जीवन में भी घूम-फिर आते हैं जो महान आत्माएं कभी-कभी हजारों वर्ष बाद जन्म लेती है उन्हें ये सब बहुत ही सहयोग देते है। हर समस्या का वे अपने ढंग से समाधान करते हैं। ये विश्व के सभी आविष्कारों से परिचित रहते हैं इनके पास हर देश के राष्ट्र नायकों की विचारधाराओं की जानकारी रहती है। मानव हित के लिए अपने विचार प्रवाह से ही बहुत फेर बदल करवाते रहते हैं। ये समय को साथ लेकर चलते हैं। ये समय के पीछे नहीं दौड़ते। उन महापुरूषों को जानकर उनके साथ सम्मिलित होकर कपिल को अब अपनी भूमिका और भी अधिक स्पष्ट नजर आ रही थी।

समाधि और संसार

समाज की और संसार की स्थिति को देखते हुए अब कपिल को आवश्यकता महसूस हो रही थी कि अब कुछ किया जाए। हिमालय ऋषि-मुनियों की तपोस्थली है। धर्म का संदेश हिमालय से निकल कर पहले भारत में फैलता है फिर भारत से चल कर विश्व को मार्गदर्शन देता है। प्रायः देख रहे थे कि गांवों और शहरों से भी योग, वेद, भक्ति लुप्त होते जा रहे थे। इसलिए बागेश्वर में ही समाधि और यज्ञ आदि करने की योजना लेकर जूनागढ़ अखाड़े में ठहर गये। जब पिण्डारी जा रहे थे तो तब यहां पर कई लोगों की कठिन समस्याओं का समाधान किया था इसलिए यहां काफी लोग प्रभावित होकर कपिल के पास आने लगे। एक दिन जूनागढ़ अखाड़े के चबूतरे पर धूप सेवन कर रहे थे। कुछ लड़कियां नदी से जल लेकर लौट रही थी। वे लड़कियां अपना भविष्य जानने की इच्छा से कपिल के पास रूक गई। कपिल ने कुछ लड़कियों को अतीत और भविष्य लिख कर दे दिया। जैसी घटनाएं हुई थी वैसी की वैसी कपिल ने कागज पर लिख दी थी। उसे पढ़कर लड़कियां आश्चर्य से चिल्लाने लगी। तब उन्होंने प्रभावित होकर बागेश्वर शहर की आबादी में प्रचार कर दिया। इसके बाद तो कपिल बागेश्वर के लोगों से घिरे ही रहते। सबुह से शाम तक समाज की समस्याओं को अपने योग से हल करने में ही गुजार देते। लोग दूर-दूर से पैदल चलकर आते उन्हें दुखी और निराश देखकर कपिल उन्हें जीने का प्रोत्साहन देते और उनके विघ्नों और परेशानियों को दूर करते।

शाम को जब भीड़ कम हो जाती तब बागेश्वर के मुख्य नागरिक आते थे। युवा वर्ग भी काफी संख्या में आ रहा था। कॉलेज के छात्र-छात्राओं में योग को जानने की, सीखने की काफी रूचि लग रही थी। एक रविवार को लोगो की काफी भीड़ थी। लोगों का प्रेम और उम्मीद कपिल के प्रति बढ़ता जा रहा था। कुछ लोगों ने गांगुली हाट जाने का प्रस्ताव रखा, जहां पर माँ काली का मंदिर था जो एक भक्त ने मां के दर्शन के बाद बनवाया था। कपिल पचास-साठ लोगों को और महन्त जी को भी लेकर चल दिए गांगुली हाट के लिए।

मंदिर के बरामदे में बैठकर कपिल पुजारी से वहां का इतिहास

सुन रहे थे। भीड़ काफी ज्यादा इकट्ठी हो गई थीं। कपिल को कुछ बेचैनी सी हुई तो वे बाहर देवदार के वृक्षों की तरफ आ गए। अचानक मां ने वहां दर्शन दे दिया। कपिल ने मां से समूह दर्शन के लिए प्रार्थना की, दयालु माता मान गई। जब कपिल मंदिर से बाहर आये तो कुछ लोग पीछे-पीछे आ रहे थे। अब उन सबको मां का दर्शन मिलने लगा। सभी लोग *आश्चर्यचकित* मां काली को देखते रहे। कपिल मां से बातें कर रहे थे। हवा की तरह यह बात फैल गई कि मां प्रकट हुई है। लोग दौड़-दौड़ कर आने लगे। मां आधा घंटे तक वहां रही। थोड़ी दूरी पर अनगिनत लोगों की भीड़ आ गई। अब लोग दर्शन के लिए टूट पड़े तो मां एक तरफ चल दी। लोग मां के पीछे चलने लगे तो वह रुक कर जोर से हंसी और वहीं पर लुप्त हो गई। वहां पर गहरा सन्नाटा छा गया। लोग एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। दर्शन करने वाले स्वयं को बड़ा ही भाग्यशाली समझ रहे थे। बहुत से लोग वाद में पहुंचे, वे अपने भाग्य को कोसने लगे। कुछ ही समय में वहां एक अद्भुत घटना घट गई जो सभी मानवों के लिए बड़ी आश्चर्यजनक थी। कपिल वहां से मंदिर की ओर बढ़े तो सभी लोग उनके चरण-स्पर्श के लिए दौड़ पड़े।

कपिल के प्रेमपूर्ण व्यवहार ने, उनकी योग सामर्थ्य ने, मां काली की कृपा ने बागेश्वर में ऐसा माहौल वना दिया कि अब सभी लोग भक्त और ज्ञानी नजर आ रहे थे। नास्तिक भी नास्तिकता छोड़ पूजा-पाठ करने लगे। आस्तिकों का तो कहना ही क्या।

अब वातावरण को पूरी तरह तैयार जान कपिल ने भूमिगत समाधि और वैदिक यज्ञ की घोषणा करवा दी। सभी नागरिक, अधिकारीगण, सहयोग के लिए तैयार थे। योग्य पंडितों को बुलवाया गया यज्ञ के लिए। विशाल सुंदर मंडप बनवाया गया। नेताओं और मंत्रीगणों ने शामिल होकर जनता के उत्साह में खुद को जोड़ दिया। उन लोगों की भक्ति और समर्पण देखकर कपिल ने खुद को तैयार कर लिया वहां पर योग का सामर्थ्य बताने के लिए। कपिल समाधिस्थ हो गए। उनके कहे अनुसार लोगों ने उनके शरीर को जमीन में दबा दिया। कुछ भावुक भक्त रोने लगे। कपिल तो पूरा मन बना ही चुके थे उन सब भक्तों को योग ऐश्वर्य से परिचित कराने का। कपिल का शरीर जमीन में दबा था। वे कई फुट गहरे गड्ढे में समाधिस्थ थे। तभी वहां के लोग एक ऐसा

चमत्कार अपनी आंखों से देखने लगे जो उन्होंने शास्त्रों और पुराणों में सिर्फ पढ़ा था। कपिल कई शरीरों का निर्माण कर लोगों से मिल रहे थे। किसी के साथ बैठकर हवन कर रहे थे। किसी उदासीन आंख के आंसू पोंछ रहे थे। जो लोग सोच रहे थे कि जमीन के अंदर बाबा का क्या होगा, उनकी चिंता दूर कर रहे थे। लोग भक्ति भाव से निहाल हो रहे थे। भीड़ प्रतिदिन बढ़ने लगी। समाधि सब जगह चर्चा का प्रिय विषय बन गई। लोगों को यज्ञ में शामिल होना और समाधि स्थल का दर्शन करके ही अपना कल्याण हो गया ऐसा लग रहा था। सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा था। जब कपिल समाधि से बाहर निकले तो सामने लाखों लोगों का समूह हाथ जोड़े खड़ा था। कपिल मंच पर आ गये जिससे लोग दर्शन पा सकें। सुखी जीवन की आस से आए सभी लोगों को कपिल ने अपना प्रेम और आशीर्वाद दिया।

यज्ञ सफल रहा और समाधि ने समाज को नई चेतना दी। लोग नारे लगा रहे थे। कपिल अद्वैत की जय, हिमालय की जय, धर्म की जय। कुछ लोग जो कपिल को ज्यादा नजदीक से जान गये थे उन्होंने पूरी बुलन्दी से आवाज लगाई बोलो ''पायलट बाबा की जय'', भीड़ ने भी एक साथ बोल कर जयकारा आकाश तक पहुंचा दिया। कपिल के बजाय वे पायलट बाबा की जय बोलना ज्यादा सहज समझ रहे थे। अपने लिए पायलट बाबा नाम सुनते ही कपिल को राजमाता विजयराजे सिंधिया की सूरत याद आ गई। एक बार रामगढ़ में कपिल को योगी भेष में देखकर वे अवाक् रह गई थीं, और बोलीं - अरे ये तो कुंवर कपिल हैं। ये पायलट बाबा बन गए। चलो उस राजघराने का सौभाग्य। पहली बार उन्होंने ही आश्चर्य और प्रेम से यह नाम दिया था। फिर कभी-कभार गंडा बाबा भी प्यार से पायलट बाबा ही बोलते थे। और अब बागेश्वर के लोगों ने तो इसी नाम को जैसे चुन लिया था। सभी की जुबान पर यही नाम चढ़ गया। पायलट बाबा........

कपिल लोगों को कहते सुनते ये पायलट बाबा हैं। इन्होंने मुनियों के सोये हुए इतिहास को जागृत कर दिया है। जो चर्चाएं केवल शास्त्रों में पढ़ी जाती थी कि भारत के योगी कैसे समाधिस्थ रहते हैं। और कई शरीर बनाकर भ्रमण कर लेते हैं उसे बाबा ने करके दिखाया है। इसी प्रकार के भिन्न-२ विचारों का आदान-प्रदान शुरू हो गया। नेता, मन्त्री,

अधिकारी और व्यापारियों के समूह आने लगे। पायलट बाबा ने अमीर-गरीब, हिन्दु-मुसलमान सबको एक ही समान समझ अपना आशीर्वाद दिया।

कुछ सैनिक और प्रशासनिक अधिकारियों और जिला मजिस्ट्रेट आदि ने अल्मोड़ा में भी कुछ आयोजन का प्रस्ताव रखा। बागेश्वर के परिणाम से सब प्रसन्न थे। सामाजिक लोग चाहते थे कि अल्मोड़ा का रूपान्तर भी किया जाए क्योंकि समाधि से युवावर्ग को सबसे ज्यादा प्रेरणा मिलती थी। एक संत रामलाल जी महाराज ने भी काफी जोर दिया। इस बीच कुछ लोगों ने श्रीलंका के एक बौद्ध भिक्षुक की चुनौती का भी जिक्र किया। लंका के भिक्षुक की चुनौती पायलट बाबा ने स्वीकार कर ली। उन्होंने ''धर्मयुग'' को लिखवाकर भेज दिया कि मैं अल्मोड़ा में जल समाधि ले रहा हूँ। अल्मोड़ा में चारों तरफ तहलका मच गया कि यहां पर पायलट बाबा जल-समाधि ले रहे हैं। धर्मयुग पत्रिका के लोग आ गये। इंग्लैंड और फ्रांस से डाक्टरों का दल आ गया। इटली के वैज्ञानिक आ गये। सभी आधुनिक लोग हिमालय के योगी को नौ दिन तक जल में समाधिस्थ देखने आये थे। इंजीनियरों के संरक्षण में सात फिट ऊंचा और तीन फिट चौड़े टैंक का निर्माण किया गया।

पायलट बाबा निश्चित समय पर हजारों व्यक्तियों, वैज्ञानिकों, डाक्टरों, इंजीनियरों और जिला अधिकारी के सामने पानी में प्रवेश कर गये। सात मिनट में पायलट बाबा ने अपने शरीर को शून्य और पत्थर की चट्टान की तरह स्थिर कर लिया और पद्मासन लगाकर पानी की तह में बैठ गये। टैंक में पानी लबालब भरा था। रामलाल महाराज को पायलट बाबा सभी आवश्यक निर्देश दे गये थे। नौ दिन बाद तय समय पर ढक्कन खोल दिया गया। पायलट बाबा अपने शरीर में चेतना पैदा कर पानी के ऊपर आ गए। नौ दिनों में डॉक्टरों और वैज्ञानिकों और चुनौती देने वालों का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था। और अब पायलट बाबा को नौ दिन बाद जल से सही सलामत निकलता देख उनका आश्चर्य विश्वास में बदल गया। योग का चमत्कार उनके सामने था। अब विश्वास करने के अलावा वे क्या कर सकते थे।

पायलट बाबा का पूरा शरीर सफेद हो गया था। लग रहा था कि चर्म पूरा गल चुका है और छूने से ही उतर जाएगा। पायलट बाबा ने आधा घंटे तक सबको प्रतीक्षा करने को बोला और स्वयं को सामान्य

करने लगे। इसके वाद शरीर में घी की मालिश की और बाहर आकर मंच पर बैठ गये। मंच पर बैठने के बाद पायलट बाबा ने इधर-उधर देखा। जिधर भी देखते उधर महात्मा ही महात्मा नजर आ रहे थे। अब वे सबको बता सकते थे कि धर्म में, योग में सबसे अधिक शक्ति है और हम उसी शक्ति के प्रेम के लिए महात्मा बने हैं। जो भी आ रहे थे उन सभी में पायलट बाबा को दिव्य आत्मा का प्रकाश नजर आ रहा था। दूर-दूर से आई जनता के वीच बैठे पायलट बाबा प्रकृति को, परमात्मा को, अपने गुरुओं को और हिमालय को अपना सहयोग देने के लिए अपने मन में धन्यवाद भेज रहे थे।

बागेश्वर और अल्मोड़ा में धर्म, ज्ञान, भक्ति की गंगा बहाकर अपना कर्तव्य पूर्ण हुआ। यहां पर ऐसा निश्चय कर अब चल दिए अपनी गुफा की तरफ पिण्डारी। इस बार हिमालय की बर्फ में समाधिस्थ होने के विचार से आए थे। अपने इस विचार को पायलट बाबा ने खातीवासियों के सामने रखा कि मैं पांच माह की हिम-समाधि लेना चाहता हूँ। बर्फ के नीचे अपने शरीर को दबाकर संकल्प देह धारण कर मैं अन्य लोकों का भ्रमण करना चाहता हूँ और देवी माँ की आज्ञानुसार में एक मंदिर का निर्माण करना चाहता हूँ। वहां सभी गांवों के सभापतियों और मुख्य नागरिकों को बुलाया गया। सभी ने एकमत होकर पायलट बाबा का साथ देने का निश्चय किया। लेकिन सभी ने प्रार्थना की कि हिम-समाधि को पांच महीने के बजाय एक महीना कर लें। गांव वालों ने बताया कि आपसे कुछ वर्ष पूर्व सर्वेश्वरानंद जी ने एक माह की समाधि ली थी। भूल से समाधिस्थल में नमक रह गया था, जिससे उनका एक पैर गल गया था। जो काफी मालिश के बाद ही ठीक हो पाया थ। लोगों के अनुरोध पर पायलट बाबा सहमत हो गए एक महीने की समाधि के लिए।

कुछ लोग चिंता करने लगे। इतने दिन बर्फ में रहना उन्हें असंभव नजर आ रहा था। पायलट बाबा तीन-तीन महीनों तक गुफाओं में समाधिस्थ रह चुके थे। लेकिन यह समाधि जनता द्वारा आयोजित थी इसलिए सब लोग चिंतित थे। कहीं कुछ हो गया तो उसका जवाबदेह कौन होगा? इसलिए पायलट बाबा ने सभी लोगों के सामने सभापति रतन सिंह को लिखकर दे दिया ''मैं शव-समाधि में अपनी इच्छा से प्रवेश कर रहा हूँ। अनन्त ब्रह्माण्ड के क्रियाकलापों के अवलोकन हेतु। विश्व का

कोई भी मानव, जीव-जंतु या देव इसके लिए जिम्मेदार नहीं है।'' शिव और शक्ति का सानिध्य लेकर, गुरु कृपा से भौतिकता से परे अर्थात स्थूल शरीर से निकलकर मैं सूक्ष्म शरीर का सहारा लेकर ब्रह्माण्डीय लोकों का दिव्यालोकन करूंगा। इस बीच इस इलाके में कोई जीव हत्या न करे और न इस वृताकार चिन्ह को ही तोड़ें, मैं २४ जुलाई १६७७ को समाधिस्थ होकर २५ अगस्त १६७७ गुरुवार को ३३ दिन में वापिस अपने शरीर में आ जाऊँगा।

सुबह होते ही सभी गुफा के आसपास इकट्ठे होने लगे। नन्दाकोट की तरफ से तीन बार शंखनाद से सारा पहाड़ गूंज उठा। यह देवी-देवताओं का शुभारंभ आशीर्वाद था। पायलट बाबा ने गुफा से बाहर आकर हिमालय को नमस्कार किया और जाकर समाधिस्थल का निरीक्षण करने लगे। चारों तरफ पत्थरों से एक गोल वृत बनवा दिया और पत्थर के उस वृत को अभिमंत्रित कर दिया। कोई भी शरीरधारी इस रेखा का उल्लंघन कर अंदर नहीं आ सकता था। समाधिस्थ होने की पूरी तैयारी करके पायलट बाबा लोगों के बीच आकर बैठ गये। जैसे-२ समाधि का समय करीब आता गया जय-जयकार से हिमालय गूंजने लगा। भीड़ काफी बढ़ती जा रही थी। इतने लोग पहले कभी पिण्डारी में नहीं आये थे।

निश्चित समय पर पायलट बाबा ने समाधि-स्थल में प्रवेश किया। दरवाजे पर बड़े-बड़े पत्थरों को रखकर उसके ऊपर लकड़ी के तख्तों को कीलों से ठोककर बंद कर दिया। और ऊपर से बर्फसे ढक दिया। संसारिक वृतियों से स्वयं को काटकर पायलट बाबा पद्मासन में बैठ गये और कुछ देर में भौतिक शरीर से अलग हो गए। अब वे सूक्ष्म शरीर से सबको देख रहे थे पर उन्हें कोई नहीं देख पा रहा था। अब पायलट बाबा अपने सूक्ष्म शरीर को लेकर चल दिए थे लोक-परलोक में व्याप्त सृष्टिकर्ता की अलौकिक क्रियाओं का दर्शन करने जिसमें पृथ्वी के मानवों को सब रहस्यों की सही-सही जानकारी प्राप्त हो सके। अब वे देख रहे थे, भिन्न-भिन्न तरह के जीवों को जो वायुमण्डल में तैर रहे थे। कोई किसी के कार्यों में विघ्न नहीं डाल रहा था। सामने से महात्माओं का एक समूह आ गया। सब बारी-बारी से मिले। तेईस महात्मा थे। मथुरादास जी, महावतार बाबा, अवतार बाबा, शान्ति माँ, जगंम महाराज, मोहनदास जी नारायण स्वामी, गण्डा बाबा आदि। मिलकर वे अपनी-२ दिशाओं में

चले गये। कुछ देर महावतार बाबा और अवतार बाबा रुके रहे। तभी सर्वेश्वरानद जी दो और महात्माओं के साथ आ गये। कुछ बातचीत कर सभी अपने-२ स्थानों को चल दिए। पायलट बाबा भी बहुत तीव्रता से आगे बढ़े। पृथ्वी के वायुमण्डल को कुछ ही क्षणों में पार कर गये। सबसे पहले देवलोक पहुंचे जिसे कोई स्वर्ग तो कोई जन्नत कहता है। वहां अनेक सुंदर स्थान थे, तालाब और मंदिर थे। अप्सराएं कन्याएं नृत्य कर रही थीं उनमें मीनाक्षी भी थी। सवसे वचते हुए पायलट बाबा आगे बढ़े।

सामने एक दिव्य पुरुष को खड़ा पाया। उनको इन्द्रदेव पहचान पायलट बावा ने स्वागत किया तो वे हंसने लगे। पायलट बाबा ने उनको बताया देवराज मैं कामना रहित समाधि में हूँ। केवल आपके और अन्य लोकवासियों के विषय में जानना चाहता हूँ। अंतरिक्ष का अध्ययन करना चाहता हूँ। मुझे स्वयं के लिए कुछ प्राप्ति की इच्छा नहीं है। मैं भौतिक जगत में मानव कल्याण के लिए आप लोगों का सहयोग चाहता हूँ। यह पता लगाना चाहता हूँ कि जो रीति-रिवाज भूमि पर प्रचलित हैं, जो वैदिक कथाएं कही जाती हैं वे सत्य हैं या कल्पनामात्र हैं। मैं देवी-देवताओं के कार्यों की गति को परखना चाहता हूँ। अंतरिक्ष में उनके ठहरने के स्थानों को जानना चाहता हूँ। यह सारा अनुभव प्राप्त कर भौतिक जगत के समक्ष रखना चाहता हूँ। यदि आपको इससे भय है कि आपके लोक में कोई विघ्न होगा तो आप बताएं। मैं पृथ्वी पर ही रहकर इस अवधि को पूरा कर लूंगा।

देवराज मुस्कुराते हुए बोले- "आपका स्वागत है"। अंतरिक्ष का हर दरवाजा आत्मलीन पुरुषों के लिए खुला है। सारा ब्रह्माण्ड ही उनका अपना घर है। वह जहां चाहे जा सकते हैं। मेरा हमेशा से यह कर्तव्य रहा है कि अंतरिक्ष के पथिकों की योग्यता की परख करूँ। एक तो क्या सैकड़ों मीनाक्षी, उर्वशी और मेनकाएं कामनारहित जीवों के रास्ते में बाधक नहीं बन सकती। मुझे जैसे हजारों इन्द्र भी ऋषि मुनियों को नहीं रोक सकते। आप भूतल के प्राणी हैं, मैं अंतरिक्ष का। आपसे भी नीचे जीवों का वास है और मुझसे भी ऊपर प्राणियों का बसेरा है। जिस प्रकार से मनुष्य आदि मानव से विकसित होकर सभ्य मानव बना है, गुफाओं जंगल झाड़ियों से निकल कर सभ्य वातावरण में रहने लगा है। उसी तरह हम लोगों ने भी मनुष्यों से देवत्व की श्रेणी प्राप्त कर ली है। हमसे

भी आगे शिवलोक, गोलोक और ब्रह्मलोक के प्राणी है जो देवत्व से विकसित होकर और आगे बढ़ गये हैं।

मनुष्य होकर भी आप हमारे लोकों में भ्रमण कर सकते हैं। उसी तरह मैं भी अन्य लोकों का भ्रमण कर सकता हूँ। जैसे पृथ्वी के आत्मदर्शी महापुरुषों की इच्छा ही जीवन है और इच्छा ही गति है। उसी तरह अंतरिक्ष में रहने वालों में कुछ मानवों की इच्छा ही गति है। हम सभी इस ब्रह्माण्ड के अंग हैं। ब्रह्माण्ड में सब कुछ है। ब्रह्माण्ड के विराट दर्शन के लिए आत्मा के अस्तित्व को जानना जरूरी है। सूक्ष्म में ही विराट निहित है और विराट में सूक्ष्म छिपा है। देवराज इन्द्र ने अपने विचारों को एक मानव की तरह व्यक्त किया तो पायलट बाबा सोचने लगे क्या अंतर है मानव और देव में। शरीर एक सा है। रहन-सहन भी लगभग समान है। ये भी आत्मा की खोज में है। हम भी आत्मा के अस्तित्व को खोज रहे हैं। हमारे कुछ पूर्वज ही आत्मबोध को प्राप्त कर अंतरिक्षनिवासी बन गये और हम उनकी संतान है।

देवराज इन्द्र से उनके विचारों को ले देवलोक का परिचय प्राप्त कर उनसे विदा ली और अंतरिक्ष में गमन करने लगे। अब उनकी इच्छा ही उनकी गति थी। शक्ति स्वरूपिणी मां जगदम्बा का स्मरण कर पायलट बाबा कितने ही लोकों का, ग्रहों का भ्रमण करके सिद्धलोक की तरफ मुड़ गये। वहां भगवान बुद्ध को गहन समाधि में लीन शून्यता में शून्य की तलाश करते हुए देखा। पीला प्रकाश उनके मस्तक से निकलकर चारों ओर फैल रहा था। वहां ईसा-मसीह को देखा। वे दूर खड़े नजर आये। उनका दुबला-पतला शरीर आगे की ओर झुका हुआ था। श्वेत प्रकाश पुंज उनसे निकलकर फैल रहा था। उनके कुछ अनुयायी भी उनकी बगल में बैठे थे। सिद्धयोगी बाबा गोरखनाथ जी तेजी से भूतल की ओर जाने के लिए तत्पर थे।

तभी पायलट बाबा उनके सामने जाकर खड़े हो गए। वे देखकर बहुत प्रसन्न हुए। शक्ति की छाया पायलट बाबा के संग देखकर नाच उठे। बाबा गोरखनाथ बोले- देख यहां न कोई हिंदू है, न मुसलमान न, ईसाई है, न सिक्ख। यहां सब आत्मदर्शी आत्मतत्व को प्राप्त निरंजन है। यहां तुम्हें सब मिल जायेंगे- बुद्ध, महावीर, ईसा मसीह, मुहम्मद पीर फकीर साधु पादरी आदि। यहां आत्मदर्शियों का निवास है। ये देवत्व से

भी आगे है। ये अलखनिरंजन स्वामी है। राम भी इनके पास है कृष्ण भी। इन्हें ये अपना प्यार वांटते हैं। ये अद्वैत हैं इनकी इच्छा ही गति है। ये कभी-कभी प्राणियों के कल्याण के लिए देवलोक और भूलोक पर भ्रमण करने जाते हैं। पराशर, वशिष्ठ, गौतम, अत्रि अहिल्या, अनुसूया, रामदास, चैतन्य महाप्रभु, कबीर, सूरदास तुलसीदास तुम्हें यहां सब मिल जाएंगे। ये सब यही से अपनी विचार तरंगों से विश्व पर प्रभाव डालते हैं। ये कहीं भी जा सकते हैं, पुनः जन्म ले सकते हैं। यह इनकी इच्छा पर आधारित है। भिन्न-२ प्रकार के संत महात्माओं और दिव्य महापुरुषों का परिचय देकर बाबा गोरखनाथ जी पृथ्वी लोक की ओर चल दिए।

पायलट बाबा भी आगे वढ़ गये। सभी दिशाओं में प्रायः सभी ग्रह नक्षत्रों पर जीव दिखाई दे रहे थे। कोई न कोई प्राणी वहां निवास कर ही रहा था। जैसे ही थोडा आगे बढ़े सामने मां आ गई। वही जगदम्बा जिसने काली चौर, नल-दमयंती ताल और पिण्डारी में हर पग पर पायलट बाबा को आगे बढ़ते रहने का प्रोत्साहन दिया थीं। चेहरा वही था बस फर्क इतना था कि भुजाएं अब आठ थी। अष्टभुजी मां को देखकर कपिल पुलकित हो गये। तभी एक तरफ गणेश जी नजर आ गये जो थोड़ी दूर मस्त खड़े थे। अब पायलट बाबा समझ गये कि वे शिवलोक में प्रवेश कर गए हैं। मां के कहने पर ऊपर देखा। एक स्वर्ण रंग का बहुत बड़ा दंड घूम रहा था। जिससे सैकड़ों सूर्यो का प्रकाश फैल रहा था। वह दण्ड अपनी धुरी पर तेजी से चक्कर लगा रहा था। एक सीमा पर आकर पायलट बाबा रूक गए वहां से सृष्टि का हर कोना और हर दिशा नजर आ रही थी। अब जहां खड़े थे, वहां एक दण्ड, मीनार की तरह खड़ा था, वह सफेदी में हल्का नीला रंग लिए था। उस दण्ड पर तीन बड़े-बड़े ग्रहों का चिन्ह था। उसमें से प्रकाश निकल रहा था। प्रकाश की तरफ सब कुछ दिखाई दे रहा था लेकिन अंधकार की ओर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था बस तरह-तरह के प्राणियों की आह पुकार और रूदन सुनाई दे रहा था। लग रहा था किसी जीव से हिसाब किताब लिया जा रहा हो। ये अंधकार की दिशा यमलोक की थी। शिवलोक के कोने से यमलोक की आवाजें सुनाई दे रहीं थी।

पायलट बाबा प्रकाश की ओर चल दिये। शिवलोक में अच्छा प्रकाश था। कुछ दूर चलने के बाद भगवती के अनेक रूपों का दर्शन हो

गया। तरह-तरह के परिधानों में लिपटी अनुपम सौंदर्य से युक्त स्त्रियों का समूह दिखाई पड़ा। उनके बीच में अठारह भुजाओं से युक्त जननी मां को देखा। आभूषण से मां का सारा शरीर ढका हुआ था। एक ज्योति उनके शरीर से निकल कर फैल रही थी। विशाल सफेद पक्षियों का एक झुंड घूम रहा था। उनकी चोंचे बड़ी-वड़ी और आकार घोड़े के बराबर था। पायलट बाबा खड़े-खड़े मां को देख रहे थे। अन्य सब देवियां इधर से उधर आ-जा रही थी। मां ने इशारे से एक ओर जाने को कहा। पायलट बाबा उधर ही चल दिए। अव हिमालय के जैसी ही पर्वत-मालाएं नजर आने लगीं। नदियां, झरने, गुफा सब दिखाई दे रहे थे। शिवत्व में लीन असंख्य महात्मा नजर आ रहे थे। कुछ अपनी-अपनी दिनचर्या में लगे थे। वे सभी भव्य, दिव्य और महान थे। पायलट वावा ने अन्तर्मुखी इन महात्माओं को भाव और श्रद्धा से नमन किया और पर्वत के दूसरी तरफ चले गये।

उधर भूतों का डेरा और पिशाचों की नगरी थी। बटुक भैरव भी ध्यान लगाए बैठे थे। इनमें और मनुष्यों में कोई खास फर्क नहीं था। वे जटा-जूट धारी थे। इनके सिर कुछ वड़े-वड़े थे। कुछ के माथे पर सींग थे। कुछ के दांत बड़े-बड़े थे। और वहुत सी आत्माएं थीं जो मरने के बाद भटकती रहती हैं। यहां बात करने वाला कोई नहीं था लेकिन हालत बता रहा था कि यह पिशाच लोक है। चारों ओर कहीं कीचड़ ही कीचड़ था तो कहीं बालू का पठार। वहां जोर-जोर से हवा चल रही थी। कोई भैंसे का रूप बनाकर घूम रहा था तो कोई सांड का। आग के गोले उड़ रहे थे। विस्फोटक आवाजें आ रही थी। अनेक प्रकार के भयंकर जानवर इधर-उधर भाग रहे थे। रेतीले टीलों के अलावा यहां पानी कहीं नजर नहीं आ रहा था। यहां का क्षेत्र बहुत बड़ा था लेकिन हरियाली कहीं नजर नहीं आ रही थी। वहां से हटकर आगे बढ़े तो सामने सागर की तरह विशाल जल भंडार था।

चारों ओर जल ही जल दिखाई पड़ रहा था। उस जल के अंदर पेड़-पौधों से संचित बगीचा नजर आ रहा था। लताओं का सुंदर विस्तार था। तरह-तरह- के जानवर जल में तैर रहे थे। मछलियां थी, घोड़े थे, गायें थी। सर्पों और नागों का तो मेला ही लगा था। पेड़ों पर फल लगे थे। मत्स्य पुरुष और मत्स्य स्त्रियां विहार कर रही थीं। जिनका शरीर तो

मानवों जैसा था और सिर मछली का। पानी के अंदर ही पेड़ों के मध्य इन्होंने अपना घर वना लिया था। ये अपने बच्चों से बड़ा स्नेह कर रहे थे। पायलट बावा ने इस स्थान को पाताल लोक के रूप में जाना। नागों का चारों तरफ बसेरा था। उनमें से बहुतों का शरीर सर्प जैसा था और सिर स्त्री-पुरूष जैसा था। मत्स्य स्त्री-पुरूषों और मत्स्य सर्पो का समुदाय विकसित था। उनमें सभ्यता, संस्कृति, प्यार दिख रहा था। इनमें से किसी के मरने पर मातम और जन्म लेने पर खुशी के दृश्य दिख रहे थे। वे परिवारों के रूप में रह रहे थे और भोजन को बांट कर खा रहे थे। अब पायलट बाबा की नजर स्वर्ण जैसी चमकती पत्थर की चट्टान पर जा पड़ी।

वह पत्थर की शिला नहीं बल्कि सोने की तरह चमकती एक पगडंडी थी। पायलट वावा उस पगडंडी पर आगे बढ़ते गये। अथाह जल के थल में यह स्थान अनुपम था। पीतवर्ण का प्रकाश चारों तरफ फैला हुआ था। सृष्टि की यह सौन्दर्यस्थली अपने आप में रमणीय थी। यहां के पुरूष और नारियों में संस्कृति और सभ्यता झलक रही थी। आत्मीय विकास में वे बहुत ऊपर नजर आ रहे थे। उनके लिए जल स्थिर हो गया था और पत्थरों से रोशनी पैदा हो रही थी। एक देव कन्या स्वर्ण कमल पर बैठी थी और स्वर्ण कमल की हर कली पर दीपक जला रही थी। यहां सभी कुछ शांत और स्थिर था। अब पायलट बाबा विष्णुलोक में थे। अब रूक कर देखने लगे। एक चक्र बड़ी तेजी से चक्कर काट रहा था। पानी के धरातल पर बहुत बड़ा शिवलिंग बना हुआ था। उसके आस-पास कमल के पुष्प रखे हुए थे। प्रकाश की तरंगें वायुमंडल में फैल रही थी।

तभी उन प्रकाश तरंगों के मध्य एक युवा दिव्य पुरूष प्रकट हुआ। उसकी चार भुजाएं थी। उसके मस्तक से तीव्र प्रकाश निकल रहा था। वह सागर की तरह शांत और सैकड़ों सूर्यो के समान प्रकाशमय, जल की तरह शीतल और अग्नि की तरह तेजोमय था। वह सफेद कमल-पुष्पों को उठा-उठाकर शिवलिंग पर चढ़ाये जा रहा था। अब पायलट बाबा विष्णु को शिव की अर्चना करते देख रहे थे। प्रकृति और पुरूष के प्रतीक और पुजारी शंख, चक्र, गदा और पदमधारी, सृष्टि के अद्वितीय पुत्र, विकास के प्रथम पुरूष महाप्रभु विष्णु भगवान शिव को अपना प्रेम समर्पित कर रहे थे। सामने उद्यान था। उद्यान में अनेक प्रकार के पक्षियों के मधुर कलरव

गूंज रहा था। वृक्षों से लताओं के साथ-साथ चन्द्र वर्ण का एक अर्धचन्द्राकार झूला लटक रहा था। श्वेत आभूषणों से ढकी युवती झूले पर बैठी थी। वह सागर की बेटी, ऐश्वर्य की दात्री, महालक्ष्मी विष्णु की अर्धांगिनी थी। गरूड़ पक्षी कभी-कभी झूले को झुला देता था। ब्रह्माण्ड के सारे प्रपंचों को अपने में समेट कर वह झूले पर बैठी थी। वह माया का स्वरूप और ऐश्वर्य का प्रतीक थी। पायलट बाबा धरती के मानवों की इनसे तुलना कर सोचने लगे क्या -क्या अंतर है हममें और इनमें। अंतर दिख रहा था। ये विकास की हर सीमा पार कर चुके हैं। सब कुछ समेट कर अपने आप में जी रहे हैं। और धरती का मानव अपने से हटकर दूसरे के सहारे जी रहा है। ये हमें अपने रास्ते पर ले जाना चाहते हैं। लेकिन हम उन्हें केवल कल्पना या कथा के पात्र समझ कर झुठला रहे हैं। ये सब प्राणियों के कल्याण के लिए जी रहे हैं। हम सिर्फ अपने कल्याण के लिए। ये सृष्टि की रक्षा के लिए अर्चना और उपासना करते हैं, हम अपने निहित स्वार्थों के लिए। हम जन्म-मरण की जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। वे पहले ही परातत्वों में स्थित है। विष्णु और लक्ष्मी की विशाल जल नगरी से निकल कर पायलट बाबा सागर की उन्मुक्त लहरों को देख रहे थे। यह जल का सागर अनन्त था, शून्य था, सूक्ष्म था और विराट था। लहरें उठ-उठ कर किनारे छू रही थी। यह भी अंतरिक्ष का ही एक अंग था।

अब पायलट बाबा ने आगे जाने का विचार किया। आगे समुन्द्र का पानी भूतल के ज्वार-भाटे के समय ऊपर उठने लगा। फिर वह शांत हो गया। समुन्द्र का पानी वहां से बहुत दूर हट गया। एक पर्वत शिखर सामने खड़ा था। उस पर एक महात्मा बैठा था। स्थूल शरीर बड़ा शरीर, लम्बी-लम्बी दाढ़ी जटायें जो पूर्ण रुप से सफेद हो चुकी थी। वह पायलट बाबा को देखते ही अपना शरीर हिलाने लगा। सारी पर्वत मालाएं कांप उठी। महात्मा के पीछे लेटा हुआ एक भयंकर जानवर उठ बैठा और फिर खड़ा हो गया। पर्वत की तरह वह भी विशाल था। वह घोर चीत्कार करने लगा। उसके मुंह से ज्वालामुखी जैसा अग्नि समूह फूट पड़ा और वह लकीर बन कर फैलने लगा। सभी कुछ अग्नि में तपने लगा, पर पायलट बाबा शांत खड़े रहे। तब वह महात्मा बोला-इससे आगे तुम नहीं जा सकते। तुम धरती के मानव हो, अंतरिक्ष के यात्री हो। तुम पर भगवती की अपार कृपा है। तुम स्वयं में प्रकाशित, आत्म प्रकाशवान हो गए हो।

पर तुम्हें आदर्श, प्रेम, ममता, परमार्थ की अनुभूति है।

यह शाश्वत लोक है, सारस्वत प्रदेश। यह देवत्व से भी ऊंची उठी साध्वी नारियों का लोक है, जहां न ममता है न स्नेह। यहां आदर्श प्रेम का भी कोई अस्तित्व नहीं है। न ईश्वर के प्रति और न सृष्टि के प्रति। मैं सदियों से यहां बैठा हूं। न यहां ब्रह्मा आ सकते हैं, न विष्णु न मसीह और न पैगम्बर। बुद्ध और महावीर आकर लौट गए। पराशर, गौतम, अग्नि, व्यास, सभी वहां जाकर प्रेम और परमार्थ में उलझ गए। मनु आया था, वह भी खो गया। मार्कण्डेय और शुकदेव ने विजय पाई। मैं तब से देख रहा हूं। पायलट बाबा ने पीछे मुड़कर देखा तो भूलोक नजर आ रहा था। अपनी दृष्टि से पृथ्वी को परिक्रमा कर पायलट बाबा देखने लगे। आकाश दिखाई पड़ रहा था। तारे झिलमिला रहे थे। पृथ्वी का कुछ भाग चांदनी से नहा रहा था। तो कुछ सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित था। कहीं धूप ही धूप थी तो कहीं अंधेरा ही अंधेरा। सदियों से बैठा महात्मा पायलट बाबा को देख रहा था। और वह उनके पीछे का पशु अग्नि बरसाने में व्यस्त था।

सामने शाश्वत लोक था और पीछे आकाश। अब पृथ्वी के करीब थे। पायलट बाबा ने अपनी शारीरिक सूक्ष्म तरंगों को छोड़ा और अपने कारण शरीर का निर्माण कर उस अग्नि शिखा को पार कर लिया। सदियों से बैठा महात्मा उन्हें रोक न सका। आगे गुफाओं में श्वेत वस्त्रों से लिपटी, श्वेत पुष्पों से सज्जित नारियां दिखाई दी। वे सब मौन थी, शांत थी। कुछ नारियां श्वेत पुष्प लताओं का पकड़े ऐसे खड़ी थी जैसे किसी की प्रतीक्षा कर रही हों। पायलट बाबा ने अपनी विचार तरंगों को संग्रहीत कर अपने लिए एक भौतिक शरीर का निर्माण किया और टहलने लगे। सम्पूर्ण नगरी को परिक्रमा कर ली। किसी से कोई बात न की। जब लौटने लगे तो सभी नारियां इकट्ठी हो गई और वे पायलट बाबा से कहने लगी-'हमें शाश्वत प्रेम चाहिए, नारी का प्यार नहीं। तुम पुरूष हो, हम नारी शरीरधारी है। तुम मौत के पथ के राही हो, हम शाश्वत हैं। हम सदियों से प्रतीक्षा कर रही हैं कि कब धरातल के मनुष्य अंतरिक्ष के मनुष्यों पर विजय प्राप्त कर, सारस्वत प्रदेश की नारियों के सम्पर्क में आकर शाश्वत प्रेम को जन्म देंगे। परंतु आज तक जो भी आया वह सशरीर नहीं आया। मनु आया, पराशर आये पर वे टूट गये। अब तुम

आये हो। तुमने शरीर का निर्माण यहां किया है, जो शाश्वत नहीं हैं। तुम्हारा शरीर तो हिमालय की कन्दरा में पड़ा है। तुम भी जाओ धरती के पुरूष। हम मनु की संतानों की प्रतीक्षा करेगी। उसकी जो सारस्वत प्रदेश की सरस्वतियों को शाश्वत प्रेम देगा। अब अंतरिक्ष से विदा लेकर पृथ्वी पर आ गये। आकर अपने शरीर को देखा, जो बर्फ की परतों में दबा था। अद्वैत शक्तियां शरीर की रक्षा कर रही थी। चांदनी में पर्वत चांदी की तरह चमक रहे थे। अपने शरीर कर निरीक्षण कर पायलट बाबा सरयू तट पर बागेश्वर आ गये और भौतिक शरीर का निर्माण कर, महन्त श्रीकृष्ण चन्द्र गीरि जी के पास आ गये। उन्होंने पहले तो आश्चर्य किया फिर हंसते हुए स्वागत किया। काफी देर तक दोनों बात करते रहे। सुबह हो गयी तो लोग नदी स्नान को आने लगे। जो भी आता वह पायलट बाबा को वहां बैठा देखकर आश्चर्य करता और फिर नमस्कार कर बैठ जाता। सभी को पता था कि पायलट बाबा पिण्डारी में समाधिस्थ है। और अभी तेईस दिन ही समाधि में बीते हैं। रह-रह कर उनके मन में शंका उठ रही थी कि कहीं पायलट बाबा समाधि से निकलकर भाग तो नहीं आये हैं। संसारी मनुष्यों का दिमाग ऐसी हो सोच उत्पन्न करता रहता है। कुछ लोग छूकर देख रहे थे। कुछ प्रेम भाव में रो रहे थे। भीड़ ज्यादा हो गई और बढ़ती ही जा रही थी। कोई पांव पकड़ कर छोड़ ही नहीं रहा था। महन्त जी सबको हटाना चाहते थे। स्थिति देख पायलट बाबा ने खुद को बैठे-बैठे ही विलीन कर दिया और सूक्ष्म शरीर में आकर सबको देखने लगे। सब अवाक् थे। महन्त जी हंस रहे थे।

अब मथुरादास बाबा के पास उनकी गुफा में जा पहुंचे। शाम तक उनके साथ बैठे रहे। मथुरादास बाबा विश्व के मानव की परिस्थितियों पर गहरी चिंता व्यक्त कर रहे थे। उनकी बातें ग्रहण कर, वहां से चल दिए। कैलाश भ्रमण करते हुए खपतड़ बाबा के पास नेपाल आ गये। खपतड़ बाबा झील के किनारे बैठे थे। उनसे दर्शन-मुलाकात कर ध्यान आया गुरूदेव हरिबाबा का। सूक्ष्म शरीर सब कार्य जल्दी-जल्दी कर अपनी गति दिखा रहा था। वहां से अपने गुरू के पास चल दिये। वहां पर पायलट बाबा को सब कुछ कृष्णमय नजर आ रहा था। जिधर को मुड़ते कृष्ण ही कृष्ण नजर आते थे। पेड़ों के पत्ते-पत्ते पर, पत्थर की हर चट्टान पर, नदी की हर तरंग में कृष्ण ही कृष्ण दिखाई पड़ रहे थे। हरि बाबा पर

नजर पड़ी वे समाधिस्थ बैठे थे। उनके अंग-अंग में कृष्ण दिखाई दे रहे थे। कहीं कृष्ण गायों के पीछे दौड़ रहे थे, तो कहीं वंशी वादन करते हुए नृत्य कर रहे थे, तो कहीं कृष्ण उपदेश दे रहे थे। सभी परिचित श्रेष्ठ व्यक्ति और मुनियों को कृष्णमय देख रहे थे, तभी हंसते हुए महावतार बाबा का प्रवेश हुआ। उनके पीछे अवतार बाबा थे और हरि बाबा भी समाधि से उठ खड़े हुए। कृष्ण की सम्पूर्ण स्थितियां वैसी ही दिखाई दे रही थी। सारा वातावरण वंशी की ध्वनि से गूंज रहा था। भगवान कृष्ण के प्रति अपनी आस्था को स्थापित कर पायलट बाबा ने महावतार बाबा की तरफ देखा। महावतार बाबा स्थिति को समझाते हुए बोले-''ब्रह्माण्ड में घटी हुई या घटने वाली हर घटना कहीं न कहीं जाकर कृष्ण से जुड़ जाती है। कृष्ण एक महान योगेश्वर योगी थे और हैं। हम सब कृष्ण के द्वारा प्रतिष्ठित किसी एक अंग को ही लेकर चल रहे हैं। परन्तु कृष्ण तो पूर्ण योगी थे, सभी कलाओं से युक्त थे। उन्होंने योग की प्रतिष्ठा करने के लिए ही मानव शरीर धारण किया था।।

महावतार बाबा भगवान श्री कृष्ण का परिचय देते हुए बोले-व्यास ने जो कुछ भी रचना की है, उसे तुम योग के पहलू से देखो तो तुम्हे कृष्ण के स्वरूप का ज्ञान हो जायेगा। तुम अतीत की गाथाओं को गहरे चिंतन का विषय नहीं मानते हो। लेकिन अब तुम सुनो- कृष्ण ने योग की सभी स्थितियों को पार कर लिया था। जो देवताओं से भी न हो सका। कृष्ण को यदि तुम योग से बाहर निकाल दोगे तो योग का मूल ही नष्ट हो जायेगा। कृष्ण कल्पना नहीं सच्चाई है। कृष्ण का दूसरा रूप हम सब जीवधारी है। अतएव हम सब कृष्णमय है। कृष्ण तो सर्वरूप है। रूप में आकर्षण है। आकर्षण होने से ही रूप के प्रति खिंचाव है और वही आकर्षण रास्ता बन जाता है। कृष्ण हमारे लिए पथ है और हम उस पथ पर चलकर यहां तक पहुंचे हैं। तुम शिवत्व को श्रेय दे रहे हो। पर शिव और कृष्ण में अंतर क्या है ? दोनों अद्वैत एक है। एक शांतिमय और एक लीलामय। यदि लीला ही नहीं तो शांति का अस्तित्व कहाँ। ये एक दूसरे के पूरक है। जाओ हमारी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं। पृथ्वी पर रहने वाले अपने वशंजों को योग का ऐसा साधन देने का प्रयास करो जो प्रशस्त हो और शीघ्रता से उपलब्ध हो सके।

महावतार बाबा से भगवान श्रीकृष्ण का लीलामय परिचय पाकर

और उनका आशीर्वाद लेकर पायलट बाबा चल दिए अपनी ब्रह्माण्ड अवलोकन यात्रा के अगले पड़ावों की तरफ। नारायणी नदी से चलकर कुछ क्षणों में गण्डक नदी के किनारे पंहुच गये। और भौतिक शरीर का निर्माण करके नदी का पुल पार करने लगे। सूर्या ने दूर से ही देखा और दौड कर पास आ गई। वह बहुत खुश होकर शिकायती लहजें में बोली—जब से आप समाधिस्थ हुए हो, तब से मैं प्रतीक्षा कर रही हूं। आप जगह-जगह अनेक लोकों में गये। इंधर आने का रूख ही नहीं किया। पायलट बाबा सोच रहे थे कि यह सब कुछ जानती है और मैं इसकी तरफ ध्यान ही नहीं दे रहा। पायलट बाबा ने उसे अपने साथ भ्रमण की स्वीकृति दे दी तो वह गुफा में जाकर समाधिस्थ हो गई और सूक्ष्म शरीर से बाहर आ गई पायलट बाबा भी सूक्ष्म में आ गए। अब दोनों चल दिए गंधर्व लोक के प्राणियों का जीवन देखने के लिए। कैलाश पर्वत से पहले अपि पर्वत की तलहटी में एक तालाब के किनारे बहुत सी गंधर्व कन्याएं व पुरुष विहार कर रहे थे। इनके हाव-भाव और भंगिमायें निर्लज्जता प्रकट कर रही थी। थोड़ी दूरी पर उनका बड़ा ही सुंदर, कटोरीनुमा यान खड़ा था। पायलट बाबा ने उसमें घुमकर उसका अध्ययन किया तो गंध र्वों में भगदड़ मच गयी और वे अपने-अपने यान लेकर हिमालय से तेजी से उड़कर निकलने लगे। पायलट बाबा और सूर्या भी सूक्ष्म शरीर से यान में ही थे।

वे सब गंधर्व बहुत विरोध दिखा रहे थे, लेकिन सूक्ष्म शरीर में होने के कारण कुछ बिगाड़ नहीं पा रहे थे। अनेक ग्रहों और लोकों को पार करता हुआ वह यान गंधर्वलोक पहुंच गया। वहां दोनों ने पूरे लोक में भ्रमण किया और वापिस कैलाश मानसरोवर आ गए। अब कैलाश पर्वत की गुफाओं में तपस्या कर रहे महात्माओं के दर्शन के लिए उधर बढ़ गये। पायलट बाबा को देखते ही कुछ महात्मा अपनी गुफाओं से बाहर आ गये और अंतरिक्ष यात्रा की प्रशंसा और जानकारी के सदुपयोग की सलाह दी। पायलट बाबा ने भी समाधि के बाद पिण्डारी यज्ञ आने का निमंत्रण दिया जिसे सबने स्वीकार कर लिया। अब पायलट बाबा और सूर्या आगे चल दिए। दोनों हाथी पर्वत के सुंदर वन से गुजर रहे थे तो हनुमान जी ने रोक लिया। वे टहल रहे थे। उन्होंने पायलट बाबा को कुछ सूक्ष्म विधाओं की जानकारी दी और आशीर्वाद देते हुए बोले एक महात्मा

तुम्हारा शरीर बदलना चाहता है। उसका अपना शरीर खराब हो चुका है। अब तो कुछ ही दिन रह गए है, तुम पिण्डारी पहुंच कर अपने शरीर की रक्षा करो। मैं भी तुम्हारे साथ हूं। अब तीनों पिण्डारी समाधि स्थल पर आ गये। निखिलानंद अपने शरीर से निकलने का प्रयास कर रहा था। तीनों को वहां देखकर वह अपनी जटाओं को नोचने लगा। तब हनुमान जी ने उसे सांत्वना दी और कहा—"तुम किसी ऐसे सांसारिक पुरुष के युवा शरीर को धारण क्यों नही कर लेते जो सहसा मर जाते हैं। इस शरीर को तुम उधर ही फेंक देना। आज जो तुम करने जा रहे थे, वह ठीक नहीं है। एक तो तुम उस शरीर को लेकर वहां से निकल नहीं सकते थे। दूसरे तुम्हारे द्वारा उस रेखा को पार करना असंभव है। तभी महावतार बाबा और सर्वेश्वरानंद जी भी आ गये। निखिलानंद बहुत शर्मिंदा थे। पिण्डारी से वापिस होने लगे। महावतार बाबा ने अंतरिक्ष यात्रा का प्रस्ताव रखा। अब पांचों एक साथ ही अंतरिक्ष की ओर चल दिए। पायलट बाबा, सूर्या, हनुमान जी, महावतार बाबा और सर्वेश्वरानंद जी पांचों अपनी गति से चले जा रहे थे। तभी सामने एक देव-विमान आ गया। ये दिशा परिवर्तन कर आगे बढ़ना चाहते थे। तभी भगवती यान में खड़ी हो गयी। गौरी, शिव की शिवा।

मां ने पांचों को अंदर विमान में बुला लिया और भौतिक शरीर के निर्माण की इजाजत भी दे दी। पांचों ने भौतिक शरीर का निर्माण कर लिया। यान सफेद रंग की धातु का बना था और कई खंडों में विभक्त था। वह इच्छा मात्र से चालित था। कुछ ही क्षण यान एक ग्रह में प्रवेश कर गया। मां ने बताया कि आज देवताओं और आत्माज्ञानियों के लिए हमने पूजा का आयोजन किया है। आप लोग भी इस यज्ञ में भाग ले सके इसलिए मैं स्वयं लेने गई थी। पायलट बाबा उस लोक के वासियों से मिलने लगे और घूमते-घूमते काफी दूर निकल गये। उनके पूजा-पाठ यज्ञ आदि के तरीके देखे बहुत कुछ जाना। मां ने आर्शीवाद दिया और प्रसाद भी। पायलट बाबा को मां ने एक मूंगे की माला दी। सूर्या को भी मां ने आशीर्वाद दिया और एक श्वेत धातु का वस्त्र दिया और बोली हिमालय को ही अपना जीवन साथी बना लो। सदैव हिमालय में विचरण करो। हिमालय योग का केन्द्र है। वह आपको हमेशा मार्ग दिखाता रहेगा। पायलट बाबा की तरफ देखकर मां बोली-आप लोग शिवत्व की खोज में

लगे हो। समाधिस्थ शिव आप को मिल जायेंगे। हनुमान जी को मां ने अपने लोक में यह कहकर रोक लिया ये युगों से पृथ्वी पर भ्रमण कर रहे हैं। कुछ दिन यहां भी रहो। मां का यान सबको अंतरिक्ष से हिमालय में ऊँटाघूरे तक छोड़ गया। वहां से कैलाश थोड़ी दूर था। सब कैलाश की ओर चल दिए।

महात्माओं का एक समूह स्तुति करता हुआ जा रहा था। अन्य लोकों के स्त्री और पुरुष भी थे। वाद्य ध्वनि गूंजने लगी। सब धीरे-धीरे एक गुफा में प्रवेश कर गये। गुफा में प्रकाश की लहरें फैल रही थी और चारों तरफ बर्फ ही बर्फ थी। जहां पायलट बाबा खड़े थे उसी स्थान के बगल में एक हिमसरोवर था। उस पर एक त्रिशूल गड़ा था। त्रिशूल से स्वर्णिम रंग की किरणें प्रस्फुटित हो रही थी। जिनका प्रकाश ब्रह्माण्ड को अलौकिक ज्योति प्रदान कर रहा था। उस ज्येतिपुंज त्रिशूल के बगल में एक दिव्य पुरुष तल्लीन बैठा था। उसकी जटाएं बिखरी पड़ी थी। शरीर पर कोई वस्त्र नहीं था। शरीर के अंग-अंग से प्रकाश फूट रहा था। हड्डियां नजर आ रही थी। उनके मुख का प्रकाश चारों तरफ फैला हुआ था। ललाट अग्नि की तरह जल रहा था। उन तपोनिष्ठ को किसी प्रकार की चिंता न थी वह अपनी समाधि में लीन ब्रह्माण्ड को चेतना दे रहे थे ये अविनाशी, कल्याणकारी शिव थे। जो शिवलोक को छोड़कर धरती के मानवों के कल्याण के लिए हिमालय में ही अपनी तपोस्थली बनाए हुए थे। कोई स्तुति करने लगा तो कोई नृत्य करने लगा। पायलट बाबा सोच रहे थे जो अपने आप में पूर्ण हैं, वे शिव भी इतना कठोर तप कर रहे हैं। वे खड़े-खड़े शिव-विभोर हो रहे थे, तभी एक प्रकाश पुंज भगवान शिव से निकलकर पायलट बाबा में समा गया। वे प्रकाश से नहा गये। महावतार बाबा, मथुरादास बाबा, संर्वेश्वरानंद जी तथा अन्य लोको के वासी पायलट बाबा से लिपट गये। सबने मिलकर पायलट बाबा से ऐसा संकल्प कराया कि आपको शिवत्व को एक नया मार्ग देना है। अब आप संसार में भगवान शिव के प्रतिनिधि हैं। पायलट बाबा ने कहा—''अच्छा'' जैसा समय कराएगा वैसा कर देंगे।

पायलट बाबा वहां से लौटना नहीं चाहते थे। वे अपने जीवन का लक्ष्य भगवान शिव तक पहुंच कर पूरा समझ रहे थे, लेकिन महापुरुषों ने संकल्प कराकर संसार में वापस लौटने की राह पकड़ा दी थी। कैलाश

की गुफा से निकालकर पायलट बाबा, महावतार बाबा, सर्वेश्वरानंद जी, मथुरादास बाबा और सूर्या पुनः सूक्ष्म शरीर को धारण कर चल दिए मंगल लोक, देवलोक होते हुए सिद्ध लोक की तरफ। इन्द्र और देवताओं में क्षणिक भेट हुई। देवताओं के पास कुछ देर ठहरकर मंगल लोक चले गये। मंगल के प्राणियों के साथ कुछ देर भ्रमण कर सिद्धलोक आ गये। वह बुद्ध, ईसा मसीह, पैगम्बर साहब, महावीर जी आदि सिद्ध महात्माओं के साथ काफी देर तक रहे। तभी एक ओर से एक दिव्य महापुरुष का आगमन हुआ। सभी खड़े हो गये। सभी ने बारी-बारी अभिवादन किया। उन्होंने पायलट बाबा को अपनी भुजाओं में उठा लिया। वहां भीड़ जमा हो गई। सिद्धलोक के अनेक महापुरुष इकट्ठे हो गये। वे सिद पुरुष कुछ कहना चाहते थे, परंतु उन्होंने कुछ कहा नहीं और मुस्कुराने लगे। सभी के होंठों पर मुस्कुराहट छा गई। तभी महावतार बाबा ने–''गुरुवर! क्या बात है? प्रकृति के विद्रोह का विकल्प इसके पास है। जगत और जीवन के संबंधों में पड़ी दरार को जोड़ने की क्षमता इसमें है। योग को यह एक नया मोड़ दे सकता है। यही तो आप कहना चाहते थे गुरुवर।

हां तुम सब ने यही किया है। मुस्कुराते हुए वे दिव्य महापुरुष बोले–जब तुम धरातल के मनुष्यों के बीच थे। तुम साधना करते रहे और आत्म ज्ञान को पाकर बंधन मुक्त हो गये। अब मैं तुम लोगों से कहता हूं कि आप फ्रांसिस, फादर कामले, ईसा मसीह, बुद्ध, महावीर, मुहम्मद विश्व के सभी मतों को प्रतिनिधित्व कर चुके हो। आप लोग अपना-अपना प्रतिनिधि भेजकर धरती को कल्याणकारी रूप दीजिए। मनुष्य को मानवता का संदेश दीजिए। इसकी विचार तरंगें देवताओं को भी विश्राम दे सकती हैं। यह संकल्प शक्ति द्वारा जल की बहती धारा को ठहरा सकता है। बशर्ते कि यह प्रयोग करने पर उतारू हो जाये। आप लोग भी इसका सहयोग करिए तभी यह भी कुछ कर पायेगा।

आप लोगों द्वारा दी गई सभ्यता और संस्कृति धरती पर मानव का जीवन बन गई। वे बेड़ियां ही उनके जीवन का लक्ष्य बन गई। क्या किसी ने ऐसा समझकर संदेश दिया था कि धर्म के लिए आदमी-आदमी का शत्रु बनकर मार-काट करें, परंतु आज का आदमी वैसा बन गया। चार दिनों का यह मुसाफिर परिवार का घेरा, रोजी-रोटी के प्रबंध में उलझकर अज्ञान के बोझ में दबा चला जा रहा है। राजनीति मानव को

परिस्थितियों में जकड़ती जा रही है। धर्म उसे सकीर्णता के मार्ग पर जाने को मजबूर कर रहा है। परिवार के, समाज के सदस्य उसे बांट कर खा जाना चाहते हैं। बेचारा वह मुसाफिर क्या करे। ऐसे हालात में आप सब धरती के मनुष्यों तक संदेश भेजिए मानवता और शांति का, कल्याण का। आप लोगों का संकल्प और विचारों का प्रवाह ही मानव के लिए काफी है। हम सब कभी न कभी पृथ्वी के ही अंग थे। आज भी हमारा सीधा संपर्क उनसे है; क्योंकि हम उन्हीं के जैसे पैदा होकर यहां तक आये हैं। हम भी मानव हैं और हर मानव अपने कर्मों के द्वारा इस स्थिति को प्राप्त कर सकता है। आप लोग धरती के मानव के लिए कुछ अच्छे प्रयास करें। मानव के कल्याण के लिए हमारा चिंतन आवश्यक है।

मैं आप लोगों से इतना ही कहने आया था, क्योंकि मुझे जानकारी हो गई थी कि हिमालय के कुछ लोग अंतरिक्ष भ्रमण करते हुए यहां आये हैं। यहां आकर महावतार और कपिल को देखो। मथुरादास जी, सर्वेश्वरानन्द और सूर्या को भी। इनको कपिल के कारण आना पड़ा और इस तरह कपिल से बहुत सी उम्मीद लेकर और सभी का अभिनन्दन ग्रहण कर वे दिव्य महापुरुष चले गए। वे नारायण अंगिरस ऋषि थे, योगेश्वर नारायण बाबा। वे महावतार बाबा और कृष्णवतार के भी गुरु थे। जिनको उन्होंने हिमालय में क्रियायोग की दीक्षा दी थी।

सिद्धलोक से अब हिमालय के पांचों राही पृथ्वी की तरफ चल दिये। तभी विश्वामित्र जी अंतरिक्ष में तैरते नजर आ गये। वे अपने द्वारा छोड़े गए त्रिशंकु उपग्रह का निरीक्षण करने जा रहे थे। ये सब भी उनके साथ हो लिए। खुले आकाश में भू-वैज्ञानिकों द्वारा स्थापित अनेक उपग्रह तैर रहे थे। अति प्राचीन तारों के कक्ष में स्थापित त्रिशंकु उपग्रह पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा था। विश्वमित्र त्रिशंकु के बाहरी कक्ष को खोलकर सबको साथ लेकर अंदर प्रवेश कर गये। वे कुछ देर तक निरीक्षण करते रहे। उसमें बैठे-बैठे पृथ्वी का पूरा हिस्सा दिख रहा था। पृथ्वी के ही जैसे दो और ग्रह दिखाई दे रहे थे। त्रिशंकु में बैठ-बैठ सब लोग ब्रह्माण्ड और प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य का अवलोकन कर रहे थे।

कितने सूर्य, कितने तारे, कितने चन्द्रमा इस ब्रह्माण्ड में उदय और अस्त हो रहे थे। कहीं वर्षों रात ही रात है तो कहीं दिन ही दिन। पृथ्वी पर तो एक ही चांद और एक ही सूर्य दिखाई देते हैं। पर अंतरिक्ष

में एक-एक लोक में बारह-बारह सूरज दिखाई पड़ रहे थे। परमपिता परमात्मा की लीला अनन्त है। उसे देखने के लिए ३३ दिन कम ही थे। समाधि पूरी होने में एक दिन रह गया था। इसलिए सब पृथ्वी की ओर लौट चले। विश्वामित्र जी त्रिशंकु उपग्रह में ही रुके रहे। पांचों पिण्डारी पहुंचे। पायलट बाबा का शरीर बर्फ से दब गया था। बर्फ पिघल-पिघल कर बह रही थी। थोड़ी देर में हरिबाबा भी आ गये। समाधि को सुबह खोलना था।

धीरे-धीरे पिण्डारी में एक दिव्य महापुरुषों का आना शुरू हो गया। घाटी प्रकाश में सराबोर हो गई। पिण्डार घाटी देवी-देवताओं से भर गई। पूरी रात चहल-पहल रही। दिव्य शक्तियां अपनी भूमिका पूरी कर रात को ही लौट गई। सुबह हजारों लोग पिण्डारी पहुंच गये। युवा मंगल दल रतन सिंह की अगुवाई में जोर शोर से सहायता कार्य करने लगा। बर्फ सावधानी से हटाई गई और समयानुसार समाधि खोल दी गई। पायलट बाबा के शरीर का लोग दर्शन करने लगे। शरीर बिलकुल ठीक था। धीरे-धीरे पायलट बाबा अपने शरीर में प्रवेश कर गये। शरीर में चेतना आ गई और उठकर खड़े हो गये।

जापानी लोग कैमरे से चित्रांकन करने लगे। पायलट बाबा कुछ पल बैठ गये। फिर दौड़ कर नदी पर जा पहुंचे और स्नान करने लगे। महावतार बाबा, सर्वेश्वरांनद जी, मथुरादास जी, सूर्या और हरि बाबा सभी पिण्डारी में अपने-अपने स्थूल शरीर का निर्माण कर उपस्थित थे। सभी लोग खुश थे; क्योंकि सब कुछ ठीक-ठाक हुआ था। सेवकों ने सबको भोजन कराया। सब बाबा और सूर्या काफी देर तक रूक कर चले गये। पायलट बाबा अब भक्तों और सेवकों को लेकर चल दिए खाती गांव के लिए। गांव वालों ने यज्ञ की पूरी व्यवस्था कर ली थी। पन्द्रह ब्राह्मणों को बुलाया गया हिमालय के अनेक महापुरुषों को भी बुलाया गया। नौ दिन तक यज्ञ चलता रहा। यज्ञ समाप्त कर पिण्डारी में जैसी मां ने आज्ञा की थी वैसी मूर्ति की स्थापना पायलट बाबा ने अपने हाथों से की। यज्ञ के बाद खाती उदास लगने लगा था। हिमालय का यह छोटा सा गांव कल तक हिमालय के महापुरुषों और देवताओं के आगमन से भरा हुआ था। उनके जाते ही सब कुछ खाली-खाली सा लगने लगा। पायलट बाबा ब्रह्माण्ड अवलोकन समाधि से प्राप्त दुर्लभ दर्शन और ज्ञान से तृप्त थे जो

कुछ अनेक शास्त्रों में लिखा है वह सब अपनी आंखों से देख चुके थे। अब प्राप्त अनुभव के सदुपयोग को देखना था। जैसाकि सभी महापुरुषों को उनमें उम्मीद थी; क्योंकि अंततः हर क्रिया, प्रत्येक उपलब्धि चाहे वह भौतिक जगत का कोई अविष्कार हो या आध्यात्मिक जगत की विशेष समाधि हो सब कुछ है मानव के लिए, संसार के लिए। इसी प्रक्रिया में अभी कुछ दिन हिमालय में और फिर भारत में भ्रमण कर रास्ता बनाना चाहते थे। धर्म के लिए विकास और शांति के लिए मानव को कुछ देने का। कुछ दिन हिमालय के बद्री-केदार खण्ड में भ्रमण किया फिर निकल गये भारत में अन्य स्थानों पर जहां उनका संस्कार इंतजार कर रहा था कुछ और रहस्यों और दिव्य घटनाओं का उनको गवाह बनाने के लिए।

महाभारत के पथिक

इस बार इच्छा हो रही थी नर्मदा नदी की दर्शन की और वहां के तपस्वियों को देखना चाहते थे। गण्डा बाबा ने भी पहले एक बार नर्मदा के विषय में बताकर, हृदय में कभी न कभी उधर जाने का विचार बना दिया था। कुछ दिनों में एक और संत पायलट बाबा के साथ भ्रमण में थे। वे थे पहाड़ी वावा जो नर्मदा किनारे रह चुके थे। वे भी पायलट बाबा को नर्मदा नदी, वहां का जंगल और नर्मदा के आसपास घटी भगवान शिव की कथाएं सुनाते रहते थे। अब तो दोनों को लगता कि नर्मदा जैसे रह-रह कर आवाज दे रही हो और अपने तट पर तपस्या कर रहे महर्षियों को दिखाना चाहती हो।

एक दिन दोनों पहुंच गये नर्मदा और नदी के किनारे-किनारे चल कर जंगल में प्रवेश कर गए। बड़ा विकट जंगल था। यहां भीलों का निवास था। पहाड़ी बावा पहले भी इस जंगल से निकले थे। कुछ देर चलने के बाद कुछ भीलों ने दोनों को देख लिया। वे अपने अदांज में चिल्लाने लगे फिर तो कुछ देर में सैकड़ों भीलों ने दोनों को चारों तरफ से घेर लिया। पायलट बाबा और पहाड़ी बाबा दोनों ने कौपीन धारण किया हुआ था और हाथों में एक-एक पोटली थी। भीलों ने पोटली को खोल कर देखा उसमें धूनी की राख और नीम के पत्ते थे। पोटली को फिर से बांध भील दोनों बाबाओं को अपनी झोपड़ियों में ले गए। पत्तों की बनी चटाई पर उनको बैठा दिया और बड़े ही व्यवस्थित ढंग से धूनी बनाकर जला दी और घास की बनी दो बड़ी-बड़ी रोटी और शहद खाने को दिया। दोनों ने शहद और रोटी को मिलाकर प्रसाद की तरह सबको बांटा और थोड़ा-सा स्वयं भी ले लिया। भील बड़े खुश थे। भीलों ने एक अलग से झोपड़ी बना दी दोनों बाबाओं के लिए और तरह-तरह के जंगली फल और कंद का ढेर लगा दिया। भीलों की भक्ति देख दोनों बाबा कुछ दिन वहां ठहर गये।

पायलट बाबा उन भीलों में प्रतिदिन एक विशेष व्यक्ति को देखते थे जो प्रतिदिन आता था। भीलों की तरह वह रहता था। कद काफी लंबा था। वह हमेशा पीले कपड़े पहने रहता था। जब कभी पायलट बाबा उससे कुछ पूछना चाहते तो सवाल पूछने से पहले ही वह उठ कर चल

देता था। एक दिन पायलट बाबा सुल्पानेश्वर मंदिर पर विश्राम कर रहे थे तो अचानक उनकी नजर उस व्यक्ति पर जाकर स्थिर हो गई। उसकी बड़ी-बड़ी आंखें मानो अंगारे बरसा रही थी। वह भील दिव्य नजर आ रहा था। सिर पर पीले रंग की पगड़ी बांधे हुए था। जिसमें सारा ललाट ढका हुआ था। पायलट बाबा ने पहाड़ी बाबा को उस भील के बारे में बताया तो वह समझ गया और एक अद्भूत सम्मोहन पूर्ण मुस्कान बिखेरता हुआ उठ कर चल दिया। पायलट बाबा उसके पीछे हो लिये। मंदिर की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए उस विशाल भील ने पीछे मुड़कर पायलट बाबा को लौट जाने का आग्रह किया। उसके शब्दों में बड़ा मीठा निवेदन था। पायलट बाबा ने करीब पहुचंकर उनके पैर पकड़ लिए और बोले–"आप जो कोई भी हो, मुझे आपका परिचय चाहिए। आपका दिव्य शरीर और ऊँचा मस्तक कह रहा है कि आप आज के पुरुष नही हैं। वैसे मैं जान गया हूं कि आप कौन है? फिर भी यह जानना चाहता हूं कि क्या आप वही हैं। भील सब नाराज हो गए वे हल्ला करने लगे। वह पुरुष उनका पूज्य था, वे उसकी पूजा करते थे। शिवरात्रि के अवसर पर भगवान शिव के साथ वे उसकी भी पूजा किया करते थे। ऐसा कई हजार वर्षों से चल रहा था।

उस पुरुष ने भीलों को रोक दिया और पायलट बाबा को आपनी बाहों में उठाकर चूम लिया और बोले–हां कपिल, मैं अश्वत्थामा ही हूं। आचार्य द्रोणाचार्य का पुत्र, महाभारत का योद्धा, युद्ध का सेनापति अश्वत्थामा हूं। वह सब कुछ एक इतिहास बन चुका है। मैं भी उस इतिहास का पात्र हूं। अब इस सुल्पानेश्वर महादेव को ही अपना निवास बना रक्खा है और इन भीलों को अपना सहयोगी। कभी-कभार कृपाचार्य और विदुर से मिलने हिमालय चला जाता हूं। नहीं तो इन्हीं भीलों में खोकर प्रायः इतिहास को जीवित रखता हूं। वक्त तो हमारे लिए ठहर गया है और वक्त के आगे-आगे हम चल रहे हैं। कभी-कभी कृपाचार्य, विदुर के यहां आ जाने से सुल्पानेश्वर भी हिमालय बन जाता है। गोरखनाथ से भी कभी-कभी भेंट हो जाती है। कल क्या था, अब क्या है और कल क्या होने वाला है। तीनों परिस्थितियों से हम परिचित हैं। अश्वत्थामा ने अपने सिर की पगड़ी उतारकर रख दी। ललाट पर एक लम्बे चीरे का निशान बना था जैसे किसी ने ललाट को फाड़ कर कुछ

निकाल लिया हो। घाव मिट गया था पर गढ़ढा नही भरा था। उस गढ्ढे से प्रकाश चमक रहा था। आंखों से देखना मुश्किल लग रहा था और वह पुरुष अपने अतीत में डूबता चला गया। वह कह रहा था।

मेरा सामर्थ्य, युद्ध कौशल, दिव्य ललाट सब कुछ यहां से मणि निकलने के बाद समाप्त हो गई। मैं रह गया, मेरा ऐश्वर्य, शौर्य और बल मुझसे अलग हो गया। पर जो अमरता का वरदान मिला था, जिन योग परातत्वों से मैंने अमरता का फल प्राप्त किया था उसे न पाण्डव ले सके न भगवान कृष्ण। उपयोग न होते हुए भी मैं इस भूमि पर हूं और रहूंगा। मेरे संग के अनेक राही सैकड़ों बार आए और चले गए। जब मैं उन्हें पशु-पक्षियों, सर्पो की योनियों में भटकते देखता हूं तो सोचता हूं कितना पराधीन है वह आदमी जो चाहकर भी कुछ नहीं कर पाता। जन्म लेता है कि कुछ कर पाऊंगा, पर शरीर को प्राप्त करते ही ऐसा कुछ कर वैठता है कि उसे पशु, पक्षी, कीटपतंग ही बनना पड़ता है। फिर वह एक ऐसा रास्ता अपना लेता है जो कभी समाप्त ही नहीं होता। आदमी हमेशा के लिए उलझ जाता है। महाभारत के युद्ध ने बहुत कुछ करा दिया। मैं जानता हूं महाभारत को हुए पांच हजार वर्षों से भी ज्यादा समय हो गया पर मेरे लिए तो लगता है कल ही हुआ है। अब तो मैं ऐसी जगह खड़ा हूं जहां मैं हूं और भगवान शिव की मेरी आराधना। पायलट बाबा और पहाड़ी बाबा दोनों छः महीने तक उन युगान्तर पुरुष अश्वत्थामा के साथ रहे। तीनों कभी-कभी लंबे सफर पर निकल जाते और आम लोगों की तरह टहलते रहते थे। शहरों तक घूम आते थे। एक दिन वह महाभारत का अमर योद्धा पायलट बाबा का मस्तक चूम कर और पहाड़ी बाबा के सिर पर आशीर्वाद का हाथ रखकर यह कहकर लुप्त हो गया कि तुम लोग अपने सफर पर चले जाना। यही तक हमारे संस्कार मिलने के थे। दोनों के छह माह अश्वत्थामा के साथ कैसे गुजर गए पता ही नहीं लगा। कुछ समय बाद दोनों वहां से चल दिए नर्मदा किनारे।

नर्मदा अथाह जल को लेकर चल रही थी और उसके किनारे-किनारे पायलट बाबा भी सृष्टि की अनेक घटनाओं को अपने अंदर समेटे धीर गंभीर चल रहे थे। उनका चिंतन अश्वत्थामा के अनुभवों का विश्लेषण कर रहा था। कर्ता, भोक्ता, सब ब्रह्म है। पर मनुष्य यहां अपने आपको सब कुछ समझ बैठा है। युद्ध निरंतर चल रहा है। कल भी महाभारत

हुआ था आज भी महाभारत जारी है। कल के हम पात्र थे–आज के तुम। पर यह सब छल है। सब कुछ वही है। वही कर्त्ता है, वही भोक्ता है, हम सब एक माध्यम हैं। कर्मानुसार भोक्ता और कर्ता एक ही में निहित है। एक के ही दो उपनाम हैं। यह ब्रह्मलीला सब को भ्रम में डाल देती है। मैं देखता आ रहा हूं। अश्वत्थामा की वाणी पायलट बाबा को हजारों वर्ष के देखे हुए अनुभव को बता रही थी और वे चल रहे थे अपने सफर में स्वयं में लीन हो हिमालय की तरफ। मैदानी क्षेत्रों में रहते हुए काफी समय हो गया था अब पिण्डारी गुफा के पास की बर्फीली चोटियों की याद आ रही था। अपनी गुफा में पहुंचकर गुफा को साफ किया। काफी दिन से ऐसे ही पड़ी थी। दो-तीन दिन मेहनत करके उसे रहने लायक बनाया। सब साधन ठीक कर फिर रोज निकल जाते हिमालय की घाटियों में घूमने और सरोवर, चोटियां, नदियों की सुदरता में ही स्वयं को जोड़ देते। ऐसे ही एक दिन नन्देश्वर के ग्लेशियर पर होते हुए बल्जूरिया पीक जा रहे थे। उन्नीस हजार फुट की ऊँचाई पर चल रहे थे। केवल कौपीन धारण किए थे, शरीर नंगा था।

तभी पीले वस्त्रों को धारण किए एक दिव्य पुरुष का आकाश से आगमन हुआ। वे तीव्र गति से उड़ते हुए आये थे। बाल बिखर रहे थे। कंधे पर डाला हुआ कपड़ा भी उड़ रहा था। उसका शरीर पतला और लंबाई लगभग सात फुट थी। वे बर्फ से भरे मैदान में आकर उतर गये। वे अंतरिक्ष में तैर कर आये थे। वे बर्फ पर उतरने के बाद चलने लगे और पायलट बाबा के समीप आ गये। पायलट बाबा हाथ जोड़कर नमस्कार कर उन्हें देखते ही रह गये। वे दिव्य पुरुष न हंस रहे थे न बोल रहे थे। पायलट बाबा बर्फ पर लेटकर आसमान की ओर देखने लगे। तब वे दिव्य पुरुष बोले–''क्या मेरा आना तुम्हे अचंभित नहीं करता जो तुम आसमान को देखने लगे हो।

पायलट बाबा उनकी तरफ देखते हुए बोले–आप आए हैं और चले भी जाएंगे। अपनी इच्छानुसार आए हैं और स्वेच्छा से जाएंगे भी। पहले सोचा आप कौन है? प्रश्न भरी निगाहों से आप का अभिवादन कर मैंने देखा भी, पर आपका बिना मुस्कुराहट का चेहरा देखकर मैं लेट गया। आकाश को देखकर मैं आसमान मे ही पूछना चाहता था; क्योंकि आप अंतरिक्ष से ही आए हैं। इस ब्रह्माण्ड में अनेक महापुरुष अपनी इच्छा

से आकाश से चलते है, जल में तैरते हैं। कही भी किसी भी लोक में भ्रमण करना उनकी इच्छा पर है। आना जाना लगा ही रहता है। यह सब उनका संस्कार है, वह मेरा नहीं हो सकता और जो मेरा नहीं है न मेरा हो सकता है। उसके प्रति रूचि रखकर भटकना बेकार है। मेरे लिए यह कोई आश्चर्य का विषय नही हैं। प्रतिदिन मैं इस आकाश मार्ग से सैकड़ों सिद्ध, गंधर्व, देव-देवियों का आवागमन देखता हूं। दिव्य पुरुष आप जो भी हों, मेरे लिए पूज्य हो । पर इतना तो आप भी सोच सकते हो कि मेरा संस्कार अच्छा रहा होगा जिस कारण आप जैसे महान पुरुष मुझे बार-बार मिला करते हैं। हंसते हुए उन दिव्य पुरुष ने पायलट बाबा को अपने हाथ से अपनी तरफ खींचकर गले लगा लिया। पायलट बाबा उनका चेहरा देख रहे थे जो शांत और अति सरल था। लगता था उन्हें पहले कहीं देखा है पर कहां, यह जानने का मौका वे नहीं दे रहे थे।

पायलट बाबा को अश्वत्थामा जी की कही बात याद आ रही थी। उन्होंने ठीक ही कहा था कि अद्वैतवृति में घूमने वाला योगी कभी भी कोई चीज प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त नहीं करते। अपना ही कर्म प्रारब्ध और संस्कारों का निर्माण करता है जो अपना होता है। दूसरों का आशीर्वाद या दान हो सकता है पर कर्म का भोग नही। दूसरों का दिया तो उधार है जो कभी भी समाप्त हो सकता है। वे महापुरुष बोले "मैं कृपाचार्य हूं। अश्वत्थामा ने तुम्हें मेरा परिचय दिया था। हम महाभारत के कुछ मुक्त पथिक इस ब्रह्म स्वरूप ईश्वर की आज्ञा से संसार की तृतीय लीला देख रहे हैं। कभी न समाप्त होने वाली इस लीला को देख-देख कर, संसार के सार को जान लेने के बाद विश्व के भोक्त जीवों का अवलोकन कर हम हिमालय में रमण करते हैं जीवन है भी इसीलिए। जीव जितना ही स्वतंत्र होगा, उतना वह अपने आप को खोज क़र स्वयं में लीन हो सकता है। कृपाचार्य जी पायलट बाबा को वहां से मथुरादास बाबा की गुफा की तरफ लेकर चल दिए और चलते-चलते वे भगवान श्री कृष्ण के सभी तरह के व्यक्तित्व की चर्चा करने लगे।

गोपियों के पीछे व्याकुल गोप बालक का रूप, युद्ध के मैदान में सारथी बने कृष्ण के रूप का वर्णन किया। कृपाचार्य जी बोले—कृष्ण दिखने में तो पुरुष थे। पर वे परम पुरुष थे, और हैं। कृष्ण हम लोगों के बीच में ही रहते थे पर हम लोग जितना उन्हें जानने की कोशिश करते

थे उतना ही उलझ जाते थे। वे कूटनीतिज्ञ थे, बलवान थे, चालबाज थे पर वे योग योगेश्वर थे और हैं। वे सदैव अपनी ही बातों को पूरी करवाते थे। महाभारत होने का एक मात्र कारण वे ही थे। कृष्ण न होते तो महाभारत न होता, लेकिन महाभारत होना भी जरूरी था; क्योंकि मानव का संकल्प विज्ञान बहुत आगे बढ़ गया था। अत्याचार-दुराचार घर-घर में फैल गया था। भाई-भाई की हत्या करना चाहता था। नारी का अपमान होता था। बल का असहायो पर प्रयोग होता था। स्त्रियों का बलपूर्वक हरण होता था। उस वक्त सभ्यता में परिवर्तन, संस्कृति के संरक्षण और धर्म की रक्षा के लिए महाभारत जरूरी था। आज मानव और यह विश्व फिर वैसी ही स्थिति में हो गये हैं।

देखो कपिल, मैं महाभारत का पात्र रहा हूं, तुम इस भारत के पात्र रह चुके हो। इन भारत के लोगों से कहो कि ये अपनी संस्कृति को न मिटाएं। किसी भी राष्ट्र, किसी भी व्यक्ति का अपना एक धर्म होता है जिस पर चलकर वह अपने भविष्य का निर्माण करता है। जिस राष्ट्र का अपना कोई धर्म नहीं है, उसकी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति नष्ट हो जाती है। उस राष्ट्र की संस्कृति लद जाती है और ऐसा राष्ट्र स्वतंत्र होते हुए भी गुलाम है; क्योंकि वहां के व्यक्ति का अपना व्यक्तित्व और विचारध ााराएं नष्ट हो जाती है। देखो कपिल मैं महाभारत से लेकर आज तक की विश्व सभ्यता को देखता आ रहा हूं। भारतीय संस्कृति का कल तक विश्व के लिए बहुत योगदान था। वही भारत सदियों तक गुलाम रहा और आज की हालत गुलामी से बदतर है। जिस देश के मूल निवासियों का अपना कोई धर्म नहीं अपनी कोई सभ्यता नहीं। वहां लोग स्वतंत्र कहां हैं। ऐसे देश का एक दिन पतन हो जाता है जहां केवल व्यक्तित्व की पूजा होती है और जहां प्रजा को अपना गुलाम समझा जाता है। तुम कपिल सबको कह देना, यहां कोई जिन्दा रहने के लिए नहीं है। अधिकार तो श्रेष्ठ कर्मों का भोग है जो कभी भी छिन जायेगा और फिर वे दिन देखने पड़ेगे, जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी। आज आदमी को आदमी के ऊपर शासन करने को मिला है। वे कल पशुओं की तरह बेबस और असहाय जीवन जीने के लिए मजबूर हो जाएंगे। भारतीयों को कहो और उनसे पूछो वे कल कहां थे, आज कहां और किधर भाग रहे हैं। सब को बता दो कि तुम तो मर जाओगे लेकिन तुम्हारी आने वाली संतानें तुम्हें

गालियां देंगी और तुम्हारी मूर्तियों और समाधियों को तोड़कर अपना नया इतिहास बनाएंगी।

भारत धर्म का देश है जिसका संदेशवाहक हिमालय है। हमें युद्ध की विभीषिका से भारत को बचाना है। भारत को युद्ध का शिकार नहीं होने देना है। कपिल मैं आज तक सब कुछ देख रहा हूं और अभी बहुत कुछ देखना पड़ेगा; क्योंकि देखते रहने के लिए ही हम विद्यमान हैं। तुम तो कुछ कर रहे हो। कुछ इन भारतवासियों के लिए करो। कृपाचार्य जी बहुत कुछ कह रहे थे। पर कपिल सोच रहे थे—जहां रक्षापंक्ति ही भक्षक बन गई है। जहां व्यवस्था ही धर्म-निरपेक्ष है, वहां अकेला मैं क्या कर सकता हूं। मैं तो हिमालय का पथिक हूं। जहां प्रकृति ही जीवन है। प्रकृति ही पोषक है, प्रकृति ही धर्म है। गुफा में ही सभ्यता है। आज के विकसित विज्ञान के युग के व्यक्तियों के सामने तो हम आदि मानव हैं, आदिवासी हैं जो विकास का, भोग का जीवन जी रहे हैं। भला मैं कैसे इन विचारों को उस सभ्य संसार के लोगों पर लाद सकता हूं। कपिल मन ही मन विचार कर रहे थे और कृपाचार्य जी कहे जा रहे थे। इन दोनों के विचारों का संघात घटनाक्रम का निर्माण कर रहा था। कुछ देर दोनों चुप रहे फिर दोनों की दृष्टि वायुमंडल में गई जहां विचारों का संघात हुआ था। उसने घटना का रूप ले लिया और उस घटना के साथ कुछ और विचार तरंगें घूमने लगी। दोनों देखते रहे। विचारों के मिलन ने भविष्य की रूपरेखा तैयार कर दी थी।

अतीत और वर्तमान ने मिलकर भविष्य का सृजन कर दिया था और उसी के साथ-साथ हिमालय के अन्य योगियों का प्रवाह भी टकरा रहा था। मथुरादास बाबा, सर्वेश्वरानन्द, रामलाल, काशीनाथ आदि महापुरुषों का आगमन का संदेश मिलने लगा था। थोड़ी दूरी पर कृपाचार्य और पायलट बाबा आने वाले महात्माओं के समूह से जा मिले। सब बैठ गए। हिमालय की चोटियां गरिमा से अपना शीश उठाये देख रही थी। सबके बैठते ही बहुत से विचारों का प्रवाह आना शुरू हो गया। हिममंडित चोटियों से महात्माओं का संदेश टकरा-टकरा कर इन सबके विचारों को प्रभावित करने लगे। कुछ ही क्षण के बाद अनेकों महात्माओं का आगमन होने लगा। कुछ स-शरीर ही आ रहे थे और कुछ वहीं आकर अपने भौतिक शरीर का निर्माण कर रहे थे। अनेक तरह के महापुरुषों का

आगमन होता जा रहा था जो अपना भौतिक शरीर छोड़ चुके थे, वे भी थे। अंतरिक्ष के वासी भी थे। जल के भी थे। हिमालय की कंदराओं के तो थे ही।

हिमालय का वह खण्ड ऋषि, मुनियों, योगियों, तत्वदर्शियों की श्रेष्ठ आत्माओं से पुलकित हो रहा था। बुद्ध, महावीर, वनखण्डी, ईसा मसीह, व्यास, ऋषभदेव, शंकराचार्य, कबीर, च्यांगदेव, ज्ञानेश्वर, शिरडी के साई बाबा, महर्षि रमण, तैलंग स्वामी, नारायण स्वामी, दयानन्द जी, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य आदि की श्रेष्ठ आत्माओं का आगमन हो गया था। अभी कुछ शेष रह गये थे; क्योंकि गगन अभी भी विचार तरंगे प्रवाहित कर रहा था। प्रकृति सजग हो उठी थी। झरनों के प्रवाह मधुर ध्वनि करने लगे। वायुमंडल सुगंध बिखेर रहा था। हवा झंकार कर रही थी। पक्षियों का समूह आकाश में उड़ने लगा था। मधुर मंगल ध्वनियां चारो ओर गूंज रही थी तभी बाबा गोरखनाथ, अवतार बाबा, हरिबाबा, काशीनाथ उन्हीं के साथ-साथ माया योगिनी और अघोरेश्वर भैरवनाथ का भी आगमन हुआ।

आकाश शांत हो गया; क्योंकि विचारों का संघात समाप्त हो गया था। सभी महापुरुष बैठ गए। यहां पर सभी अपने-अपने विचारों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। यह उन महापुरुषों की बैठक थी जो व्यक्तिगत, सामाजिक और सांसारिक सभी स्थितियों से ऊपर उठ गये थे। उनकी विचार तरंगें ही विश्व के कल्याण के लिए काफी थी, उनकी भावनाएं मानव जगत के लिए उपयोगी थी। उनकी एक दृष्टि मानव के लिए कल्याणकारी थी। वे आध्यात्मिकता की पराकाष्ठा पर थे। उनका सकंल्प ही रचना था। वहाँ सभी का प्रतिनिधित्व था। भिक्षु, वैष्णव, संन्यासी, शिया, सूफी, पारसी सभी थे। वे सभी तत्वदर्शी थे। सभी का संकल्प ही ईश्वर का रूप था। सभी आगंतुक महर्षियों ने कृपाचार्य जी को धन्यवाद दिया; क्योंकि उन्होंने ही इस व्यवस्था को सजीव करने के लिए सभी ऋषि-मुनियों का आह्वान किया था।

यहां पर सभी ने अपने-अपने स्वतंत्र विचार रखे। सभी का समावेश एक था पर अनुभूतियों का मार्ग अलग-अलग था। अमर योगी गुरु गोरखनाथ जी के प्रति सब की विचारधारा एक थी। बुद्ध और महावीर ने भी उन्हें सम्मान दिया। कृतवर्मा ने गोरखनाथ जी का परिचय

कृपाचार्य जी से कराया। कृपाचार्य जी ने भी गोरखनाथ जी का बड़ा आदर किया। अवतार बाबा का भी सभी मनीषियों ने बड़ा आदर किया। पायलट बाबा ने भी लपक कर हरिबाबा, गोरखनाथ जी और अवतार बाबा के चरणों का स्पर्श किया और सभी महर्षियों को बारम्बार नमस्कार किया।

बाबा गोरखनाथ खड़े होकर उन महानों से भी अतिमहान महापुरुषों की सभा को संबोधित करने लगे। वे बोले–''जो कुछ हो रहा है उसे होने दिया जाए। क्योंकि वह होना ही है और जो नहीं होना है उसे क्यों होने दिया जाए। संभावित घटनाओं का निर्माण हो चुका है और जो शोष है, वह प्रतिक्षण विकसित हो रहा है हमें उसे नहीं होने देना है। आदमी आज वहां तक पहुंच गया है। जहां जाकर उसका विनाश होता है। हमें उसे नहीं रोकना है। वह मरता है तो मर जाने दीजिए। यदि वह जीवित रहेगा तो आने वाली पीढ़ियों को मार देने की व्यवस्था कर जाएगा। मानव का सम्पूर्ण संघर्ष ही विकास के नाम पर हो रहा है पर आज का मानव बिक चुका है। समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, व्यवसाय और परिवार के प्रति। हर व्यक्ति का मूल्यांकन हो चुका है। जो बिक चुका है वह उस कर्म के प्रति गुलाम है। वह जो भी करेगा उस संस्था और व्यवस्था के अनुकूल करेगा, क्योंकि उससे वह काम कराने के लिए उसे खरीदा जा चुका है। हमें गुलामी की जंजीरों में जकड़े ऐसे व्यक्ति को छोड़ देना है। हमें कल का निर्माण करना है जिस पर भविष्य निर्भर है। हमें आने वाली पीढ़ियों को गुलाम नहीं होने देना है। हमें और आपको यही करना है।

एक ऐसा अलख जगाना है कि अतीत जाग जाए, वर्तमान रूक जाए और भविष्य सुंदर नूतन का सृजन करे। अतः जो होना शेष है उसे विनाश से बचाकर सृजन की ओर मोड़ना है। हमें चलना है अलख की झोली और पलक का खजाना लेकर। ऋषि-मुनियों की पावन तपस्थली में वीणा की ऐसी तान सुनानी है कि सब जगह अलख निरंजन का ही प्रभाव गूंजे, धर्म की व्यवस्था हो जाए, सभ्यता और संस्कृति में पराभव जागृत हो पाए और आदमी-आदमी से प्यार करना सीख जाए, किन्तु ऐसा ना हो कि हम अपने विचारों को दूसरों पर लाद दें और वे उन पर बोझ बन जाए। हमें हर व्यक्ति को अपने-अपने विचार रखने का मौका देना होगा। ताकि वह अपनी बात कह सके और उधार का जीवन न

जिए। आप सभी विशेष पुरुष हैं। आप अपनी विशेषताओं के द्वारा विशेष व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं। सभी संबंधों को भुलाकर आपको कार्य करना है। उलझे हुए को किनारे लगाना है। भटकते हुए को रास्ता दिखाना है और जो चल पड़ा है उसे चलते रहने देना है। गोरखनाथ चलता रहा है। युगों से चल रहा है और चलता रहेगा। आज तक आप लोग भी चलते आ रहे हो और आगे भी चलते रहना है। विज्ञान ने आज जो भी सहयोग दिया है मानवीय जगत में वह हमारे ऊपर प्रभावशाली नहीं है। वह उतना विनाश नहीं कर पाएगा। जितनी निर्माता ने कल्पना की थी यदि हम इन सभी उपलब्धियों पर रोक लगा दे तो। आप ने युद्ध की विभीषिका देखी है। जितना मायावी और संहारक कल का युद्ध था—उतना आज का संभवतः न हो। हम अपने विचारों के संघात से अविष्कृत यंत्रों को प्रभावहीन कर सकते हैं। आप लोग इन्हें वहीं प्रयोग होने दे जहां विनाश की रूपरेखा बन चुकी है। जहां वायुमंडल घटनाक्रम का संकेत दे रहा है। उसे उसी स्थल से आगे न जाने दे।

भौतिक उपलब्धियों में कार्यरत आज का आदमी सूक्ष्म पर भी अधिकार करता जा रहा है। अब उसकी खोजों में दूसरे ग्रह के आदमी को आ जाने दीजिए आदमी जब मंगल, बृहस्पति, शुक्र के मानवों से मिलेगा या हिमालय की कन्दराओं में रहने वाले लाम्पोंग जाति के मानव से मिलेगा तब वह अपनी खोजों की महानता को भूल जाएगा। कृपाचार्य जी आप धरती के मानव से बहुत कुछ कहना चाहते थे। जो हिमालय कह रहा है उसे आप करना चाहते थे। साहित्यिक धरा पर आपके अनेक रूप समाज में रह चुके हैं। आपका महावतार रूप काफी चर्चित व लोकप्रिय बन चुका है। आज लोग आपको खोज रहे हैं और आप उनके समक्ष होते हुए भी दुर्लभ बन गए हैं। लोग आपकी आकृति की कल्पना कर रहे हैं और आपका चित्रांकन का आपकी उपासना कर रहे हैं और आप अंतरिक्ष की ओर निहार रहे हो। धरती सहयोग मांग रही है। आप पर्वत की कन्दरा से अपना आध्यात्मिक मार्ग खोल कर जन-जन में जाइए। अब आपको द्रोणगिरि पर्वत की श्रृंखलाओंसे निकल कर मानवों के बीच आना ही चाहिए। आपके सहयोग के लिए कृतसंकल्प अश्वत्थामा का कोई योगदान मानव के प्रति नहीं है। वे स्वयं विक्षिप्त बने अपने अतीत के कर्मों को ढो रहे हैं। उनका जीवन तो है पर प्रायोजित नहीं है, केवल प्रायश्चित

के लिए है। अवतार वावा का वहुत योगदान है। विदुर के रूप में पाण्डवों के प्रेरणा स्रोत वनने से आज तक। और हरि वावा तो तूफान वा । बन चुके हैं। मैं भी सदैव आप लोगों के साथ हूं। चलना मेरा काम है और चल रहा हूं। मैं तो घर-घर का वासी हूं। मुझे लोग भुलाना भी चाहे तो भुला नहीं पाएंगे।

पायलट वावा गोरखनाथ जी को देख रहे थे। उनके मुखारविंद पर लालिमा स्फुटित हो रही थी, जैसे अभी-अभी कमल खिल कर फैल जाना चाहता हो। गुरू गोरखनाथ खुले आकाश को देख रहे थे। उनके शरीर से एक मोहक सुगन्ध निकल कर वायु में फैल रही थी। सुंदरता अपनी संपूर्णकला उनके निर्माण में लगा चुकी थी। मुख पर न वचपन की आभा थी न प्रौढ़ता का आभास हो रहा था। उनके चेहरे को देखकर लगता था जैसे एक भोले वालक ने अभी अभी युवावस्था की सीढ़ियों पर पैर रखा है। उन महापुरूष में अविस्मरणीय सौन्दर्य खेल रहा था। पर उससे अनभिज्ञ व मानव के कल्याण के रास्ते पर आगे वढ़ रहे थे। हजारों तरंगें प्रकाश फेंकती हुई उनके मुखारविन्द से क्षितिज में फैल रही थी और वैसी ही तरंगें आ-आकर टकरा रही थी। लग रहा था सारा आकाश उस मनीषि के चरणों में झुका जा रहा हो। शून्य में चेतना प्रवेश कर रही थी। और वह शून्य विराट बनता जा रहा था। गोरखनाथ मौन थे। वे हौले-हौले वैठ कर और वर्फ की उस शिला पर लेट गये। वे परमाणु को विराट वना रहे थे और विराट को परमाणु में समेट रहे थे।

सभी शांत थे। अब कोई कुछ कहना नहीं चाह रहा था। मथुरादास वावा ने सबको भोजन के लिए कहा। शांति मां ने सूर्या और यशोदा मां के साथ सारी भोजन की व्यवस्था संभाल ली। भोजन की व्यवस्था भौतिक जगत की तरह ही थी। सब महापुरूष एक साथ भोजन करने लगे। और पायलट वावा नई अनुभूतियां, नए रहस्यों का मन ही मन आनंद ले रहे थे। कृपाचार्य ही महावतार बावा हैं। शांति मां उनकी वहन कृपी है। जिन्होंने महाभारत में अपने सुहाग द्रोणाचार्य को तो खो दिया था लेकिन पुत्र अश्वत्थामा का प्राण दान पाकर वह प्रसन्न थी। अवतार बावा विदुर हैं जो भगवान कृष्ण को भी परामर्श देते थे। और कृतवर्मा भी महाभारत के जीवित बचे एक महायोद्धा सभी महापुरूषों के बीच बैठे शांतिप्रिय हो भोजन कर रहे थे। पायलट बावा देख रहे थे कितनी क्षमता, कितना वल

छिपा है इन मानवों में ये मानव आज अति मानव वन चुके हैं। जो कभी हमारी ही तरह पहाड़ों और जंगलों के पथिक थे। आज ये अंतरिक्षगामी वन कर स्वतंत्र और जंगलों के पथिक थे। आज ये अंतरिक्षगामी बन कर स्वतंत्र मुक्त वन गये हैं। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही इनका अपना घर बन गया है।

भोजन के उपरांत सब अपनी-दिशा को लौट गए। क्षण भर में वह हिमशिला रिक्त हो गई और हिमालय अश्रुपात करने लगा। पायलट बाबा भी पिण्डारी में अपनी गुफा में आ गए। मां जगदम्बा के मंदिर में थोड़ा निर्माण का कार्य रह गया था। वे खाती गांव के लोगों से श्रमदान लेकर कार्य कराने लगा। कुछ दिनों में मंदिर का काम पूरा करके भ्रमण के लिए निकलने का विचार बना रहे थे। एक दिन गुफा में अश्वत्थामा और कृपाचार्य जी का आगमन हुआ। दोनों दिव्य महापुरूष पीले वस्त्र पहने पायलट वावा के सामने खड़े थे। पायलट बाबा प्रसन्न हो गये क्योंकि उन्होंने अश्वत्थामा जी के साथ काफी दिन सुल्पानेश्वर में गुजार रखे थे अव उनको भी कुछ सेवा का अवसर मिल गया था। कृपाचार्य जी प्रसन्न मुद्रा में इधर-उधर कुछ ढूंढ रहे थे पर अश्वत्थामा कुछ सुस्त दिखाई पड़ रहे थे। पायलट बाबा ने मंदिर में काम करते मंगल सिंह को आवाज लगाई। मंगल सिंह ने वाहर धूप में दरी और बाघम्बर बिछा दिया। सब उस पर बैठ गये। पायलट बाबा ने कुछ लोगों को लकड़ी लाने भेज दिया भोजन बनाने के विचार से। पायलट बाबा कुछ खाने को लाने के लिए अंदर गुफा में गये। उनकी दृष्टि एक मटके पर पड़ी जिसमें दही रखी थी। उसकी वगल में शहद कौन रख गया। अभी-अभी तो कुछ भी नहीं था। तभी गुफा में किसी के हंसने की आवाज आई जैसे कोई लड़की हंस रही हो, पर दिख नही रही थी। पायलट बाबा समझ गये भगवती मां ने कृपा की हैं।

दही और शहद को देखकर कृपाचार्य जी और अश्वत्थामा बहुत प्रसन्न हुए। दही में शहद मिलाकर खाने लगे। पायलट बाबा ने भी खाया। हिमालय की चोटियों से टकराकर शीतल वायु शरीर में स्पन्दन पैदा कर रही थी। सूरज की किरणें ताप दे रही थी। प्रकृति बहुत कुछ कह रही थी। कृपाचार्य जी बोले-''अश्वत्थामा आए थे तो मैंने सोचा चलो कुछ क्षण तुम्हारे साथ गुजारे जाएं। गोरख बाबा ने तुम्हें मेरे बारे में बता

दिया है। महावतार बाबा और हेडिया खान के रूप में हिमालय से धर्म का कार्य करने वाला मैं कृपाचार्य हूं, यह बात कुछ ही लोग जानते हैं। अवतार बाबा, शान्ति मां, अश्वत्थामा, गोरखनाथ और अब तुम। कृपाचार्य जी पायलट बाबा को कपिल ही बोलते थे। आज लग रहा था कि वे कुछ खुलकर बात करेंगे।

कृपाचार्य कहने लगे-सुनो कपिल, मैं जब से आया हूं तब से संकल्प लिए बैठा हूं कि आदमी के लिए कुछ न कुछ करता रहूंगा और आज तक करता आ रहा हूं। पर आदमी मुझे आज तक जो दे पाया है वह मर्मभेदी है, हृदयग्राही नहीं है। मैंने एक ही आत्मा की हजारों बार जन्म लेते देखा है और जब भी देखा उसे भटकते ही देखा है। वह नहीं भटकता उसका कर्म उसे प्रेरित करता है। वह भोगी बना, माया से लिपटता रहता है। वह आदमी जानवर, पक्षी, कीट-पतंग सभी रूपों में वह भटकता रहता है। कभी वह कर्म करने की विशेषता लिए रहता है, कभी जड़ बना रहता है। और कभी भोगों को भोगने के लिए तड़पता रहता है। मैं सदैव पुरूषों को रास्ते पर लाने का प्रयास करता हूं। महाभारत की वे आत्माएं आज भी है। उस समय केवल एक दुर्योधन था, एक दुशासन था, जिसने द्रौपदी का चीर हरण करने का प्रयास किया। पर आज तो दुर्योधनों, दुशासनों, शकुनि मामाओं की कमी नहीं है, वे तो आज गली-गली में घूम रहे हैं।

मैं समय को बदल सकता हूं। सब कुछ अपने अनुकूल बना सकता हूं पर मैं ऐसा नहीं करता क्योंकि तब मैं भी समझ नहीं पाऊंगा। इसलिए मैं दिशा, परिवर्तन और काल के अनुकूल चलता रहा हूं। इसीलिए आदमी की परख करने के लिए भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में घूमा करता हूं। कभी महावतार बाबा, कभी हेड़िया खान के रूप को लेकर चर्चित रहा हूं। वैसे मैं कृपाचार्य हूं। ऋषियों ने तो हमेशा मुझे हमेशा मुझे सहयोग दिया है अतः उनकी जानकारी से मैं परे नहीं हूं। भगवान श्री कृष्ण द्वारा अपने उद्धार के बाद मैं अपनी बहन कृपी के साथ काशीवासी बन गया। गंगा के तट पर रहकर सदियों तक तपस्यारत् रहा और व्यास, शुकदेव, शंकराचार्य, कबीर आदि महात्माओं का मार्गदर्शन करता रहा। गंगा जब अपना मोक्षदायी प्रभुत्व हटाकर अपनी परातन्मात्राओं में समाविष्ट हुई तब से मैं हिमालय का वासी बन गया।

मैं पहले पाण्डवों का आचार्य था और आज भी एक न एक नूतन रूप में मानव को कुछ देने के लिए भ्रमण करता रहता हूं। महाभारत काल में कृष्ण के समीप था। कृष्ण एक ही थे पर उनके कार्य करने की विधि और ढंग अनेक थे। मै कृष्ण के अस्तित्व से परिचित था पर मैं उनका शुभचिंतक नहीं था। क्योंकि कृष्ण स्वयं को हमें जानने ही नहीं देते थे। फिर महाभारत हुआ, जो एक महान घटना थी जिसका निर्माण ही कृष्ण ने किया था क्योंकि कृष्ण सव कुछ जानते थे। अगर कृष्ण न हो तो काल में परिवर्तन नहीं होता। महाभारत का आदमी प्रकृति और काल को अपने अनुकूल बना चुका था। उसने देवताओं और महात्माओं को भी अपनी दिशा में मोड़ लिया था और समय जो बहुत करीव था, परिवर्तन के लिए सिसक रहा था। तव कृष्ण को यह सव करना पड़ा। कृष्ण न पाण्डवों के थे, न कौरवों के। कृष्ण एक ऐसा व्यक्तित्व था जो किसी का नहीं था। पर लगता था कि वह सवके हैं। वे परम पुरूप बस सत्य के लिए, धर्म के लिए कार्य करने आये थे।

वे कभी मां के पुत्र वन जाते तो कभी देवकी और यशोदा के गोप वालक। वे साधारण और असाधारण दोनों एक साथ थे। वे नर भी थे और नारायण भी। वे किसी का बेटा नहीं थे और न किसी रचनाकार की कृति। हर विशेष के पीछे वह भी थे। चाहे पाण्डव हो चाहे कौरव वह सभी श्रेष्ठ आत्माओं के साथ-साथ अपने अहम् को भी ऐसे मारते थे। वे परिस्थितियों को देखकर चलते थे। कभी कायर की तरह रण छोड़ कर भाग जाते थे तो कभी वीर की तरह ललकार कर लड़ते थे वे जल और आकाशगामी थे। जब वे चाहते तब अनेक शरीरों का निर्माण कर लेते थे। और अपने वर्तमान शरीर को विलय कर देते थे। कृष्ण भोगी थे, शरीर के नहीं। उन्होंने संतानों की उत्पत्ति संकल्प से की थी। सभी नारियों के पास तो उन्होंने अपना योगमय शरीर ही प्रकट किया था जो केवल माया का एक रूप था। कृष्ण तो उन नारियों के संसर्ग में कभी आये ही नहीं। तभी तो उन्होंने अपनी मुरली को नहीं छोड़ा और न मोर मुकुट का परित्याग किया। मोर पंख इस बात का प्रतीक था कि मोर भोग नहीं करता। प्रजनन की क्षमता उसके आंसू में होती है। कृष्ण की मुरली मादक और मोहिनी थी। उनका संकल्प ही सृष्टि का विकल्प था।

हम वस्तुतः कृष्ण के विरोधी नहीं थे पर वह हमें विरोधी बना देते

थे। हम सब कुछ जानते हुए भी व्यक्त नहीं कर पाते थे। कृष्ण को कौन नहीं जानता था पर कृष्ण जैसा चाहते थे वैसा ही होता था। क्योंकि वह आये ही इसलिए थे। यदि भीष्म, द्रोण, कर्ण और हम नहीं होते तो कौरव कभी लड़ते ही नहीं। और यदि कृष्ण नहीं होते तो पाण्डव कभी लड़ते ही नहीं। यदि वे चाहते तो अर्जुन कब का भाग खड़ा होता फिर पाण्डव सेना तो ऐसे ही भाग जाती। इसलिए तो उन्हें गीतारूपी गंगा को युद्ध के मैदान में बहा देना पड़ा। समय की गति को प्राकृतिक ढंग से जाने देने के लिए कृष्ण को महाभारत करना पड़ा। दोनों ओर कृष्ण ही थे। यदि कृष्ण न आये होते तो काल में परिवर्तन नहीं होता। क्योंकि मनुष्य में इतनी क्षमता कहां है कि वह काल, दिशा और परिस्थिति को अपने वश में कर ले। जब सब समाप्त हो गया तो कृष्ण भी कृष्ण बन गये और हम भी कृष्णमय बन गए। तभी तो आज तक हम उन्हें भूल नहीं पाते। जब उन्होंने धराधाम तो छोड़ा तो मुझे चुना धर्म के लिए, सत्य के लिए कार्य करने को। मैं तब से आज तक महाभारत काल से भटक रहे उन जीवों को खोज-खोज कर उन्हें उनके अस्तित्व का बोध कराता हूं। संस्कारी पुरूषों को रास्ता दिखाता हूं। कभी महावतार तो कभी हेडिया खान रूप को तपाता हूं।

पायलट बाबा सांस रोके सुन रहे थे। कृपाचार्य जी के दिल की बातें। दिन ढल गया था, समय का पता ही नहीं चला। अब दोनों दिव्य पुरूष चलने लगे। पायलट बाबा उन्हें थोड़ी दूर तक छोड़ आये। वे परम तत्व, सर्वोच्च शक्ति जिन्हें प्राचीन ऋषियों ने श्री हरि नाम दिया, वे परमात्मा वैसे तो सब नाम रूपों में समाये रहकर भी सबसे निर्लिप्त, अखंड व निराकार व्याप्त है लेकिन वे किसी न किसी कारणवश, साकार शरीर धारण कर दिव्य लीलाएं करते हैं और पृथ्वी के मानवों को सदियों तक के लिए अपनी कार्य क्षमता से प्रभावित कर जाते हैं। ये महाभारत के पथिक उन्हीं श्री हरि की लीला के चश्मदीद गवाह होकर मानवता के सर्वेश्रेष्ठ उदाहरण बनकर हिमालय में उपस्थित हैं। कृपाचार्य जी और अश्वत्थामा जा रहे थे और पायलट बाबा देख रहे थे और सोच रहे थे। कैसे हैं ये महाभारत के पथिक।

नानक जी और देवराहा बाबा

हिमालय के विशेष महापुरूष, दिव्य देव शक्तियां और अनेक धर्मो को संस्थापक मूल पुरूषों का प्रेम पूर्ण दर्शन, सत्संग करते हुए ही जीवन व्यतीत हो रहा था। श्रेष्ठ शक्तियां पायलट बाबा को अपनी उपस्थिति का माध्यम बनाती जा रही थी और वे अनेक रहस्यमयी घटनाओं को अपने अंदर समेट एक साधारण साधु या योगी की तरह अपना जीवन बिता रहे थे। पवित्र भारत भूमि की पैदल परिक्रमा करते-करते एक बार पायलट बाबा पहुंचे गए अमृतसर। अमृतसर पहुंच कर स्वर्ण मंदिर दर्शन के लिए गये। वहां सरोवर का जल निकाल कर सफाई की जा रही थी। पानी पूरी तरह निकाल दिया गया था। हजारों स्त्री और पुरूष श्रमदान में लगे थे तालाब से मिट्टी निकाली जा रही थी। चिलचिलाती धूप थी। पसीने से तर माताएं और पुरूष- अपने-अपने काम में तन-मन से लगे हुए थे। मिट्टी को काट कर तालाब को विराट रूप दिया जा रहा था। पायलट बाबा गुरू ग्रंथ साहब का दर्शन कर बाहर टहलने लगे। मंदिर की भव्य निर्माण कला और गुम्बज के संदेशों का अवलोकन करते रहे। लेकिन कहीं भी मन को विराम नहीं मिल रहा था। मंदिर से ध्यान हट कर बार-बार श्रमदान में लगे स्त्री-पुरूषों के बीच से एक वृद्ध पुरूष और एक वृद्ध नारी पर दृष्टि जा रही थी।

वे दोनों एक दूसरे के सहयोग से मिट्टी की टोकरी ढो रहे थे। वे न किसी को सहयोग दे रहे थे, न किसी से सहयोग ले रहे थे। वे अपने कार्य में मग्न थे। जब भी पायलट बाबा की दृष्टि उस वृद्ध से टकराती तो वह मुस्कुराने लगता। बुढ़िया से टोकरी लेकर बाहर खाली कर आता था। तब बुढ़िया दूसरी टोकरी भर देती। वह भी रह-रहकर कर पायलट बाबा को देख लेता था और रहस्यमय तरीके से मुस्कुराने लगता था। पायलट बाबा घंटों तक उन दोनों मूर्तियों को सेवा करते देखते रहे। तभी पीछे से पायलट बाबा को धक्का लगा और वे संभलते-संभलते भी सूखे तालाब में जा गिरे। उसकी सेवा कर रहे बूढ़े ने पायलट बाबा की आकर उठाया। और उस सिक्ख युवक को देखने लगे जिसने धक्का मारा था। पायलट बाबा भी खड़े होते ही दोनों के मनोभावों का अध्ययन करने लगे। दोनों की आंखों में मौन प्रेम का निमंत्रण था, संवेदना थी, शांत सागर की

लहरों के समान वे दोनों अडिग थे। तभी सिक्ख युवक ने आगे बढ़ का पायलट बाबा से कहा-''दो रुपये मुझे दे दो।'' कह कर युवक हंस रहा था और पायलट बाबा अवाक् खड़े उसे देख रहे थे।

अपनी झोली से पायलट बाबा ने दो रूपये निकाल कर उस सिक्ख युवक को देकर प्रणाम किया। वह पुरूष भी हंसने लगा और हंसता हुआ मुड़ कर चला गया। तभी सिक्ख युवक ने कहा ''पगले ये गुरू नानक देव हैं। यह वृढिया इनकी पत्नी है। गुरूओं को देखकर भी तुम पहचान नहीं पा रहे हो। ये सिद्ध महापुरूष सिक्खों के गुरू है, जो स्वयं श्रमदान में लगे हैं। इन्हें छोड़ना मत। जीवन की राह में यदा-कदा ही इनसे भेंट हो पाती है। आदमी तो बहता हुआ पानी है, जो समुन्द्र की ओर बह रहा है। बूंद सागर में लीन होकर पुनः बूंद बनने की जिज्ञासा नहीं रखती है। यह कहते हुए वह सिक्ख युवक पायलट बाबा के सिर पर अपना हाथ रख कर चला गया। पायलट बाबा ने पलटकर वृद्ध पुरूष के भेष में नानक देव जी को नमस्कार किया तो वे हंसते हुए चल दिए। थोड़ी दूर टोकरी को रख कर वुढिया को भी आने को कहते हुए तालाब से बाहर निकल गये। पायलट बाबा उनके पीछे दौड़ पड़े। फाटक से बाहर निकल कर वृद्ध पुरूष में इतनी तेजी आ गई कि वे हवा से बातें करने लगे। पायलट बाबा ने उन तक पहुंचने को बहुत कोशिश की पर नहीं पहुंच सके। पलभर में दोनों महान-पति-पत्नी अदृश्य हो गये और वे देखते रह गये।

पायलट बाबा चलते रहे। खेतों को, नदी-नालों को पार करते हुए दिन भर चलते रहे। शाम होने लगी तो रात को ठहरने के उद्देश्य से तरनतारन गुरूद्वारे जा पहुंचे। कुण्ड से थोड़ी दूरी पर एक पेड़ के नीचे बैठ गये। और अपने विचार-प्रवाह को गुरू नानकदेव जी की खोज में भेजा। विचार तरंगें एक दिशा में जाकर टकराने लगी। पर वहां पर सशरीर इतनी जल्दी पहुचना कठिन लगा। तब शरीर को रक्षा कवच से अभिमंजित कर समाधिस्थ हो गये और स्थूल शरीरको वहीं छोड़कर सूक्ष्म शरीर से चल दिए नानक देव की तरफ। खेतों-मैदानों को पार कर पर्वत की श्रृंखलाएं आ गई। जंगल-झाड़ियों से होते हुए पर्वत के ऊपर बनी एक कुटिया के पास एक बालक को खेलते हुए देखा। पायलट बाबा झोपड़ी के पास जाकर रूक गये और स्थूल शरीर का निर्माण करने लगे।

तब तक वह बालक तेजी से नदी की ढलान की तरफ दौड़ पड़ा। टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता नदी में उतर रहा था। नदी बहुत गहरी थी और धारा बहुत तेज बह रही थी। बालक दौड़ता जा रहा था। तब तक पायलट बाबा भी स्थूल शरीर का निर्माण कर बालक के पीछे नदी में उतरने लगे। वह बालक तेजी से नदी में उतर गया। नदी के किनारे पर एक सुंदर नौका खड़ी थी। वह बालक नौका में बैठ कर नदी की तेज धारा में बह चला। पायलट बाबा नदी के किनारे पहुंच कर उसे जाते देखते रहे। फिर अपने स्थूल शरीर को विलय कर, सूक्ष्म शरीर से नदी के बहाव के साथ जाना चाहा तो उस बुढ़िया ने रोक दिया। नहीं बेटा, अब तुम उस पार जाने का प्रयास न करो। नानक देव अभी तुमसे मिलना नहीं चाहते हैं। समय के साथ सब कुछ होने दो। समय आने पर नानक देव से तुम्हारी भेंट हो जायेगी। तुम्हारा भौतिक शरीर बहुत दूर पड़ा है। सुबह होने वाली है, तुम जाकर अपने शरीर को अपनाओ। पायलट बाबा वापस अपने शरीर में आ गये। और अपनी पैदल यात्रा को आगे बढ़ा दिया।

काफी समय गुजर गया। पायलट बाबा समय की कसौटी पर अपने को कसते चलते रहे पर नानक देव जी से भेंट नहीं हुई। एक बार हिमालय के तटवर्ती क्षेत्रों से होकर भागीरथी के किनारे-किनारे चल रहे थे। उत्तरकाशी से आगे भटवाडी में बैठे थे। गंगा थोड़ी दूरी पर अपनी गति से बह रही थी। पायलट बाबा गंगा की लहरों को देख रहे थे, तभी गंगा के पार एक बुढ़िया को टहलते हुए देखकर पायलट बाबा की निगाह उस पर रूक गई। पहाड़ की विकट चढ़ाई पर वह अकेली जा रही थी। टहलती हुई बुढ़िया को देखकर कुछ स्मृतियां ताजी हो गई। पायलट बाबा ने एक भक्त की कोठरी में डेरा जमाया और कोठरी को चारों तरफ से बंद करके उस भक्त को समझा दिया कि रात्रि में मुझे आवाज न दे। मैं समाधिस्थ होकर अपने शरीर को यहां छोड़कर जा रहा हूं। मुझे लौटने में देर हो सकती है। स्थूल शरीर को वहीं छोड़ सूक्ष्म शरीर से चल दिए।

झोपड़ी पहले जैसी ही थी पर वह बालक कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा था। पायलट बाबा ने नदी के किनारे स्थूल शरीर का निर्माण कर लिया और नौका को नदी के बहाव में छोड़ दिया। नाव तेजी से बह गई। पायलट बाबा ऊपर चल दिए। झोपड़ी की तरफ। झोपड़ी से थोड़ी दूरी पर वह बालक खेल रहा था। पायलट बाबा को देखते ही वह नीचे की

और दौड़ा, पर थोडी दूर जाकर ठिठक कर रूक गया। नाव तो कब की बह चुकी थी। वालक पायलट वावा की तरफ देख रहा था। वे धीरे-धीरे बालक के पास पहुंच गये और उसे अपनी गोद में उठा लिया और ऊपर झोपड़ी के पास आ गये तो वह खिल-खिलाकर हंसने लगा। फिर उसने अपने शरीर को वदल लिया। अव पायलट बाबा के सामने दिव्य रूप में गुरू नानक देव खडे थे। अमृतसर के गुरूद्वारे मे अन्य लोगों के सथ वृद्ध का भेष धारण कर श्रमदान कर रहे थे। पायलट बाबा बोले-विमुक्त होने के वाद भी ऐसा क्यों प्रभु? आप तो सिद्धों के सिद्ध हैं। इच्छा ही आपकी गति है। कामना से रहित फिर आप क्यों श्रमदान में लगे थे?

गुरू नानकदेव वोले-''मैं कहां करता हूं बेटा! मैं तो हूं ही नहीं। सब में समाहित अन्तमुखी ब्रह्म की भावनाएं ही काम करती हैं। मैं तो प्रतिस्पर्धा में उन्हें मात्र प्रेरणा देता हूं। मैं तो रास्ते पर चलकर लोगों को उसी पथ पर आने के लिए प्रेरित करता हूं। संसार के भोगों में इतना आकर्षण है कि मानव अपने को इनमें उलझाकर जीवन और मरण के चक्कर में बार-वार घूमता रहता है। सब कुछ जानते हुए भी मनुष्य भटकता रहता है। यदि उसने अपने आप को खोज लिया होता तो वह दूसरों के लिए जीता। इसलिए मैं उन्हें परमार्थ और पुरूषार्थ पर जीने के लिए प्रोत्साहन देता हूं। ये कुछ नहीं कर सकते, पर मैं इन्हें करने के लिए बाध्य करता हूं। मेरी वाणी, मेरा कर्म इनके लिए उपदेश बन गया है, मार्ग बन गया है। मैं सब कुछ करता हूं, पर कुछ भी मेरे द्वारा नहीं होता है। सभी कुछ ब्रह्म प्रदत्त है, ब्रह्म ही कार्यरत है। जो कुछ हो रहा है। वह सब कुछ ब्रह्म है। मैं तो केवल हूं और नहीं भी हूं। कहते हुए नानक जी पुनः बालक बन कर खेलने लगे। पायलट बाबा उन्हें देखते रहे। वे शांत होकर ऐसे खेल रहे थे जैसे अभी ना कुछ किया हो और ना कुछ हुआ हो।

पायलट बाबा ने अपने शरण के अवयवों को विलीन कर दिया और अपने स्थूल शरीर को जाकर धारण कर लिया। कुछ दिन भटवाड़ी में रहकर फिर चल पड़े गंगोत्री और गोमुख की तरफ। हिमालय में भ्रमण करते, गुफाओं में समाधि में लीन रहकर अच्छा समय गुजर रहा था। दिन, महीने और सालों का पता ही नहीं लगता था। इधर कुछ दिन से कुछ विचार तरंगें आ रही थी जैसे कोई महात्मा अपना प्रेम भेज रहा हो

और समाज के लिए कुछ करते रहने का प्रोत्साहन और प्रेरणा दे रहा हो। एक दिन पायलट बाबा समाधिस्थ होकर स्थूल शरीर को छोड़ सूक्ष्म शरीर में चल दिए उन विचार तरंगों के मूल स्रोत की तरफ। विचार तरंगों के केन्द्र थे देवराहा बाबा। सन्त शिरोमणि, परम तपस्वी, भारत के अध्यात्मिक जगत के वैभव देवराहा बाबा। पायलट बाबा ने सूक्ष्म शरीर से ही नमस्कार कर अपनी विचार तरंगों को भेज दिया। देवराहा बाबा मचान पर बैठे थे। उनके चरणों में इंदिरा गांधी चिंतित बैठी थी। देवराहा बाबा उनको आशीर्वाद दे रहे थे। बीच में कुछ पल वे रूके और सूक्ष्म शरीर में ही पायलट बाबा को पहचानकर देखकर मुस्कुराने लगे। देवराहा बाबा इंदिरा गांधी से कह रहे थे ''लहर है बच्चा लहर आयेगी।'' पायलट बाबा सूक्ष्म शरीर से हवा में ही स्थित थे। देवराहा बाबा इंदिरा गांधी से पायलट बाबा की तरफ इशारा करके बोले-सामने भगवान खड़ा है। साष्टांग करो। देवराहा बाबा और पायलट बाबा की विचार तरंगों ने संबंध जोड़ा। भावी प्रधानमंत्री के चेहरे पर मुस्कान खेल गई। इंदिरा गांधी अपने बैठने की मुद्रा बदल कर ऊपर देखने लगी। पायलट बाबा चल दिए तो देवराहा बाबा इंदिरा गांधी से पुनः बात करने लगे।

पायलट बाबा सूक्ष्म शरीर से ही देवराहा बाबा की तपोभूमि को निहारते जा रहे थे। जंगल में मंगल हो रहा था। मानव क्षितिज पर देवराहा बाबा का उदय, एक धर्म का महान प्रतीक, भारत का यह आध्यात्मिक पुरुष गंगा की तरह महान बनकर गंगा तट पर रहकर सम्पूर्ण जीव जगत को आत्म चेतना की प्रेरणा दे रहा है। पायलट बाबा और देवराहा बाबा का ऐसे ही सूक्ष्म रूप में प्रेम का आदान-प्रदान चलता रहता। पायलट बाबा को कई बार लगता कि देवराहा बाबा चल पड़े हैं जहां उन्हें जाने की प्रतीक्षा थी। जैसे अब निर्णय ही लेना हो। और महापरायण की अवधि शनैः-शनैः करीब आती जा रही हो। एक दिन पायलट बाबा कुछ भक्तों के साथ देवराहा बाबा के दर्शन के लिए चल पड़े। मचान बंद था। हजारों लोग मचान के सामने बैठे थे। दर्शन की अभिलाषा लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। पायलट बाबा ने साथ के भक्तों को आगे जाने को कह दिया और स्वयं जीप में बैठ कर प्रतीक्षा करने का विचार कर रहे थे। तभी मचान का दरवाजा खुला और देवराहा बाबा बाहर निकल कर इधर-उधर दृष्टि डालते हुए देखने लगे और अपने एक

साधु को पायलट बाबा को बुलाने का संकेत दिया।

पायलट बाबा स्वयं लपक कर देवराहा बाबा के सामने जा पुंचे। जीवन का वह बहुमूल्य क्षण कभी भुलाया नहीं जा सकता। जो मिलन का अद्भुत दृश्य देवराहा बाबा ने पेश किया वह अविस्मरणीय और अवर्णनीय था। हजारों लोग वहां दर्शन के लिए खड़े थे, वे इस मिलन को देखकर स्तब्ध रह गए। स्वर्ग कुछ क्षणों के लिए वहां उतर आया था। लग रहा था जैसे कई जन्मों के बाद दोनों मिल रहे हों। वैसे यह पहला अवसर था जब पायलट बाबा देवराहा बाबा से भौतिक शरीर से मिल रहे थे। पायलट बाबा का मन मुग्ध होकर उनकी वाणी का रस-स्वादन कर रहा था। देवराहा बाबा की वाणी मधुर प्रेम की वर्षा कर रही थी। पायलट बाबा उनका प्रेम-सानिध्य ग्रहण कर गदगद हो रहे थे।

देवराहा बाबा उम्र की सरल व्याख्या दे रहे थे। साधक की उतनी ही उम्र होती है जितनी वह साधना और ईश्वर चिंतन में लगा देता है। महात्माओं का न कोई गांव होता है, न कोई रिश्ते हैं न नाते। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का कण-कण ही ब्रह्ममय है और ब्रह्म ही योगियों का बसेरा होता है। जो कण-कण में अणु-अणु में व्याप्त है उसके प्रति कुछ करते रहना ही धर्म है। ऐसा कहकर देवराहा बाबा ने काजू, किशमिश का एक बण्डल बांध कर पायलट बाबा को पकड़ा दिया। कुछ देर तक देवराहा बाबा मौन हो गये। भुजाएं सिमट कर अंदर हो गई। जटाए लटककर सामने आ गई और उनका चेहरा ऊपर की ओर कुछ खोजने लगा। खुला आकाश था। विचारों की तरंगें चारों तरफ उठ-उठ कर अपनी-अपनी दिशा की ओर गतिशील हो रही थीं। बाबा कुछ न कुछ पकड़ने के प्रयास में लगे थे।

सब लोग मौन थे। तभी देवराहा बाबा ने पायलट बाबा को इशारे से अपने करीब किया और बोले-'अब मैं जो दे रहा हूं क्या उसे तुम संभाल लोगे। पायलट बाबा कुछ देर चुप रहकर फिर मुस्कुरा दिये और बोले ''भगवान अगर आप का आशीर्वाद रहा तो सभी कुछ संभालने की ताकत मुझमें आ जायेगी। मैं तो केवल आपसे मिलने आया था। मेरा उद्देश्य पूर्ण हो गया। अब अगर आप की इच्छा है तो मैं स्वीकार करता हूं। आप की कृपा दृष्टि मुझ पर है। देवराहा बाबा ने दोबारा पूछा-''संभाल लोगे न। मैं जो कुछ भी दे रहा हूं तुम इसे संभालो। जीवन में जो सत्य है वह तुम पा चुके हो। और जो कुछ करना है वह भी तुम्हारे साथ जुड़ा

हुआ है। और जो मैं दे रहा हूं इसे तुम संभाल लो। सब कुछ तुममें सिमट कर दुनिया की ओर भागेगा। तुम्हें क्या करना है यही मैं तुमको दे रहा हूं। इसे संभालो। देखो कहीं गिर न जाए। यह नीचे न गिरने पाए। लो संभालो, बाबा बार-बार कहे जा रहे थे। पायलट बाबा आगे बढ़े तो देवराहा बाबा ने उठकर हाथ को पीछे बढ़ाया और किसी बक्से को उठाकर आगे की ओर झुके। पुनः वे बोले ''संभाल लोगे।' पायलट बाबा ने और आगे बढ़कर अपनी चादर को फैला दिया और बोले-''आपके आशीर्वाद से सब कुछ संभव हो सकता है। मैं कृत संकल्प हूं। संभाल लूंगा। उन्होंने फिर कहा ''लो संभालो।'' पर देखना इसे छोड़ मत देना। सारी भीड़ उत्सुकता से देखती रही घटनाक्रम बहुत ही धीरे-धीरे बढ़ रहा था। बाबा फिर बोले 'देखना इसे संभालना, मैं छोड़ रहा हूं। नीचे न गिरने पाए, संभलकर, गिरने न पाये।

एकत्रित अपार भीड़ मंत्र मुग्ध शांत चित्त हो देख रही थी। देवराहा बाबा ने पूरे वातावरण को संवेदनशील बना दिया था। देवराहा बाबा फिर बोले-देखना मैं गिर रहा हूं। मेरी प्यारी देखी-सुनी, जानी आत्मा इसे संभाल कर रखना और जीवन के किसी मोड़ पर मुड़ कर अनन्त में बांट देना।'' कहते हुए देवराहा बाबा ने झुक कर एक बहुत बड़ा पैक बक्सा ऊपर से गिरा दिया। पायलट बाबा चादर फैलाकर अपनी दोनों भुजाओं से संभालने के लिए तैयार खड़े थे। उन्होंने उसे थाम लिया। मन शांत था अंदर हृदय पुलकित हो रहा था। देवराहा बाबा बहुत प्रसन्न हुए। पायलट बाबा ने डिब्बे को सीने से लगाकर अपने साथ खड़े भक्तों को पकड़ा दिया। सभी लोगों की सांस कुछ देर के लिए अटक सी गई थी। पायलट बाबा देवराहा बाबा के आशीर्वाद, प्रेम, सानिध्य, प्रोत्साहन का खजाना लेकर चल दिए। अपार भीड़ हाथ जोड़ कर स्वागत कर रही थी। बहुत से लोग पायलट बाबा के पैरों को छू रहे थे। देवराहा बाबा भी कुटिया में प्रवेश कर गए। सब लोग पायलट बाबा की तरफ आने लगे। लोग आश्चर्यचकित हो रहस्यमयी क्षणों को समझना चाहे थे। उन्हें ये तो पता था कुछ हो रहा है जो अति विशेष है, लेकिन क्या हो रहा था ? सबको यह बताने के लिए वक्त को भी चाहिए था कुछ वक्त और।

वर्तमान भूमिका

सिद्ध संत पूर्ण योगी अपनी उपस्थिति से समाज को, मानवता को, देश को अनेक आपदाओं और संकटों से बचाते रहते हैं। जितने परिणाम से मानव की सोच को, अहंकार को उसके कर्मों को एक झटका लग जाये उतना होने देते हैं, बाकी रोक देते हैं। सब कुछ वे स्वयं ही कर देंगे तो फिर सबको कुछ पता ही नहीं लगेगा और सबका विकास नहीं होगा। ऐसी ही भूमिका पिछले लगभग १५०-२०० सालों से देवराहा बाबा उत्तर-पूर्वी भारत में संभाले हुए थे। आत्मबोधि बनकर वे महात्मा मानवता के कल्याण के लिए अपनी साधना, तपस्या योग सामर्थ्य अपना सर्वस्व अर्पण कर रहे थे। सब जगहों से निराश मानव ऐसे संतों और योगियों को ही अपने आखिरी सहारे के रूप में पाता है। भारतीय जनता सब अवयवस्थाओं को झेल जाती है, इन्हीं संतों, महात्माओं और योगियों के शांत आशीर्वाद और अहैतुक प्रेम की उम्मीद में।

पायलट बाबा को अब तक अनेक अमर महापुरूषों का दर्शन, सानिध्य मिल चुका था जो हिमालय के वासी थे और कुछ दूसरे लागों के भी। उन सबको पायलट बाबा से उम्मीद थी कि मानव के लिए आप कुछ करे। उसी विचार को देवराहा बाबा ने अपनी आशीर्वाद और अपने उत्तराधिकार में देकर पूरी तरह से आगे बढ़ा दिया था। अब समय आ गया था हिमालय से नीचे उतरकर समाज को, मानव को कुछ देने का।

पायलट बाबा ने कुछ भक्तों का सहयोग लेकर देश के अनेक हिस्सों में जा-जाकर समाधियां लगाई। जिससे मानव योग के प्रति, धर्म के प्रति, ईश्वर के प्रति आस्तिक होकर जाग जाये। कभी जल में समाधि लगाकर हफ्तों पदमासन में जल में ही बैठे रहते। कभी भूमि के नीचे गड्ढ़ा खुदवा कर समाधि लगाते, कभी एयर टाइटग्लास में समाधि लगाते जिसमे सब कुछ जनता को सामने दिखता है। अब वे वैज्ञानिकों और डाक्टरों के लिए एक आश्चर्य बन चुके हैं अनेक बार डाक्टरों को मर कर दिखा चुके हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के सभी यंत्र फैल हो जाते हैं जब पायलट बाबा दोबारा जीवित होकर सांस लेने लगते हैं। डॉक्टरों और वैज्ञानिकों ने समाधि में जाने से पहले उनका चैकअप किया। समाधि से निकलने के बाद भी जांच पड़ताल की लेकिन वे कुछ

नहीं समझ पाये क्योंकि जहां तक योग की पहुंच है वहां तक अभी विज्ञान नहीं पहुंचा है।

पायलट बाबा ने अनेक लोगों को दीक्षा देकर योग जागृत किया। साधना के लिए आत्मा के विकास के लिए अनेक आश्रम बनाये। दिल्ली में, हरिद्वार में, नैनीताल में उत्तरकाशी में। जो उन्होंने अपनी योग जीवन की यात्रा में पाया था उसको बांटने का कार्य वहां होता रहता है। वातावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए आम आदमी की सामर्थ्य बढ़ाने के लिए जगह-जगह जाकर यज्ञ किये। कितने ही परेशान, दुखी लोगों की समस्याओं को सुलझाया। विदेशों में भी गए और हिमालय का संदेश, योग का प्रचार १६० देशों में घूम-घूम कर किया। ३३ दिन की समाधि में ब्रह्माण्ड अवलोकन करने वाले योगी ने पूरी पृथ्वी को ही अपना कार्यक्षेत्र, अपना घर बना लिया।

वे सिर्फ आसन प्राणायाम करने वाले योगी नहीं, वे सिर्फ कथावाचक नहीं, वे सिर्फ आचार्य नहीं, वे एक उपदेशक नहीं बल्कि वे तो पृथ्वी प्रत्येक धर्म के मत के मूल पुरूष के प्रेम को प्राप्त सबके सामने एक साक्षात उदाहरण है। यदि किसी हिंदू को अपने शास्त्रों पर शंका हो तो वह उनसे मिल सकता है क्योंकि शास्त्रों के रचयिता महर्षि वेदव्यास के साथ उन्होंने बैठक की है। यदि किसी मुसलमान को कुरान को समझना है तो वह उनसे मिल सकता है क्योंकि पायलट बाबा पैगम्बर साहब का सानिध्य पा चुके हैं। यदि किसी ईसाई को ईसा मसीह पर संदेह है तो पायलट बाबा ईसा मसीह से मिलकर उनके विचारों से अवगत हो चुके हैं। यदि किसी सिक्ख को नानक जी का स्वरूप पूछना है तो वह पायलट बाबा से मिल सकता है। क्योंकि पायलट बाबा नानक देव जी का प्रेम पा चुके हैं। पृथ्वी पर ऐसा कोई धर्म नहीं, मत नहीं संप्रदाय नहीं जिसके मूल स्रोत महापुरूष का पायलट बाबा को दर्शन, साक्षात्कार न हो। वे प्रत्येक धर्म का, सत्य का, परम शक्ति का, तपस्या का जीवित प्रमाण बनकर समाज में घूम रहे हैं।

जिनको शांति की तलाश है वे उनसे शांत होने के उपाय ले सकते हैं। जिनको अपने सवालों को जवाब नहीं मिल रहा वे उनसे किसी भी रहस्य का, शंका का समाधान पा सकते हैं। जो साधक साधना में अनेक प्रयास करने के बाद भी सफल न हो रहे हों वे उनके निकट

साधना करके अपनी साधना को पूर्ण कर सकते हैं। जिन भक्तों को ईश्वर प्रेम पाने का रास्ता न मिल रहा हो वे उनसे मिलकर अपनी भक्ति को आगे बढ़ा सकते हैं। जिन सेवकों को कहीं भी अच्छी सेवा का मौका न मिल रहा हो। वे उनके पास आकर सेवा का सही मार्ग पा सकते हैं। अविश्वासी लोग उनसे आंखों देखा सत्य जानकर विश्वासी हो सकते हैं। वे लोग जिन्हें कोई सही रास्ता नहीं मिला और वे परिणामस्वरूप नास्तिक हो गये, वे ईश्वर-दर्शन के मार्ग पर चलकर आस्तिक हो सकते हैं। जो स्वयं को जानना चाहते हैं। सत्य को पाना चाहते हैं उनकी उन्हें तलाश है। ऐसी आत्माएं जो महात्माओं के दर्शन के लिए तरस रही है उन्हीं की खोज में अलख जगाकर गांव-गांव, शहर-शहर घूम रहे हैं। वैष्णव उनसे प्रेमाभक्ति पा सकते हैं, शैव उनसे ध्यान और समाधि ले सकते हैं। मां के भक्त उनसे पूजा-पाठ सीख सकते हैं। ज्ञान चाहने वाले उनसे आत्मज्ञान की विधि ले सकते हैं। योगी बनने के इच्छुक उनसे क्रिया योग ले सकते हैं। विद्यार्थी उनसे एकाग्रता के तरीके सीखकर विद्या-अर्जन में सफलता ले सकते हैं। आप उनसे कर्म को करने का सही स्वरूप ले सकते हैं। राजनेता उनसे देश सेवा के सही तरीके ले सकते हैं। एक मानव को अपने सम्पूर्ण विकास के लिए जो भी चाहिए, वह सब कुछ उनके पास है। अनेक दिव्य शक्तियों की जो धरोहर उनके पास है। वह हमारी-आपकी-सबकी है। उनके पास आइए, जानिए, समझिये और कुछ लीजिए।

आज देश में योग के नाम पर, धर्म के नाम पर बहुत कुछ ऐसा हो रहा है जो सही नही हे दाढी बढा लेन`से ही कोई योगी नहीं हो जाता। भगवा धारण करने से ही संत और संन्यासी बनने की योग्यता नहीं आ जाती। सफेद वस्त्र धारण करने से ही कोई ब्रह्मचारी नहीं हो जाता। जिसने पूर्ण संतोष को पा लिया हो वह संत है। जो अनाधिकार चेष्टा नहीं करता वह ब्रह्मचारी है। और योगी वही है जो स्वयं की सत्ता को शरीर अलग जान चुका है और सुक्ष्य शरीर को स्थूल से अलग करने की प्रक्रिया में जिसको महारत हासिल हो गई हो। और जो अपने योग से, संकल्प से, विचार से, दूसरे को भी योगी बना दे उसको महायोगी कहा जाता है। वे अब तक सार्वजनिक रूप से ११० समाधियां ले चुके हैं। और श्रेष्ठ आत्माओं की अपनी खोज के दौरान जापान से योगमाता, भारत से चेतना माता, श्रद्धा माता, मंगलगिरी जो आदि कई महात्माओं

को अपने संकल्प से समाधिष्ट कर चुके हैं सबके सामने। इसलिए अब उन्हें महायोगी पायलट बाबा कहा जाता है। देश के संतों और महात्माओं ने उनकी आध्यात्मिक कार्यों की क्षमताओं को देखते हुए उन्हें महामण्लेश्वर की उपाधि से विभूषित किया। जिसे उन्होंने धर्म की गरिमा और पद की महिमा बढ़ाने के उद्देश्य से स्वीकार कर लिया। फिर वे बन गए महामण्डलेश्वर महायोगी पायलट बाबा। सही दिशा, उचित मागदर्शन की तलाश में भटकते मानव की सुविधा के लिए उन्होंने वचन दे रखा है कि मेरी तस्वीर के सामने या मेरे स्वरूप को ध्यान में रखकर जो कोई भी मानव मुझसे कुछ पाना चाहेगा तीन दिन के अंदर नींद में, ध्यान में स्वप्न में आकर उसको दिशा निर्देश दूंगा, चाहे वह पृथ्वी के किसी भी कोने में ही क्यों न हो। इस सबके बावजूद कितनी बार ऐसा महसूस होता है कि देश के, समाज के लोग उनकी बातों पर गंभीरता से ध्यान ही नहीं दे रहे हैं। जहां विश्व के वैज्ञानिक, कई बड़े-बड़े विदेशी शिक्षा संस्थान, विश्वविद्यालय पायलट बाबा के ऊपर रिसर्च कर रहे हैं और उनसे दूसरे लोकों की, सृष्टि की सूचनाएं ले रहे हैं। वही देश के लोग उनकी क्षमताओं को उनकी भावनाओं को समझने में भूल कर रहे हैं। लोग उन्हें भी एक साधारण संत या सामान्य योगी की ही तरह समझ रहे हैं। जिसकी वजह से उनकी भारत में उपस्थिति का पूरा लाभ देश के लोगों को नहीं मिल रहा है।

इधर कुछ दिनों से एक नई समस्या पनप रही है। अनेक लोग बाबा जी द्वारा रचित "हिमालय कह रहा है" की दिव्य घटनाओं को पढ़कर एक बहुत बड़ी उम्मीद लेकर बाबा जी के दर्शनों के लिए आते हैं। लोग आते हैं श्रद्धा और भक्ति के भावों से अपना चेहरा सजा कर, लेकिन जब वे बाबा जी के आसपास आकर आश्रमों में अव्यवस्था या अस्त-व्यस्त क्रियाकलाप देखते हैं तो उनकी आशाओं और भावनाओं को झटका लग जाता है और बहुत जल्दी ही उनके चेहरे उतर जाते हैं और वे निराश होकर इस सबके लिए बाबा जी को दोषी मानने लगते हैं।

भक्तों और दर्शनार्थियों से यह निवेदन है कि बाबा जी के आसपास के मानवीय माहौल व हालात की तुलना बाबा जी की आध्यात्मिक अवस्था से न करें। यदि आप ऐसा करेंगे तो आप उन्हें समझने में भूल कर जाएंगे। बाबा जी के स्टाफ या उनके किसी सेवक की आध्यात्मिक

अयोग्यता देखकर आप बाबा जी की संकल्प शक्ति, समाधि सामर्थ्य का आंकलन मत करो, आप धोखा खा जाएंगे। बाबा जी को समझने के लिए आप मीडिया के किसी माध्यम के नकारात्मक विचारों का विश्वास मत करो। आप नासमझी और षड़यंत्र का शिकार हो जाएंगे। उनसे आध्यात्मिक लाभ लेने के लिए या उनसे कुछ सीखने और समझने के लिए आप मजबूती के साथ सब अव्यवस्थाओं को झेल जाइये और रूकावटों व परेशानियों से गुजर अपने धैर्य व संयम का सर्वोत्तम उपयोग करिए।

बाबा जी को समझने के लिए आपको कुछ तथ्यों पर ध्यान देना पड़ेगा। जिस स्तर के वे महापुरुष हैं उस स्तर की शक्तियों से प्रकृति अक्सर कुछ गलतियां कराती हैं, लेकिन इसमें मानव जगत के भविष्य की कोई भलाई छुपी होती है। आप स्वयं देखिए सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, निर्गुण परमात्मा श्रीराम बनकर लीला कर रहे थे तो सीता माता के कहने पर स्वर्ण मृग को पकड़ने के लिए जाकर रावण के षड़यंत्र का शिकार हो गए। क्या कण-कण में व्याप्त श्रीराम को पता नहीं था कि स्वर्ण मृग की रचना तो उन्होंने चौरासी लाख योनियों में कभी की ही नहीं फिर यह स्वर्ण मृग कहां से आ गया। लेकिन उनके ऐसा करने से मानव जगत के लिए बहुत ही अच्छा परिणाम आया। पृथ्वी राक्षसों से रहित होकर शांति से जीवन जीने योग्य हो गई।

आप विचार करिए वे ब्रह्मा जी जो मानव के बुद्धिदाता है, जब रावण, कंस, या हिरण्यकश्यप आदि राक्षस तप करके उनसे कोई वरदान मांगते हैं तो ब्रह्मा जी भी जानते हैं कि वरदान में दी गई शक्तियों का दुरूपयोग होगा, फिर भी वे वरदान प्रदान करते हैं। क्योंकि उनकी व्यापक दृष्टि में यह सत्य दृष्टिगोचर रहता है कि ऐसा करने से ही श्री हरि को लीला करने का अवसर बनेगा और पृथ्वी के मानवों को राहत मिलेगी। बाबा जी इस पृथ्वी पर शिव परंपरा के प्रतिनिधि हैं इस परंपरा में आप देखिए भगवान शिव भस्मासुर को वरदान देकर स्वयं अपनी आफत बुला रहे हैं लेकिन वे जानकर पूरे होशो-हवास में ऐसा कर रहे हैं; क्योंकि उनके ऐसा करने से उन्हें श्री हरि की लीला सामर्थ्य का एक ओर अनोखा पक्ष देखने को मिल जाता है। इसलिए आप आश्रमों में अव्यवस्था या स्टाफ व सेवकों की गलतियों को देखकर परेशान मत होइये यह सब ऐसे ही चलेगा। यही शिव परंपरा है। यह बाबा जी की विराट उदारता

का एक उदाहरण है कि उनके निकट अच्छे व बुरे लोग एकसमान रूप से उपस्थित हैं।

भगीरथ जी की अनेक वर्षों की तपस्या के फलस्वरूप पृथ्वी पर उतरी महान गंगा जी जब गोमुख से चलकर गंगोत्री से आगे बढ़ती हैं तो अनेक स्वच्छ झरने उनसे मिलकर उनमें समा जाते हैं। वहीं गंगा जी जब अनेक मानवीय बस्तियों से गुजरती हैं तो वहां की गंदगी भी गंगा जी में बह कर पहुंचा जाती है। स्वच्छ झरनों को और गंदे-नालों को एकसमान रूप से ही गंगा जी अपने अंदर समेट लेती हैं। यह उनकी महानता, स्वभाव व विराटता है। लेकिन उनकी यह उदारता कलकता पहुंचते-पहुंचते उन्हें बहुत भारी पड़ जाती है और उनका स्वरूप गंगोत्री के मुकाबले बिल्कुल ही अलग दिखने लग जाता है। अब इसमें दोष गंगा जी का नहीं हमारा है। हमें गंदे नालों को गंगा जी में नहीं मिलाना चाहिए था। गंगा जी के इसी उदाहरण से हमें बाबा जी की जीवन यात्रा को समझने में सहायता मिल सकती है। आज हम बाबा जी में कमियां ढूंढने के बजाय यदि उनको आवश्यक विश्वास व सहयोग दें तो यह हमारे लिए, धर्म के लिए, राष्ट्र के लिए, पृथ्वी के लिए ज्यादा अच्छा होगा।

वर्तमान वातावरण की नीरसता में यदि वे निराश हो गए तो वे अपनी उपयोगिता समाज में समाप्त हुई जान हिमालय में जाकर लम्बी समाधि में लीन हो जाएंगे, और देश के लोग एक महान पुरुष को खो देंगे। वे इच्छा मृत्यु संकल्प शक्ति से सम्पन्न एक महायोगी हैं। हम अपने प्रेम से, सच्चाई से, भक्ति से, सहयोग से उनको जितने समय चाहे सार्वजनिक जीवन में रहने के लिए रोक सकते हैं। आइए विश्व में शांति के लिए, धर्म के लिए, योग के लिए, भारत के लिए हम उन्हें रोक लें क्योंकि वे हैं भारत के सच्चे भारत रत्न।



कभी वे हिमालयवासी बनकर गुफाओं में, कंदराओं में, नदियों के मूल स्त्रोतों पर ही विचरण और निवास करते थे। हमने अपनी महापुरूषों की खोज की अनेक वर्षों की तपस्या और प्रार्थना के बाद उनके श्रीचरणों का सान्निध्य पाया है, लेकिन आज आपको इतने कष्ट और समय की आवश्यकता नहीं, क्योंकि अब वे आपके लिए सार्वजनिक जीवन में सहज ही उपलब्ध हैं। आइये, उनके महान जीवन और विराट अनुभवों में भागीदार बन जाइये।